इवान तुर्गेनेव

कुलीन घराना

रादुगा प्रकाशन
मास्को

पुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड
५ ई, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली ११००५५

अनुवादक मुनीश स

И. С. Тургенев
ДВОРЯНСКОЕ ГНЕ
На языке хинди

Turgenev I. S.
A NEST OF THE GEN
in Hindi

है और वास्तव मे वे एक-दूसरे से अलग हो चुके हैं, फिर भी वे जिन औपचारिक बंधनो में अब तक बंधे हुए हैं वे लीज़ा और लाव्रेत्स्की की गहरी भावनाओ पर अपनी काली छाया डाल रहे हैं। उन्हें एक-दूसरे से प्रेम तो हो गया है लेकिन वे इस बात को अपने आपमे स्वीकार करने से डरते है। लाव्रेत्स्की की पत्नी की मृत्यु का समाचार आता है और प्रेमियों को सुखद आशा बंधती है कि उनका भाग्य शायद चमक उठे। लेकिन यह खबर गलत निकलती है। आशा की जगह निराशा ले लेती है – उनके लिए सुखी रहना असंभव है। अत्यंत धर्मपरायण होने के कारण लीज़ा इस आघात की व्याख्या दंड के रूप मे करती है और सन्यास ले लेती है। लाव्रेत्स्की का जीवन भी छिन्न-भिन्न हो जाता है। यही उपन्यास का कथानक है – मोटे-मोटे तौर पर यह शुद्धत घनिष्ठ प्रेम की कहानी है, पर तुर्गनेव जैसा महान लेखक उपन्यास लिखते समय अपने आपको यहीं तक सीमित नहीं रख सकता था। वास्तव मे 'कुलीन घराना' उस दौर के जीवन के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ है। इस उपन्यास में तुर्गनेव ने अपने युग की मुख्य बुनियादी समस्याओ का हल खोजने की कोशिश की है। और वह दौर जिससे होकर रूस को गुजरना पड़ा, कोई मामूली दौर नहीं था। देश तभी तीस वर्ष के सार्वजनिक गतिरोध से मुक्त हुआ था जिसका वह निरंकुश सम्राट् निकोलाई प्रथम के शासनकाल में शिकार रहा था जिसे जनता ने "डंडेवाला" का नाम दे रखा था। हर आदमी सुधारों की, और सबसे पहले और सबसे बढ़कर भू-दासता के उन्मूलन की आस लगाये बैठा था – रूस के करोड़ों किसानो की दासता के उन्मूलन की। तुर्गनेव रूस की एक सबसे धनी जमींदार महिला के बेटे थे और बचपन मे उन्हे अनायास ही मालिको की निरंकुशता के बर्बरतापूर्ण दृश्य देखने पड़े थे, जिसकी वजह से वह अपने जीवन-भर भू-दासता से नफरत करते रहे। जन-जीवन के पितृसत्तात्मक सिद्धातों को आदर्श न मानते हुए वह जनता से समीपता को, उसकी आवश्यकताओं का ध्यान रखने को हर व्यक्ति की नैतिकता की कसौटी मानते थे। वह अपने सभी पात्रो को इसी दृष्टिकोण से परखते थे। उस समय के रूस के श्रेष्ठतम लोगों के साथ तुर्गनेव भी दो मुख्य समसामयिक प्रश्नों का उत्तर खोज रहे थे "क्या करना है?" और "कौन करेगा?" दूसरा प्रश्न तुर्गनेव के लिए विशेष महत्त्व का था। लेखक उन लोगों की खोज

जो समाज की सक्रिय शक्ति बन सकते थे, रूसी जीवन को
न से देखता रहा।

लीजा कलीतिना का चित्र इस उपन्यास का मुख्य चित्र बन गय
एक सामूहिक चित्र है जिसमे अनेक रूसी स्त्रियो और लड़कि
, जिनसे लेखक परिचित थे, विशेषताए साकार हो उठी हैं। ली
चित्रण के आधार के रूप मे अनेक लोगो का नाम लिया गया
मे थी तुर्गेनेव की एक रिश्तेदार येलिजावेता शाखोवा, जो
भासपन्न कवयित्री थी, जिन्होने दुर्भाग्यपूर्ण प्रेम के कारण सन्य
लिया था, येलिजावेता लैम्बर्ट नामक एक काउटेस, जो लेखक
रचित थी, और महान रूसी क्रातिकारी लेखक अलेक्सान्द्र हर्जेन
ली पत्नी – नतालिया हर्जेन।

लीजा लेखक का सबसे चहेता पात्र है। वह रूसी राष्ट्रीय च
श्रेष्ठतम गुणो का साकार रूप है। हमे उसमे असाधारण नैतिक
ा शुचिता, सच्चाई और शुद्ध नारीत्व का आकर्षण दिखायी
। उसमे भरपूर शालीनता, कोमलता, विनम्रता और ईमानदारी
गो के प्रति नेकी और दया के भाव, जनता तथा देश के प्रति प्रेम
सका आकर्षण निहित है। उसमे आत्मिक बल है और उसके
र्तव्य का उच्च आदर्श है, जो कठोरता और आत्म-त्याग की सीम
ो छू लेता है। उसके लिए किसी दूसरे को कष्ट पहुचाने की अ
य अपने सुख को ठुकरा देना ज्यादा आसान है। लेकिन तुर्गेनेव
सकी प्रशसा ही नही की है। उन्होने उसे दोष भी दिया है। ली
ो विनम्रता, सबको क्षमा कर देने, और भाग्य के आगे आत्म-सम
र देने जैसे गुण उसके धर्मनिष्ठ लालन-पालन मे मिले थे। वा
, लीजा ने केवल घोर निराशा मे बेचैन होकर सन्यास नहीं
ा, वह दुनिया की बुराइयो को सुधारने के उद्देश्य से अपने मन
द्ध करने और आत्म-त्याग के माध्यम से प्रायश्चित करने को लाला
ी। लेकिन ऐसा करके वह किसी को सुख नहीं पहुचा पाती।

लीजा के इस चित्र का कम भिन्न रूप मे तुर्गेनेव के एक और प
उनके अगले उपन्यास 'पूर्वबेला' की येलेना स्तारवोवा मे मिलना
इस पात्र मे प्रेम की भावना और नागरिक कर्तव्य का समाधान

नैतिक दृढ़ता को बहुत सराहा है। उदाहरण के लिए, लेखक और क्रांतिकारी सर्गेई स्तेपन्याक-क्रावचिन्स्की ने 'कुलीन घराना' के अंग्रेजी अनुवाद की अपनी भूमिका में लीजा के बारे में लिखा कि "इस गंभीर, शुद्ध आत्मा में चरित्र के महान गुण निहित हैं" और यह कि "जिन देशों में पुरुषों को ऐसी स्त्रियों के सहारे का आश्वासन हो उन्हें बेहतर भविष्य पर विश्वास रखने का पूरा अधिकार है।"

'कुलीन घराना' का एक और मुख्य पात्र है फ्योदोर लाव्रेत्स्की जो पुराने रूस के एक अभिजात परिवार की सन्तान होने के साथ ही एक सीधी-सादी किसान औरत का भी बेटा है। वह होशियार और नेक आदमी है जो महसूस भी कर सकता है और सोच भी सकता है। उसने बहुत अच्छी शिक्षा पायी है। उसमें बहुत कुछ अंश तुर्गनेव के अपने व्यक्तित्व का, लेखक की भावनाओं तथा विचारों का है। इस पात्र के रूप में लेखक ने रूस के अभिजात वर्ग के श्रेष्ठतम प्रतिनिधि का चित्रण करने का प्रयत्न किया है। वास्तव में, यह एक ऐसा व्यक्ति है जिसके लिए वैयक्तिक तथा सार्वजनिक कर्त्तव्य की समस्या उसके जीवन की मुख्य समस्या है, और आस्था की भावना–आस्था सत्य के प्रति, किसी उच्च आदर्श के प्रति–उसकी मुख्य आवश्यकता है। वह निरंतर स्वयं अपने ढंग की गतिशीलता को खोजता रहा और वह उसे अपने किसानों के जीवन को व्यवस्थित करने में मिली। लीज़ा के विपरीत, लाव्रेत्स्की सुख और कर्त्तव्य की कल्पनाओं को एक-दूसरे का विरोधी नहीं मानता। केवल प्रतिकूल परिस्थितियों के हस्तक्षेप, और इसके साथ ही लीजा के धार्मिक विश्वासों की जडता से विवश होकर उसने अपने वैयक्तिक सुख की हानि को स्वीकार कर लिया। तुर्गनेव को उससे सहानुभूति है, लेकिन निष्पक्ष भाव से इस पात्र का विश्लेषण करने पर लेखक इस निष्कर्ष पर पहुचता है कि एक नये ऐतिहासिक युग के व्यक्ति के रूप में लाव्रेत्स्की सर्वथा असफल रहेगा: उसमें इच्छा-शक्ति, आत्म-बलिदान की भावना, दृढता का अभाव है; वह कुछ हद तक निष्क्रिय है। तुर्गनेव के इस उपन्यास में समाज की सक्रिय शक्तियों के अनिवार्य लोकतंत्रीकरण का विचार स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त हुआ है। तीन ही साल बाद तुर्गनेव ने अपने उपन्यास 'पिता और पुत्र' में एक नये ऐतिहासिक पात्र का चित्रण किया–कुलीन घराने से बाहर के बुद्धिजीवी बज़ारोव का।

'कुलीन घराना' की काव्यात्मकता की विशिष्टता का भी उल्लेख किया जाना चाहिये पूरे उपन्यास में संगीत प्रवाहमान है, तुर्गेनेव की कोई अन्य कृति इतनी संगीतमय नहीं है। इसमें संगीत के बारे में बहुत कुछ कहा गया है, बहुत से पात्रों की लाक्षणिक विशेषता संगीत के प्रति उनके रवैये से परिलक्षित होती है। यहां तक कि उपन्यास की भाषा भी संगीतमय है। इसके अतिरिक्त, प्राकृतिक सौंदर्य के गीतात्मक वर्णन का मुख्य तत्त्व है 'ध्वनिमूलक लेखन'। और इस उपन्यास के संगीतात्मक तत्त्व का चरम बिंदु है बूढ़े संगीतज्ञ लेम्म का गीतात्मक स्वरमाधुर्य जो सुख के विषय का प्रतीक है – जो सबसे महत्त्वपूर्ण विषय है और जो उपन्यास के सभी विचारों को सूत्रबद्ध करता है। संगीत तुर्गेनेव के लिए कला का सबसे प्रिय रूप था और 'कुलीन घराना' में लेखक ने साहित्यिक माध्यम से संगीत के भावात्मक प्रभाव को प्रदर्शित करने का प्रयास किया। लेम्म का चरित्र-चित्रण अत्यंत मर्मस्पर्शी तथा आकर्षक है। वह शुद्धतम आत्मा रखनेवाला व्यक्ति है, महान संगीतकार है, लेकिन, दुर्भाग्यवश, उसे कभी सफलता नहीं मिली। उपन्यास के पात्रों के नैतिक सार-तत्त्व को उद्घाटित करने का, उन्हें अंतःकरण की कसौटी पर परखने का अधिकार लेखक ने उसी को दिया।

'कुलीन घराना' के प्रकाशन पर पाठकों और आलोचकों ने उत्साहपूर्वक उसका स्वागत किया। इस उपन्यास के बारे में अनेक लेखों और आलोचनाओं में इसके प्रमुख साहित्यिक तथा सामाजिक महत्त्व की साक्षी दी गयी। इस उपन्यास से तुर्गेनेव को बहुत ख्याति मिली। लेखक ने स्वयं स्वीकार किया है कि उसे सबसे अधिक सफलता 'कुलीन घराना' में मिली।

'कुलीन घराना' पढ़कर लेखक मिखाईल साल्तिकोव-श्चेद्रीन पर "उस गीतात्मकता का" गहरा प्रभाव पड़ा था 'जो इस उपन्यास की हर ध्वनि में कूट-कूटकर भरी हुई है।" "और तुर्गेनेव की सभी रचनाओं के बारे में सामूहिक रूप से क्या कहा जा सकता है?" उन्होंने लिखा "क्या यह भावना कि उन्हें पढ़ने के बाद हम ज्यादा आसानी से सांस ले सकते हैं, ज्यादा आसानी से विश्वास कर सकते हैं और सुखद हार्दिकता अनुभव कर सकते हैं? आप स्पष्ट रूप से यह अनुभव कर सकते हैं कि आपका नैतिक स्तर किस तरह ऊंचा उठ रहा है, कि अपने

१

वसंत का एक सुहावना दिन समाप्त होनेवाला था। स्वच्छ आकाश
पे बहुत ऊंचाई पर छोटे-छोटे गुलाबी बादल लटके हुए थे और ऐसा लग
हा था कि धीरे-धीरे तैरकर आगे बढ़ते हुए वे नीली गहराइयों में
लते जा रहे थे।

ओ   नामक प्रांतीय-केंद्र के उपनगर में एक खूबसूरत मकान की
खुली खिड़की के सामने (यह सन् १८४२ की बात है) दो औरतें
बैठी थीं, एक की उम्र कोई पचास साल होगी, दूसरी सत्तर साल
की बूढ़ी औरत थी।

पहली औरत का नाम था मार्या पौत्रियेव्ना कलीतिना। उनके
पति, जो उस प्रांत के पब्लिक प्रासिक्यूटर रह चुके थे, अपने ज़माने में
ज़िद्दी और चिड़चिड़े स्वभाव के व्यवहारकुशल, सक्रिय और सूझ-
भवाले आदमी के रूप में ख्याति प्राप्त कर चुके थे, दस साल पहले
नका देहांत हो चुका था। उन्होंने अच्छी शिक्षा पायी थी और यूनि-
र्सिटी की परीक्षा पास की थी, लेकिन अपेक्षाकृत निर्धन वर्ग में जन्म
के कारण उन्होंने जीवन के आरंभ में ही दुनिया में अपने लिए
ता बनाने और अपनी जेब गरम रखने की आवश्यकता को समझ
था। मार्या पौत्रियेव्ना की ओर से यह विवाह प्रेम के आधार
आ था, क्योंकि वह सुंदर और चतुर आदमी थे और जब चाहते
सहृदय भी बन सकते थे। मार्या पौत्रियेव्ना (विवाह से पहले
परिवार का नाम पेस्तोवा था) मां-बाप के सुख से बचपन में
त हो चुकी थीं। उन्होंने कुछ वर्ष मास्को में महिलाओं की
टीट्यूट में बिताये थे और वहां से लौटने पर वह पोक्रोव्स्कोये

मक गाव मे, जो ओ   से लगभग पचास वेर्स्ता* की दूरी पर था,
पनी पारिवारिक भू-सपत्ति पर अपनी बुआ और बडे भाई के साथ
हने लगी थी। उनके यह भाई कुछ ही समय बाद सेट पीटर्सबर्ग चले
ये थे जहा वह एक सरकारी पद पर थे, और अचानक मृत्यु हो जाने
कारण जब तक उनकी जीवन-लीला समाप्त नही हो गयी तब तक
ह अपनी बुआ और बहन के साथ बहुत बुरा सलूक करते रहे।
क्रोव्स्कोये की जायदाद उत्तराधिकार मे मार्या दीमित्रियेव्ना को मिली,
किन वह वहा ज्यादा दिन नही रही कलीतिन के साथ अपने विवाह
साल ही भर बाद, जिन्होंने कुछ ही दिन मे उनका हृदय अपने वश
कर लिया था, पोक्रोव्स्कोये की अदला-बदली ज्यादा आमदनीवाली
क जायदाद से कर ली गयी, लेकिन वह बिल्कुल अनाकर्षक थी और
हा रहने के लिए कोई घर भी नही था। इसके साथ ही कलीतिन
ओ   नगर मे एक मकान भी ले लिया जिसमे वह और उनकी
नी स्थायी रूप से रहने लगे। यह मकान एक बहुत बडे बाग मे था
सके एक तरफ नगर के बाहर दूर तक फैला हुआ देहात दिखायी
ता था। "तो अब," कलीतिन ने, जो ग्रामीण सुख-सुविधाओ के
मी नही थे, फैसला किया, "अब देहात जाने का सिलसिला खत्म।"
न ही मन मार्या दीमित्रियेव्ना को अनेक बार अपना सुदर पोक्रोव्स्कोये,
सका मुस्कराता हुआ पानी का चश्मा, उसके लबे-चौडे घास के मैदान
ौर हरे-भरे कुज खो देने का पछतावा तो हुआ, लेकिन उन्होंने
भी किसी भी प्रकार अपने पति का विरोध नही किया, जिनकी
ुद्धिमत्ता और समाज की जानकारी के प्रति वह गहरा सम्मान रखती
ी। लेकिन पद्रह वर्ष के विवाहित जीवन के बाद जब वह एक बेटा
ौर दो बेटिया छोडकर इस दुनिया से सिधार गये तब तक मार्या
ीमित्रियेव्ना को अपने घर और शहर के जीवन की इतनी आदत
ो चुकी थी कि ओ   छोडकर जाने की उनकी इच्छा ही
ही होती थी।

अपनी जवानी मे मार्या दीमित्रियेव्ना सुनहरे बालोंवाली सुदरी के
प मे ख्याति प्राप्त कर चुकी थी, पचास वर्ष की आयु मे भी उनके
ाक-नक्श का सारा आकर्षण समाप्त नही हो गया था, हालांकि कुछ

* एक किलोमीटर से कुछ अधिक। – अनु०

कुछ मोटापा दिखायी देने लगा था और नज़ाकत जाती रही थी। नेक-दिल होने की अपेक्षा वह भावुक अधिक थी, और इतनी बडी उम्र मे भी उनमे वही स्कूल के दिनोवाले तौर-तरीके बाकी थे. वह बडे नाज़-नख़रे से अपनी देखभाल करती थी, बहुत जल्दी झुझला पडती थी और अगर उनकी चर्या मे कोई विघ्न डाला जाता था तो उनकी आखो मे आसू तक छलक आते थे, लेकिन जब उनकी सारी इच्छाए पूरी की जाती थी और कोई उनका खडन नही करता था तब उनका व्यवहार अत्यत शालीन और उदार भी हो सकता था। उनका घर शहर के सबसे रुचिकर घरो मे से था। उनके पास काफी दौलत थी, जो उन्हे उत्तराधिकार मे तो उतनी नही मिली थी जितनी कि उनके पति की जमा हुई थी। दोनो बेटिया उनके साथ ही रहती थी, उनका बेटा सेट पीटर्सबर्ग के एक सबसे अच्छे कालेज मे पढता था।

खिडकी के पास मार्या द्मीत्रियेव्ना के साथ जो वृद्ध महिला बैठी थी वह उनकी वही बुआ थी जिनके साथ उन्होने एक ज़माने मे कई साल पोक्रोव्स्कोये के एकात मे बिताये थे। उनका नाम था मार्फा तिमोफेयेव्ना पेस्तोवा। उनकी ख्याति यह थी कि वह स्वतत्र स्वभाव की सनकी वृद्ध महिला थी, जो हर एक के मुह पर खरी बात कह देती थी, और बहुत ही थोडी दौलत के बल पर रईसी का ठाठ-बाट बनाये रह सकती थी। उन्हे कलीतिन से सख्त चिढ थी, और जैसे ही उनकी भतीजी ने उनसे ब्याह किया था वह अपने छोटे-से गाव लौट गयी थी और दस साल तक एक किसान की मामूली झोपडी मे रही थी। मार्या द्मीत्रियेव्ना उनसे कुछ डरती थी। मार्फा तिमोफेयेव्ना छोटी-सी, नुकीली नाकवाली औरत थी, बुढापे मे भी जिनके बाल काले और नज़र तेज़ थी, वह तेज कदमो से चलती थी, तनकर सीधी खडी होती थी और अपनी गूजती हुई आवाज़ मे पचम स्वर मे बहुत तेज और साफ-साफ बोलती थी। वह हमेशा सफेद लैसदार टोपी लगाये रहती थी और सफेद ड्रेसिंग-जैकेट पहने रहती थी।

"बात क्या है?" उन्होने मार्या द्मीत्रियेव्ना से अचानक पूछा। "आहे क्यो भर रही हो, बेटी?"

"अरे, कुछ नही," दूसरी ने जवाब दिया। "कितने सुदर बादल है!"

"तुम्हे इतना दुख उनका है?"

मार्या द्मीत्रियेव्ना ने कोई जवाब नहीं दिया।

"पता नही गेदेओनोव्स्की आ क्यों नही चुकता?" मार्फ़ा तिमोफ़ेयेव्ना ने अपनी बुनाई की सलाइया बडी फुर्ती मे चलाते हुए कहा। (वह बडा-सा ऊनी स्कार्फ़ बुन रही थी।) "वह तुम्हें आकर आहें भरने मे ही मदद देता – या तुम्हें झूठे क़िस्से सुनाता।"

"आप भी हमेशा उनके बारे में कैसी सख्त बात कहती हैं! सेर्गेई पेत्रोविच बहुत भले आदमी हैं।"

"भले!" वृद्ध महिला ने निंदा के भाव से कहा।

"और बेचारे मेरे पति से तो कैसी श्रद्धा थी उन्हें!" मार्या द्मीत्रियेव्ना ने कहा। "आज तक उनकी बात जब भी करते हैं तो दिल उमड आता है!"

"मैं तो समझती हू कि होना ही यही चाहिये! तुम्हारे पति ने मोरी मे से नही निकाला था उसे?" मार्फ़ा तिमोफ़ेयेव्ना ने कहा और उनकी सलाइया और तेजी से चलने लगी।

"वह देखने मे ही ऐसा सीधा लगता है," उन्होंने फिर कहना शुरू किया, "उसके बाल तो सफ़ेद जरूर हैं, लेकिन जैसे ही मुंह खोलता है कोई न कोई झूठ या किसी पर कीचड उछालनेवाली बात ही निकलती है उसमे से। और तिस पर सरकारी नौकर है वह, काउंसिलर का ओहदा है! लेकिन है भी तो गाव के पादरी का ही बेटा!"

"कोई न कोई बुराई तो सभी मे होती है, बुआ, उनकी कमज़ोरी यह है, सच बात तो यह है। सेर्गेई पेत्रोविच का पालन-पोषण नही हुआ ठीक से, मैं मानती हू, वह फ़ासीसी नही बोल पाते; लेकिन हैं बहुत भले आदमी, आप कुछ भी कहे।"

"ज़ाहिर है, हरदम तुम्हारे हाथ जो चूमता रहता है। फ़ासीसी नही बोलता तो क्या हुआ! यो तो, फ़ासीसी मे गप लडाने में मैं भी बहुत होशियार नही हूं। सबसे अच्छा तो यही होता कि वह कोई भाषा न बोलता – तब झूठ तो न बोलता। लो, वह आ गया – शैतान की चर्चा करो," मार्फ़ा तिमोफ़ेयेव्ना ने सड़क की ओर देखते हुए कहा। "वह रहा तुम्हारा भला आदमी, चला आ रहा है अकडता हुआ। दुबला-पतला और लंबा सारस जैसा!"

मार्या द्मीत्रियेव्ना ने अपने बाल ठीक किये। मार्फ़ा तिमोफ़ेयेव्ना ने व्यंग से उन्हें देखा।

"क्या है, बेटी, अरे, सफेद बाल? वह पलाश्का तुम्हारी, उसे तो फटकारा जाना चाहिये। सचमुच, न जाने कहां रहती हैं उसकी नज़रें ?"

"सचमुच, बुआ, आप तो हमेशा " मार्या द्मीत्रियेव्ना ने अपनी कुर्सी के हत्थे पर उगलिया बजाते हुए चिढ़कर कहा।

"सेर्गेई पेत्रोविच गेदेओनोव्स्की," गुलाबी गालोंवाले एक नौकर ने दरवाजे में से सिर निकालकर महीन आवाज में कहा।

२

एक लबा-सा आदमी अदर आया। उसने साफ-सुथरा फ्राक-कोट, कुछ ऊचा-सा पतलून, सुरमई रग के स्वेड के दस्ताने पहन रखे थे और दोहरा गुलूबद लगा रखा था – ऊपर काला और नीचे सफेद। सुदर चेहरे और अच्छी तरह कघी किये हुए कनपटी पर के बालों से लेकर चपटी एड़ीवाले और घुटनों तक के मुलायम जूतों तक उसकी पूरी चाल-ढाल में शालीनता और प्रतिष्ठा टपकती थी। पहले उसने झुककर घर की मालकिन का अभिवादन किया, फिर मार्फा तिमोफेयेव्ना का, और धीरे-धीरे अपने दस्ताने उतारते हुए वह मार्या द्मीत्रियेव्ना के हाथ पर झुका। बड़े आदर-भाव से उसे दो बार चूमकर वह सावधानी से आराम-कुर्सी पर बैठ गया और अपनी उगलियों के सिरों को आपस में रगड़ते हुए मुस्कराकर बोला

"और येलिज़ावेता मिखाइलोव्ना तो बिल्कुल ठीक हैं न?"

"जी हा," मार्या द्मीत्रियेव्ना ने जवाब दिया, "वह बाग में है।"

"और येलेना मिखाइलोव्ना?"

"लेना भी बाग में है। कोई नयी बात हुई है क्या?"

"हुई तो है," आगतुक ने धीरे-धीरे आखे झपकाते हुए और अपने होंठ भींचकर जवाब दिया। "हू! कुछ खबर है तो, और सो भी बड़ी ही हैरत की खबर है। लाव्रेत्स्की, फ्योदोर इवानिच, यहा है।"

"फेद्या!" मार्फा तिमोफेयेव्ना ने चिल्लाकर कहा। "सच-सच बताना, भले आदमी, तुम अपने मन से गढ़ तो नहीं रहे हो?"

"अरे, बिल्कुल नहीं, मैंने उन्हें अपनी आखों से देखा है।"

"उससे तो कुछ साबित नही होता।"

"देखने मे बहुत स्वस्थ लग रहे थे," गेदेओनोव्स्की इस तरह कहता रहा जैसे उसने मार्फ़ा तिमोफ़ेयेव्ना की बात सुनी ही न हो। "उनके कधे और चौडे हो गये हैं और गालों पर कुछ लाली आ गयी है।"

"देखने मे बहुत स्वस्थ लग रहा था," मार्या द्मीत्रियेव्ना ने धीरे-धीरे दोहराया। "समझ में नही आता, स्वस्थ दिखायी देने की कोई वजह तो है नही।"

"जी हा, सचमुच," गेदेओनोव्स्की ने बात का सिलसिला पकडते हुए कहा। "उनकी जगह कोई दूसरा होता तो वह समाज मे अपना मुह दिखाने से पहले कई बार सोचता।"

"आखिर क्यो?" मार्फ़ा तिमोफ़ेयेव्ना बीच मे बोल पडी। "यह सरासर बकवास है। वह आदमी अपने घर आया है – और कहा जाता? अरे, उसका कोई कसूर होता तो मेरी समझ मे भी आता!"

"जब भी किसी की बीवी कोई बुरा काम करती है तो, मादाम, मेरी बात मानिये, कसूर हमेशा शौहर का होता है।"

"तुम यह बात इसलिए कह सकते हो कि तुमने कभी शादी नही की।"

गेदेओनोव्स्की मजबूरन मुस्करा दिया।

"अगर आप इजाजत दे तो क्या मैं मालूम कर सकता हू," उसने थोडी देर चुप रहने के बाद पूछा, "यह खूबसूरत स्कार्फ़ किसके लिए बुना जा रहा है?"

मार्फ़ा तिमोफ़ेयेव्ना ने तेजी से उस पर एक नजर डाली।

"यह एक ऐसे आदमी के लिए है जो कभी गप नही हाकता, जो ढोंगी नही है और जो झूठ नही बोलता, अगर इस दुनिया मे ऐसा कोई आदमी हो तो। मैं फेद्या को अच्छी तरह जानती हू, उसका बस यही एक कसूर था कि उसने अपनी बीवी को लाड कर-करके बिगाड दिया था। मुहब्बत की शादी जो की थी; इनसे कभी कोई अच्छा नतीजा नही निकलता इन मुहब्बत की शादियों का," बूढ़ी महिला ने मार्या द्मीत्रियेव्ना को कनखियों से देखकर उठते हुए कहा। "और अब तुम जिसकी चाहो धज्जिया बिखेर सकते हो, चाहे मेरी भी [illegible] मैं जा रही हू, मैं तुम्हारे रास्ते मे बाधक"

नहीं बनूंगी।' और यह कहकर मार्फा तिमोफेयेव्ना बाहर निकल गयी।

'इसका हमेशा यही रहता है' मार्या द्मीत्रियेव्ना ने अपनी बुआ पर नजर जमाये रहकर कहा। "हमेशा!"

आपकी बुआजी बूढ़ी होती जा रही है, बात बस यह है' कोई चारा भी नहीं है!' गेदेओनोव्स्की ने कहा। 'वह ढोंगी होने के बारे में कुछ कह रही थीं। लेकिन आजकल कौन है जो नहीं होता ऐसा? आजकल का ज़माना ही ऐसा है। मेरा एक दोस्त, जो बहुत लायक आदमी है और मैं आपको बता दूं उसकी हैसियत भी कुछ ऐसी मामूली नहीं है वहा करता था कि आजकल तो ढोंग किये बिना मुर्गी भी एक दाना नहीं चुग सकती – वह उसे हासिल करने के लिए बगल की ओर सरककर चलती है। लेकिन जब मैं आपको देखता हू तो मुझे आपमे फरिश्ते की रूह दिखायी देती है, अगर आप मुझे इजाजत दे तो मैं आपका यह छोटा-सा गोरा-गोरा हाथ चूम लू।

मार्या द्मीत्रियेव्ना धीरे से मुस्करायी और उन्होंने छोटी उगली बाहर की ओर फैलाकर अपना नाजुक हाथ आगे बढ़ा दिया। गेदेओनोव्स्की ने अपने होंठ उनके हाथ पर रख दिये। अपनी कुर्सी उसके और पास लाते हुए वह थोड़ा-सा आगे को झुक आयीं और उन्होंने दबे स्वर मे पूछा

"तो आपने उसे देखा है? वह सचमुच – ठीक-ठाक है – मेरा मतलब है, बिल्कुल स्वस्थ और खुश?"

"जी हा, बिल्कुल खुश," गेदेओनोव्स्की ने धीमे स्वर मे कहा।

"कुछ यह तो नहीं सुना कि उसकी बीवी कहा है?"

"कुछ दिन पहले तक तो पेरिस मे थी, अब सुनने मे आया है कि इटली चली गयी है।"

"सचमुच भयानक है – फेद्या की हालत, मुझे तो हैरत होती है कि वह यह सब कुछ बर्दाश्त कैसे करता है। जाहिर है, मुसीबत तो किसी पर भी आ सकती है, लेकिन, कहा जा सकता है कि उसकी चर्चा तो सारे योरप मे फैल गयी है।"

गेदेओनोव्स्की ने आह भरी।

"जी हा, जी हा, सचमुच। बात यह है, सुना है कि उसके सबध कलाकारो और पियानो बजानेवालो के साथ – जहा तक मैं समझता हू, समाज के शेर कहा जाता है इन लोगों को – और तरह-

तरह के अजीब लोगों के साथ है। वह बिल्कुल बेढंगा है ।"

"मुझे बेहद अफसोस है," मार्या दीमित्रियेव्ना ने कहा। "बहरहाल
वह है तो हमारे परिवार का ही एक आदमी – सेर्गेई पेत्रोविच, ब
यह है कि वह मेरा दूर का रिश्तेदार है।"

"मालूम है मुझे। आपके परिवार से संबंध रखनेवाली सारी बा
मुझे मालूम रहती है। मेरा ख्याल तो यही है।"

"वह हम लोगों से मिलने आयेगा? आपका क्या ख्याल है?"

"मैं तो समझता हू कि आयेंगे, हालांकि मैंने सुना है कि व
अपने गाववाले घर जाना चाहते हैं।"

मार्या दीमित्रियेव्ना ने अपनी नजरें आकाश की ओर उठायी।

"ओह, सेर्गेई पेत्रोविच, सेर्गेई पेत्रोविच, जब मैं सोचती हू, –हृ
औरतों को भी कितना फूक-फूककर कदम रखना पड़ता है!"

"सब औरतें एक जैसी नहीं होतीं, मार्या दीमित्रियेव्ना। बदकिस्म
से कुछ औरतें होती हैं ऐसी – जिन्हें चचल कहते हैं और इसमें उ
का भी कुछ हाथ होता है, और फिर बचपन में उनका लालन-पाल
भी ठीक से नहीं होता।" (सेर्गेई पेत्रोविच जेब में से नीला चारखानेदा
रूमाल निकालकर उसकी तहें खोलने लगा।) "ऐसी औरतें मिल
हैं, जी हा, मिलती हैं।" (सेर्गेई पेत्रोविच ने बारी-बारी से दो
आखों को अपने रूमाल के कोने से पोछा।) "लेकिन, आम तौर पर
अगर सच पूछिये तो, मतलब यह है कि होती हैं. शहर में कित
धूल है," गेदेओनोव्स्की ने अपनी बात खत्म करते हुए कहा।

"मम्मी, मम्मी," ग्यारह साल की एक छोटी-सी सुंदर लड़की
तीर की तरह कमरे में आते हुए चिल्लाकर कहा, "व्लादीमि
निकोलाइच घोड़े पर बैठे हुए आ रहे हैं!"

मार्या दीमित्रियेव्ना उठ खड़ी हुई; सेर्गेई पेत्रोविच भी उठ ख
हुआ और उसका अभिवादन करने को झुका। "येलेना मिखाइलोव्ना
मेरी शुभ कामनाएं," उसने कहा और अपनी लबी सीधी नाक छिनक
के लिए शिष्टता के नाते मुड़कर एक कोने में चला गया।

"कैसा बढ़िया घोड़ा है उनका!" छोटी बच्ची कहती रही
"वह अभी छोटे फाटक के पास थे और उन्होंने लीज़ा और मुझ
कहा कि वह घूमकर बरसाती की तरफ आ रहे हैं।"

घोड़े की टापों की आहट सुनायी दी, और लाखी रंग के खूबसूर

र बैठा हुआ एक मजीला आदमी सडक पर दिखायी दिया और
खिड़की के सामने आकर रुक गया।

३

कहिये, कैसी हैं आप, मार्या दीत्रियेव्ना। " घुड़सवार ने अपने
हुए सुखद स्वर में ज़ोर से कहा। "मेरी यह नयी खरीदारी कैसी
गयी ? "

र्या दीत्रियेव्ना आगे बढ़कर खिड़की के पास आ गयी।
कहिये, आप कैसे हैं, वोल्देमार! वाह, क्या बढ़िया घोड़ा है।
रीदा आपने ? "

ौज के ठेकेदार से खरीदा है   बहुत पैसे ऐंठ लिये बदमाश

म क्या है इसका ? "
र्नैंड   बहुत बेहूदा नाम है। मैं इसे बदलना चाहता
bien, eh bien mon garçon...* कैसा बेचैन जानवर है! "
पुचकारा, उछला और अपना थूथन, जिसमें से झाग निकल
ऊपर-नीचे हिलाने लगा।
ना, थपथपाओ इसे। डरो नहीं।"
बच्ची ने अपना हाथ खिड़की के बाहर निकाला, लेकिन
चानक चमककर पिछले पैरों पर खड़ा हो गया और एक ओर
घुड़सवार ने बिल्कुल धीरज न खोते हुए चाबुक उसकी गर्दन
र मारी, और उसके विरोध के बावजूद उसकी पसलियों में
र उसे खिड़की के पास वापस ले आया।
nez garde, prenez garde."*   मार्या दीत्रियेव्ना बार-
ी रही।
, थपथपाओ इसे," घुड़सवार ने कहा। "मैं इसे मनमानी
हूंगा।"
ने अपना हाथ फिर बाहर निकाला और डरते-डरते उसने

* अच्छा, ऐसा है? (फ्रांसीसी)
* ... (फ्रांसीसी)

"दरअसल, वह है बहुत ही सीधा, लेकिन मै आपको बताऊ कि मैं सचमुच डरता किस चीज से हू मुझे डर लगता है सेर्गेई पेत्रोविच के साथ ह्विस्ट खेलने से, कल वेलेनीत्सिन के यहा इसने मुझे हराकर मेरा दीवाला निकाल दिया।"

गेदेओनोव्स्की खुशामदी ढग से खोखली हसी हस दिया, वह सेट पीटर्सबर्ग से आये हुए इस प्रतिभाशाली नौजवान अफसर की नजरो मे चढना चाहता था, जो गवर्नर का चहेता था। मार्या द्मीत्रियेव्ना के साथ अपनी बातचीत के दौरान वह अक्सर पाशिन के सराहनीय गुणो की चर्चा किया करता था। "सच तो यह है कि उसकी तारीफ किये बिना कोई रह कैसे सकता है," वह कहा करता था। "यह नौजवान ऊचे से ऊचे क्षेत्रो मे कामयाबी हासिल कर रहा है, वह बेमिसाल अफसर है और अकड तो उसमे जरा भी नही है। सच तो यह है कि सेट पीटर्सबर्ग मे भी पाशिन को एक योग्य अफसर समझा जाता था, उसकी काम करने की क्षमता सराहनीय थी वह अपने काम का उल्लेख सहज भाव से करता था, जैसा कि उस आदमी को शोभा देता है जो अपनी मेहनत को बहुत महत्त्व नही देता, लेकिन वह एक कार्यकुशल प्रशासक" था। प्रधान शासक इस प्रकार के अधीनस्थ प्रशासको को बहुत पसद करते है उसे स्वय इस बात मे कोई सदेह नही था कि अगर वह चाहे तो कुछ समय बाद उन्नति करते-करते मत्री के पद पर पहुच जायेगा।

"आप कहते है, जनाब कि मैने आपको हराकर आपका दीवाला निकाल दिया " गेदेओनोव्स्की ने कहा, लेकिन उस दिन मुझसे बारह रूबल किसने जीते थे? और फिर उस बार

'अरे, दुष्ट आदमी पाशिन ने अनुग्रहपूर्ण लेकिन साथ ही तिरस्कार-भरी लापरवाही के स्वर मे कहा, और उसकी ओर से मुह फेरकर लीजा के पास चला गया।

"मुझे 'ओबेरोन' का ओवर्चर यहा कही नही मिला " उसने बातचीत का सिलसिला शुरू करते हुए कहा। 'बेलेनीत्सिना महज डीग मार रही थी जब उसने कहा था कि उनके पास सारा क्लासिकी सगीत है – उनके पास पोल्का और वाल्ट्ज की धुनो के अलावा दरअसल कुछ भी नही है, लेकिन मैने मास्को लिखा है और एक हफ्ते मे वह ओवर्चर आपको मिल जायेगा। और हा ", वह कहता रहा, "मैने कल

गह नत गीत को पुन तैयार की है, बोल भी मेरे ही हैं।
मालूम नहीं कैसा बना है। येवनीस्मिना का तो ध्यान था
चीज है लेकिन उसको राय का ज्यादा मूल्य नहीं है। मैं जानना
है कि आपको क्या राय है उसके बारे में। लेकिन, कोई बात नहीं
कभी सही

फिर कभी क्यों ? " मार्या दोमितेव्ना बीच में बोल पड़ी।
क्यों नहीं ? "

'जैसी आपकी मर्ज़ी, ' पानिन ने मिठास-भरी घिनौ हुई मुस्का
के साथ कहा जो उसके चेहरे में उसी तरह अचानक ग़ायब हो
गयी जिस तरह अचानक आयी थी। घुटने से स्टूल आगे सरकाकर
पियानो के सामने बैठ गया, और कुछ सुरों को छेड़ने के बाद अ
शब्दों का उच्चारण साफ़-साफ़ करते हुए गाने लगा

दूर गगन की ऊंचाई पर
बादल ओट में चन्दा झांके,
नीचे घाटी में
बेद के सोने पेड़ों पर
जगमग अपनी ज्योति बिखेरे
बैठ गगन सिंहासन पर
अपनी जादू की किरणों से
वह शासन करता
सागर की खारी-खारी लहरों पर।
प्रिये, तुम हो मेरा चन्दा,
जो मेरे मन-सागर में ज्वार उठाता –
तूफ़ान उठाता
उसके छोरहीन जल-विस्तारों पर –
सागरतट से टकराता
ज्वार खुशी का, दुख का भाटा,
यह सब कुछ होता है किसके मौन इशारों पर ?
तुम बिन तड़पे मेरा मन,
खुशी से दुखड़ा रोवे,
प्यार की ज्वाला धधके मन में,
पर तू है शान्त,
व्यथा न मेरी जाने,
जैसे चन्दा दूर गगन में।

दूसरा छद पाशिन ने खास तौर पर जोर देकर और भावना के साथ गाया, उसके साथ की गर्जन-भरी धुन में लहरों की ध्वनि सुनायी देती थी। ये बोल गाने के बाद कि "प्यार की ज्वाला धधके मन मे" उसने धीरे से आह भरी, अपनी नज़रे झुका ली और अपनी आवाज़ गिराकर मध्यम स्वर पर ले आया। जब उसने गाना समाप्त किया तो लीज़ा ने धुन की तारीफ़ की, मार्या द्मीत्रियेव्ना ने कहा कि गीत "बहुत सुदर" था और गेदेओनोव्स्की तो यह कहकर उछल पड़ा कि "लाजवाब! धुन और बोल दोनो ही लाजवाब हैं!" लेना बालोचित श्रद्धा के भाव से गानेवाले को एकटक देखती रही। साराश यह कि वहा पर उपस्थित सभी लोग इस नौजवान कलाकार की रचना मे बहुत प्रसन्न हुए, लेकिन ड्योढ़ी मे एक बूढ़ा आदमी खड़ा था जो स्पष्टत अभी-अभी वहा पहुचा था, और उसके उदास चेहरे और उसके कधो की मुद्रा मे पता यही चलता था कि पाशिन के गीत मे, हालाकि वह बहुत सुदर था, उस बूढ़े को कोई खुशी नही हुई थी। एक मोटे रूमाल से अपने जूतो पर की धूल झाड़ने के लिए रुककर उस आदमी ने सहसा अपनी आखे सिकोड़ी, चिड़चिड़ेपन से अपना मुह भीचा और अपने झुके हुए शरीर को थोड़ा-सा और झुकाकर उसने ड्राइग-रूम मे प्रवेश किया।

"ओहो! ख्रिस्टोफर फ्योदोरिच, गुड ईवनिग!" पाशिन ने अपनी जगह मे उछलते हुए वहा मौजूद सभी लोगो से पहले उस आदमी का अभिवादन करते हुए कहा। "मुझे पता नही था कि आप यहा है—आपके सामने अपना गाना गाने की मुझे कभी हिम्मत न होती। मैं जानता हू कि आपको हल्का-फुल्का सगीत पसद नही है।"

"मैं सुनता ही नही," नवागतुक ने बहुत बुरी रूसी मे जवाब दिया, और झुककर वहा मौजूद सभी लोगो का अभिवादन करके अटपटा महसूस करते हुए कमरे के बीच मे ठिठककर खड़ा हो गया।

"मोसियो लेम्म, क्या आप लीज़ा को सगीत सिखाने आये है?" मार्या द्मीत्रियेव्ना ने कहा।

"नही, येलिज़ावेता मिखाइलोव्ना को नही, बल्कि येलेना मिखाइलोव्ना को।"

"ओह! बहुत अच्छा। लेनोच्का, लेम्म साहब के साथ ऊपर जाओ।"

५

क्रिस्टोफर थियोडोर गोटलिब लेम्म का जन्म सन् १७८६ में सैक्सनी राज्य के हैमनित्स नगर में निर्धन संगीतकारों के घर हुआ था। उनके पिता फ्रांसीसी तुरही बजाते थे, मां हार्प बजाती थीं। पांच वर्ष की आयु में ही उसने तीन वाद्यों पर अभ्यास करना शुरू किया। आठ वर्ष की आयु में वह अनाथ हो गया और दस वर्ष की आयु में अपनी कला से जीविका कमाने लगा। बहुत समय तक वह घुमक्कड़ों का जीवन बिताता रहा और जहां भी अवसर मिला संगीत बजाता रहा—सरायों में, मेलों में, किसानों की शादियों में और बॉल-नृत्य की महफिलों में, अंततः उसे एक आर्केस्ट्रा में जगह मिल गयी जहां तरक्की करते-करते वह कनडक्टर बन गया। बजाता वह काफी बुरा था, लेकिन संगीत की जानकारी उसे भरपूर थी। अट्ठाईस वर्ष की आयु में वह अपना देश छोड़कर रूस चला आया। उसे एक ठाठ-बाटवाले सज्जन ने बुलवा भेजा था, जिन्हें स्वयं तो संगीत से चिढ़ थी लेकिन जो दिखावे के लिए आर्केस्ट्रा रखते थे। लेम्म आर्केस्ट्रा कनडक्टर की हैसियत से सात वर्ष उनके यहां रहा और जब वहां से विदा हुआ तो उसके पास इतने वर्षों की कमाई के नाम पर कुछ भी नहीं था। उन सज्जन की सारी दौलत बर्बाद हो गयी थी, वह लेम्म को एक हुंडी लिखकर देना चाहते थे लेकिन बाद में उन्होंने दुबारा सोचने पर अपना विचार बदल दिया—मतलब यह कि उन्होंने उसको एक फूटी कौड़ी भी नहीं दी। लेम्म को अपने देश लौट जाने की सलाह दी गयी लेकिन वह रूस से भिखारी बनकर अपने देश वापस नहीं जाना चाहता था उस महान रूस से जिसे कलाकार के स्वप्नों का देश समझा जाता था। उसने यहीं रहकर अपना भाग्य आजमाने का फैसला किया। बेचारा जर्मन बीस साल से अपना भाग्य आजमा रहा था, वह विभिन्न कुलीन घरानों में नौकरी कर चुका था उसने मास्को में भी कोशिश की थी और छोटे प्रांतीय नगरों में भी उसने बहुत कुछ झेला और सहा था, गरीबी देखी थी और मुसीबतों के थपेड़े खाये थे। लेकिन इन सारी मुसीबतों के बीच अपने देश लौटकर जाने का विचार उसके मन में हमेशा बना रहा था, यही विचार उसको सहारा दिये रहा था। लेकिन भाग्य ने उसको यह अंतिम और पहला

गुण कभी सजीव नहीं होने दिया। पचास वर्ष की अ
असमय ही दुर्बल और बूढ़ा होकर वह भटकते हुए
गया और हमेशा यहीं रहा और उसने वह सब छो
उम्मीदें त्याग दीं जिनसे उसको नफ़रत थी। संगीत
तरह अपना पेट पालने भर को थोड़ा-बहुत कमात
सूरत-शक्ल देखने में अच्छी नहीं थी। उसका कद
झुका हुआ था, कंधे टेढ़े-मेढ़े और पेट अंदर को
चपटे पांव और उभरी हुई नसोंवाले लाल हाथों
उंगलियों पर नीलापन लिये हुए सफ़ेद नाखून, उसक
और गाल धंसे हुए थे, उसके होंठ हमेशा कसकर
वह हमेशा ऐंठता और चबाता रहता था और यह बा
बोलने की आदत के साथ मिलकर लगभग बीभत्स
थी। उसके सफ़ेद बालों के गुच्छे उसके पतले माथे पर
रहते थे, उसकी छोटी-छोटी निश्चल आंखें बुझते हुए
सुलगती रहती थी; वह भारी क़दमों से भदभदाता हुआ
हर कदम पर अपनी स्थूल काया को झुलाकर आगे
कुछ मुद्राओं को देखकर पिंजरे में बंद उस उल्लू की
यह महसूस करने पर कि लोग उसे देख रहे हैं, अपनी
संवारने लगता है और अपनी बड़ी-बड़ी, कातर भाव
और उनींदी पीली आंखों से लाचारी से चारों ओर
गहरी, अंदर ही अंदर कुतरनेवाली व्यथा ने निर्धन सं
अमिट छाप डाल दी थी; उसने उसकी शक्ल को,
आकर्षक नहीं थी, विकृत और क्षत-विक्षत कर दिया
लोगों को जो पहली दृष्टि में पड़नेवाली छापों से प्रभ
इस उजड़े हुए इंसान में कोई अच्छाई और ईमानदारी
चीज़ दिखायी देती थी। बाख़ और हैंडेल का प्रशंसक,
उस्ताद, सजीव कल्पना-शक्ति से संपन्न और मस्तिष्क
जो जर्मन जाति की एक विशेषता है, रखनेवाला लेम्म क
जाने? – अपने देश के महान संगीतकारों में स्थान
अगर भाग्य ने उसका साथ दिया होता, लेकिन जन्म के

नसीब नही हुआ था, वह किसी भी मामले को सही ढग से सभाल नही पाता था, उचित लोगो की कृपादृष्टि नही प्राप्त कर पाता था, उचित समय पर गतिशील नही हो पाता था। बहुत समय पहले एक बार उसके एक प्रशसक और मित्र ने, वह भी जर्मन था और गरीब था, उसके दो सोनाटा अपने खर्च से छापे थे, लेकिन पूरा सस्करण सगीत की दुकानो के तहखानो मे ही रखा रहा, वे विस्मृति के गर्त्त मे खो गये, मानो किसी ने रातोरात उन्हे नदी मे फेक दिया हो। लेम्म ने अतत भाग्य के आगे आत्म-समर्पण कर दिया, और उसकी आयु भी अपना प्रभाव डाल रही थी, उसके हाथो की तरह उसका दिमाग भी कठोर और नि.सज्ञ हो गया था। कलीतिन-परिवार के घर से थोडी ही दूर एक छोटे-से घर मे वह अकेले एक बूढी खाना पकानेवाली के साथ रहता, जिसे वह खैरातखाने से छुडाकर लाया था (उसने कभी शादी नही की थी)। वह बहुत पैदल चलता था, और बाइबिल, प्रोटेस्टेट भजनो की एक किताब और श्लेगेल द्वारा शेक्सपियर का अनुवाद पढता था। बहुत समय से उसने कोई सगीत-रचना नही लिखी थी, लेकिन स्पष्टत लीजा, जो उसकी सबसे अच्छी शिष्या थी, उसको अपनी अकर्मण्यता की तद्रा से बाहर निकाल लाने मे सफल हो गयी थी, उसने उसी के लिए उस कैंटाटा की रचना की थी जिसका उल्लेख पाशिन ने किया था। इस कैंटाटा के बोल उसने भजनो की किताब से लिये थे, जिनमे उसने कुछ छद अपने भी जोड दिये थे। यह रचना दो समूह-गानो के लिए बनायी गयी थी—एक समूह-गान सुखी लोगो का और दूसरा दुखी लोगो का, जो अत मे चलकर साथ आ जाते थे और मिलकर गाते थे "दयालु भगवान, अपने पापियो को क्षमा कर दे और हमे बुरे विचारो और माया-मोह से छुटकारा दिला।" मुखपृष्ठ पर बडी मेहनत से सजा-सवारकर ये शब्द लिखे गये थे "केवल सदाचारी ही न्यायप्रिय हैं। एक धार्मिक कैंटाटा। अपनी प्रिय शिष्या, मिस येलिजावेता कलीतिना को उनके अध्यापक और इस सगीत के रचनाकार क्रि० थि० गो० लेम्म द्वारा समर्पित।" "केवल सदाचारी ही न्यायप्रिय हैं" और "येलिजावेता कलीतिना" के शब्दो के चारो ओर किरणो का घेरा बनाया गया था। नीचे इतना और जोड दिया गया था "केवल आपके लिए, für Sie allein." यही कारण था कि उसका चेहरा लाल हो गया था और उसने कनखियो से लीजा को देखा था;

जब पानशिन ने उसके सामने उसके कैदी की चर्चा की थी तो उसको बहुत दुख हुआ था।

६

पानशिन ने यह जोर से और कुछ संकोच के साथ सोनाटा के पहले सुर छेड़े (वह मन्द्र-सप्तक के स्वर बजा रहा था), लेकिन लीज़ा ने बजाना शुरू नहीं किया। पानशिन रुककर उसकी ओर देखने लगा। लीज़ा की आँखों से, जो उस पर टिकी हुई थीं, अप्रसन्नता प्रकट हो रही थी। उसके होंठों पर मुस्कराहट नहीं थी, और उसकी मुखमुद्रा गम्भीर, लगभग उदास थी।

"क्या बात है?" उसने पूछा।

"आपने अपना वचन क्यों नहीं निभाया?" वह बोली। "मैंने आपको क्रिस्टोफ़र फ्योदोरिच का कैंटाटा इस शर्त पर दिखाया था कि आप उनसे उसके बारे में कुछ नहीं कहेंगे।"

"मुझे माफ़ कर दीजिये, येलिज़ावेता मिखाइलोव्ना, बात मेरे मुँह से निकल गयी।"

"आपने उन्हें भी परेशानी में डाल दिया और मुझे भी। अब वह कभी मेरा भी भरोसा नहीं करेंगे।"

"मैं बेबस हो गया था, येलिज़ावेता मिखाइलोव्ना। बचपन से ही मैं किसी जर्मन की सूरत बर्दाश्त नहीं कर पाता, मैं हमेशा उन्हें छेड़ने को तरसता रहा हूँ।"

"आप इस तरह की बात कैसे कह सकते हैं, व्लादीमिर निको-लाइच! यह जर्मन गरीब, अकेला, टूटा हुआ आदमी है—आपको उस पर तरस नहीं आता? क्या उन्हें छेड़ने को आपका जी चाह सकता है?"

पानशिन देखने में लज्जित लग रहा था।

"आप ठीक कहती हैं, येलिज़ावेता मिखाइलोव्ना," उसने कहा। "यह मेरी वही हमेशा की बिना सोचे-समझे बात कह देने की आदत है। नहीं, मेरा विरोध न कीजिये, मैं अपने आपको जानता

मेरा अविवेक मुझे काफ़ी नुकसान पहुँचा चुका है। उसकी वजह

[illegible]

पाशिन रुक गया। वह चाहे जिस विषय पर बात शुरू करे, अंत में अनिवार्य रूप से वह अपने ही बारे में बात करने लगता था और यह काम वह निरुत्तर कर देनेवाली शालीनता से सहज भाव से और सौहार्द से करता था—मानो उसे इसका आभास ही न हो।

"मिसाल के लिए, अपने ही घर को ले लीजिये," पाशिन कहता रहा, "आपकी मा तो मुझसे अच्छा व्यवहार करती हैं, वह हैं ही बहुत नेकदिल, आप तो, आपके बारे में मैं ठीक से नहीं कह सकता कि आप मेरे बारे में क्या सोचती हैं, रही आपकी बुआजी वह तो मुझे बर्दाश्त ही नहीं कर सकतीं। शायद मैंने उन्हें भी अपने किसी अविवेकपूर्ण बेवकूफी-भरे भाषण से नाराज कर दिया होगा। वह मुझे बिल्कुल पसंद नहीं करतीं, आप ही बताइये करती हैं?"

"नहीं," लीजा ने एक क्षण संकोच करने के बाद कहा, "आप उन्हें पसंद नहीं।"

पाशिन ने अपनी उंगलियां बाजे के परदे पर दौड़ायीं, उसके होठों पर मुश्किल से ही नजर आनेवाली व्यंग्यपूर्ण मुस्कराहट खेल रही थी।

"और आप?" उसने कहा। "क्या आप भी मुझे अहंकारी समझती हैं?"

"मैं आपको बहुत थोड़ा जानती हूं," लीजा ने जवाब दिया, "लेकिन मैं आपको अहंकारी नहीं समझती, बल्कि बात इसकी उल्टी ही है, मुझे तो आपका उपकार मानना चाहिये..."

"मैं जानता हूं, मैं जानता हूं कि आप क्या कहने जा रही हैं," पाशिन एक बार फिर बाजे के परदों पर उंगलियां दौड़ाते हुए बीच में बोल उठा, "संगीत-लिपि के लिए, जो किताबें मैंने आपको दीं उनके लिए, आपकी एल्बम को मैं जिन बुरे-बुरे स्केचों से सजाता रहता हूं उनके लिए वगैरह-वगैरह। मैं यह सब कुछ करके भी अहंकारी हो सकता हूं। मैं यह उम्मीद रखने की ढिठाई तो कर ही सकता हूं कि मेरा साथ आपको उबा नहीं देता होगा या आप मुझे बुरा आदमी नहीं समझती होंगी, लेकिन आप शायद फिर भी यह सोचती होंगी कि मैं उन लोगों में से हूं जो—वह क्या मसल है—मजाक की खातिर न अपने दोस्त को बख्शते हैं न अपने बाप को।"

"ऊंचे समाज के सभी लोगों की तरह आप भी खोये-खोये रहते

पाशिन की त्योरियां कुछ चढ़ गयीं।

"छोड़िये भी," उसने कहा, "अब हम लोग मेरी चर्चा और ज़्यादा न ही करें, आइये सोनाटा शुरू करें। लेकिन मैं आपसे एक प्रार्थना करना चाहता हूं," उसने टेक पर रखी हुई संगीत-रचना के पन्नों को ठीक करते हुए इतना और जोड़ दिया, "मेहरबानी करके मेरे बारे में जो चाहिये सोचिये, मुझे अहंकारी भी कहिये–चलिये यह भी माना! लेकिन मुझे ऊंचे समाज का आदमी न कहिये; इस नाम से मुझे नफ़रत है — Anch'io sono pittore. मैं भी कलाकार हूं, बुरा ही सही, और इसे–इस बात को कि मैं बुरा कलाकार हूं–मैं अभी यहीं आपके सामने साबित किये देता हूं। आइये, शुरू करें।"

"हां, चलिये, शुरू करें," लीज़ा ने कहा।

पहला adagio काफ़ी अच्छी तरह निबट गया, हालांकि पाशिन ने कई जगह गलतियां कीं। खुद अपनी रचनाएं और जिन रचनाओं का उसने अभ्यास किया था उन्हें वह काफ़ी अच्छी तरह बजा लेता था, लेकिन स्वर-लिपि को देखकर संगीत पढ़ने में वह बहुत कच्चा था। सोनाटा का दूसरा भाग–जो काफ़ी द्रुत गति का adagio था–बिल्कुल ही चौपट हो गया; बीसवें "बार" पर पहुंचकर पाशिन, जो यों ही दो "बार" पीछे था, बीच में रुक गया और हंसकर उसने अपनी कुर्सी पीछे खिसका ली।

"बेकार है!" उसने हार मानते हुए कहा। "आज मैं नहीं बजा सकता; अच्छा हुआ कि लेम्म ने हम लोगों का बजाते नहीं सुना; उन्हें तो दौरा ही पड़ गया होता।"

लीज़ा उठी, उसने पियानो बंद किया और पाशिन की ओर मुड़ी।

"तो अब क्या करें हम लोग?" उसने पूछा।

"यह सवाल मानो आपके पूछने के लिए ही बनाया गया था! आप कभी एक क्षण को भी बेकार नहीं बैठ सकतीं। चलिये, अगर आपका जी चाहे, जब तक रोशनी है कुछ स्केच ही बना डालें। हो सकता है दूसरी कला की देवी–चित्रकला की देवी–क्या नाम है उसका? याद नहीं आ रहा... शायद वह मुझसे ज़्यादा मुदित हो।

आपकी एल्बम कहा है? अगर मै भूलता नही हू तो मेरा लैंडस्केप अभी अधूरा ही है।"

लीज़ा एल्बम लाने के लिए दूसरे कमरे मे चली गयी, और अकेले रह जाने पर पाशिन ने जेब से कैंब्रिक का रूमाल निकालकर अपने नाखून साफ किये और कुछ आख दबाकर अपने हाथो को देखने लगा। हाथ गोरे-चिट्टे और लाजवाब थे, बाये हाथ के अगूठे पर उसने सोने का चक्करदार छल्ला पहन रखा था। लीज़ा लौटकर आयी, पाशिन ने खिडकी के पास बैठकर एल्बम खोली।

"अच्छा!" वह बोला। "तो आपने मेरे लैंडस्केप की नकल करना भी शुरू कर दिया है—बहुत अच्छा। सचमुच, बहुत ही बढिया है! बस यहा—ज़रा मुझे एक पेंसिल तो देना—परछाइया काफी गहरी नही हैं। यह देखिये।"

इतना कहकर पाशिन ने जल्दी से कई लबी-लबी लकीरे खीच दी। वह हमेशा एक जैसे ही लैंडस्केप बनाता रहता था सामने बडे-बडे बिखरे हुए पेड, पीछे घास के मैदान का एक टुकडा और बिल्कुल पीछे क्षितिज पर टेढे-मेढे पहाड। लीज़ा उसके कधे के ऊपर से लैंडस्केप को देख रही थी।

"आम तौर पर जैसा कि ज़िदगी मे होता है, उसी तरह तस्वीर बनाने मे भी," पाशिन सिर पहले दाहिनी ओर फिर बायी ओर झुकाते हुए अपना मत व्यक्त करने लगा, "सबसे खास बात होती है—सहजता और साहस।"

उसी समय लेम्म ने कमरे मे प्रवेश किया, और बडी औपचारिकता से अभिवादन के लिए झुककर वह चल देने को तैयार हुआ, लेकिन पाशिन ने एल्बम और पेंसिल जल्दी से एक तरफ रखकर उसका रास्ता रोक लिया।

"कहा जा रहे हैं, क्रिस्टोफर फ्योदोरिच? चाय पीने के लिए नही रुकेंगे?"

"मैं घर जाऊगा," लेम्म ने रूखेपन से कहा, "मेरा सिर दुखता है।"

"अरे, छोडिये—रुक भी जाइये। शेक्सपियर पर बाते करेंगे।"

"मेरा सिर दुख रहा है," बूढे ने फिर कहा।

"हम लोगों ने आपके बिना ही बीथोवेन का सोनाटा बजाना शुरू

किया था," पाशिन बड़े प्यार से उसकी कमर में बाह डालकर और बड़ी मिठास से मुस्कराते हुए कहता रहा, "लेकिन हम बिल्कुल ही आगे नही बढ़ पाये। क्या आप यकीन करेंगे, मैं लगातार दो सुर ठीक नहीं बजा पाया।"

"अच्छा होता कि आपने अपना वही गाना फिर गाया होता," लेम्म ने पाशिन का हाथ हटाते हुए दो-टूक जवाब दिया और वहां से चल दिया।

लीज़ा उसके पीछे भागी। बरसाती के पास पहुचकर उसने उसे पकड़ लिया।

"क्रिस्टोफ़र फ्योदोरिच, सुनिये," उसने अहाते के हरी-हरी घास के चप्पे को पार करके उसके साथ फाटक की ओर जाते हुए जर्मन में कहा, "मेरी वजह से आपको तकलीफ़ पहुची है – मेहरबानी करके मुझे माफ़ कर दीजिये।"

लेम्म ने कोई जवाब नही दिया।

"मैने व्लादीमिर निकोलाइच को आपका कैंटाटा दिखाया था, मुझे विश्वास था कि वह उन्हें पसंद आयेगा – और सचमुच वह उन्हें बहुत अच्छा लगता है।"

लेम्म रुक गया।

"वह तो ठीक है," उसने रूसी में कहा और फिर अपनी भाषा में इतना और जोड़ दिया "लेकिन वह कुछ भी नही समझ सकता, इतना आपको दिखायी नही देता? वह ढोंगी कलाप्रेमी है – बस और कुछ नहीं।"

"आप उनके साथ ज्यादती कर रहे है" लीज़ा ने एतराज किया, "वह सब कुछ समझते है और लगभग हर काम खुद कर सकते है।"

"हां, लेकिन वह सारे का सारा घटिया दर्जे का होता है, हल्का माल सस्ता काम। लोग उस काम को भी पसद करते है और उसे भी, और वह खुश हो जाता है – इसलिए सब कुछ अच्छा है। मैं गुस्सा नहीं हूं वह कैंटाटा और मैं – हम दोनों बूढ़े बेवकूफ़ है मुझे थोड़ी-सी शर्मिंदगी है लेकिन वह कोई बात नहीं है।"

"मुझे माफ़ कर दीजिये क्रिस्टोफ़र फ्योदोरिच" लीज़ा ने फिर बुदबुदाकर कहा।

बात नहीं," उसने एक बार फिर रूखी से कहा। "आप
की है लेकिन कोई आपके यहा आ रहा है। अच्छा
आप बहुत अच्छी लड़की है।"
यह कहकर लेम्म ने अपने तेज़ कदम फाटक की ओर बढ़ाये,
होकर एक अजनबी सज्जन अंदर आ रहे थे – स्लेटी रंग
पहने और चौड़ी बगर की तिनकों की हैट लगाये हुए एक
बड़ी शिष्टता से भुककर उसका अभिवादन करते हुए (वह
को हमेशा सलाम करता था सड़क पर जान-पहचानवालों
पर वह मुह फेर लेता था – ऐसा उसका नियम था), लेम्म
से गुज़र गया और चारदीवारी की बाड़ के पीछे गायब
अजनबी उसकी दूर जाती हुई आकृति को आश्चर्य से एकटक
और फिर बड़े ध्यान से लीज़ा को देखते हुए वह सीधा
पास आया।

७

मुझे नहीं पहचानती उसने अपनी हैट उतारते हुए
लेकिन मैंने तुम्हें पहचान लिया हालांकि तुम्हें देखे हुए मुझे
हो गये। उस वक्त तुम बच्ची थी। मैं हू लाव्रेत्स्की। तुम्हारी
है? मैं उनसे मिल सकता हू?"
मां आपसे मिलकर बहुत खुश होगी लीज़ा ने कहा
उन्हें आप की खबर मिल चुकी है।"
तुम्हारा नाम येलिज़ावेता है न?" लाव्रेत्स्की ने बरसाती की
चढ़ते हुए पूछा।
"हां।"
मुझे तुम्हारी अच्छी तरह याद है, उस वक्त भी तुम्हारा चेहरा
जिसे आदमी आसानी से नहीं भूलता, मैं तुम्हारे लिए मिठाई
करता था।
लीज़ा शरमा गयी और मन ही मन सोचने लगी कैसा अजीब
... लाव्रेत्स्की एक क्षण के लिए हाल में ठिठका। लीज़ा बैठक
... में पान्शिन के बोलने और हसने की आवाज़ आ रही थी,
... और गप्पबाज़ों की, जो बाग से टहलकर

लौट आये थे, शहर की कोई गप सुना रहा था और अपने फ़िक़रे पर ज़ोर से हंस रहा था। लाव्रेत्स्की का नाम सुनते ही मार्या द्मीत्रियेव्ना बौखला उठीं, उनके चेहरे का रंग उतर गया और वह उनसे मिलने के लिए आगे बढ़ीं।

"कैसे हैं, भैया," वह बुझी हुई, लगभग रुआंसी आवाज़ में बोलीं। "आपको देखकर मैं बेहद खुश हूं!"

"आप कैसी हैं, मेरी अच्छी," लाव्रेत्स्की ने उनका हाथ मित्रता के भाव से दबाते हुए कहा। "आपके साथ विधाता का व्यवहार कैसा रहा है?"

"बैठिये, बैठिये, फ्योदोर इवानिच। क्या बताऊं, कितनी खुशी है मुझे! सबसे पहले तो आपको अपनी बेटी से मिलाऊं, लीज़ा।..."

"मैंने येलिज़ावेता मिख़ाइलोव्ना से अपना परिचय करा दिया है," लाव्रेत्स्की ने बीच में ही कहा।

"मोसियो पानिन... सेर्गेई पेत्रोविच गेदेओनोव्स्की।... बैठिये, बैठ तो जाइये! तो मैं आपको देख तो रही हूं, मगर सचमुच मुझे अपनी आंखों पर विश्वास नहीं होता! कैसे हैं आप!"

"जैसा देख रही हैं, मैं मज़े में हूं। और आप भी, बहन, नज़र न लगे! आठ साल बाद भी कोई फ़र्क़ नहीं आया आप में।"

"ज़रा सोचिये तो, बहुत दिन हो गये हम लोगों को एक-दूसरे से मिले," मार्या द्मीत्रियेव्ना ने विचारमग्न होकर कहा। "आप अ कहां से रहे हैं? आपने कहां छोड़ा... मतलब यह... मैं कहना चाहती थी," बात कहते-कहते उन्होंने अपने आपको रोक लिया, "मेरा मतलब है, कितने दिन के लिए आप यहां आये हैं?"

"मैं बर्लिन से अभी आया हूं," लाव्रेत्स्की ने जवाब दिया "और कल मैं गांव जा रहा हूं—शायद बहुत दिनों के लिए।"

"लाव्रिकी में ही रहेंगे न?"

"जी नहीं, लाव्रिकी में नहीं। यहां से कोई पच्चीस वेर्स्ता की दूरी पर मेरा एक छोटा-सा गांव है। मेरा इरादा वहीं जाने का है।"

"यह वही जगह है जो आपको ग्लाफ़ीरा पेत्रोव्ना से विरासत में मिला था?"

"बिल्कुल वही।"

"लेकिन प्योदोर इवानिच! लाव्रिकी मे तो आपका इतना अच्छा है!"

लाव्रेत्स्की की त्योरियो पर कुछ बल पड गये।

"जी हा लेकिन उस गाव मे एक छोटा-सा घर है। इस वक्त उससे बिल्कुल सतुष्ट रहूगा। फिलहाल मुझे कुछ और नही चाहिये।"

मार्या द्मीत्रियेव्ना इतना बौखला गयी कि वह अपनी आराम-र्सी पर बिल्कुल सीधी बैठी रह गयी और उन्होने अपने हाथ फैला ये। पाशिन ने उनकी मदद की और वह लाव्रेत्स्की से बाते करने लगा। र्या द्मीत्रियेव्ना की हालत फिर सभल गयी, वह अपनी आराम-कुर्सी र पीछे टेक लगाकर बैठ गयी, बस बीच-बीच मे एकाध शब्द बोल ती थी, साथ ही वह अपने मेहमान को इतना तरस खाकर देख ही थी, इतने भावपूर्ण ढग से आहे भर रही थी और इतनी दुखी कर सिर हिला रही थी कि आखिरकार लाव्रेत्स्की से न रहा गया र उसने काफ़ी सख्ती से पूछा कि उनकी तबियत तो ठीक है।

"भगवान की कृपा से बिल्कुल ठीक हू," मार्या द्मीत्रियेव्ना ने वाब दिया, "आपने पूछा क्यो?"

"यो ही। एक क्षण के लिए मुझे ऐसा लगा कि आप बिल्कुल ठीक नही हैं।"

मार्या द्मीत्रियेव्ना ने ऐसी मुद्रा धारण कर ली जैसे उनकी प्रतिष्ठा को ठेस लगी हो। "ओह, अगर ऐसी बात है," उन्होने सोचा, "तो मै रत्ती-भर चिता नही करूगी ऐसा लगता है, भले आदमी, कि आप बिल्कुल चिकने घडे हैं; आपकी जगह कोई दूसरा होता तो सूखकर काटा हो गया होता, जबकि आपकी तनदुरुस्ती तो फूटी पड रही है।" मार्या द्मीत्रियेव्ना स्वगत शब्दो का प्रयोग करने मे कोई सकोच नही करती थी; प्रकट बोलने मे वह अपने आपको अधिक शिष्टता से व्यक्त करती थी।

लाव्रेत्स्की किस्मत का सताया हुआ तो किसी तरह नही लगता था। उसके लाल रगतवाले ठेठ रूसी चेहरे, चौडे गोरे-चिट्टे माथे, कुछ मोटी-सी नाक और चौडे सुडौल मुह मे अपनी मातृभूमि के स्तेपी के मैदानोवाली जिदादिली और आदिम शक्ति टपकती थी। उसका शरीर तगडा और गठा हुआ था और उसके सुनहरे बाल युवको जैसे घुघराले थे। सिर्फ उसकी आखो से, जो नीली और बाहर को उभरी

हुई और कुछ-कुछ निश्चल थी, विचारशीलता या थकन का मिलता था और उसकी आवाज़ ज़रूरत से ज्यादा सपाट मालूम होती थी।

इसी बीच पाशिन ने लड़खड़ाती हुई बातचीत को जारी रखा। उसने बातचीत का रुख चीनी की सफाई के गुणों की तरफ़ मोड़ दिया, जिसके बारे में उसने अभी हाल ही में फ़्रांसीसी में दो पुस्तिकाएं पढ़ी थी, और वह गंभीर विनम्रता के साथ, लेकिन उनके बारे में एक शब्द भी कहे बिना, उनकी विषय-वस्तु की व्याख्या करने लगा।

"अरे, यह तो अपना फ़ेद्या है!" बग़ल के कमरे में जानेवाले अधखुले दरवाज़े में से अचानक मार्फ़ा तिमोफ़ेयेव्ना की आवाज़ सुनायी दी "फ़ेद्या ही तो है!" और यह कहकर वृद्ध महिला तेज़ी से बैठक में आ गयी। लाव्रेत्स्की ठीक से उठ भी नहीं पाया था कि उन्होंने उसे गले लगा लिया। "ज़रा ठीक से तेरी सूरत तो देखूं," उन्होंने एक कदम पीछे हटते हुए कहा। "अरे, कैसा हट्टा-कट्टा है तू! पहले से कुछ उम्र बढ़ गयी है, लेकिन उससे कोई ख़ास फ़र्क नहीं पड़ा है, सच कहती हूं। अरे, मेरे हाथों को क्यों चूम रहा है—आकर मुझे प्यार कर, भले आदमी, अगर मेरे झुर्रीदार गालों से तुझे कोई नफ़रत न हो। तुझे मेरी याद तो भला क्या आयी होगी—बुआजी ज़िंदा है या मर गयी? अरे, तू तो मेरे हाथों में पैदा हुआ था, शैतान! ख़ैर छोड़ भी इन बातों को, तुझसे मेरे बारे में सोचने की उम्मीद भी कैसे की जा सकती थी! लेकिन बड़ा अच्छा किया तूने जो चला आया। अरे, बेटी," उन्होंने मार्या द्मीत्रियेव्ना की ओर मुड़ते हुए कहा "तुमने इससे कुछ खाने-पीने को भी पूछा भला?"

"मुझे कुछ नहीं चाहिये," लाव्रेत्स्की ने जल्दी से एलान किया।

"कम से कम एक प्याली चाय तो पी लो, बेटा। हे भगवान! न जाने कहां से चला आ रहा है, ईश्वर ही जाने, और किसी ने एक प्याली चाय तक को नहीं पूछा! लीज़ा, जाकर चाय तो बनवा लाओ, जल्दी से! मुझे याद है जब यह छोटा-सा था तो बड़ा पेटू था, और मुझे ताज्जुब नहीं होगा अगर अब भी खाने का शौकीन हो।"

"मेरा सलाम कबूल हो, मार्फ़ा तिमोफ़ेयेव्ना," पाशिन ने बड़े झुककर वृद्ध महिला के पास आकर कहा।

"माफ कीजियेगा, जनाब," मार्फा तिमोफेयेव्ना ने जवाब दिया। "इस सारी हलचल के बीच मैंने आपकी ओर ध्यान ही नही दिया। अब तुम पहले से भी ज्यादा बिल्कुल अपनी मा से मिलने लगे हो," उन्होंने लाव्रेत्स्की की ओर मुडकर फिर अपनी बातचीत का सिलसिला शुरू किया, "बस नाक को छोडकर, वह पहले भी तुम्हारे बाप की सी थी और अब भी तुम्हारे बाप ही की सी है। तो, काफी दिन के लिए आये हो?"

"मैं कल जा रहा हू, आटी।"

"कहा जा रहे हो?"

"वसील्येव्स्कोये मे अपने घर।"

"कल?"

"जी हा, कल ही।"

"अच्छा, अगर कल ही जा रहे हो तो कल ही सही। भगवान तुम्हारी रक्षा करे, अपना भला-बुरा सबसे अच्छा तुम जानते हो। मगर जाने से पहले मिलकर जाना!" वृद्ध महिला ने उसका गाल थपथपाया। "मैंने कभी सोचा भी नही था कि तुम्हे फिर कभी देख भी पाऊगी; इसलिए नही कि मैं जल्दी मरनेवाली हू, अरे नही, मैं समझती हू कि अभी कम से कम दस बरस तो और चलूगी ही, हम पेस्तोव-परिवार के लोग है बडी मजबूत हड्डी के लोग, तुम्हारे दादा कहा करते थे कि हम लोगो की दोहरी जिदगी होती है लेकिन भगवान ही जानता है कि तुम परदेस मे जाने कब तक भटकते रहते। हा, मगर तुम्हे देखकर सचमुच जी खुश हो गया, अब भी एक हाथ से दस पूद* बोझ उठा सकते हो, जैसे पहले उठा लेते थे? तुम्हारे बाप ने, हालाकि वह बडे बेतुके आदमी थे—माफ करना मैं उन्हे ऐसा कह रही हू—तुम्हारी पढाई के लिए स्विट्जरलैंड का वह मास्टर रखकर बडा अच्छा किया, याद है तुम लोगो की जो मुक्केबाजी हुआ करती थी, जिमनास्टिक कहते थे न उसे? मैं भी अजीब हू, बकबक किये चली जा रही हू, और मिस्टर पानीन की बहस मे सिर्फ रोडा अटका रही हू" (वह उसे पानिन कभी नही कहती थी, जो सही उच्चारण था उसके नाम का)। "मगर हम लोग चाय

* रूसी वजन, जो १६ किलोग्राम के बराबर है।—स०

हा बडी स्वादिष्ट क्रीम है, वैसी नही जैसी तुम्हारे लदनी और
मिलती है। आओ, चलो, और तुम, फ़ेद्या बेटे, मुझे अपनी
सहारा तो देना। नजर न लगे, कैसी तगड़ी बाह है! तुम
थ गिरने-गिराने का कोई डर नही है।"

सब लोग उठकर बाहर चबूतरे पर चले गये, बस गेदेओनोव्स्
ो छोडकर जो चुपके से खिसक गया था। घर की मालकिन,
ौर मार्फ़ा तिमोफ़ेयेव्ना के साथ लाव्रेत्स्की की पूरी बातचीत के दौ
ह एक कोने मे बैठा बहुत ध्यान से सुनते हुए और बच्चों जैसे कौ
साथ मुह खोले आखे झपकाता रहा था; अब सारे शहर मे
ानेवाले की खबर फैलाने वह जल्दी-जल्दी वहा से चला जा रहा था

इसी रात ग्यारह बजे मादाम कलीतिना के घर मे यह
ई। नीचे, बैठके के चौखट पर, व्लादीमिर निकोलाइच,
अवसर का लाभ उठाकर, लीज़ा से विदा ले रहा था और
हाथ अपने हाथ मे थामे उससे कह रहा था: "आप जानती है
चीज मुझे यहा खीच लाती है; आप जानती ही है कि मै बार
आपके घर क्यो आता रहता हू, उसकी चर्चा करने की ज़रूर
क्या है, जब हर चीज इतनी साफ है?" लीज़ा ने कोई जवाब
दिया, वह मुस्करायी भी नही, लेकिन अपनी भौ कुछ ऊपर उ-
फ़र्श को घूरती रही और लजाती रही, और उसने अपना हाथ भी
नही खीचा, इसी बीच ऊपर मार्फ़ा तिमोफ़ेयेव्ना के कमरे मे धुधली
पुरानी देव-प्रतिमाओं के सामने लटकते हुए तेल के लैप की रोशनी
लाव्रेत्स्की एक आराम-कुर्सी पर बैठा था, अपनी कुहनिया उसने अपने
घुटनों पर टिका रखी थी और अपना मुह दोनों हाथों मे छिपा रखा
था, बूढ़ मंहिला चुपचाप सामने खड़ी कभी-कभी उसके बालों पर हाथ
फेर रही थी। वह घर की मालकिन से विदा लेने के बाद घंटे भर
से ज़्यादा से उसके साथ था, वह अपनी पुरानी हमदर्द से शायद ही
कुछ बोला था और उन्होंने भी उससे कोई सवाल नही पूछा था।
सच तो यह है कि बात करने को था भी क्या, सवाल पूछने की ज़रूरत
ही क्या थी? वह सब कुछ समझती थी, और उसके दुख हुए दिल

नी भी कोमल सहानुभूति की जरूरत हो सकती थी वह उन्होंने
।

८

ोदोर इवानिच लाव्रेत्स्की (हम पाठकों से अपनी कहानी का
ड़ी देर के लिए भंग करने की क्षमा चाहते है) पुराने शरीफ
का था। लाव्रेत्स्की-परिवार के प्रथम पूर्वज वसीली त्योम्नी*
नकाल मे प्रशा से आये थे और उन्हे ब्येजेत्स्क-वेर्ख मे ४ किलो-
के इलाके मे फैली हुई जमीन बख्श दी गयी थी। उनके कई
ने दूर-दूर के प्रांतो मे कितने ही राजाओ और सामंतो की
ी और विभिन्न पदो पर रहे, लेकिन उनमे से कोई भी न
खिया-पटवारी से ऊचे पद पर पहुच सका और न ही बहुत धन-
न सका। सबसे धनी और उल्लेखनीय लाव्रेत्स्की थे फ्योदोर
च के परदादा अंद्रेई, जो एक क्रूर, अक्खड, चालाक और काइया
थे। उनकी बेरहमी, उनके तूफानी स्वभाव, अनाप-शनाप
र्चो और कभी न बुझनेवाली दौलत की प्यास के किस्से आज
शहूर हैं। वह बहुत भारी-भरकम डीलडौल और लंबे कद के
थे, रंग कुछ सावला था और दाढी नही रखते थे, कुछ तुतला-
लते थे और हर वक्त वह ऊघते हुए लगते थे, लेकिन उनकी
 जितनी ज्यादा धीमी होती थी उनके आस-पास के लोग उतना
यादा कापते थे। उन्होंने जिस औरत को अपनी बीवी बनाया
ह उनकी टक्कर की थी। बाहर को निकली पडती आखे, बाज
ोच की तरह नाक, और गोल पीला चेहरा था उसका, पैदाइश
 बंजारन थी, बेहद लडाकी और हमेशा बदला लेने को तैयार,
कभी अपने पति के सामने किसी भी मामले मे सिर नही झुकाया,
 उसे लगभग मार ही डाला था, लेकिन अपने पति के साथ
और बिल्ली जैसी जिंदगी बिताने के बावजूद वह उनके मरने के
बहुत दिन तक जिंदा नही रही। अंद्रेई के बेटे प्योत्र – फ्योदोर
ादा – और उसके बाप मे कोई भी समानता नही थी

अंधा वासिल (१४१५–१४६२) – मास्को के राजा थे। – सं०

वह [illegible] का एक सीधा-सादा ज़मींदार था, काफ़ी असंतुलित, बातूनी और आलसी अक्सर लेकिन स्वभाव का बुरा नहीं, मेहमानों को पेट भरकर खिलाने-पिलानेवाला और कुत्ते साथ लेकर शिकार करने का शौक़ीन। वह तीस साल से ऊपर का था जब उसे उत्तराधिकार में बहुत बड़ी भू-सम्पत्ति बहुत बढ़िया हालत में दो हज़ार भू-दासों के साथ मिली, लेकिन उसने जल्दी ही उन सबको तितर-बितर कर दिया, ज़मीन-जायदाद का कुछ हिस्सा बेच दिया और अपने नौकरों-चाकरों को बिगाड़ दिया। हर तरह के निचले दर्जे के लोग, रोज़ के उठने-बैठनेवाले भी और अजनबी भी, उसकी लंबी-चौड़ी, आरामदेह और अव्यवस्थित हवेली में तिलचट्टों की तरह झुंड बांधकर आते रहते थे, यह सारी बिरादरी जो भी मिल जाता था पेट भरकर खाती थी, शराब पी-पीकर धुत हो जाती थी, और जो भी चीज़ हाथ लग जाती थी उसे उठा ले जाती थी, और अपने मेज़बान की तारीफ़ों के पुल बांध देती थी और उसे दुआएं देती थी; और उनका मेज़बान जब संकट में फंस जाता था तो उन्हें खुशामदी टट्टू और बदमाश कहता था, लेकिन उनके बिना उसे जीवन नीरस लगता था। प्योत्र अंद्रेइच की बीवी बहुत सीधी और नेक थी, जिसे वह अपने बाप की पसंद से और उन्हीं के आदेश से पड़ोस के एक परिवार से ब्याहकर लाया था; उसका नाम था आन्ना पाव्लोव्ना। वह कभी किसी बात में दख़ल नहीं देती थी, हंसी-ख़ुशी सारे मेहमानों की ख़ातिर करती थी, और ख़ुद बड़ी ख़ुशी से दूसरों के यहां मिलने जाती थी, हालांकि उसका कहना था कि पाउडर का शृंगार एक लानत थी। बुढ़ापे में वह कहा करती थी, "सिर पर नम्दे का एक खोल चढ़ा दिया जाता था, सारे बाल कंघी से ऊपर चढ़ा दिये जाते थे, उस पर चिकनाई चुपड़ी जाती थी, फिर आटा मढ़ दिया जाता था और हर जगह लोहे की पिनें लगा दी जाती थीं – किसी क़ीमत पर उसे धोकर साफ़ नहीं किया जा सकता था, लेकिन पाउडर का शृंगार किये बिना कोई किसी के यहां मिलने भी नहीं जा सकता था – लोग इसे अपना अपमान समझते; अरे, लेकिन कैसी मुसीबत थी वह भी!" उसे घुड़दौड़ के तेज़ घोड़े जुती हुई गाड़ी में सवारी करने का शौक़ था, वह दिन-रात ताश खेलने को तैयार रहती थी, लेकिन जब उसका पति ताश की मेज़ के पास आ जाता था तो वह अपना पैसों की हार का हिसाब हाथ से

छिपा लेती थी ; फिर भी अपना सारा दहेज, अपना सारा पैसा उसने अपने पति को ही सौंप दिया था। उससे उसके दो बच्चे हुए थे एक बेटा, इवान, फ्योदोर का बाप, और एक बेटी, ग्लाफीरा। इवान का पालन-पोषण उसके घर पर नही हुआ था, बल्कि वह अपनी एक रईस चाची प्रिंसेस कुबेस्काया के यहा रहा था, उन्होने उसे अपना उत्तराधिकारी बना लिया था (वरना उसका बाप उसे जाने ही न देता)। वह उसे गुड्डे की तरह सजा-बनाकर रखती थी, उसे पढाने के लिए उन्होंने तरह-तरह के मास्टर रख दिये थे और उसकी देखभाल के लिए एक ट्यूटर रख दिया था ; यह ट्यूटर एक फ्रासीसी था और पहले पादरी रह चुका था, वह जा जैक्स रूसो का शिष्य था और उसका नाम था Courtin de Vaucelles. वह बहुत कुटिल, तिकडमी आदमी था, जो परदेस मे आकर यहा बसनेवालो मे, जैसा कि वह कहती थी, प्रवासी का बिल्कुल fine fleur था,* आखिर मे उन्होने लगभग सत्तर साल की चढती जवानी मे इस "fine fleur" से शादी कर ली थी, उनके पास जो कुछ भी था वह सब उन्होने उसके नाम कर दिया था और इसके कुछ ही समय बाद वह रगी-पुती और सेट à la Richelieu** से महकती हुई, हब्शी खिदमतगार लडको, गोद मे खिलाये जानेवाले छोटे-छोटे कुत्तो और शोर मचानेवाले तोतो से घिरी हुई लुई पद्रहवे के जमाने की परपरा के रेशमी पलगपोश से ढके टेढे-मेढे दीवान पर, अपने हाथ मे मीने के काम की एक पेतितो नसवार की डिबिया लिये हुए मर गयी थी, जब वह मरी तब तक उनका पति उन्हे छोडकर जा चुका था – चिकनी-चुपडी बाते करनेवाले मो-सियो कूर्ता ने उनका सारा पैसा समेटकर पेरिस चले जाने मे ही बुद्धिमानी समझी। जब इस अप्रत्याशित दुर्घटना ने (हमारा अभिप्राय प्रिंसेस की मृत्यु से नही बल्कि उनकी शादी से है) इवान को आ दबोचा उस समय वह अपनी आयु के बीसवे वर्ष मे था, उसका अपनी चाची के यहा रहने का मन नही होता था, जहा वह एक धनी उत्तरा-धिकारी से अचानक एक टुकडखोर बन गया था, सेट पीटर्सबर्ग के जिस समाज के बीच वह पला-बढा था उसके दरवाजे उसके लिए

---

* श्रेष्ठतम फूल। (फ्रासीसी)

** रिशेल्ये के ढग का। (फ्रासीसी)

बद हो गये थे, सरकारी नौकरी में कड़ी मेहनत करने और किसी छोटे-से पद की गुमनामी में अपनी ज़िंदगी काट देने के विचार से ही उसे नफ़रत होती थी (यह सम्राट् अलेक्जेंडर के शासनकाल के आरम्भ की बात है). वह गाव में अपने बाप के घर लौट जाने पर मजबूर हो गया। अपना पुराना घर उसे गदा, तुच्छ और कुरूप लगा; इन पिछड़े हुए दूरस्थ इलाकों का उजाड़पन और गदगी क़दम-क़दम पर उसका अपमान करती, उकताहट खाये जाती थी। दूसरी ओर, घर में हर आदमी, उसकी मा को छोड़कर, उसे द्वेष की दृष्टि से देखता था। उसके शहर के तौर-तरीके, उसके फ़ाक-कोट, भालरें-चुन्नटें, उसकी किताबें, उसकी बासुरी, उसकी सुथरेपन की आदतें – इन सब से उसके बाप को खुली नफ़रत अकारण ही नहीं थी, वह अकसर अपने बेटे की शिकायत करता था और उस पर बड़बड़ाता रहता था। वह कहा करता था, "वह यहा की हर चीज़ पर नाक-भौं सिकोड़ता है, खाने के मामले में उसके बड़े नख़रे हैं, वह खाना नही खाता, उसे लोगों की बू से या कमरे की घुटन से चिड़चिड़ाहट होती है, किसी को नशे में धुत देखकर उसे उलझन होती है, और उसके सामने कोई किसी भू-दास को सज़ा देने की भी हिम्मत नहीं कर सकता; सरकारी नौकरी वह करेगा नही – उसका स्वास्थ्य ख़राब है, सुना आपने; छिः, घरघुसना मेहरा कहीं का! और यह सब कुछ बस इसलिए कि उसके दिमाग़ में वाल्टेयर भरा है।" बूढ़े को वाल्टेयर से और उस "विधर्मी" दिदेरो से ख़ास चिढ़ थी, हालांकि उसने उनका लिखा हुआ एक शब्द भी कभी नहीं पढ़ा था, पढना उसका काम ही नहीं था। प्योत्र अंद्रेइच का यह रवैया गलत भी नहीं था दिदेरो और वाल्टेयर, और सच पूछा जाये तो रूसो और रेनाल और हेल्वेशियस और इसी तरह के बहुत-से दूसरे लेखक भी उसके बेटे के दिमाग़ में ठूस-ठूसकर भर दिये गये थे; लेकिन वे बस उसकी खोपड़ी में ही थे। इवान पेत्रोविच के पेंशनयाफ़्ता पादरी और सब कुछ जाननेवाले भूतपूर्व गुरू ने अपने शिष्य के दिमाग़ में अठारहवीं शताब्दी का सारा ज्ञान ज्यों का त्यों ठूस देने के अलावा और कुछ नहीं किया था, और वह उस ज्ञान से ठसाठस भरी हुई अपनी खोपड़ी लिये फिरता रहता था; बस वह सारा ज्ञान उसके अदर था, लेकिन वह उसके ख़ून में नहीं उतरा था, . उसके अंतरतम में प्रवेश किया था, और न ही वह दृढ़ विश्वासों

के रूप में व्यक्त होता था। और क्या आज से पचास साल पहले
के नौजवान से सचमुच दृढ़ विश्वासों का तकाजा किया जा सकता था
जबकि हम आज तक अपने अंदर वैसे विश्वास पैदा नहीं कर पाये
है? उसके बाप के मेहमान भी इवान पेत्रोविच की मौजूदगी में अटपटा
महसूस करते थे वह उनसे कतराता था और वे उससे डरते थे
जहां तक उसकी बहन ग्लाफीरा का सवाल था जो उम्र में उससे
बारह साल बड़ी थी उससे तो उसकी तनिक भी नहीं बनती थी।
यह ग्लाफीरा भी विचित्र जीव थी वह कुरूप कुबड़ी और मरियल
तो थी ही, उसकी आंखें भी फटी-फटी और कठोरता से भरी थी और
उसके पतले-पतले होंठ कसकर उसके मुंह पर भिचे रहते थे सूरत-
शक्ल, आवाज और तीखी भद्दी मुद्राओं के मामले में वह अपनी दादी
से मिलती थी, अड़ेई की बजारन बीवी से। जिद्दी और महत्वाकांक्षी
होने के कारण वह ब्याह की बात भी नहीं सुनना चाहती थी। इवान पेत्रोविच का घर लौट आना उसे अच्छा नहीं लगा, जब तक वह प्रिंसेस कुबेन्स्काया की छत्रछाया में था तब तक ग्लाफीरा को कम से कम अपने बाप की आधी जायदाद मिलने की उम्मीद थी कंजूसी में भी वह अपनी दादी पर पड़ी थी। इसके अलावा, ग्लाफीरा अपने भाई से जलती थी, वह इतना पढ़ा-लिखा था, पेरिस के लहजे में फ्रांसीसी इतनी अच्छी बोलता था, जबकि वह खुद बस "bon jour" और "comment vous portez-vous"* कह पाती थी। यह सच है कि उसके मां-बाप फ्रांसीसी के मामले में बिल्कुल ही कोरे थे लेकिन इससे उसे तसल्ली नहीं होती थी। इवान पेत्रोविच से वक्त काटे नहीं कटता था, वह उकताहट के मारे पागल हुआ जा रहा था। उसने गांव में एक साल ही बिताया था, लेकिन वह एक साल उसे दस के बराबर लगता था। बस अपनी मां के सामने वह अपने मन का बोझ हल्का कर सकता था, वह उसके नीची छतवाले कमरों में घंटों बैठा उस भोली-भाली नेक औरत की निष्कपट बातें सुनता रहता था और अपने पेट भर खा-खाकर ऊंघता झूमता रहता था। आन्ना पाव्लोव्ना की नौकरानियों में स्वच्छ आंखों और नाजुक नाक-नक्शेवाली एक बहुत ही सुंदर लड़की थी, उसका नाम था मलान्या, बड़ी चतुर लजीली लड़की थी —

---

* नमस्ते और आप कैसे हैं। (फ्रांसीसी)

वह नौजवान इवान पेत्रोविच की नज़रों मे चढ़ गयी और वह उनसे प्रेम करने लगा। उसे उसकी सहमी-सहमी चाल, उसके सकुचाये हुए उत्तर, उसकी मधुर आवाज़, उसकी शांत मुस्कान अच्छी लगती थी, दिन-प्रतिदिन वह उसे अधिक आकर्षक लगने लगी थी। उसे भी अपने हृदय की पूरी शक्ति से इवान पेत्रोविच से लगाव हो गया; *वह उनसे उसी तरह प्यार करने लगी जैसे सिर्फ़ रूसी लड़कियां कर सकती हैं* – और इवान के प्रेम के आगे उसने आत्म-समर्पण कर दिया। देहात के ज़मींदार के घर में कोई बात बहुत दिन तक छिपी नहीं रह सकती, जल्दी ही सब लोगों को मलान्या के साथ छोटे मालिक की आशनाई का पता चल गया, इसकी ख़बर आख़िरकार प्योत्र अंद्रेइच के कानों तक पहुंची। कोई और मौक़ा होता तो शायद वह इसे मामूली बात मानकर टाल जाते, लेकिन वह बहुत दिन से मन ही मन अपने बेटे के ख़िलाफ़ भरे बैठे थे और पीटर्सबर्ग के इस लाल-बुझक्कड़ छैला को नीचा दिखाने का मौक़ा पाते ही वह उस पर झपट पड़े।

चारों ओर कुहराम मच गया और एक हंगामा खड़ा हो गया; मलान्या को काठ-कबाड़ की कोठरी में ताले में बंद कर दिया गया; इवान पेत्रोविच को उसके बाप के सामने तलब किया गया। शोर-गुल सुनकर आन्ना पाव्लोव्ना भी भागी-भागी आयी। उसने अपने पति को शांत करने की कोशिश की, लेकिन प्योत्र अंद्रेइच अब कोई दलील सुनने को तैयार नहीं थे। वह अपने बेटे पर बाज़ की तरह टूट पड़े, उसकी बदचलनी, अधार्मिकता और मक्कारी पर उसे ख़ूब लताड़ा, उनके दिल में प्रिंसेस कुबेन्स्काया के ख़िलाफ़ जो गुबार भरा था वह भी लगे हाथ उन्होंने अपने बेटे पर उतार दिया, और उस पर अपमानों की बौछार की। शुरू में तो इवान पेत्रोविच कुछ नहीं बोला और उसने अपने आपको क़ाबू में रखा, लेकिन जब उसके बाप को उसे शर्मनाक सज़ा की धमकी देने की सनक सवार हुई तो उससे न रहा गया। "तो," उसने अपने मन में कहा, "उस विधर्मी दिदेरो को फिर घसीट लाया गया – अच्छी बात है, मैं भी तुम्हें बताऊंगा; ठहर जाओ, मैं भी तुम्हें मज़ा चखा दूंगा।" इसके बाद शांत और दृढ़, हालांकि अंदर ही अंदर कांपते हुए स्वर में इवान पेत्रोविच ने अपने बाप से साफ़-साफ़ कह दिया कि उसे बदचलनी के लिए उनका बुरा-भला कहना बेबुनियाद था; कि अपने अपराध को हालांकि वह उचित ठहराना

नही चाहता था, फिर भी वह उसका प्रायश्चित करने को तैयार था, इसलिए और भी कि वह अपने आपको हर पूर्वाग्रह से परे समझता था; वास्तव मे, वह मलान्या से ब्याह करने को तैयार था। ये शब्द कहकर इवान पेत्रोविच ने पक्के तौर पर अपना लक्ष्य पूरा कर लिया, प्योत्र अद्रेइच को इतना आश्चर्य हुआ कि एक क्षण के लिए वह हक्का-बक्का होकर अपने बेटे को देखते रह गये, लेकिन अगले ही क्षण वह सभल गये, और जिस हालत मे वह थे, गिलहरी की खाल के अस्तर-वाली अपनी जैकेट और पावो मे बिना मोजो के सलीपरे पहने, वह मुक्के बरसाते हुए इवान पेत्रोविच पर टूट पडे, मानो जान-बूझकर उनके बेटे ने उस दिन अपने बाल à la Titus* सवार रखे थे और नया नीला अग्रेजी फ्राक-कोट, छोटे-छोटे फुदनोवाले ऊचे बूट और बकस्किन की कसी हुई सजीली बिरजिस पहन रखी थी। आन्ना पाव्लोव्ना अपनी पूरी आवाज से चीखी और उन्होने दोनो हाथो से अपना मुह ढाप लिया, उनका बेटा तेजी से घर से निकलकर भागता हुआ बाहर आगन मे पहुच गया और तीर जैसी तेजी से सब्जियो की क्यारिया पार करके, पार्क मे से होता हुआ बाहर सडक पर जा निकला, वह जान छोड़कर तब तक भागता रहा जब तक कि उसे पीछा करते हुए अपने बाप के भारी क़दमो की आहट और उनकी हापती हुई चीख-पुकार सुनायी देना बद नही हो गयी। "ठहर जा!" वह फुफकारे। "ठहर जा, बदमाश, नही तो मैं तुझे श्राप दे दूगा।" इवान पेत्रोविच ने जाकर पडोस के एक ज़मीदार के यहा शरण ली, और प्योत्र अद्रेइच थके-हारे पसीने से तर-ब-तर अपने घर लौट गये। हापते हुए ही उन्होने फौरन अपने बेटे को उत्तराधिकार से वचित कर देने और उस पर से अपना आशीर्वाद हटा लेने का एलान कर दिया, उन्होने उसकी सारी मसखरेपन की किताबे जला देने और नौकरानी मलान्या को फौरन दूर के एक गाव भिजवा देने का हुक्म दे दिया। कुछ भले लोगो ने इवान पेत्रोविच का पता लगाकर उसे यह सब कुछ बता दिया। अपमान और क्रोध से तिलमिलाकर उसने अपने बाप से बदला लेने का प्रण किया और उसी रात उसने किसान की उस गाडी को रास्ते मे रोक लिया जिस पर मलान्या को निर्वासन मे भेजा जा रहा

---

* टाइटस के ढग से। (फ्रासीसी)

था, वह उसे उड़ा लाया और अपने साथ घोड़े पर बिठाकर सरपट घोड़ा दौड़ाता हुआ सबसे पास के शहर में जा पहुंचा और वहां उससे शादी कर ली। उसे पैसा पड़ोसी ने दिया, जो एक जिंदादिल पेंशनयाफ़्ता अनुभवी नाविक था, जिसका प्याला कभी खाली नहीं रहता था, लेकिन जिसे हर किस्म के उस काम से बेहद खुशी होती थी जिसे वह "इश्क की जांबाज़ी" कहता था। अगले दिन इवान पेत्रोविच ने प्योत्र अंद्रेइच को बिलकुल दो-टूक और शिष्टतापूर्ण खत लिख दिया और उस गांव की ओर चल पड़ा जहां उसके रिश्ते के भाई द्मीत्री पेस्तोव अपनी बहन मार्फ़ा तिमो-फ़ेयेव्ना के साथ रहते थे, जिन्हें पाठक पहले ही से जानते हैं। उसने उन्हें जो कुछ हुआ था सब बता दिया, नौकरी खोजने के लिए सेंट पीटर्सबर्ग जाने का अपना इरादा उन्हें बताया और उनसे अनुरोध किया कि कम से कम कुछ दिन के लिए वे उसकी पत्नी को अपने यहां रख लें। "पत्नी" शब्द पर वह फूट-फूटकर रोने लगा और अपनी शहर की शिक्षा और दार्शनिक विचारों के बावजूद उसने दीन-हीन भिखारी की तरह बड़ी विनम्रता से घुटने टेक दिये और फ़र्श पर माथा रगड़ने लगा। पेस्तोव-परिवार के लोग कोमल हृदय और दयावान तो थे ही, उन्होंने उसकी प्रार्थना खुशी-खुशी मान ली; वह उनके यहां तीन हफ़्ते रहा और मन ही मन यह उम्मीद करता रहा कि उसके बाप कोई जवाब देंगे, लेकिन कोई जवाब नहीं आया और आ भी क्या सकता था। अपने बेटे की शादी की खबर सुनकर प्योत्र अंद्रेइच ने पलंग पकड़ लिया था और मनाही कर दी थी कि उनके सामने उनके बेटे का नाम तक न लिया जाये; लेकिन उसकी मां ने चोरी से बड़े पादरी से पांच सौ रूबल उधार लेकर अपने बेटे को भिजवा दिये और साथ ही उसकी बीवी के लिए एक छोटी-सी देव-प्रतिमा भिजवा दी; लिखने की तो उसे हिम्मत नहीं पड़ी लेकिन उसने एक दुबले-पतले किसान के हाथ, जो दिन में साठ वेर्स्ता चल सकता था, इवान पेत्रो-विच को ज़बानी यह संदेश भिजवा दिया कि वह बहुत ज़्यादा परेशान न हो, कि भगवान ने चाहा तो सब ठीक-ठाक हो जायेगा और उसका बाप उसे माफ़ कर देगा; कि वह खुद भी यही चाहती थी कि कोई दूसरी लड़की उसकी बहू होती, लेकिन भगवान की चूंकि यही मर्ज़ी थी, इसलिए वह मलान्या सेर्गेयेव्ना को अपना ममता-भरा आशीर्वाद भेजती है। उस दुबले-पतले किसान को उसकी मेहनत के बदले एक

रूबल दिया गया, उसने अपनी नयी मालकिन से मिलने का अनुरोध किया, जिसका वह सयोगवश धर्मपिता भी था, और उसका हाथ चूमकर वहा से चल दिया।

इसी बीच इवान पेत्रोविच निश्चित होकर सेंट पीटर्सबर्ग जा चुका था। भविष्य अनिश्चित था, शायद गरीबी उसकी राह देख रही थी, लेकिन गाव के घृणित जीवन से उसका मन भर गया था, और सबसे बढ़कर, उसने अपने गुरुओं के साथ विश्वासघात नही किया था, वास्तव में उसने रूसो, दिदेरो और la Déclaration des droits de l'homme* को "व्यावहारिक रूप से इस्तेमाल किया था" और उन्हे सही साबित किया था। कर्त्तव्यपालन के आभास से, उल्लास और गर्व से उसका मन भर उठा। अपनी पत्नी का वियोग उसे बहुत नही सताता था, सच तो यह है कि अगर उसे लगातार उसके साथ रहना पडता तो उसे ज्यादा परेशानी होती। वह काम तो हो चुका था, अब दूसरी बातो की ओर ध्यान देना था। वह पहले से अपने मन मे जो माने बैठा था उसके बावजूद सेंट पीटर्सबर्ग में उसकी किस्मत खुल गयी, प्रिंसेस कुबेन्स्काया ने, जिन्हे मोसियो कूर्ती छोडकर जा चुके थे, लेकिन जो अभी तक जिंदा थी, अपने भतीजे की क्षतिपूर्ति करने के लिए अपने सभी दोस्तो से उसकी सिफारिश की और उसे ५,००० रूबल के अलावा– उनके पास अपने पैसे मे से लगभग कुल यही रकम बची थी – लेपीक की घडी भी दी जिस पर क्यूपिडो की एक बदनवार के बीच लेपीक का मोनोग्राम भी खुदा हुआ था। अभी पूरे तीन महीने भी नही बीते थे कि उसे लदन के रूसी दूतावास मे नौकरी मिल गयी और वह बदरगाह से चलनेवाले पहले अग्रेजी जहाज पर विदेश के लिए रवाना हो गया (भाप से चलनेवाले जहाजो की तब तक कल्पना भी नही की गयी थी)। कई महीने बाद उसे पेस्तोव का खत मिला, जिसमे इस नेक आदमी ने इवान पेत्रोविच को बेटा होने की बधाई दी थी, जिसका जन्म पोक्रोव्स्कोये नामक गाव मे २० अगस्त १८०७ को हुआ और जिसका नाम पवित्र शहीद फ्योदोर के सम्मान मे फ्योदोर रख दिया गया था। तबियत बहुत खराब होने के कारण मलान्या सेर्गेयेव्ना ने उसके नीचे केवल कुछ पक्तिया लिख दी थी; लेकिन इन थोडी-सी

---

* मानवाधिकारो की घोषणा। (फ्रासीसी)

पक्तियों पर भी इवान पेत्रोविच को बहुत आश्चर्य हुआ – उसे
मालूम था कि मार्फ़ा तिमोफ़ेयेव्ना ने उसकी बीवी को पढ़ना-लि
सिखा दिया था। लेकिन इवान पेत्रोविच पितृत्व के गर्व की को
भावना का बहुत समय तक शिकार नही रहा; उन दिनों वह
समय की किसी न किसी प्रख्यात फ़ीन या लाइस की दरबारदारी क
रहता था (तब तक क्लासिकी नाम रखने का चलन था); तिल्
की सधि पर उन्ही दिनो हस्ताक्षर हुए थे और दुनिया खुशी से म
होकर नाच उठी थी; हर चीज़ दीवानी रफ़्तार से घूम रही थी
इवान का दिमाग भी काली आखोवाली एक चुलबुली लड़की की ब
से फिर गया था। उसके पास बहुत थोड़ा पैसा था लेकिन ताश के
मे किस्मत उसका साथ देती थी; उसने बहुत-से लोगों से जान-पहच
पैदा की, और हर तरह के मनोरंजन मे भाग लेने लगा – सार
यह कि उसकी ज़िंदगी बडे ठाठ से चल रही थी।

६

अपने बेटे की शादी पर बूढ़े लाव्रेत्स्की के मन मे जो विषाद
वह बहुत दिनो तक खटकता रहा, अगर इवान पेत्रोविच पश्चाताप
भरे मन से छ महीने बाद लौट आता और आकर अपने बाप से इस
की भीख मागता तो शायद वह उसे डाट-फटकारकर और एक-
बार उसे अपनी गाठदार छड़ी जडकर माफ कर देते, लेकिन इवा
पेत्रोविच विदेश मे रहता था और प्रकटत उसने इस बात की ओर
ध्यान भी नही दिया था। जब भी प्योत्र अद्रेइच की बीवी उनका दि
पिघलाने की कोशिश करती तो वह उसे झिड़ककर कहते, "बस कर!
अब कभी ऐसी हिम्मत न करना! कुत्ते का पिल्ला, उसे अपने भाग्य
की सराहना चाहिये कि मेरा कोप उस पर नही गिरा, मेरे बाप ने
तो बदमाश का गला वही अपने हाथो से घोट दिया होता, और यह
करना ठीक भी होता।" इन सब भयानक भाषणो को सुनकर आन्ना
पाव्लोव्ना बस आख बचाकर अपने सीने पर सलीब बनाकर चुप रह
जाती। जहा तक बेटे की बीवी का सवाल था, प्योत्र अद्रेइच ने शुरू
में तो उसने कोई नाता रखने [illegible] और दोनों
[illegible] बहू

जिक्र किया था, उन्होंने कहला भेजा कि वह किसी बहू के बारे में कुछ भी सुनना नहीं चाहते, और इसके साथ ही उन्होंने पेस्तोव को यह चेतावनी देना भी अपना कर्त्तव्य समझा कि भागे हुए भू दासो को अपने यहा शरण देना कानून की दृष्टि मे अपराध था, लेकिन बाद मे जब पोता होने की खबर उनके पास पहुची तो उनका गुस्सा कुछ शात हुआ, उन्होंने खुफिया तौर पर यह पता लगवाने का हुक्म दिया कि बच्चा होने के बाद उसकी मा का क्या हाल है और उसे कुछ पैसा भी भिजवा दिया, लेकिन इस तरह कि उसे मालूम न होने पाये कि उन्होंने भिजवाया है। फेद्या अभी एक साल का भी नही हुआ था कि आन्ना पाव्लोव्ना घातक रोग का शिकार हो गयी। मरने से कुछ दिन पहले अपनी टिमटिमाती हुई आखो मे भय-मिश्रित आसू भरे उसने उस पादरी के सामने, जो मरते समय के सस्कार सपन्न कराने आया था, बिस्तर पर लेटे-लेटे अपने पति से कहा कि वह अपनी बहू से मिलना और उसे विदा करना चाहती है और अपने पोते को आशीर्वाद देना चाहती है। व्यथित बूढे ने उसे आश्वासन देकर शात किया और फौरन खुद अपनी गाडी अपनी बहू को लिवा लाने के लिए भेज दी, और पहली बार उसे आदर से मलान्या सेर्गेयेव्ना कहा। वह अपने बेटे और मार्फा तिमोफेयेव्ना के साथ आयी जो उसे अकेला भेजने की बात सुनना भी नही चाहती थी और जरूरत पडने पर स्वय अपनी भूमिका निभाने का पक्का इरादा कर चुकी थी। मलान्या सेर्गेयेव्ना ने जब प्योत्र अन्द्रेइच के अध्ययन-कक्ष मे प्रवेश किया उस समय डर के मारे वह जिदा से ज्यादा मुर्दा लग रही थी। उसके पीछे-पीछे धाय फेद्या को लिये हुए आयी। प्योत्र अन्द्रेइच ने चुपचाप उसे देखा, वह उनका हाथ चूमने के लिए आगे बढी उसके कापते हुए होठ बडी मुश्किल से अपने आपको ध्वनिहीन चुबन की मुद्रा मे ढाल पाये।

"कहो, अब तो तुम इस घर की बहूरानी हो" आखिरकार उन्होंने अपनी चुप्पी तोडते हुए कहा "कैसी हो? चलो मालकिन के पास चले।"

वह उठे और फेद्या पर झुके बच्चा मुस्करा दिया और उसने अपने पीले-पीले नन्हे हाथ उनकी ओर फैला दिये। इस बात ने बूढे के हृदय को छू लिया।

"आह!" उन्होंने बुदबुदाकर कहा, "बेचारा भोला पंछी! अत
डैडी की ओर से क्षमा मांग रहा है? मैं तुझे नहीं छोड़ूंगा, मेरे लाल।"

आन्ना पाव्लोव्ना के कमरे में कदम रखते ही मलान्या सेर्गेयेव्ना
दरवाजे के पास ही घुटनों के बल गिर पड़ी। आन्ना पाव्लोव्ना ने
उसे पलंग के पास आने का इशारा किया, उसे गले लगाया और उसके
बेटे को आशीर्वाद दिया, फिर क्रूर पीड़ा से विकृत चेहरा अपने पति
की ओर घुमाकर उसने बोलने की कोशिश की.

"मैं जानता हू, मैं जानता हू तुम क्या कहना चाहती हो"
प्योत्र अंद्रेइच ने बुदबुदाकर कहा। "तुम परेशान न हो;
हमारे साथ ही रहेगी और इसकी खातिर मैं इवान को
कर दूगा।"

बड़ी कोशिश करके आन्ना पाव्लोव्ना ने अपने पति का
कसकर पकड़ लिया और उसे उठाकर अपने होंठों तक लायी।
शाम वह इस दुनिया से सिधार गयी।

प्योत्र अंद्रेइच ने अपना वचन निभाया। उन्होंने अपने बेटे
सूचित कर दिया कि मरते समय की उसकी मा की इच्छा को
करने के लिए और बच्चे फ्योदोर की खातिर वह उसे अपना आशीव
वापस दे रहे हैं और मलान्या सेर्गेयेव्ना को अपने घर में रहने की
दे रहे हैं। उसे दुछत्ती के दो कमरे दे दिये गये; उन्होंने उसे अ
सम्मानित मेहमानों से, काने ब्रिगेडियर स्कूरेखीन और उनकी प
से मिलवाया; उसे दो नौकरानी छोकरियां उपहार में दी और भा
दौड़ का काम करने के लिए एक छोकरा भी; मार्फ़ा तिमोफ़ेयेव
ने उससे विदा ली; ग्लाफ़ीरा के प्रति उनके मन में गहरी अरुचि पै
हो गयी थी और एक दिन में उससे तीन बार उनका झगड़
हुआ था।

बेचारी मलान्या को शुरू में तो बड़ी कठिनाई का सामना करन
पड़ा और उसने बहुत अटपटा महसूस किया; लेकिन धीरे-धीरे उसे
इस स्थिति की और अपने ससुर की आदत पड़ती गयी। वह भी उसके
आदी होते गये बल्कि उसे चाहने भी लगे, हालांकि वह शायद ही
कभी उससे बोलते थे और उनके कृपा-भाव में भी अनजाने तिरस्कार
का एक पुट था। मलान्या सेर्गेयेव्ना के लिए सबसे बड़ी मुसीबत थी
उसकी ननद ग्लाफ़ीरा। अपनी मां की ज़िंदगी में ही ग्लाफ़ीरा ने धीरे-

पूरी गृहस्थी पर अपना कब्ज़ा जमा लिया था, हर आदमी,
तक कि उसका बाप भी, उसके इशारे पर नाचता था उससे
बिना किसी को शकर का एक डला भी नही दिया जा सकता था,
मर जाती लेकिन अपनी रत्ती-भर सत्ता भी किसी दूसरी मालकिन
देने को तैयार न होती – और मालकिन भी कैसी! अपने भाई
शादी से उसके दिल मे प्योत्र अद्रेइच से भी गहरी झुझलाहट
, ग्लाफीरा ने अपनी नयी-नयी ब्याही भावज से पाई-पाई बदला
ाने की ठान ली थी, और पहले क्षण से ही मलान्या सेर्गेयेव्ना
की बादी बन गयी थी। सचमुच, मनमौजी और स्वाभिमानी ग्लाफी-
से वह टक्कर लेती भी तो कैसे, वह जो इतनी भीरु, ऐसी लाचार,
ी दब्बू और बीमार थी? कोई दिन ऐसा नही बीतता था जब ग्लाफी-
उसे उसकी पुरानी हैसियत की याद न दिलाती हो और अपनी
कात पहचानने पर उसकी प्रशसा न करती हो। ये उलाहने और
सा के शब्द कितने ही अरुचिकर क्यो न रहे हो, मलान्या सेर्गेयेव्ना
हे खुशी-खुशी बर्दाश्त कर लेती लेकिन फेद्या को उससे छीन
या गया – उसे असली दुःख तो इस बात का था। इस बहाने की आड
कर कि स्वय उसमे उसके पालन-पोषण का भार सभालने की क्षमता
ही है, उसे अपने बच्चे से मिलने भी कभी-कभार ही दिया जाता था,
ाफीरा खुद इस पर कडी नज़र रखती थी, बच्चा पूरी तरह उसी
ी निगरानी मे रहता था। व्यथित होकर मलान्या सेर्गेयेव्ना ने इवान
ोविच के नाम अपने पत्रो मे उससे जल्दी घर लौट आने का अनुरोध
या; प्योत्र अद्रेइच भी अपने बेटे से मिलना चाहते थे, लेकिन जवाब
इवान ने सिर्फ बहाने लिखे, उसके बाप ने उसकी बीवी की सुख-
ुविधा का जो प्रबध कर दिया था और उसे जो पैसा भेजा था उसके
ाए उसने उन्हे धन्यवाद दिया, जल्दी लौटने का वादा किया – लेकिन
ाया नही। सन् १८१२ मे वह आखिरकार घर लौटा। छ साल तक
बिछुडे रहने के बाद भेट होने पर पिछले झगडो के बारे मे एक शब्द
ी कहे बिना बाप और बेटे गले मिले, दरअसल यह गडे मुर्दे उखाडने
ा वक्त था भी नही, सारा रूस दुश्मन के खिलाफ उठ खडा हुआ
ा, और दोनो महसूस कर रहे थे कि उनकी नसो मे रूसी खून बह
हा है। प्योत्र अद्रेइच ने खुद अपने खर्चे से सैनिको की एक पूरी रेजिमेट
े लिए साज-सामान जुटाया। लेकिन लडाई खत्म हो गयी और खतरा

टल गया. इवान पेत्रोविच का जी एक बार फिर उकताने लगा, दूर-दूर की जगहो का लालच उसके मन मे समाया था, वह उस दुनिया की ओर खिचने लगा जिसका वह आदी हो चुका था और जहा उसका असली घर था। मलान्या सेर्गेयेव्ना उसे वहां रोककर नही रख सकती थी, इवान के लिए उसका महत्त्व बहुत ही थोडा था। उसकी विरपोषित आशाओ पर भी पानी फिर गया – उसका पति भी इसी को उचित समझता था कि फेद्या का पालन-पोषण ग्लाफ़ीरा को सौंप दिया जाये। इवान पेत्रोविच की बेचारी बीवी इस आघात को सह न सकी, वह एक और वियोग को झेलने मे असमर्थ थी; कुछ ही दिन बाद वह बिना कोई शिकायत किये मर गयी। जीवन-भर वह किसी चीज़ का विरोध नही कर पायी थी, और अब भी उसने अपनी बीमारी के ख़िलाफ लड़ने का कोई सबूत नही दिया था। वह अब बोल नही पाती थी, मौत की परछाइया रेगती हुई उसके चेहरे पर आगे बढने लगी थी, लेकिन उसकी मुख-मुद्रा में अब भी वही पहलेवाला धैर्यपूर्ण विस्मय और वही विनम्र भीरुता थी; वह ग्लाफ़ीरा को उसी मूक आज्ञाकारिता के साथ एकटक देखती रहती थी और आन्ना पाव्लोव्ना ने जिस तरह अपनी मृत्यु-शय्या पर अपने पति का हाथ चूमा था उसी तरह उसने ग्लाफ़ीरा का हाथ चूमकर उसे अपना इकलौता बेटा सौप दिया था। इस प्रकार इस नेक और विनम्र प्राणी ने अपनी पार्थिव जीवन-लीला समाप्त कर दी, जिसे भगवान जाने क्यो, अपनी धरती से किसी उगते हुए पौधे की तरह उखाड़कर अपनी जडो समेत धूप मे फेक दिया गया था, वह मुरझा गयी थी और विस्मृति की गोद मे विलीन हो गयी थी और किसी ने उसका शोक भी नही मनाया था। बस मलान्या सेर्गेयेव्ना की नौकरानियो और प्योत्र अन्द्रेइच ही को उसका दुख हुआ था। बूढ़े को उसकी मूक उपस्थिति रह-रहकर याद आती थी। गिरजाघर मे अंतिम बार उसके सामने झुकते हुए उन्होने धीरे से बुदबुदाकर कहा था, "विदा, भोली बच्ची।" उसकी कब्र मे मुट्ठी-भर मिट्टी डालते समय वह रो पड़े थे।

उसके बाद वह भी बहुत दिन ज़िदा नही रहे। १८१६ के जाड़े मे मास्को मे, जहा वह ग्लाफ़ीरा और अपने पोते के साथ जाकर रहने लगे थे शांतिपूर्वक उनका देहात हो गया। उनका अनुरोध था कि

उन्हें आन्ना पाव्लोव्ना और मलान्या के पास ही दफन कर दिया जाये। उस समय इवान पेत्रोविच पेरिस में गुलछर्रे उड़ा रहा था, १८१५ के शीघ्र ही बाद उसने नौकरी से इस्तीफा दे दिया था। अपने बाप के मरने की खबर पाकर उसने रूस लौट आने का फैसला किया। जमीन-जायदाद की देखभाल का बंदोबस्त करना था, और जैसा कि ग्लाफ़ीरा ने अपने पत्र में लिखा था फ़ेद्या अब तेरह साल का होने को आया था, और उसकी शिक्षा की ओर गंभीरता से ध्यान देने की जरूरत थी।

१०

इवान पेत्रोविच अंग्रेजों के रंग में रंगा हुआ रूस लौटा। उसके छोटे कटे हुए बाल, कमीज की कलफदार झालरें लंबा गहरे हरे रंग का कई कालरोंवाला उसका फ्राक-कोट, उसके चेहरे की अरुचिपूर्ण मुद्रा, आचरण में रूखापन होने के साथ ही उपेक्षा भी, दांतों को भींचकर उसका बोलने का ढंग उसकी आकस्मिक भावशून्य हंसी उसका मुस्कान-रहित चेहरा, बातचीत के लिए उसका कभी न बदलनेवाला एक ही विषय—राजनीति या राजनीतिक अर्थशास्त्र कम सिंका हुआ रोस्ट-बीफ खाने और पोर्ट-वाइन पीने का उसका हद से ज्यादा शौक़—उसकी हर बात में इंगलैंड की बू आती थी। बात कुछ विचित्र तो लगती है लेकिन इतना पक्का अंग्रेज़-प्रेमी बन जाने के साथ ही इवान पेत्रोविच देशभक्त भी हो गया था—कम से कम वह अपने आपको कहता तो था ही, हालांकि न वह रूस से बहुत अच्छी तरह परिचित था, न उसमें एक भी रूसी आदत बाकी रह गयी थी और वह रूसी भी बड़े बेतुके ढंग से बोलता था साधारण बातचीत में उसकी बोली बहुत धीमी और बेजान होती थी और उसमें फ़्रांसीसी मुहावरों की भरमार रहती थी, लेकिन ज्यों ही बातचीत का रुख गंभीर विषयों की ओर मुड़ता, इवान पेत्रोविच इस तरह के फिकरे बोलने लगता· "आत्म-मनोयोग की नयी कसौटियां प्रदान करना", "यह बात परिस्थितियों के स्वभाव के ही अनुरूप नहीं है", इत्यादि। इवान पेत्रोविच राज्यसत्ता के संगठन तथा उसमें सुधार से संबंधित कई योजनाएं पाडुलिपि के रूप में विदेशों से लाया था;-वह जो कुछ

देखा था उससे वह बहुत असन्तुष्ट था, व्यवस्था के अभाव पर उसका नया विचार मन में भड़क उठता था। अपनी बहन से मिलने पर उसने पहला काम यह किया कि मूलगामी सुधार लागू करने के अपने दृढ़ संकल्प की घोषणा कर दी, और उसे चेतावनी दे दी कि अब से हर चीज़ एक नयी व्यवस्था के अनुसार चलायी जायेगी। ग्लाफ़ीरा पेत्रोव्ना ने कुछ नहीं कहा वह बस दांत पीसकर रह गयी और सोचने लगी, "मेरा क्या होगा?" लेकिन जब वह अपने भाई और भतीजे के साथ गांव वापस पहुंची तो उसकी सारी आशंकाएं शीघ्र ही दूर हो गयीं। घर की व्यवस्था में कुछ परिवर्तन अवश्य किये गये हरामखोरों और टुकड़खोरों को घर से फ़ौरन निकाल बाहर किया गया, जिनमें दो बुढ़िया भी थीं एक अंधी थी और दूसरी को लकवा मार गया था, ओचाकोव के ज़माने का फ़ौज का एक मेजर था जो बिल्कुल सठिया गया था और सचमुच इतने लालच से खाता था कि उसे राई की रोटी और दाल के अलावा कुछ भी खाने को नहीं दिया जाता था। यह हुक्म भी जारी कर दिया गया कि जो लोग पहले मेहमान बनकर आते रहते थे उनका स्वागत न किया जाये और उन सबकी जगह दूर के एक पड़ोसी ने ले ली, जो सुनहरे बालों और सुअर जैसी गर्दनवाले बहुत ही शरीफ़ और बहुत ही बेवकूफ़ सज्जन थे। मास्को से नया फ़र्नीचर आ गया, उगालदानों, घंटियों और हाथ धोने के लिए चिलमचियों का रिवाज शुरू किया गया, नाश्ता नये ढंग से दिया जाने लगा; वोद्का और घर की बनी शराबों की जगह विदेशी शराबों ने ले ली, नौकरों के लिए नयी वर्दियां बनवा दी गयीं, परिवार के कुल-चिन्ह में एक नया मूलमंत्र जोड़ दिया गया "in recto virtus..."* वास्तव में ग्लाफ़ीरा की अधिकार-सत्ता में कोई कमी नहीं आयी: सारी खरीदारी और सामान देने का काम अब भी उसके क़ब्ज़े में था; विदेश से जो अलसाशियाई निजी नौकर लाया गया था उसने ग्लाफ़ीरा की सत्ता को चुनौती देने की कोशिश की थी और उसे अपनी जगह से हाथ धोना पड़ा था, हालांकि मालिक ने उसे बचाने की कोशिश की थी। जहां तक ज़मीनों की देखभाल और इंतज़ाम का सवाल था,— इन बातों में भी ग्लाफ़ीरा का दख़ल था—इवान पेत्रोविच के बार-बार

* सदाचार क़ानून में है। (लातीनी)

दोहराये गये इस इरादे के बावजूद कि वह इस अव्यवस्था को दूर करके एक नया जीवन फूकना चाहता है, सब कुछ पहले जैसा ही बना रहा, सिर्फ बही मुक्ति-लगान बढ़ा दिया गया था, बही बेगार मे सख्ती कर दी गयी थी और यह फरमान जारी कर दिया गया था कि कोई किसान फरियाद लेकर सीधे इवान पेत्रोविच के पास न आये। पता यह चला कि इस देशभक्त को अपने देशवासियो से सख्त नफरत थी। इवान पेत्रोविच की व्यवस्था पूरी पाबदी के साथ सिर्फ फेद्या पर लागू की गयी, उसकी शिक्षा मे सचमुच "बुनियादी परिवर्तन" आ गया, उसके बाप ने और सब काम छोड़-छाड़कर इस काम का बीड़ा उठा लिया।

११

जब इवान पेत्रोविच अपने घर से दूर विदेश मे था तब फेद्या की देखभाल की सारी ज़िम्मेदारी ग्लाफ़ीरा पर थी। वह अभी आठ साल का भी नही था कि उसकी मा मर गयी थी, वह कभी-कभी उससे मिलता था और उससे बेहद गहरी मुहब्बत करता था, उसकी याद, उसके कोमल बीमार चेहरे, उसकी उदास नज़रो और सहमे-सहमे लाड़-प्यार की याद की उसके हृदय पर अमिट छाप पड़ चुकी थी; उसे घर मे अपनी मा की स्थिति की बस धुधली-धुधली ही जानकारी थी; उसे उस दीवार का आभास था जो उनके बीच खड़ी थी, जिसे ढा देने का उसकी मा मे न साहस था और न क्षमता ही। वह अपने बाप से कतराता था और, यह मानना पड़ेगा कि उन्होने भी कभी उसका लाड़ नही किया था, उसके दादा कभी-कभी उसके सिर पर हाथ फेर देते थे और उसे अपना हाथ चूम लेने देते थे, लेकिन वह उसे अनगढ़ कुदा कहते थे और उसे बुद्धू समझते थे। मलान्या सेर्गेयेव्ना के मर जाने के बाद वह पूरी तरह अपनी बुआ के पजे मे फस गया। फेद्या को उससे डर लगता था, वह उसकी कजी, बेधती हुई आखो और तीखी आवाज़ से डरता था; वह उसके सामने मुह से आवाज़ तक नही निकालता था; यहा तक कि अगर वह अपनी कुर्सी पर ज़रा-सा हिलता-डुलता भी था तो वह फुफकार उठती थी, "अब क्या हुआ? सीधे बैठो!" हर इतवार को गिरजाघर मे प्रार्थना

से लौटने पर उसे खेलने की इजाजत दी जाती थी, मतलब यह कि उसे एक मोटी-सी किताब दे दी जाती थी, मैक्सिमोविच-अबोदिक की बडी रहस्यमयी रचना थी वह, जिसका नाम था 'प्रतीक और सकेत'। इस पुस्तक मे कोई एक हजार तस्वीरें थी, जिनमे से अधिकाश अत्यत गूढ पहेलियो जैसी थी, और उनके नीचे पाच भाषाओं मे उनकी सक्षिप्त व्याख्याए लिखी हुई थी। इन तस्वीरो मे एक गोलमटोल नगे क्यूपिड की भूमिका अत्यत प्रमुख थी। इनमे से एक तस्वीर के साथ 'जाफरान और इद्रधनुष' के शीर्षक के नीचे व्याख्या के रूप में लिखा हुआ था. "इसका प्रभाव अत्यत व्यापक है", एक और तस्वीर के नीचे, जिसमे 'चोच मे वायलेट का फूल लिये उडता हुआ बगुला' दिखाया गया था, लिखा था: "तू सभी को जानता है"। 'क्यूपिड और अपने बच्चे को चाटती हुई रीछनी' नामक चित्र "थोडा-थोडा करके" का द्योतक था। फेद्या इन चित्रो का अध्ययन करता था, वह उनके छोटे से छोटे ब्योरे तक से परिचित था, उनमे से कुछ तस्वीरे, जो कभी बदलती नही थी, उसे सोचने के लिए प्रेरित करती थी और उसकी कल्पना को उन्मुक्त कर देती थी; दूसरे मनोरजनो से वह सर्वथा अनभिज्ञ था। जब उसके भाषाए और सगीत सीखने का समय आया तो ग्लाफीरा पेत्रोव्ना ने बहुत ही कम पैसो पर खरगोश जैसी आखोवाली स्वीडेन की रहनेवाली एक कुआरी रख ली, जो टूटी-फूटी फ्रासीसी और जर्मन जानती थी और थोडा-बहुत पियानो बजा लेती थी और, इन सबसे बढकर उसका गुण यह था कि वह खीरों का अचार बहुत ही बढिया बनाती थी। फेद्या ने इस गवर्नेस, अपनी बुआ और बूढी नौकरानी वसील्येव्ना के साथ रहकर लगभग पूरे चार वर्ष बिता दिये। वह बहुधा अपने "प्रतीक" लिये एक कोने मे बैठा दिखायी देता था, इसी तरह वहा बैठे-बैठे उसने न जाने कितने लबे दिन काट दिये थे, नीची छतवाले कमरे मे जेरेनियम के फूलों की सुगध बसी रहती थी चर्बी की अकेली एक मोमबत्ती मद्धिम ज्योति से टिमटिमाती रहती थी, झीगुर ऊघता हुआ थके स्वर मे चीं-चीं करता रहता था दीवार पर लगी हुई छोटी-सी घडी जल्दी-जल्दी टिक-टिक करती रहती थी, दीवार पर चिपके कागज के पीछे कही कोई चूहा चुपके-चुपके खुरचता और कुतरता रहता था, और तीन बूढी औरतें वहा नक़दीर की देवियों की तरह बैठी चुपचाप अपनी बुनाई

को सलाइया चलाती रहती थी, उनके हाथो की परछाइया अजीब-अजीब कापती हुई तस्वीरे बनाती रहती थी – और बच्चे के दिमाग मे जो विचार जमा होते रहते थे वे भी उतने ही विचित्र और अधकारमय होते थे। फेद्या को किसी भी तरह सुदर बच्चा नही कहा जा सकता था, उसका रग कुछ पीला था, लेकिन वह मोटा, बेडौल और बेतुका था – बिल्कुल किसान, जैसा कि ग्लाफीरा पेत्रोव्ना कहा करती थी, अगर उसे और ज्यादा मौको पर बाहर खुली हवा मे जाने दिया जाता तो उसके गालो पर जल्दी ही कुछ लाली आ सकती थी। वह पढाई मे काफी अच्छा था, हालाकि अक्सर वह आलस्य का शिकार हो जाता था, वह कभी रोता नही था, लेकिन कभी-कभी उस पर जिद्द और चिडचिडेपन का दौरा पडता था और तब कोई भी उसे सभाल नही पाता था। फेद्या के आस-पास जो लोग थे उनमे से किसी से भी उसे प्यार नही था। बदनसीब है वह दिल जिसने छोटी उम्र मे प्यार न किया हो।

इवान पेत्रोविच ने उसे इसी रूप मे देखा और वह तनिक भी समय गवाये बिना उस पर अपनी व्यवस्था लागू करने मे जुट गया। "सबसे पहले और सबसे बढकर मैं इसे इसान बनाना चाहता हू, un homme,"* उसने ग्लाफीरा पेत्रोव्ना से कहा, "और सिर्फ इसान नही बल्कि सादा और कठोर इसान।" अपनी योजना लागू करने के लिए इवान पेत्रोविच ने सबसे पहले अपने बेटे को स्काटलैडवालो जैसा घाघरा सिलवा दिया, बारह साल का लडका घुटने खोले और सिर पर मुर्गे के पर लगी हुई टोपी पहने इतराता फिरता था, स्वीडेनवासी महिला की जगह एक स्विस ट्यूटर रख लिया गया जो जिमनास्टिक का माना हुआ उस्ताद था, सगीत को पुरुषो के लिए सर्वथा अनुपयुक्त ठहराकर बिल्कुल ही त्याग दिया गया, प्राकृतिक विज्ञान, अतर्राष्ट्रीय कानून, गणित, जा जैक्स रूसो के सिद्धात के अनुसार बढईगीरी और शौर्य की भावनाओ को बढावा देने के लिए राज-चिह्नो का वर्णन – ये भावी "इसान" के मुख्य व्यवसाय निर्धारित किये गये थे, उसे सवेरे चार बजे उठाकर फौरन ठडे पानी से नहला दिया जाता था और रस्सी पकडकर ऊचे-से खभे के चारो ओर दौडाया जाता था – वह दिन मे

* इन्सान। (फ्रासीसी)

था, और हमेशा से ज्यादा अंग्रेज-प्रेमी, असतुष्ट व्यक्ति और समाज-सुधारक होने का परिचय देता था। फिर १८२५ का साल आया और अपने साथ दुर्गति लाया। इवान पेत्रोविच के मित्रो और जान-पहचानवालो को बडी तकलीफें उठानी पडी। इवान पेत्रोविच ने फौरन गाव मे अपने घर के एकात की शरण ली और सारी दुनिया से नाता तोड लिया। एक साल और बीता, और इवान पेत्रोविच का स्वास्थ्य अचानक बडी तेजी से गिरने लगा, वह कमजोर और बीमार हो गया, उसका घमड टूट गया। बुद्धिवादी नास्तिक गिरजाघर जाने लगा और सार्वजनिक प्रार्थनाओ की पैरवी करने लगा, योरपीय तौर-तरीको का समर्थक रूसी भाप के हम्मामो मे जाने लगा, दो बजे खाने लगा। वह रात को नौ बजे बिस्तर पर लेट जाता था और बूढे खानसामा की अनत बकवास सुनते-सुनते सो जाता था। समाज-सुधारक ने अपनी सारी योजनाए और अपना सारा पत्र-व्यवहार जला दिया, वह गवर्नर के सामने थर-थर कापने और पुलिस के दरोगा के सामने गिडगिडाने लगा, अटल दृढ सकल्प का यह आदमी जरा-सी फुसी निकल आने पर या सूप ठडा होने पर शिकायते करता था और रोने लगता था। ग्लाफीरा पेत्रोव्ना ने सारे घर का इतजाम एक बार फिर अपने कब्जे मे कर लिया था, एक बार फिर खिदमतगार, कारिदे और तरह-तरह के आम हैसियत के लोग पीछे के दरवाजे पर "कजूस बुढिया" से मिलने आने लगे थे—जैसा कि सभी नौकर-चाकर उसे कहते थे। इवान पेत्रोविच मे इस परिवर्तन का उसके बेटे पर बहुत गहरा असर पडा, वह लगभग उन्नीस साल का होने को आया था और खुद सोचने लगा था और अपने आपको अपने बाप के चगुल से छुडाने लगा था। वह अपने बाप की कथनी और करनी के बीच, उदारता के पक्ष मे उसकी लबी-चौडी घोषणाओ और उसके घोर अत्याचारी स्वभाव के बीच जमीन-आसमान के अतर को पहले ही देख चुका था, लेकिन उसने कभी सोचा भी नही था कि उसमे इतना बडा परिवर्तन आ जायेगा। यह पक्का अहवादी अपने असली रग मे सामने आ गया था। नौजवान लाव्रेत्स्की यूनिवर्सिटी मे भरती होने की तैयारी करने के लिए मास्को जानेवाला ही था कि उससे फौरन पहले अचानक इवान पेत्रोविच के सिर पर मुसीबत का एक और पहाड टूट पडा वह अधा हो गया, एक ही दिन मे बिल्कुल अधा हो गया।

गया। ग्लाफीरा पेत्रोव्ना, जिसने शोरबे का प्याला खानसामा के हाथ से झपट लिया था, मौन खडी अपने भाई की सूरत देखती रही, धीरे-धीरे उसने अपने सीने पर सलीब का निशान बनाया और चुपचाप वहा से चली गयी, और उसके बेटे ने भी, जो वही मौजूद था, कुछ नहीं कहा; वह बाल्कनी के जगले पर झुककर खडा बडी देर तक बाग मे घूरता रहा, जो वसत की धूप की सुनहरी किरणो मे महक रहा था और हरियाली से लहलहा रहा था। वह तेईस साल का था, ये तेईस साल कितनी भयानक, कितनी क्रूर तेजी से बीत गये थे। उसके सामने जीवन के द्वार उन्मुक्त हो रहे थे।

१२

बाप को दफन करके और घर की देखभाल और कारिदो की निगरानी फिर उसी ग्लाफीरा पेत्रोव्ना को सौंपकर नौजवान लाव्रेत्स्की मास्को चला गया, जिसकी ओर कोई छिपी हुई लेकिन अदम्य शक्ति उसे निरतर खीच रही थी। उसने अपनी पढाई की खामियो को महसूस किया और जो समय उसने गवा दिया था उसकी कमी को यथासभव पूरा करने का दृढ निश्चय किया। पिछले पाच वर्षों मे उसने बहुत कुछ पढा था और कुछ चीजे देखी भी थी, उसके दिमाग मे कितने ही विचार पनप रहे थे, उसकी कुछ उपलब्धियो पर तो बडे-बडे प्रोफेसरो को भी ईर्ष्या हो सकती थी, फिर भी उसे कई ऐसी चीजो तक का ज्ञान नही था जिन्हे हर स्कूली लडका जानता है। लाव्रेत्स्की ने महसूस किया कि वह स्वतत्र नही था, उसे अदर ही अदर इस बात का आभास था कि दूसरो को वह कुछ अजीब लगता होगा। उस अग्रेज-प्रेमी ने अपने बेटे के साथ बडा क्रूर मजाक किया था, उसकी ऊट-पटाग शिक्षा का नतीजा अब सामने आ रहा था। बरसो तक वह पूरी तरह अपने बाप की मर्जी पर चला था, आखिरकार जब उसे उनकी असलियत समझ मे आने लगी थी तब तक जो नुकसान होना था वह हो चुका था, उसकी आदते उसका स्वभाव बन चुकी थी। लोगो मे उसकी निभती नही थी तेईस साल की उम्र मे, अपने शर्मीले दिल मे प्यार की न बुझनेवाली प्यास दबाये उसने आज तक किसी

चेहरे के हर भाग मे यौवन का दीप्त ओज स्पंदित हो रहा था, नाज़ुक भवो के नीचे कोमलता के भाव से एकटक देखती हुई प्यारी-प्यारी आखो मे, उसके भावपूर्ण होटो की स्फूर्तिमय मुस्कान मे, उसके सिर की सतुलित मुद्रा मे, उसकी बाहो मे, उसकी गर्दन मे एक सुरुचि-पूर्ण मस्तिष्क का प्रतिबिंब दिखायी देता था, वह बहुत बढिया लिबास पहने थी। उसके बगल मे गहरी काट के गलेवाली पोशाक पहने और काली टोपी लगाये लगभग पैतालीस साल की एक सूखी-सी मुरझायी हुई पीली रगत की औरत बैठी थी, जिसके तनाव-भरे चिताग्रस्त और भावशून्य चेहरे पर पोपली मुस्कराहट खेल रही थी, बॉक्स की गहराई मे ढीला-ढाला फ्राक-कोट पहने और ऊचा-सा गुलूबद बाधे बडी उम्र का एक आदमी बैठा था, जिसकी बटन जैसी आखो मे मूर्खो जैसी गभीरता का और खुशामदी आदमी की सदेह-भरी मुद्रा जैसा भाव था जो अपनी मूछो और गलमुच्छो पर खिज़ाब लगाता था, जिसका बडा-सा माथा वास्तव मे विचारक का माथा न था और उसके गालो पर झुर्रिया पडी हुई थी—जो हर सकेत से पेंशनयाफ्ता जनरैल लगता था। लाव्रेत्स्की उस लडकी के सुदर मुखडे पर अपनी दृष्टि जमाये रहा अचानक बॉक्स का दरवाज़ा खुला और मिखालेविच अदर आया। उस एकमात्र लडकी के साथ, जिसने उसका सारा ध्यान अपनी ओर आकृष्ट कर लिया था, इस आदमी का सामने आना, जो मास्को मे उसका लगभग एकमात्र परिचित था, लाव्रेत्स्की को कुछ विचित्र और महत्त्वपूर्ण लगा। बॉक्स मे घूरते रहने पर उसने देखा कि उसमे बैठे हुए सभी लोग मिखालेविच के साथ पुराने दोस्त जैसा व्यवहार कर रहे थे। मच पर जो अभिनय हो रहा था उसमे लाव्रेत्स्की को कोई दिलचस्पी नही रह गयी, मोचालोव ने भी, जिसका अभिनय उस दिन "पूरे निखार" पर था, उस पर हमेशा जैसा प्रभाव नही डाला। मच पर जिस समय एक बहुत ही दर्द-भरा क्षण आया तो अनायास ही लाव्रेत्स्की की नज़रे उस सुदरी की ओर उठ गयी, वह आगे की ओर झुकी बैठी थी, उसके गाल तमतमाये हुए थे, उसके आग्रहपूर्वक घूरते रहने पर लडकी की नज़रे, जो मच पर जमी हुई थी, धीरे-धीरे घूमी और उस पर आकर टिक गयी। सारी रात वे आखे उसके सामने आती रही। आखिरकार बनावटी बाध टूट गया

औरत की आखो मे आखे डालकर देखने का साहस नहीं किया था। उसकी शुद्ध, स्पष्ट, हालाकि कुछ-कुछ बोझिल बुद्धि, और हठधर्मी, विचारमग्नता और आलस्य की उसकी प्रवृत्ति के कारण उसे जीवन के भवर मे बहुत पहले ही फेक दिया जाना चाहिये था, जिसके बजाय उसे कृत्रिम एकात मे रखा गया था।. और अब भ्रम टूट चुका था, लेकिन वह उसी जगह खडा रहा, मौन और अपने अदर बद। इस उम्र मे छात्रोवाली पोशाक पहनना हास्यास्पद बात थी, लेकिन वह उपहास से डरता नही था – उसे सादगी और कठोरता की जो शिक्षा दी गयी थी उसका कम से कम इतना प्रभाव तो हुआ ही था कि उस पर दूसरो की राय का कोई असर नही होता था – और उसने बेझिझक छात्रो-वाली पोशाक पहन ली। उसने भौतिकी और गणित के विभाग मे नाम लिखा लिया। तगडा शरीर और लाल चेहरा, बिल्कुल मौन और भरपूर उगी हुई दाढी – इस हुलिये का उसके साथ के दूसरे छात्रो पर बडा विचित्र प्रभाव पडता था, वे भला कैसे अनुमान कर सकते थे कि गभीर मुद्रावाला यह आदमी, जो दो घोडोवाली बडी-सी देहाती स्लेज-गाडी पर बैठकर हर लेक्चर मे ठीक समय पर आता था, लगभग बिल्कुल बच्चा था। वे उसे किसी विचित्र प्रकार का कृतसकल्प विद्या-प्रेमी समझते थे, वे न उसके साथ रहने की कोशिश करते थे और न ही उसे इनकी जरूरत थी, और वह खुद भी सबसे अलग-थलग रहता था। यूनिवर्सिटी मे अपने पहले दो वर्षों के दौरान वह केवल एक छात्र के साथ घनिष्ठता पैदा कर सका, जिससे वह लैटिन पढता था। यह छात्र, जिसका नाम मिखालेविच था, बहुत जोशीला आदमी था और कवि था, लाव्रेत्स्की से उसे सच्चा लगाव हो गया और अनजाने ही वह उसकी नियति मे एक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन का कारण बन गया।

एक दिन थियेटर मे (उन दिनो मोचालोव अपनी ख्याति के शिखर पर थे और लाव्रेत्स्की उनका एक भी अभिनय देखने से नही चूकता था) उसने ड्रेस सर्किल के बॉक्स मे एक लडकी देखी, यो तो अब तक कभी ऐसा नही हुआ था कि कोई औरत उसके सामने से गुजरी हो और उसका दिल धडकने न लगा हो, लेकिन इतने जोर से वह पहले कभी नहीं धडका था। बॉक्स के मखमल पर कुहनियां टिकाये वह लडकी निश्चल बैठी थी: उसके साकरे, शान, आकर्षक

चेहरे के हर भाग मे यौवन का दीप्त ओज स्पदित हो रहा था, नाजुक भवो के नीचे कोमलता के भाव से एकटक देखती हुई प्यारी-प्यारी आखो मे, उसके भावपूर्ण होटो की स्फूर्तिमय मुस्कान मे, उसके सिर की सतुलित मुद्रा मे, उसकी बाहो मे, उसकी गर्दन मे एक सुरुचि-पूर्ण मस्तिष्क का प्रतिबिब दिखायी देता था, वह बहुत बढिया लिबास पहने थी। उसके बग़ल मे गहरी काट के गलेवाली पोशाक पहने और काली टोपी लगाये लगभग पैतालीस साल की एक सूखी-सी मुरझायी हुई पीली रगत की औरत बैठी थी, जिसके तनाव-भरे चिताग्रस्त और भावशून्य चेहरे पर पोपली मुस्कराहट खेल रही थी, बॉक्स की गहराई मे ढीला-ढाला फ्राक-कोट पहने और ऊचा-सा गुलूबद बाधे बडी उम्र का एक आदमी बैठा था, जिसकी बटन जैसी आखो मे मूर्खो जैसी गभीरता का और खुशामदी आदमी की सदेह-भरी मुद्रा जैसा भाव था, जो अपनी मूछो और गलमुच्छो पर खिज़ाब लगाता था, जिसका बडा-सा माथा वास्तव मे विचारक का माथा न था और उसके गालो पर झुर्रियां पडी हुई थीं—जो हर सकेत से पेंशनयाफ्ता जरनैल लगता था। लाव्रेत्स्की उस लडकी के सुदर मुखडे पर अपनी दृष्टि जमाये रहा, अचानक बॉक्स का दरवाज़ा खुला और मिखालेविच अदर आया। उस एकमात्र लडकी के साथ, जिसने उसका सारा ध्यान अपनी ओर आकृष्ट कर लिया था, इस आदमी का सामने आना, जो मास्को मे उसका लगभग एकमात्र परिचित था, लाव्रेत्स्की को कुछ विचित्र और महत्त्वपूर्ण लगा। बॉक्स मे घूरते रहने पर उसने देखा कि उसमे बैठे हुए सभी लोग मिखालेविच के साथ पुराने दोस्त जैसा व्यवहार कर रहे थे। मच पर जो अभिनय हो रहा था उसमे लाव्रेत्स्की को कोई दिलचस्पी नही रह गयी, मोचालोव ने भी, जिसका अभिनय उस दिन "पूरे निखार" पर था, उस पर हमेशा जैसा प्रभाव नही डाला। मच पर जिस समय एक बहुत ही दर्द-भरा क्षण आया तो अनायास ही लाव्रेत्स्की की नज़रे उस सुदरी की ओर उठ गयी, वह आगे की ओर झुकी बैठी थी, उसके गाल तमतमाये हुए थे, उसके आग्रहपूर्वक घूरते रहने पर लडकी की नज़रे, जो मच पर जमी हुई थी, धीरे-धीरे घूमी और उस पर आकर टिक गयी। सारी रात वे आखे उसके सामने आती रही। आखिरकार बनावटी बाध टूट गया उसका सारा शरीर काप रहा था और उद्विग्नता के कारण उसे बुखार-

भीग्न की आगा में आगे डालकर देखने का माहम नहीं किया था उसको गृढ. स्पष्ट हालांकि कुछ-कुछ बोझिल बुद्धि, और हठधर्मी विचारमग्नता और आलस्य की उसकी प्रवृत्ति के कारण उसे जीवन के भवर में बहुत पहले ही फेंक दिया जाना चाहिये था, जिसके बजाय उसे कृत्रिम एकांत में रखा गया था। और अब भ्रम टूट चुका था, लेकिन वह उसी जगह खड़ा रहा, मौन और अपने अंदर बंद। इस उम्र में छात्रोंवाली पोशाक पहनना हास्यास्पद बात थी, लेकिन वह उपहास से डरता नहीं था – उसे सादगी और कठोरता की जो शिक्षा दी गयी थी उसका कम से कम इतना प्रभाव तो हुआ ही था कि उन पर दूसरों की राय का कोई असर नहीं होता था – और उसने बेझिझक छात्रों-वाली पोशाक पहन ली। उसने भौतिकी और गणित के विभाग में नाम लिखा लिया। तगड़ा शरीर और लाल चेहरा, बिल्कुल मौन और भरपूर उगी हुई दाढ़ी – इस हुलिये का उसके साथ के दूसरे छात्रों पर बड़ा विचित्र प्रभाव पड़ता था, वे भला कैसे अनुमान कर सकते थे कि गभीर मुद्रावाला यह आदमी, जो दो घोड़ोंवाली बड़ी-सी देहाती स्लेज-गाड़ी पर बैठकर हर लेक्चर में ठीक समय पर आता था, *लगभग बिल्कुल बच्चा था।* वे उसे किसी विचित्र प्रकार का कृतसंकल्प विद्या-प्रेमी समझते थे, वे न उसके साथ रहने की कोशिश करते थे और न ही उसे इनकी जरूरत थी, और वह खुद भी सबसे अलग-थलग रहता था। यूनिवर्सिटी में अपने पहले दो वर्षों के दौरान वह केवल एक छात्र के साथ घनिष्ठता पैदा कर सका, जिससे वह लैटिन पढ़ता था। यह छात्र, जिसका नाम मिखालेविच था, बहुत जोशीला आदमी था और कवि था, लाव्रेत्स्की से उसे सच्चा लगाव हो गया और अनजाने ही वह उसकी नियति में एक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन का कारण बन गया।

एक दिन थिएटर में (उन दिनों मोचालोव अपनी ख्याति के शिखर पर थे और लाव्रेत्स्की उनका एक भी अभिनय देखने से नहीं *चूकता था*) उसने ड्रेस सर्किल के बॉक्स में एक लड़की देखी; यों तो अब तक कभी ऐसा नहीं हुआ था कि कोई औरत उसके सामने से गुज़री हो और उसका दिल धड़कने न लगा हो, लेकिन इतने ज़ोर से वह पहले कभी नहीं धड़का था। बॉक्स के मखमल पर कुहनिया टिकाये वह लड़की निश्चल बैठी थी: उसके [illegible], आकर्षक

गा आ गया था। अगले ही दिन वह मिखालेविच से मिलने
उससे उसे मालूम हुआ कि उस सुंदरी का नाम वर्वारा पाव्
कोरोब्यीना था, कि बॉक्स में बड़ी उम्र का जो जोड़ा बैठा थ
उसके मां-बाप थे और यह कि उसकी, यानी मिखालेविच की
जान-पहचान पिछले साल मास्को के पास काउंट न० के घर पर
रिहाइश के दौरान हुई थी, जहां वह पढ़ाता था। उस जोशीले नौ
ने वर्वारा पाव्लोव्ना की तारीफ के पुल बांध दिये। "मेरे दोस
उसने अपनी नर्म आवाज में कहा, "वह लड़की, मैं कहता हूं,
है, जीनियस है, सही मानें में कलाकार है, और बेहद नेक भी
लाव्रेत्स्की की जिज्ञासा से यह अनुमान लगाकर कि वर्वारा पाव्
ने उस पर कैसा प्रभाव डाला था, उसने उससे उसकी मुलाकात
देने का प्रस्ताव किया और यह भी बताया कि उसे घर का ही
आदमी समझा जाता था, कि जनरैल साहब में ज़रा भी अकड़
थी और मां तो इतनी भोली थी कि अगर उसे समझा दो कि
हरी पनीर का बना है तो वह मान जायेगी। लाव्रेत्स्की का
लाल हो गया, उसने बुदबुदाकर न जाने क्या कहा और भाग
पूरे पांच दिन तक वह अपने शर्मीलेपन के खिलाफ लड़ता रहा,
दिन उस नौजवान ब्रह्मचारी ने नयी पोशाक पहनी और अपने आ
मिखालेविच के हवाले कर दिया, मिखालेविच चूंकि घर का ही आ
था इसलिए उसने सिर्फ अपने बाल सवारे और दोनों कोरोब्यीन-परि
के घर की ओर चल दिये।

१३

वर्वारा पाव्लोव्ना के बाप पावेल पेत्रोविच कोरोब्यीन रिटा
मेजर-जनरल थे, उन्होंने अपनी सारी जिंदगी फौज में सेंट पीटर्स
में बितायी थी, जवानी में वह बहुत अच्छे नाचनेवाले और
सिपाही की हैसियत से मशहूर रह चुके थे, गरीबी की वजह से
दो-तीन मामूली जरनैलों के नीचे एडजूटेंट की हैसियत से काम
चुके थे और पच्चीस हज़ार रूबल के दहेज के साथ उन्होंने उन्हीं में
एक की बेटी से शादी कर ली थी; उन्होंने सैनिक परेड और फौ
क़वायद की कला में लालित्य की सीमा तक निपुणता प्राप्त कर

थी, वह इसी तरह घिसटते हुए चलते रहे, यहा तक कि बीस साल की नौकरी के बाद उन्हें जरनैल का पद और रेजिमेंट की कमाडरी मिली। यहा पहुचकर वह अपनी दौड़-धूप से छुट्टी पा सकते थे और बड़े आराम से अपना समय दौलत बटोरने मे लगा सकते थे सच तो यह है कि उनका इरादा भी यही करने का था, लेकिन उनकी योजनाओ मे एक छोटी-सी गड़बड़ी हो गयी उन्होने सरकारी पैसा वसूल करने का एक नया तरीक़ा निकाला था – यह तरीक़ा यो तो बहुत अच्छा मालूम होता था, लेकिन वह वहा कजूसी कर गये जहा उन्हे कजूसी नही करनी चाहिये थी और उनकी शिकायत कर दी गयी, एक भयकर काड, बल्कि कहना चाहिये बहुत ही बेहूदा बखेड़ा खड़ा हो गया। जरनैल साहब ने किसी तरह इस झझट मे अपनी जान तो छुड़ा ली, लेकिन उनकी नौकरी पर बन आयी और उन्हे रिटायर हो जाने की सलाह दी गयी। वह और दो साल तक इस उम्मीद से सेट पीटर्सबर्ग मे टक्करें मारते रहे कि उन्हे कोई अच्छी तनख्वाह और कम कामवाली नौकरी मिल जायेगी, लेकिन उनके हाथ कुछ भी न लगा; इसी बीच उनकी बेटी ने लडकियो के कालेज मे अपनी पढाई पूरी कर ली थी और खर्च दिन-ब-दिन बढता जा रहा था। जी न चाहते हुए भी उन्होने मास्को चले जाने का फैसला किया जहा वह कम पैसे मे जिदगी बसर कर सकते थे, वहा उन्होने स्तारो-कोन्यूशेन्नी स्ट्रीट मे एक छोटा नीचा-सा मकान किराये पर ले लिया जिसके माथे पर बडा-सा कुल-चिह्न बना हुआ था और उस घर मे वह २,७५० रूबल साल की आमदनी पर एक रिटायर्ड जनरल का जीवन व्यतीत करने लगे। मास्को बडा आवभगत करनेवाला शहर है, एक जनरल की तो बात ही क्या, वह सारी दुनिया का अपने यहा स्वागत करने को तैयार रहता है। और इस तरह पावेल पेत्रोविच की गठीली आकृति, जो देखने मे अब भी सिपाहियो जैसी लगती थी, मास्को के सबसे अच्छे बैठको मे दिखायी देने लगी। उनकी गुद्दी पर पडी हुई खिज़ाब-लगे बालो की थोडी-सी लटे और आर्डर ऑफ सेंट ऐन का चोकट फीता, जिसे वह अपने कौवे जैसे काले गुलूबद पर आड़ा-आडा लटकाये रहते थे, ताश के दाव और जुआ की मेजो के इर्द-गिर्द निराश भाव से मडलानेवाले सभी उदास और मुरझाये हुए नौजवानो के लिए एक जाना-पहचाना दृश्य बन गया था। उनके

पेत्रोविच को समाज में अपना हक वसूल करना आता था; वह
कम और आडम्बर-भरे शब्दों में—अलबत्ता, आने में रूसी हैसि
के लोगों से बात करते वक्त वह इस लहजे में नहीं बोलते थे,
बहुत सावधान रहकर नाश लेते थे, पर घर बहुत थोड़ा खाते
और दावतों में छः आदमियों का खाना अकेले खा जाते थे। उ
पत्नी के बारे में इससे अधिक कुछ नहीं कहा जा सकता कि उ
नाम कल्लिओपा कार्लोव्ना था. उनकी बायीं आंख से हमेशा
को एक बूंद रहती थी जिसकी वजह से कल्लिओपा कार्लोव्ना (जि
बारे में संगे-हाथ यह बता दिया जाये कि वह जर्मन मूल की थी
अपने आपको भावुक स्त्री समझती थी. वह हरदम चिन्ताग्रस्त र
की वजह से घबरायी रहती थी, जैसे उन्हें भरपेट खाना न मिल
हो, और ससमल की चुस्त पोशाकें, टोपी और पुराने मोंदने
पहनती थी। पावेल पेत्रोविच और कल्लिओपा कार्लोव्ना की इकलौ
बेटी वर्वारा पाव्लोव्ना कालेज की पढ़ाई पूरी करने पर सत्रह स
की हुई थी; कालेज में वह सबसे खूबसूरत भले ही न समझी जा
रही हो, लेकिन कम से कम सबसे होशियार छात्रा और सबसे अच्छ
संगीतकार जरूर समझी जाती थी, और कालेज की परीक्षा में सब
अच्छे नंबर पाने के ईनाम में उसे साइफर* दिया गया था; जब उ
पर लाव्रेत्स्की की नजर पड़ी उस समय वह उन्नीस साल की भी न
थी।

१४

जब मिखालेविच ने ब्रह्मचारी का परिचय कोरोब्योव-परिवा
के बैठके में, जिसकी सजावट बहुत सुन्दर नहीं थी, ले जाकर कराय
तो वह थर-थर कांपने लगा। लेकिन उसकी यह घबराहट जल्दी ह
दूर हो गयी जरनैल साहब में मिलनसारी की वह भावना जो सभ
रूसियों में जन्मजात होती है, उस विचित्र सहृदयता से और बढ़ गयी
थी जो उन सभी लोगों की लाक्षणिक विशेषता होती है जिनके नाम
पर कलंक लग चुका हो; जरनैल साहब की बीवी तो बहुत जल्दी

---

* शाही नाम का मोनोग्राम—एक प्रतिष्ठा चिह्न।—सं०

छिप गयी ; जहा तक वर्वारा पाव्लोव्ना का सवाल था, तो वह इतनी सन्तुलित और आत्मविश्वास के साथ शालीन थी कि उसके सामने आदमी फौरन ऐसा बेझिझक महसूस करने लगता था जैसे वह अपने ही घर में हो, वास्तव में उसकी समस्त अनुपम आकृति में, उसकी मुस्कराती हुई आखो मे, उसके कधो के सीधे-सादे झुकाव और उसकी गुलाबी बाहों मे, उसकी चचल लेकिन अलसायी हुई चाल मे यहा तक कि उसकी आवाज मे, जिसकी मिठास देर तक कानो मे रस घोलती रहती थी, भीनी-भीनी मादक सुगध जैसा सहज ही पकड मे न आनेवाला सम्मोहक आकर्षण फूटा पडता था एक कोमल और मृदुल लेकिन फिर भी लजीला नैसर्गिक आनद, एक ऐसी चीज जिसे शब्दो मे बयान नही किया जा सकता लेकिन जो प्रभावित और उत्प्रेरित करता था–जो निश्चित रूप से भीरुता की भावना नही थी। लाव्रेत्स्की ने बातचीत का रुख थिएटर की ओर, पिछले दिन के नाटक की ओर मोड दिया, वह फौरन मोचालोव के बारे मे बाते करने लगी और उसने न केवल आहे भरी और न केवल प्रशसा-भरे शब्द कहे बल्कि उनके अभिनय के बारे मे औरतोवाली समझ-बूझ के साथ कुछ उपयुक्त टिप्पणिया भी की। मिखालेविच ने सगीत की चर्चा छेडी, वह बिना किसी सकोच के पियानो पर जाकर बैठ गयी और बडे नपे-तुले ढग से शोपा के कुछ माजूर्का बजाने लगी, जिनका फैशन उन दिनो अभी शुरू ही हुआ था। खाने का वक्त आ गया, लाव्रेत्स्की तो चला जानेवाला ही था, लेकिन उसे रोक लिया गया, खाने के साथ जरनैल साहब ने बहुत बढिया लाफित्ते नामक शराब से उसकी खातिर की, जिसे लाने के लिए जरनैल साहब के निजी खिदमतगार को किराये की गाडी पर देप्रे की शराब की दुकान तक दौडाया गया था। लाव्रेत्स्की रात को काफी देर मे घर लौटा और बडी देर तक आखो को हाथ से ढके, बिना कपडे उतारे मत्रमुग्ध-सा बैठा रहा। शायद वह पहली बार महसूस कर रहा था कि वह कौन-सी चीज होती है जो जिंदगी को जीने लायक बना देती है ; उसकी सारी मान्यताए और सारे सकल्प, वह सारा कूडा-करकट और बकवास एक फूक मे उड गया था ; उसकी सारी आत्मा एक ही भावना मे, एक ही अभिलाषा मे विलीन हो गयी थी–सुख की, किसी को अपनाने की, प्रेम की, किसी स्त्री के मधुर प्रेम की अभिलाषा मे। उस दिन के बाद वह कोरोब्यीन-परिवार के

५*

यहां अकसर जाने लगा। छः महीने बाद उसने वर्वारा पाव्लोव्ना से अपने प्रेम की घोषणा कर दी और उसके सामने विवाह का प्रस्ताव रखा। उसका प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया ; जरनैल साहब ने बहुत पहले ही, लाव्रेत्स्की जब पहली बार उनके यहां आया था शायद उसी शाम को मिखालेविच से पता लगा लिया था कि लाव्रेत्स्की के पास कितने भू-दास थे, वर्वारा पाव्लोव्ना ने उस नौजवान के प्रणय-निवेदन के पूरे दौरान में और उस समय भी जब वह उसके सामने विवाह का प्रस्ताव रख रहा था अपना हमेशा जैसा मानसिक संतुलन और स्पष्टता का भाव बनाये रखा था – वर्वारा पाव्लोव्ना भी अच्छी तरह जानती थी कि उसका प्रेमी धनवान है ; जहां तक कल्लिओपा कार्लोव्ना का सवाल है, उन्होंने सोचा, "Meine Tochter macht eine schöne Partie."* और अपने लिए एक नयी टोपी खरीद ली।

१५

और इस तरह यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया, लेकिन कुछ शर्तों के साथ। पहली शर्त तो यह थी कि लाव्रेत्स्की यूनिवर्सिटी फ़ौरन छोड़ देगा, भला किसी छात्र से कौन लड़की शादी करती है, और कैसा अजीब लगता है यह कि एक ज़मींदार, एक धनवान आदमी छब्बीस साल की उम्र में स्कूली लड़कों की तरह पढ़ने जाये। दूसरे, दुल्हन के दहेज का सारा साज-सामान पसंद करने और खरीदने और दूल्हा के भी शादी के तोहफ़े पसंद करने की ज़िम्मेदारी वर्वारा पाव्लोव्ना ने अपने ऊपर ले ली। उसमें व्यवहार-बुद्धि और सुरुचि की कोई कमी नहीं थी और उसे आराम से बड़ा लगाव था, और उसे हासिल करने की क्षमता भी उतनी ही थी। शादी के फ़ौरन बाद जब वे दोनों उसकी खरीदी हुई आरामदेह गाड़ी में लाव्रिकी के लिए रवाना हुए तब लाव्रेत्स्की को उसकी इस क्षमता का विशेष रूप से आभास हुआ। अपने आस-पास की हर चीज़ में लाव्रेत्स्की को वर्वारा पाव्लोव्ना की दूरदर्शिता, दूसरे की सुख-सुविधा के ध्यान और पहले से की गयी तैयारी की छाप दिखायी देती थी। अलग-अलग सुविधाजनक जगहों पर कैसे सुंदर सफ़री शृंगारदान

* 'मेरी बेटी अच्छे आदमी से ब्याह कर रही है।' (जर्मन)

दिखायी देते थे, कैसे बढ़िया सिगारदान और कॉफी के बर्तन, और रोज़ सबेरे वर्वारा पाव्लोव्ना खुद कितने सुंदर ढंग से कॉफी बनाती थी!

उस समय लाव्रेत्स्की की मानसिक दशा ऐसी नही थी कि वह चीज़ो को बहुत ध्यान से देखे वह आनद-विभोर था, हर्षोन्मत्त था, वह बच्चे की तरह सुख की इस मन स्थिति मे खो गया। वह सचमुच था भी बिल्कुल बच्चे जैसा भोला, यह नौजवान एल्साइडीस*। और क्या उसकी युवा पत्नी को देखते ही दर्शक उल्लसित नही हो उठता था; क्या उसमे अकथनीय विलासपूर्ण भावी उल्लासो के आश्वासन निहित नही थे? उसने इन आश्वासनो को आशा से अधिक पूरा किया। जब वह लाव्रिकी पहुची उस समय भरपूर गर्मी पड रही थी, उसने देखा कि घर अधेरा और गदा था, नौकर पुराने ढग के और हास्यास्पद थे, लेकिन उसे समझदारी की बात यही लगी कि वह अपने पति को इसका कोई सकेत न दे। अगर उसका लाव्रिकी मे बसने का कोई इरादा होता तो उसने वहा की हर चीज़ बदलवा दी होती, और, ज़ाहिर है, सबसे पहले घर की बारी आती, लेकिन उन मनहूस स्तेपी के मैदानो मे रहने का विचार उसके दिमाग मे एक क्षण को भी नही आया था; वह वहा उसी तरह रहती थी जैसे आदमी किसी पड़ाव मे रहता है, चुपचाप सारी असुविधाए सहते हुए और तरग मे आकर उनका मजाक उड़ाते हुए। मार्फा तिमोफेयेव्ना फेद्या से मिलने आयी, जिसे उन्होने पाला था, वर्वारा पाव्लोव्ना को वह बहुत अच्छी लगी लेकिन उन्हे वर्वारा पाव्लोव्ना बिल्कुल अच्छी नही लगी। नयी मालकिन की ग्लाफीरा पेत्रोव्ना से भी नही बनती थी, वह ग्लाफीरा को मनमानी करने देती अगर बूढे कोरोब्यीन की इच्छा अपने दामाद के कारोबार मे हाथ डालने की न होती; उनका कहना था कि ऐसे नज़दीकी रिश्ते-दार की जमीन-जायदाद का इतज़ाम देखने मे एक जनरल की भी कोई हेठी नही थी। इस बात की भी कल्पना की जा सकती है कि वह एहसान करके किसी बिल्कुल अजनबी आदमी की जायदाद का प्रबध करने के लिए भी राज़ी हो जाते। वर्वारा पाव्लोव्ना ने हमला बड़ी होशियारी से किया; अपने को सामने लाये बिना वह ऐसा जताती

---

* यूनानी पौराणिक कथाओ का नायक, शक्ति का प्रतीक। स०

रही कि वह अपनी नयी-नयी शादी की खुशी मनाने में, देहात के जीवन के शान्तिमय उल्लासों में, अपने संगीत और पढ़ने में पूरी तरह डूबी हुई थी लेकिन धीरे-धीरे उसने ग्लाफ़ीरा को उकसा-उकसाकर उसका धैर्य ऐसी सीमा पर पहुंचा दिया कि एक दिन सबेरे वह आग-बबूला होकर लाव्रेत्स्की के पढ़ने के कमरे में भागकर आयी और मेज़ पर चाभियों का गुच्छा फेंककर एलान कर दिया कि वह अब घर का इन्तज़ाम नहीं चलाती रह सकती और उसने वहां रहने से इनकार कर दिया। लाव्रेत्स्की, जो इस संभावना के लिए पहले से तैयार था, फ़ौरन उसके चले जाने के लिए राज़ी हो गया। ग्लाफ़ीरा को इसकी उम्मीद नहीं थी। "अच्छी बात है," उसने अपनी आंखों में आंसू भरकर कहा, "ऐसा लगता है कि इस घर में मैं ही एक फ़ालतू हूं; मैं जानती हूं कि मुझे यहां से, मेरे अपने घर से कौन निकलवा रहा है, लेकिन मेरी इतनी बात याद रखना, बेटा, – तुम्हें भी कभी कहीं घर का सुख नसीब नहीं होगा, और तुम उम्र-भर मारे-मारे फिरते रहोगे। मैं तुमसे बस इतना ही कहना चाहती हूं।" उसी दिन वह अपने छोटे-से गांव के घर में चली गयी और हफ़्ते-भर में जनरल कोरोब्यीन आ पहुंचे और अपनी मुद्रा और हाव-भाव से शिष्टतापूर्ण उदासी व्यक्त करते हुए उन्होंने सारी ज़मीन-जायदाद का इंतज़ाम अपने हाथों में संभाल लिया।

सितंबर में वर्वारा पाव्लोव्ना अपने पति को साथ लेकर सेंट पीटर्सबर्ग चली गयी। उसने दो जाड़े सेंट पीटर्सबर्ग में एक खूबसूरत, हवादार और सुचारु रूप से सजे हुए फ़्लैट में बिताये (गर्मियों में वे त्सार्स्कोये सेलो में रहने चले जाते थे); उन्होंने समाज के बीच के ही नहीं बल्कि ऊंचे क्षेत्रों में भी कई लोगों से जान-पहचान पैदा की, वे अकसर लोगों के यहां जाते थे और लोगों को अपने यहां बुलाते थे; और बहुत ही चित्ताकर्षक संगीत-संध्याओं और नाच-पार्टियों का आयोजन करते थे। वर्वारा पाव्लोव्ना की ओर मेहमान उसी तरह खिंचकर आते थे जैसे पतंगे चिराग़ की लौ पर आते हैं। इस तरह की चहल-पहल की ज़िंदगी फ़्योदोर इवानिच को बहुत पसंद नहीं थी। उसकी बीवी ने उसे कोई सरकारी नौकरी कर लेने की सलाह दी, अपने बाप की परंपरा को निभाते हुए और स्वयं अपनी प्रवृत्तियों को देखते हुए उसे सरकारी नौकरी करने की बिल्कुल इच्छा नहीं थी,

लिया। हफ़्ते-भर के अंदर ही वह पैदाइशी पेरिसवालियों की तरह शॉल ओढ़े, अपनी नाजुक छतरी खोलती हुई और दस्ताने पहने सड़क पर निकलने लगी। और जल्दी ही उसके जान-पहचानवालों का एक हल्क़ा बन गया। शुरू में तो सिर्फ़ रूसी ही उससे मिलने आते थे, फिर फ़्रांसीसी भी आने लगे, बेहद अच्छे तौर-तरीक़ों और मधुर नामोंवाले, बहुत ही मिलनसार और शिष्ट कुआंरे नौजवान; वे सभी धाराप्रवाह बोलते थे, सहज शालीनता से झुककर अभिवादन करते थे और जिस तरह वे अपनी आंखें सिकोड़कर देखते थे वह बहुत अच्छा लगता था, उनके गुलाबी होंठों के बीच से उनके सफ़ेद दांत मोतियों की तरह चमकते थे, और मुस्कराहट तो उनकी लाजवाब थी! उनमें से हर एक अपने दोस्तों को भी लाता था और जल्दी ही la belle madame de Lavretzki* की ख्याति शास्से द' आंतिन से रू द लिल सड़कों तक फैल गयी। उन दिनों (यह १८३६ की बात है) जर्नलिस्टों और पत्रकारों की वह पौध अभी तक पैदा नहीं हुई थी जो आज हर जगह टूटी हुई बांबी की चींटियों की तरह झुंड के झुंड पाये जाते हैं, लेकिन मोसियो जूल्स नाम के एक सज्जन फिर भी वर्वारा पाव्लोव्ना के दीवानख़ाने में पहुंचने लगे थे; उनकी सूरत-शक्ल भी कोई ख़ास अच्छी नहीं थी और बदनामी दूर-दूर तक फैली हुई थी, बेहद गुस्ताख़ और नफ़रत के क़ाबिल, जैसे आमने-सामने की लड़ाई में पिटे हुए सभी सूरमा होते हैं। वर्वारा पाव्लोव्ना को यह मोसियो जूल्स बहुत ही अनाकर्षक लगते थे, लेकिन वह उनको अपने यहां इसलिए आने देती थी कि वह विभिन्न अख़बारों में कुछ लिखते रहते थे और हमेशा उसका नाम किसी न किसी बहाने बीच में ले आते थे, कभी उसे m-me de L...tzki कहते, कभी m-me de..., cette grande dame russe si distinguée, qui demeure rue de P...** कहते, इस माध्यम से वह सारी दुनिया को, बल्कि कहना चाहिये कि अख़बार के उन चंद सौ पाठकों को, जिन्हें m-me de L...tzki में ज़रा भी दिलचस्पी नहीं थी, यह बताते थे कि वह कैसी आकर्षक और गुणविभूषित महिला थी, किस तरह उन्होंने फ़्रांसीसी औरतों जैसा दिल और दिमाग़ पाया था

---

* प्यारी मादाम लाव्रेत्स्की। (फ़्रांसीसी)

** यह कुलीन बड़ी रूसिन, इतनी प्यारी, जो प० सड़क पर रहती है। (फ़्रांसीसी)

(une vraie française par l'ésprit) — फ्रासीसी आदमी इससे ज्यादा तारीफ किसी की नही कर सकता – सगीत की उनमे कैसी सराहनीय प्रतिभा थी और वाल्ट्ज़ तो वह ऐसा नाचती थी कि जी खुश हो जाता था (वर्वारा पाव्लोव्ना सचमुच वाल्ट्ज तो ऐसा नाचती थी कि सभी देखनेवालो के दिल उसके उडते हुए साये की गोट की ओर खिचे चले आते थे) सारांश यह कि उसकी ख्याति दूर-दूर तक फैलाने मे इस पत्रकार का हाथ था, और यह निश्चित रूप से बहुत सुखद बात होती है। तब तक मादाम मार्स ने नाट्यमच पर अभिनय करना छोड दिया था, और मादाम राशेल अभी तक मच पर आयी नही थी; इसके बावजूद वर्वारा पाव्लोव्ना पाबदी से थिएटर देखने जाती थी। इतालवी सगीत उसे मत्रमुग्ध कर लेता था और वह ओद्री* के ध्वस पर हसती थी, कॉमेडी फ्रासेय पर बडे मर्यादित ढग से जम्हाई लेती थी और किसी अति-रोमाटिक मेलोड्रामा मे मादाम दोर्वाल का अभिनय देखकर उसकी आखो मे आसू आ जाते थे; और सबसे बडी बात तो यह थी कि लिस्ट स्वय दो बार उसके दीवानखाने मे अपनी सगीत-प्रतिभा का परिचय दे चुके थे, और उन्होने इतना अच्छा बजाया था, इतनी सादगी थी उनमे कि बस मज़ा आ गया था! जाडा ऐसी ही सुखद सवेदनाओ के बीच बीता, जिसके अत मे वर्वारा पाव्लोव्ना को राज-दरबार मे भी बुलाया गया। जहा तक फ्योदोर इवानिच का सवाल था, उसे कोई उकताहट नही होती थी, लेकिन कभी-कभी जिदगी का बोझ उसके कधो पर बहुत भारी लगता था – वह इतनी खोखली जो थी। वह अखबार पढता, सोर्बोन और कालेज द' फ्रास मे लेक्चर सुनने जाता, ससद मे होनेवाली बहसो की जानकारी रखता और उसने सिचाई के बारे मे एक वैज्ञानिक शोध-निबध का अनुवाद भी शुरू कर दिया था। "मै ज़रा देर को भी चैन से नही बैठता हू," वह सोचता, "यह सब किसी दिन काम आयेगा, लेकिन अगले जाडे मे मुझे हर हालत मे रूस वापस जाना होगा, और काम मे जुट जाना होगा।" यह कहना मुश्किल है कि उसके दिमाग मे इस बात की कोई सुस्पष्ट कल्पना थी भी या नही कि वह काम क्या होगा, और भगवान ही जानता है कि वह उस जाडे मे रूस जाने मे

---

* जान-शार्ल ओद्री – फ्रासीसी प्रहसन का अभिनेता। – स०

सफल भी हो पाता था नही – इसी बीच वह अपनी बीवी के साथ बाडेन-बाडेन के लिए रवाना हो रहा था।... एक अप्रत्याशित घटना ने उसकी सारी योजनाओं को गड़बड़ा दिया।

१६

एक दिन जब वर्वारा पाव्लोव्ना घर पर नही थी लाव्रेत्स्की सयोग से उसके निजी बैठके में चला गया और वहा उसकी नज़र फ़र्श पर बड़ी सावधानी से तह किये हुए कागज़ के एक टुकड़े पर पड़ी। उसने यत्रवत् उसे उठा लिया, यत्रवत् उसकी तह खोली और उसमे फ़ासीसी में लिखा हुआ यह सदेश पढा

"मेरी जान से प्यारी फ़रिश्ता बेट्सी! (मै अपने आपको किसी भी तरह तुम्हे बार्बे या वर्वारा कहने के लिए राज़ी नही कर पाता।) मै बुलिवार के कोने पर बेकार तुम्हारी राह देखता रहा; कल डेढ़ बजे हमारे छोटे-से घर पर आ जाना। उस वक्त तुम्हारे शरीफ़ मोटे पति (ton gros bonhomme de mari) आम तौर पर अपनी किताबो मे खोये रहते हैं; वहा हम फिर तुम्हारे कवि Pouskine का लिखा हुआ वही गीत (de votre poëte Pouskine) गायेगे जो तुमने मुझे सिखाया था 'बूढे शौहर, जालिम शौहर!' तुम्हारे नाज़ुक-नाज़ुक हाथो और कदमो पर हजारो बोसे। मै तुम्हारी राह देखूगा।
अर्नस्ट।"

लाव्रेत्स्की ने जो कुछ पढा था उसका आशय फौरन उसके दिमाग़ मे ठीक से बैठा नही, उसने दुबारा पढा – और उसका सिर चकराने लगा, उसके पावो के नीचे फ़र्श तूफ़ान के थपेड़े खाते हुए जहाज़ की तरह डगमगाने लगा। एक साथ ही वह चीख पडा, उसका दम घुटने लगा और वह रो पड़ा।

उसका दिमाग बिल्कुल फिर गया। उसने आख मूदकर अपनी बीवी पर भरोसा किया था, धोखेबाज़ी या बेवफ़ाई की सभावना कभी उसके दिमाग़ मे भी नही आयी थी। यह अर्नस्ट, उसकी बीवी का आशिक, सुनहरे बालोवाला २३ साल का आकर्षक-सा लड़का

जिसकी नाक छोटी-सी और चपटी और मूछे बडी सिजल कटी ; वर्वारा की जान-पहचान के सारे लोगो मे वह सबसे महत्त्वहीन कुछ मिनट बीते, आधा घटा बीत गया, लाव्रेत्स्की अब भी उस भाग्यनिर्णायक पर्चे को अपने हाथ मे मसल रहा था और दृष्टि से फर्श को घूर रहा था, ऐसा लग रहा था कि तेजी कर काटते हुए अधेरे के जाल मे से बेरग चेहरे उसकी ओर रहे थे; उसका हृदय मसोस उठा, उसे ऐसा लग रहा था ह गिर रहा है, एक अथाह गर्त मे गिरता चला जा रहा है। की जानी-पहचानी सरसराहट सुनकर उसकी तद्रा टूटी, वर्वारा वा, हैट लगाये और शॉल ओढे, अभी टहलकर लौटी थी। की सिर से पाव तक काप उठा और तेजी से कमरे के बाहर : वह महसूस कर रहा था कि इस हालत मे वह उसे नष्ट कर था, किसानो की तरह मार-मारकर उसकी जान ले सकता अपने हाथो से उसका गला घोट सकता था। वर्वारा पाव्लोव्ना रह गयी, उसने उसे रोकने की कोशिश की, वह बस इतना पाया कि उसने क्षीण स्वर मे "वेट्सी" कहा और झपटकर घर हर निकल गया।

लाव्रेत्स्की ने किराये की घोडागाडी ली और कोचवान से उसे के बाहर ले चलने को कहा। बाकी तमाम दिन और सारी रात इधर-उधर घूमता रहा, बार-बार वह रास्ते मे रुक जाता और निराशा मे अपने दोनो हाथ झटके के साथ ऊपर उठा देता क्षण उसका आचरण बिल्कुल पागलों जैसा हो जाता, और ही क्षण उसे हर चीज अचानक हास्यजनक लगने लगती, यहा कि वह बहुत मस्त महसूस करने लगता। सुबह-सबेरे ठिठुरन स करते हुए वह शहर के बाहर एक घटिया-सी सराय मे गया कमरा किराये पर लिया और खिड़की के सामने कुर्सी पर बैठ । उस पर जम्हाइया लेने का दौरा पड गया। उससे अपनी टागो ठीक से खडा भी नही हुआ जा रहा था, उसके शरीर मे जैसे शक्ति निचुड गयी थी और वह विक्षिप्त-सा हो उठा था, लेकिन थकन महसूस नही हो रही थी; —फिर भी थकन उस पर अपना र तो कर ही रही थी, वह बैठा हुआ कुछ भी समझे बिना शून्य घूरता रहा, वह समझ नही पा रहा था कि उसे हो क्या गया

था, वह अकेला क्यों था, उसके हाथ-पाव अकड़ क्यों गये थे और सुन्न क्यों हो गये थे, उसका मुह कड़ुवा क्यों हो रहा था और उसके दिल पर पत्थर जैसा बोझ क्यों था, वह इन अनजाने वाली कमरे में क्यों था, उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि उसने, वर्वारा ने, अपने आपको उस फ़ासीसी के हवाले क्यों कर दिया था, और वह, यह जानते हुए कि वह बेवफ़ाई कर रही थी, कैसे पहले की ही तरह सन्तुलित थी और उसके प्रति स्नेह-भरा और विश्वासपूर्ण व्यवहार कर रही थी! "मेरी समझ में कुछ भी नहीं आता!" उसने अपने सूखे होंठो में फुसफुसाकर कहा। "अब कौन दावे के साथ कह सकता है कि सेंट पीटर्सबर्ग में भी उसने " उसने सवाल अधूरा ही छोड दिया और सिर से पाव तक कापते हुए फिर जम्हाई ली। सुखद और उदास स्मृतिया एक जैसी पीडा पैदा करती हुई उसे डक मार रही थी; अचानक उसके दिमाग़ मे होकर यह विचार गुज़रा कि कई दिन पहले वर्वारा ने उसकी और अर्नस्ट की मौजूदगी में पियानो पर बैठकर 'बूढे शौहर, ज़ालिम शौहर!' वाला गीत गाया था। उसे उसके चेहरे की मुद्रा की, उसकी आखो की अजीब चमक की और उसके गालो पर छायी लाली की याद आयी – और वह सहसा उछल पड़ा; उसका जी चाहा कि उनके पास जाकर कहे: "तुम लोगों को मेरे साथ मज़ाक नही करना चाहिये था, मेरे परदादा किसानो को उल्टा लटकवा दिया करते थे, और मेरे दादा खुद किसान थे", – और इतना कहकर उन दोनो को मार डाले। फिर उसे ऐसा लगा कि यह सब कुछ एक सपना था, नही, सपना भी नही बल्कि किसी क़िस्म का मसखरापन था – उसे बस करना यह था कि चौंककर चारो ओर नज़र दौडाये।.. उसने चारो ओर नज़र दौड़ायी, और जिस तरह बाज़ अपने शिकार के शरीर मे पजे गडाता है, उसी तरह पीडा उसकी आत्मा में और गहरी पैठती गयी। सबसे बडी बात तो यह थी कि लाव्रेत्स्की को कुछ ही महीनो मे बाप बनने की उम्मीद थी। .. अतीत, भविष्य, उसका सारा जीवन विषाक्त हो गया था। आखिरकार वह पेरिस लौट आया, होटल में एक कमरा ले लिया और मोसियॉ अर्नस्ट का पर्चा उसने वर्वारा पाव्लोव्ना को इस पत्र के साथ भेज दिया:

"इस पत्र के साथ काग़ज़ का जो पुर्ज़ा है उससे तुम्हे सब मालूम हो जायेगा। लगे हाथ मै इतना बता दू कि तुममे यह उम्मीद नहीं

भाव का स्पष्ट चित्र देखा, और अपनी व्यथा के बीच उसने एक तरह का कुत्सापूर्ण सतोष महसूस किया। इसके साथ ही उसने ग्लाफ़ीरा पेत्रोव्ना को लिखा कि वह लाव्रिकी लौट आये और उसे उसके नाम का मुख्तारनामा बनाकर भेज दिया; लेकिन ग्लाफ़ीरा पेत्रोव्ना लौटकर लाव्रिकी नही गयी और उसने अखबारो मे यह नोटिस छपवा दी कि उस मुख्तारनामे को रद्द और बेकार समझा जाये, हालाकि उसे ऐसा करने की कोई जरूरत नही थी। इटली के एक छोटे-से कस्बे मे अपने गुप्तवास के दौरान बहुत समय तक लाव्रेत्स्की का जी ललचाता रहा कि वह अपनी बीवी की हरकतो पर खुफ़िया नजर रखे। अखबारो की खबरो से उसे पता चला कि पेरिस से वह बाडेन-बाडेन गयी थी, जैसी कि उसने योजना बनायी थी; कुछ ही दिन बाद उसका नाम एक पैराग्राफ मे छपा जिसके नीचे हमारे दोस्त मोसियो जूल्स के दस्तखत थे। लेखक के हमेशा के शैली के छिछोरेपन से पढ़नेवाले को उसमे एक दोस्ताना गम का अदाजा हो सकता था; वह पैराग्राफ पढ़कर फ्योदोर इवानिच पर गहरी घृणा का भाव छा गया। बाद मे उसे पता चला कि उसके एक बेटी पैदा हुई थी, दो महीने बाद उसे अपने कारिदे से मालूम हुआ कि वर्वारा पाव्लोव्ना ने पहली तिमाही का गुजारा वसूल कर लिया था। फिर अफवाहे दिन-ब-दिन बद से बदतर होती गयी और आखिरकार उन्होने एक ऐसी हास्यास्पद और दर्दनाक कहानी का रूप धारण कर लिया जो सारे अखबारो मे छपकर दूर-दूर तक फैल गयी, जिसमे उसकी बीवी ने शर्मनाक भूमिका अदा की थी। सब कुछ समाप्त हो चुका था· वर्वारा पाव्लोव्ना बदनाम हो चुकी थी।

लाव्रेत्स्की ने अब इस पर नजर रखना छोड़ दिया कि वह कहां गयी और कहां नहीं गयी लेकिन बहुत समय तक वह सभल नहीं पाया। कभी-कभी उसे अपनी बीवी की याद इतना सताती कि सब कुछ छोड़-छाड़ दे, शायद उसे माफ़ तक कर दे, बस एक बार फिर उसकी प्यार-भरी आवाज सुनने की खातिर, अपने हाथ मे उसके हाथ का स्पर्श महसूस करने की खातिर। लेकिन समय अपनी ही ऐसी कर रहा था। मुसीबत झेलकर शहीद बनना उसके भाग्य मे बदा नहीं था, उसका शान्त स्वभाव फिर हावी हो आया। उसकी आखे खुल गयी थी जो आघात उस पर हुआ था वह भी अप्रत्याशित नहीं लगने लगा, वह अपनी बीवी को समझने लगा था — हम अपने निकटतम को

पूरी तरह तभी ममझ सकते है जब हम उनसे अलग हो जाते है। उमने एक बार फिर अपनी पढ़ाई जारी कर दी और अपना काम शुरू कर दिया, लेकिन अब उसमें वह पहले जैसा जोश नही था. जीवन के अनुभव और उसके सस्कारो से उत्पन्न होनेवाला सशय उसके दिल में हमेशा के लिए घर कर चुका था। आस-पास की हर चीज से उसे विरक्ति-सी हो गयी। चार साल बीत गये और आखिरकार उसने महसूस किया कि उसमें अपने घर लौट जाने की और अपने लोगों से मिलने की शक्ति आ गयी है। सेट पीटर्सबर्ग या मास्को मे रुके बिना वह सीधा ओ नगर पहुचा जहा हम उससे अलग हुए थे और अब हम अपने प्रिय पाठको से हमारे साथ वही वापस चलने का अनुरोध करेंगे।

१७

अगले दिन सबेरे लगभग दस बजे लाव्रेत्स्की कलीतिन-परिवार के घर की बरसाती की सीढ़िया चढ़ता हुआ देखा गया। हैट लगाये हुए और दस्ताने पहने लीजा उसे मिल गयी।

"कहा चल दी?" उसने पूछा।

"प्रार्थना मे। आज इतवार है।"

"तुम गिरजे जाती हो?"

लीजा ने उसे मौन आश्चर्य से देखा।

"माफ करना," लाव्रेत्स्की ने कहा। "मेरा मेरा मतलब यह नही था। मै तुम लोगो से विदा होने आया हू। घटे-भर मे मै गाव के लिए रवाना हो जाऊगा।"

"यहा से बहुत दूर नही है वह जगह, न?"

"यही कोई पच्चीस वेर्स्ता।"

एक नौकरानी के साथ लेना बाहर आयी।

"तो, हम लोगो को भूल न जाइयेगा" लीजा ने सीढ़िया उतरते हुए कहा।

"हमें भी भुला न देना, अरे हा अच्छा याद आया उसने बात का सिलसिला बढाते हुए कहा, "चूकि तुम गिरजे जा रही हो—हमारे लिए भी प्रार्थना कर लेने मे हर्ज ही क्या है।"

लीज़ा रुकी और मुड़कर उनके सामने आ गयी।

"अगर आप चाहें," लीज़ा ने उनकी आंखों में आंखें डालकर कहा। "मैं आपके लिए भी प्रार्थना करूंगी। आओ, चलो, नेना।"

लाव्रेत्स्की ने बैठके में मार्या द्मीत्रियेव्ना को अकेला बैठा हुआ पाया। उनके शरीर से ओ-डि-कोलोन और पुदीने की गंध आ रही थी। उनके कथनानुसार उनके सिर में दर्द हो रहा था और रात उन्हें ठीक से नींद नहीं आयी थी। उन्होंने अपनी हमेशा जैसी अलसायी हुई मिलनसारी से उसका स्वागत किया और धीरे-धीरे बातचीत का सिलसिला शुरू किया।

"व्लादीमिर निकोलाइच बड़ा खुशमिज़ाज नौजवान है – तुम्हारा क्या ख्याल है?" उन्होंने उससे पूछा।

"यह व्लादीमिर निकोलाइच कौन है?"

"अरे, वही पाशिन जो कल यहां था। तुम्हारा उस पर काफ़ी रोब पड़ा, मैं तुम्हें भेद की बात बता दूं, mon cher cousin,* वह मेरी लीज़ा पर बिल्कुल लट्टू है। तो, वह बहुत अच्छे घर का लड़का है, आगे चलकर बड़ी तरक्की करनेवाला है, होशियार है, और दरबार में नौकर लगा हुआ है, और भगवान की मर्ज़ी हुई... मां के नाते मैं तो बस इतना ही कह सकती हूं कि मुझे बहुत खुशी होगी। ज़ाहिर है, बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी होती है यह, बच्चों की खुशहाली का दारोमदार यकीनन मां-बाप पर होता है, इससे तो इकार नहीं किया जा सकता, और सच बताऊं मैं तो इतने बरसों से यहां अकेली ही हूं, सारा काम खुद करती हूं, और न जाने क्या-क्या। बच्चों को पाल-पोसकर बड़ा किसने किया, उन्हें पढ़ाया-लिखाया किसने, और कौन था करनेवाला मेरे अलावा? इस वक्त भी, तुम जानो, मैंने एक फ़्रांसीसी गवर्नेस रख छोड़ी है।

मार्या द्मीत्रियेव्ना अपनी चिंताओं और परेशानियों और मातृत्व की भावनाओं का बखान करने लगीं। लाव्रेत्स्की चुपचाप बैठा सुनता रहा और अपनी हैट अपने हाथों में मरोड़ता रहा। उसकी कठोर बोझल दृष्टि से वह बातूनी महिला घबरा उठीं।

"और तुम्हें लीज़ा कैसी लगती है?" उन्होंने पूछा।

---

* मेरे प्रिय भाई। (फ़्रांसीसी)

"येलिज़ावेता मिख़ाइलोव्ना बहुत अच्छी लड़की है," लाव्रेत्स्की ने जवाब दिया। वह उठा, उसने झुककर विदा ली और मार्फ़ा तिमोफ़ेयेव्ना से मिलने अंदर चला गया। मार्या द्मीत्रियेव्ना ने उसकी दूर हटती हुई आकृति को अरुचि के भाव से देखा और सोचने लगी "कैसा उजड्ड आदमी है, बिल्कुल गंवार। अब मेरी समझ में आया कि इसकी बीवी क्यों इसकी वफ़ादार नहीं रह सकी।"

मार्फ़ा तिमोफ़ेयेव्ना अपनी घरेलू मंडली से घिरी अपने कमरे में बैठी थी। इसमें पांच प्राणी थे, जो सभी समान रूप से उन्हें दिल से प्यारे थे बड़ी-सी गलथैलीवाली एक चालाक बुलफिंच, जिससे उन्हें उस वक्त से ख़ास तौर पर प्यार हो गया था जबसे उसने सीटी बजाना और पानी चुराना छोड़ दिया था, एक सहमा हुआ, छोटा-सा भूखा-मारा कुत्ता जिसका नाम रोस्का था, एक बदमिज़ाज बिल्ला मैट्रोस, नौ साल की बड़ी-बड़ी आंखों और छोटी-सी नुकीली नाकवाली, सांवली-सी चंचल लड़की जिसका नाम शूरोच्का था, और लगभग पचपन साल की एक बुढ़िया जो सफ़ेद टोपी लगाये थी और गहरे रंग की पोशाक पर ऊंची-सी कत्थई जैकेट पहने थी, जिसका नाम था नस्तास्या कार्पोव्ना ओगार्कोवा। शूरोच्का गरीब घर की लड़की थी और अनाथ थी। रोस्का की तरह उसे भी मार्फ़ा तिमोफ़ेयेव्ना ने तरस खाकर अपने यहां रख लिया था, वह कुत्ता और वह लड़की दोनों उसे सड़क पर मिले थे; दोनों दुबले-पतले और भूखे थे, दोनों पतझड़ की बारिश में भीगे हुए थे, रोस्का का पीछा तो किसी ने नहीं किया, लेकिन शूरोच्का से उसके चाचा ने ख़ुशी-ख़ुशी पीछा छुड़ा लिया, वह एक शराबी मोची था, जिसके पास ख़ुद अपना पेट भरने को कभी काफ़ी नहीं होता था, और जो अपनी भतीजी को खाना देने के बजाय उसके सिर पर अपना कलबूत मारता था। नस्तास्या कार्पोव्ना से मार्फ़ा तिमोफ़ेयेव्ना की जान-पहचान एक मठ में हुई थी जहां वह गयी हुई थी; वह ख़ुद नस्तास्या कार्पोव्ना के पास गयी थी (मार्फ़ा तिमोफ़ेयेव्ना का कहना तो यह था कि वह जितनी रस-विभोर होकर सच्ची लगन से प्रार्थना करती थी उसकी वजह से वह उस पर रीझ गयी थी), उससे बातें की थीं और उसे चाय पीने के लिए बुलाया था। उस वक्त से वह उससे अलग नहीं हुई थी। नस्तास्या कार्पोव्ना बहुत ही हंसमुख और अच्छे स्वभाव की संतानहीन विधवा थी, और ग़रीब

नेक औरत थी, उसके गोल सिर पर सफ़ेद बाल थे, गोरे-गोरे मुला[illegible]
हाथ, कोमल चेहरा, तीखे नाक-नक़्शे में कृपालुता का भाव और [illegible]
ऊपर को उठी हुई मसखरेपन की नाक; उसके मन में मार्फ़ा ति[illegible]
फ़ेयेव्ना के प्रति गहरी श्रद्धा थी, और मार्फ़ा तिमोफ़ेयेव्ना को [illegible]
उससे बड़ा लगाव था, इस बात के बावजूद कि वह नस्तास्या कार्पो[illegible]
की रहमदिली का बहुत मज़ाक़ उड़ाती थीं: नौजवानों के लिए उस[illegible]
दिल में बड़ी कमज़ोरी थी और वह मामूली से मामूली मज़ाक़ प[illegible]
भी लड़कियों की तरह शरमा जाती थी। उसके पास कुल मिलाक[illegible]
१,२०० रूबल की पूंजी थी, वह मार्फ़ा तिमोफ़ेयेव्ना के ख़र्च प[illegible]
लेकिन उनके साथ बराबरी की हैसियत से रहती थी—मार्फ़ा तिमो[illegible]
फ़ेयेव्ना को भी किसी तरह की ताबेदारी गवारा नहीं थी।

"अरे! फ़ेद्या!" उसे देखते ही वह चिल्लायीं। "कल रा[illegible]
तुमने मेरे परिवार को नहीं देखा था—इस वक़्त हम सब लोग चा[illegible]
पीने के लिए जमा हुए हैं; यह हमारी दूसरी, छुट्टी की चाय है।
तुम इन सबको लाड-दुलार कर सकते हो; बस, शूरोच्का तुम्हें ऐसा
नहीं करने देगी और बिल्ला खरोच लेगा। तो तुम आज जा रहे हो?"

"जी हां," यह कहते हुए लाव्रेत्स्की एक नीचे-से स्टूल पर बैठ
गया। "मार्या द्मीत्रियेव्ना से मैं विदा हो आया हूं। येलिज़ावेता
मिख़ाइलोव्ना से भी मिल लिया हूं।"

"उसे लीज़ा कहा करो, बेटा; वह तुम्हारे लिए मिख़ाइलोव्ना
कब से हो गयी! अच्छा बहुत हिलो-डुलो नहीं, वरना शूरोच्का का
स्टूल टूट जायेगा।"

"वह गिरजे जा रही थी," लाव्रेत्स्की कहता रहा। "क्या वह
इतनी धर्मात्मा है?"

"हां, फ़ेद्या, वह बड़ी पक्की भक्त है; तुमसे या मुझसे भी
ज़्यादा, फ़ेद्या।"

"तो क्या आप धर्मात्मा नहीं हैं?" नस्तास्या कार्पोव्ना तुतलाती
हुई आवाज़ में बीच में बोल पड़ी। "अरे, भोर पहर की प्रार्थना
में नहीं गयी तो क्या हुआ, शाम की प्रार्थना में तो जायेगी।"

"नहीं, मेरी बहन; तू अकेली ही जाना—मैं आलसी हो गयी
हूं," मार्फ़ा तिमोफ़ेयेव्ना ने जवाब दिया। "मैं चाय बेतहाशा पीने
लगी हूं।" हालांकि वह नस्तास्या कार्पोव्ना के साथ बराबर का व्यवहार

थी लेकिन उससे बाते करते वक्त उसे 'तू' कहती थी – बहरहाल, ी पेस्तोव-परिवार की ही न पेस्तोव-परिवार के तीन आदमी रौद्र के खास दरबारियो मे रह चुके थे, मार्फा तिमोफेयेव्ना ानती थी।

"मै पूछना चाहता था," लाव्रेत्स्की ने फिर कहना शुरू किया, ी द्मीत्रियेव्ना अभी मुझे बता रही थी उसके बारे मे क्या है उसका? – पाशिन। वह कैसा आदमी है?"

"हे भगवान, कैसी बातूनी है वह औरत भी!" मार्फा तिमोफेयेव्ना ायी। "मैं समझती हू वह तुम्हे चुपके से बता रही होगी कि अपनी बेटी के लिए कैसा अच्छा वर फासा है। आखिर वह अपने ादरी के बेटे से मिस्कौट क्यो नही करती, दूसरो को तो चैन ने दे। अभी कुछ हुआ नही है, भगवान की कृपा से! लेकिन वह मे चर्चा करने से बाज नही आती।"

"भगवान की कृपा से क्यो?" लाव्रेत्स्की ने पूछा।

"क्योकि वह भलामानस मुझे बिल्कुल पसद नही है, और आखिर इतना खुश होने की क्या बात है?"

"वह आपको पसद नही है?"

"नही, मुझे तो नही है। वह सब पर अपना जादू नही चला ा। यही काफी है कि यह नस्तास्या कार्पोव्ना उसकी दीवानी यी है।"

बेचारी विधवा आश्चर्यचकित रह गयी।

"अरे, ऐसी बात कैसे कहती हैं, आप, मार्फा तिमोफेयेव्ना, तो भगवान से डरिये!" वह घबराकर बोली, उसका चेहरा गर्दन शर्म से लाल हो गये।

"और वह जानता है, वह बदमाश," मार्फा तिमोफेयेव्ना बीच ोल पड़ी, "वह औरतो के दिल को काबू मे करना जानता है इसे नसवार की एक डिबिया भेट की है, जानते हो। जरा इससे चुटकी नसवार मागो तो, फेद्या, तुम खुद देख लोगे कैसी खूबसूरत है, ढक्कन पर घोडे पर सवार एक हुसार की तस्वीर बनी है। ा, अब अपनी सफाई देने की कोशिश न करो।"

नस्तास्या कार्पोव्ना घोर निराशा के भाव से बस अपने हाथ ऊपर कर रह गयी।

"और लीज़ा का क्या कहना है?" लाव्रेत्स्की ने पूछा। "उसे वह पसंद है?"

"मेरा तो ख्याल है कि वह उसे पसद करती है – लेकिन फिर भगवान ही जाने! यह अजीब दिल, तुम जानो, घने अंधेरे जंगल जैसा होता है, खास तौर पर लड़की का दिल, मिसाल के लिए, शूरोच्का के दिल को ही ले लो – अब करो इसे समझने की कोशिश! जबसे तुम आये हो तबसे वह बाहर जाने के बजाय छिप क्यों गयी है?"

शूरोच्का अपनी खिलखिलाती हुई हसी दबाकर तीर की तरह कमरे से बाहर निकल गयी। लाव्रेत्स्की अपनी जगह से उठा।

"हा," उसने धीरे-धीरे कहा, "लड़कियों का दिल होता तो पहेली ही है।"

वह चल देने को तैयार हुआ।

"अच्छा, भला तुमसे जल्दी ही फिर मुलाकात होगी?" मार्फ़ा तिमोफ़ेयेव्ना ने कहा।

"बहुत मुमकिन है, बुआजी; यहा से बहुत दूर तो है नहीं, आप जानिये।"

"हां, सो तो है, तुम वसील्येव्स्कोये ही तो जा रहे हो। तुम लाव्रिकी मे नही रहना चाहते, ख़ैर, यह तुम्हारी मर्ज़ी है; बस इतना ध्यान रखना कि अपनी मा की कब्र पर ज़रूर हो आना, और जब वहा जाना तो अपनी दादी की कब्र पर भी। तुमने परदेस में न जाने कैसी-कैसी अजीब बाते अपने दिमाग मे भर ली होंगी, और कौन जाने, शायद वे अपनी क़ब्र के अदर महसूस करे कि तुम उनके पास आये हो। और, फ़ेद्या, ग्लाफ़ीरा पेत्रोव्ना के लिए प्रार्थना करवाना न भूलना, लो यह एक रूबल का सिक्का उसके लिए। लो, ले भी लो। यह काम मैं करवा रही हू। जब तक वह ज़िदा थी तब तक वह मुझे कभी अच्छी नही लगी, लेकिन इससे कोई इकार नहीं कर सकता कि वह लड़की थी स्वतत्र स्वभाव की। बड़ी बुद्धिमान थी वह, और तुम्हारे साथ उसने कोई बुरा सलूक भी नहीं किया। अच्छा, भगवान तुम्हें सुखी रखे, मै ना बात कर-करके तुम्हारा दिमाग चाट डालूगी।"

यह कहकर मार्फ़ा तिमोफ़ेयेव्ना ने अपने भतीजे को गले लगा लिया।

"और लीज़ा पान्शिन से शादी नहीं करेगी, तुम चिन्ता न करो

वह उससे अच्छा पति पाने के लायक है।"

"मै बिल्कुल चिता नही कर रहा हू," लाव्रेत्स्की ने जवाब दिया और चला आया।

१८

चार घटे बाद वह अपने घर की ओर जा रहा था। उसकी घोडा-गाडी देहात की कच्ची सडक पर तेजी से लुढकती जा रही थी। पद्रह दिन से बारिश नही हुई थी ; हवा मे बहुत महीन दूधिया कुहरा छाया हुआ था और उसने दूर के जगल को अपनी ओट मे ले लिया था, जहा से जलने की गध आ रही थी। हल्के नीले आसमान के पार धुधले-धुधले किनारोवाले परछाइयो जैसे बादलो के झुड रेग रहे थे, सूखी हवा के काफी तेज झोके लगातार आ रहे थे, जिनमे गर्मी मे कोई कमी नही हो रही थी। अपना सिर गद्दी पर टिकाकर और दोनो हाथ अपने सीने पर बाधकर, लाव्रेत्स्की तेजी से पीछे भागते हुए उन खेतो को देखता रहा जो उसके सामने पखे की तरह फैले हुए थे, धीरे-धीरे पीछे खिसकती हुई बेद की झाडियो को, उन बेवकूफ कौओ को जो गुजरती हुई गाडी को निरीह भाव से शका की दृष्टि से देख रहे थे, खेतो की मेडो की उन लबी-लबी पट्टियो को जिन पर वर्मवुड, मगवर्ट और मैदानी ऐश के पौधे उगे हुए थे, वह देख रहा था और निर्जन स्तेपी की इस ताजा और भरी-पूरी नग्नता को, इस हरियाली को, लबी-लबी ढलानो को, ओक के झुरमुटोवाले खड्डो को, छोटे-छोटे सुरमई गावो को, पतले-पतले बर्चवृक्षो को, बहुत समय से न देखी हुई इस पूरी रूसी दृश्यावली को देखते हुए वह उसकी हृदयतत्री को धीरे से छेडनेवाली भावनाओ से आदोलित हो उठा, जो सुखद भी थी और दर्द-भरी भी। धीरे-धीरे उसके विचार इधर-उधर भटकने लगे ; वे उतने ही अस्पष्ट और धुधले थे जितनी कि उन बादलो की आकृतिया जो सिर के ऊपर भटकती हुई लग रही थी। उसे अपने बचपन की, अपनी मा की याद आयी, उसे उसके मरने की घडी याद आयी, किस तरह उसे उसके पास लाया गया था, किस तरह उसने उसका सिर थामकर अपने सीने से चिपटा लिया था, किस तरह उसने धीरे-धीरे उसके ऊपर आसू बहाना शुरू किया था, फिर ग्लाफीरा

पेत्रोव्ना की ओर देखा था और अपने आपको रोक लिया था। फिर उसे अपने बाप की याद आयी जो शुरू मे बहुत मगन लेकिन निरंतर असतुष्ट रहते थे, जिनकी आवाज़ सुरीली थी, फिर वह अंधे हो गये थे, और हर समय रोते ही रहते थे, जिनकी सफ़ेद दाढ़ी उलझी हुई रहने लगी थी, उसे याद आया कि एक दिन खाने के वक़्त थोड़ी-सी शराब ज्यादा पी लेने और अपने नैपकिन पर शोरबा छलका लेने के बाद किस तरह वह अचानक हस पड़े थे और अपनी आखे झपका-झपकाकर सफलताओ के किस्से सुनाते हुए उनका चेहरा लाल हो गया था, उसे वर्वारा पाव्लोव्ना की याद आयी और वह अनायास ही तिलमिला उठा, उस आदमी की तरह जिसे अचानक टीस उठी हो, और वह अपना सिर हिलाकर रह गया। फिर उसके विचार आकर लीज़ा पर टिक गये।

"यह," उसने सोचा, "यह नया प्राणी है जो ज़िदगी मे अभी कदम रख ही रहा है। वह बहुत अच्छी लडकी है। मालूम नही उसका क्या होगा? वह खूबसूरत भी है। ताज़गी-भरा कुछ पीला-सा चेहरा, मुह पर और आखो मे गभीरता का ऐसा भाव, और सीधी-सादी भोली मुद्रा। अफ़सोस की बात है कि वह कुछ ज़रूरत से ज्यादा जोशीली मालूम होती है। काफी लबा कद, चाल मे नरमी और आवाज़ कितनी कोमल है उसकी! मुझे तो खास तौर पर उसकी वह अदा पसद है जिस तरह वह अचानक ठिठककर खडी हो जाती है, बिना मुस्कराये ध्यान से सुनती रहती है, फिर विचारमग्न होकर अपने बाल पीछे की ओर झिटक देती है। मै भी नही समझता कि पाशिन उसके लायक है। लेकिन उसमे खराबी क्या है? इसके अलावा, मै किस चीज़ के बारे मे सपने देख रहा हू? वह भी उसी रास्ते लग जायेगी जिस रास्ते सब लग जाती है। मै एक झपकी क्यो न ले लू।" और लाव्रेत्स्की ने अपनी आखे मूद लीं।

उसे नीद तो नही आयी लेकिन वह झोके ले-लेकर ऊपर झपकने लगा। अतीत की स्मृतिया धीरे-धीरे उभरकर उसके हृदय पर छाती गयी और दूसरी यादो के साथ घुलती मिलती गयी। किसी अज्ञात कारण से लाव्रेत्स्की ने अपने विचारो की दिशा राबर्ट पील की ओर मोड़ दी — फ्रास के इतिहास की ओर — इस बात की ओर कि अगर वह जनरल होता तो वह लड़ाई को किस तरह जीतता—उस

चलने की, खतरे की सूचना देनेवाले सकेतो की और लश्कर के कूच की आवाजे तक सुनायी देने लगी।. उसका सिर नीचे को ढलक आया, उसने आखे खोल दी। वही खेत, वही स्तेपी का दृश्य, घुमड़ती हुई धूल के पार बाहर की ओर जुते हुए घोडो के घिसे हुए नाल बारी-बारी से चमक रहे थे, कोचवान का पीला लबादा जिसमे लाल रग की कलिया लगी थी, हवा के झोको से गुब्बारे की तरह फूलकर उड रहा था। "तो मै कैसी हालत मे घर लौट रहा हू!" अचानक लाव्रेत्स्की के मन मे यह विचार उठा। उसने चिल्लाकर कहा, "और तेज़!", अपना लबादा शरीर के चारो ओर लपेटा, और गाड़ी की गद्दी मे और कसकर दुबक गया। गाडी ने एक झटका खाया, लाव्रेत्स्की सभलकर बैठ गया और उसने अपनी आखे पूरी खोल दी। उसके सामने टीले पर एक छोटा-सा गाव था, दाहिनी ओर थोडा-सा हटकर एक छोटी-सी गिरी-पडी हवेली दिखायी दे रही थी जिसकी खिडकियो की झिलमिलिया बद थी और जिसके सामने एक टेढी-सी बरसाती थी; चौडे-से अहाते मे फाटक से ही बिच्छूबूटियो के नीचे-नीचे पौधे उगे हुए थे, जो देखने मे गाजे के पौधो की तरह हरे और घने थे, वहा बलूत की लकडी की बनी हुई एक खत्तार भी थी। यही था वसील्येव्स्कोये।

कोचवान ने फाटक पर पहुचकर गाडी रोक दी, लाव्रेत्स्की का निजी नौकर कोचवान के बगलवाली सीट पर से उठ खडा हुआ, और मानो नीचे कूदने की तैयारी करते हुए चिल्लाया, "हेई!" भर्रायी हुई दबी-दबी भूकने जैसी आवाज़ आयी, लेकिन कुछ भी दिखायी नही दिया, कोई कुत्ता तक नही; नौकर एक बार फिर कूदने की मुद्रा मे खडे होकर चिल्लाया, "हेई!" भूकने जैसी वही कमजोर आवाज़ फिर सुनायी दी और क्षण-भर बाद न जाने कहा से एक आदमी उछलकर सामने आया और भागा हुआ अहाते मे पहुचा, वह नानकीन का काफ्तान पहने था और उसके सिर के बाल बर्फ जैसे सफेद थे; वह अपनी आखो पर हाथो का छज्जा-सा बनाकर गाडी को घूरता रहा, फिर अचानक उसने अपने दोनो हाथ जाघो पर ज़ोर से मारे, इधर-उधर तेजी से भागने लगा और फिर फाटक खोलने के लिए दौड़ा। बिच्छूबूटियो पर से गुजरते हुए चर्र-चर्र की आवाज़ पैदा करती हुई घोडागाडी अहाते मे आगे बढी और बरसाती के सामने पहुचकर रुक

गयी। सफ़ेद बालोंवाला वह आदमी जो स्पष्टत. मागने में बहुत कुशल था, अपनी टेढ़ी टांगे एक-दूसरे से दूर रखे सीढ़ियों के नीचे खड़ा था; उसने सामना खोला, झटके से गाड़ी का हुड बद कर दिया और मालिक को सहारा देकर उतारा और फिर उनका हाथ चूमा।

"कहो, कैसे हो!" लाव्रेत्स्की ने कहा। "तुम्हारा नाम आतोन है न? तो तुम अभी तक जिंदा हो?"

बूढ़े ने चुपचाप सिर झुका दिया और पांव घसीटकर चलता हुआ चाभिया लाने के लिए चल दिया। उसके चले जाने पर कोचवान कमर पर हाथ रखे चुपचाप बैठा बद दरवाज़े को घूरता रहा; लाव्रेत्स्की का निजी नौकर अपनी जगह से नीचे कूद आने के बाद कोचवान के बगलवाली सीट पर एक हाथ रखे तस्वीर की तरह ऐसे खड़ा था जैसे वही गड़कर रह गया हो। बूढ़ा चाभिया लाया और अपने शरीर को अकारण ही साप की तरह लहराते हुए, कुहनिया बाहर को निकालकर उसने दरवाज़ा खोला, एक तरफ़ को हट गया और एक बार फिर बहुत नीचे झुका।

"तो मै घर पहुच गया, एक बार फिर वापस आ गया मैं," लाव्रेत्स्की ने छोटी-सी ड्योढ़ी मे क़दम रखते हुए सोचा; एक-एक करके चूं-चूं की आवाज़ के साथ सारी खिड़कियो की झिलमिलियां खोल दी गयी, और सुनसान कमरों मे रोशनी आने लगी।

१६

वह छोटा-सा घर जिसमे लाव्रेत्स्की आकर उतरा था और जहा दो साल पहले ग्लाफ़ीरा पेत्रोव्ना मरी थी, पिछली शताब्दी मे देवदार की ठोस लकड़ी से बनाया गया था; वह बस देखने मे ही टूटा-फूटा मालूम होता था, लेकिन अभी पचास साल या उससे भी ज्यादा चल सकता था। लाव्रेत्स्की ने सब कमरो का चक्कर लगाया, और सारी खिड़कियां खुलवा दी, जिससे सरदलो के नीचे आराम से चुपचाप ऊंघती हुई धूल से अटी बूढ़ी मक्खियों को बहुत परेशानी हुई। ग्लाफ़ीरा पेत्रोव्ना के मरने के बाद मे किसी ने उन्हे नहीं खोला था। घर की कोई भी चीज़ छुई नहीं गयी थी: ड्राइंग-रूम मे पतले-पतले पायोंवाले दीवान, जिन पर दमिश्क के सुरमई रंग के चमकीले रेशम का कपड़ा मढ़ा

हुआ था, जो जगह-जगह से घिस गये थे और धस गये थे, कैथरीन महान के जमाने की याद दिलाते थे, वही ड्राइग-रूम मे घर की मालकिन की ऊची सीधी पीठवाली सबसे प्रिय कुर्सी थी, जिसकी पीठ का सहारा उसने बुढापे मे भी कभी नही लिया था। मुख्य दीवार पर फ्योदोर के परदादा अद्रेई लाव्रेत्स्की की एक पुरानी तस्वीर लटकी हुई थी; गहरे रग की जालदार पृष्ठभूमि पर उनका गहरे रग का गुस्सैल चेहरा मुश्किल से ही दिखायी पडता था, झुके हुए भारी पपोटो के नीचे से उनकी छोटी-छोटी आखे कठोरता से देख रही थी, उनके चिताग्रस्त सिलवटे पडे हुए माथे के ऊपर बिना पाउडर लगे रूखे बाल ऊपर की ओर उठे हुए थे। तस्वीर के फ्रेम के एक कोने से इम्मार्टेलिस के फूलो का धूल से अटा हार लटका हुआ था। "ग्लाफीरा पेत्रोव्ना ने वह हार खुद बनाया था," आतोन ने बताया। सोने के कमरे मे पुराने जमाने के किसी कपडे के धारीदार चदवे के नीचे एक पतला ऊचा-सा पलग था, पलग पर उडे हुए रगवाले तकियो का ढेर पडा था और एक तार-तार पलगपोश बिछा था, और उसके सिर-हाने एक देव-प्रतिमा टगी हुई थी जिसमे गिरजे मे 'धन्य कुआरी मरियम का प्रवेश' चित्रित किया गया था, यह वही देव-प्रतिमा थी जिसे उस अविवाहित बुढिया ने अपनी सूनी मृत्यु-शय्या पर लेटे-लेटे अतिम बार अपने ठिठुरे हुए होटो से लगाया था। खिडकी के पास लकडी की पच्चीकारी के काम की एक शृगार-मेज रखी थी जिसमे पीतल के कब्जे-कुडे लगे थे और सवलाये हुए सुनहरे फ्रेम मे एक आईना लगा था जिसमे विकृत प्रतिबिब दिखायी देता था। सोने के कमरे से मिला हुआ देव-प्रतिमाओ का कमरा था, जो वास्तव मे नगी दीवारो-वाली एक कोठरी थी जिसके एक कोने मे प्रतिमाओ के लिए एक बडी-सी अल्मारी रखी थी; वहा फर्श पर एक फटा-पुराना कालीन बिछा था जिस पर जगह-जगह मोम के धब्बे पडे हुए थे, ग्लाफीरा पेत्रोव्ना इसी पर घुटने टेककर प्रार्थना करती थी। आतोन अस्तबल और गाडी-खाना खोलने के लिए लाव्रेत्स्की के नौकर के साथ चला गया, उसकी जगह एक छोटी-सी लगभग उसी की उम्र की एक बुढिया प्रकट हुई, जिसने अपने माथे पर नीचे तक रूमाल बाध रखा था, उसका सिर हिलता था और उसकी आखे रिक्त-भाव से देखती थी लेकिन उनमे उत्कठा थी—जो कोई आपत्ति किये बिना सेवा करने की वर्षों

की आदत का परिणाम था — साथ ही उनमें एक तरह की श्रद्धा-मिश्रित खेद की भावना भी होती थी। उसने लाव्रेत्स्की का हाथ चूमा और चुपचाप दरवाजे पर खडी उसके आदेश की प्रतीक्षा करने लगी। लाख कोशिश करने पर भी लाव्रेत्स्की को उसका नाम याद न आ रहा था और न ही उसे यह याद आ रहा था कि उसने उसे कभी देखा था; पता यह चला कि उसका नाम अप्राक्सिया था; चालीस साल पहले ग्लाफ़ीरा पेत्रोव्ना ने उसे घर से निकालकर मुर्गीखाने मे काम करने के लिए भेज दिया था; वह बोलती बहुत कम थी — मानो उसकी चेतनाएं लुप्त हो गयी हों — और वह अपने मालिक को बस याचना-भरी दृष्टि से देखती रह सकती थी। इन दो बूढे प्राणियो और लबे-लबे भबले पहने मटके जैसे पेटोवाले तीन बच्चो के अलावा — जो आतोन के परपोते थे, उस भू-सपत्ति पर एक छोटे कद का लूला किसान भी रहता था, जिसे काम करने से छूट दे दी गयी थी; वह जगली मुर्गे की तरह न जाने क्या कुड़-कुड़ करता घूमता रहता था और किसी भी काम का आदमी नही था; उतना ही निकम्मा वह मरियल कुत्ता था जिसने भूककर घर आने पर लाव्रेत्स्की का स्वागत किया था; दस साल तक वह ग्लाफ़ीरा पेत्रोव्ना के हुक्म से खरीदी गयी एक मोटी-सी जजीर से बधा रहा था, और अब वह मुश्किल से ही चल-फिर पाता था और उसके लिए अपना बोझ घसीटना भी दूभर था। घर का निरीक्षण कर चुकने के बाद लाव्रेत्स्की बाग मे गया, जिसे देखकर उसका जी खुश हो गया। चारों ओर घास-फूस और बुर्डोक और रसभरी और गूसबेरी की झाड़िया उगी हुई थी, लेकिन लाइम के उन पुराने पेड़ो की वजह से काफी छाया थी जो अपने आकार और अपनी शाखो की अनोखी जमावट दोनो ही की दृष्टि से उल्लेखनीय थे, वे एक-दूसरे के बहुत निकट बोये गये थे और कभी-न-कभी — शायद सौ साल पहले — उन्हे काटा-छाटा भी गया था। बाग के छोर पर एक छोटा-सा साफ पानी का तालाब था जिसके चारों ओर बादामी रंग के [illegible] सरकंडों का घेरा था। मानव-जीवन के चिह्न बहुत जल्दी मिट जाते हैं, ग्लाफ़ीरा पेत्रोव्ना का मकान अभी बिल्कुल निर्जन तो नहीं हुआ था, लेकिन ऐसा जरूर लगता था कि वह उस निद्रा में डूब गया है जिसमें पृथ्वी के उन भागों का हर जीव सो जाता है, जहां [illegible] बना [illegible] ओस के स्पर्श से वे कलंकित न हुए

हो। फ्योदोर इवानिच ने टहलते हुए गाव का भी चक्कर लगाया, किसान औरते अपने गालो को हाथ पर टिकाये अपने घरो की चौखट पर खडी उसे देखती रही; मर्दों ने दूर से ही झुककर सलाम किया, बच्चे डरकर भाग गये और कुत्ते निरीह भाव से भूकते रहे। उसे भूख लगने लगी लेकिन उसके नौकर और बावर्ची के शाम से पहले आने की कोई उम्मीद नहीं थी। लाव्रिकी से खाने-पीने का सामान लेकर गाडिया अभी नही आयी थी—मजबूर होकर उसे आतोन का सहारा लेना पडा। वह अपने मालिक की इच्छा पूरी करने मे पूरी मुस्तैदी से जुट गया: उसने एक बूढी मुर्गी पकडकर काटी और उसके पर नोच डाले, अप्राक्सिया ने उसे साफ किया और पकाने के बर्तन मे उसे डालने से पहले इस तरह मल-मलकर धोया जैसे कोई मैला कपडा धो रही हो; जब मुर्गी पककर तैयार हो गयी तो आतोन ने मेज़पोश बिछाकर खाने की मेज तैयार की, उस पर छुरी और काटा, चादी की पालिश का तीन टागवाला नमकदान और पतली गर्दन की कटग्लास की शराब की सुराही रखी जिसमे काच की गोल डाट लगी हुई थी, इसके बाद उसने अपने मालिक को लयदार आवाज़ मे सूचना दी कि खाना मेज पर लग गया है, और उनकी कुर्सी के पीछे खडा हो गया, उसका दाहिना हाथ एक झाडन मे लिपटा हुआ था और उसके शरीर से तीखी, बेहद पुराने किस्म की गध आ रही थी, साइप्रेस के पेड की गध जैसी। लाव्रेत्स्की ने थोडा-सा सूप खाने के बाद मुर्गी की तरफ हाथ बढाया; उसकी खाल पर बडे-बडे दाने जैसे उभरे हुए थे, दोनो टागो के एक सिरे से दूसरे सिरे तक मोटी-मोटी नसे चली गयी थी, उसके मास से लकडी और सज्जीदार पानी की बू आ रही थी। खाना खत्म करके लाव्रेत्स्की ने चाय पीने की इच्छा प्रकट की, अगर "अभी लाया, सरकार," बूढे ने उसकी बात पूरी होने से पहले ही कहा और अपना वचन पूरा भी किया। लाल कागज़ की पुडिया मे लिपटी हुई एक चुटकी चाय कही से ढूढ निकाली गयी, एक छोटा-सा लेकिन बहुत मजबूत और शोर मचानेवाला सामोवार खोजकर लाया गया और शकर के कुछ छोटे-छोटे टुकडे भी, जो पिघले हुए मालूम होते थे। लाव्रेत्स्की ने एक बडे़-से प्याले मे चाय पी; उसे यह प्याला अपने बचपन के दिनो से याद था; उसके बाहर ताश के पत्ते बने हुए थे और वह सिर्फ मेहमानो के लिए इस्तेमाल किया जाता था—और

इस वक्त वह भी मेहमानों की तरह ही उसमें चाय पी रहा था। नौकर शाम को आये; लाव्रेत्स्की अपनी बुआ के पलग पर नही सोना चाहता था, उसने खाने के कमरे में अपने लिए दूसरा पलग बिछवाया। मोमबत्ती बुझाकर वह बडी देर तक लेटा अपने चारो ओर देखता रहा, और उसके दिमाग मे उदासी-भरे विचार आते रहे; उसने वही भावना अनुभव की जिससे हर वह आदमी परिचित होता है जिसने किसी ऐसी जगह मे रात बसर की हो जहा बहुत दिनों से कोई न रहा हो; ऐसा लगता था कि यह अधेरा, जो चारों ओर से उसे दबोचे ले रहा था, घर मे आकर बसनेवाले इस नये आदमी का आदी नहीं था, घर की दीवारे तक, ऐसा लगता था, भौचक्की रह गयी थी। आखिरकार उसने आह भरी और कबल ओढ़कर सो गया। घर के बाकी सब लोगों के सो जाने के बाद तक आतोन जाग रहा था; वह बडी देर तक अप्राक्सिया से खुसर-फुसर बाते करता रहा, दबी आवाज मे कराहता रहा और दो-एक बार उसने अपने सीने पर सलीब का निशान बनाया; उन दोनों मे से किसी को यह गुमान भी नही था कि उनका मालिक आकर वसील्येव्स्कोये मे बसेगा, जबकि इतने क़रीब उसके पास इतनी अच्छी जमीन-जायदाद और आलीशान हवेली थी; यह बात उनके दिमाग मे ही नही आ सकती थी कि उस जगह से उसे नफ़रत थी—उसके साथ अनगिनत दु.खद स्मृतिया जुड़ी हुई थीं। कानाफूसी कर चुकने के बाद आतोन ने लाठी उठाकर बखार के पास लटके हुए चौकीदार के तख्ते पर चोट मारी, जिस पर इतने दिन से कोई आवाज नहीं की गयी थी, और अपना सफेद बालोवाला सिर ढके बिना वही अहाते मे सोने के लिए लेट गया। मई की रात कोमल और सुहानी थी, और बूढा मीठी नीद सो गया।

२०

अगले दिन सबेरे लाव्रेत्स्की जल्दी उठा, कारिंदे से पूछताछ की, खलिहान देखने गया, घर के कुत्ते के गले से जजीर खोल देने का आदेश दिया, जो बस उखड़ी-उखड़ी आवाज मे भूका लेकिन अपने दड़बे से बाहर नही निकला; घर वापस आकर लाव्रेत्स्की पर शांति-पूर्ण निष्क्रियता-सी छा गयी जिसमें वह दिन भर डूबा रहा। "बिल्कुल

नदी की तली मे पहुचकर मैंने लगर डाला है," उसने अनेक बार मन ही मन कहा। वह खिडकी के पास निश्चल बैठा मानो अपने चारो ओर बह रही शातिपूर्ण जीवन की धारा का स्वर, देहात के शात जीवन की अनोखी आवाज़े सुनता रहा। बिच्छूबूटियो के पार कही से एक क्षीण महीन आवाज़ सुनायी दी; किसी भुनगे ने उसी सुर मे अपना सुर मिला दिया। पहलेवाली आवाज़ तो धीरे-धीरे डूब गयी लेकिन भुनगा भनभनाता रहा, मक्खियो की करुण नपी-तुली निरतर भनभनाहट को चीरता हुआ एक मोटे-से भौंरे का ज़ोरदार गुजन सुनायी दिया, जो लगातार छत से अपना सिर मार रहा था, बाहर मुर्गा बाग दे रहा था और अतिम सुर को अपने भर्राये स्वर मे देर तक विस्तार दे रहा था; एक गाडी खडखड करती हुई गुज़र गयी। गाव मे कहीं किसी का फाटक चरचराया। "क्या कहते हो?" एक किसान औरत का कर्कश स्वर सुनायी दिया। "मेरी लाडली," आतोन ने दो बरस की उस बच्ची से कहा जिसे वह अपनी गोद मे उछाल रहा था। "क्वास ले आओ," उसी औरत की आवाज़ फिर सुनायी दी–और अचानक चारो ओर घोर निस्तब्धता छा गयी, कही कोई भनक तक नही सुनायी दे रही थी, ज़रा-सी भी आवाज़ नही, हवा मे कोई पत्ता तक नही हिल रहा था; ज़मीन के ऊपर अबाबीले एक के बाद एक चुपचाप चक्कर काटती हुई गुज़र जाती थी, और उनकी यह मौन उडान दिल को उदास कर देती थी। "बिल्कुल नदी की तली मे पहुचकर मैंने लगर डाला है," लाव्रेत्स्की ने एक बार फिर सोचा। "और यहा ज़िंदगी हमेशा शात रहती है और उसे किसी बात की कोई जल्दी नही रहती," वह सोचता रहा। "जो भी इसके दायरे मे आ जाता है उसे इसकी ताकत के आगे हथियार डाल देने पड़ते हैं; यहा सारी चिताए दूर हो जाती हैं, और दिमाग़ को कोई चीज़ परेशान नही करती रहती; यहा ठीक से उसी की निभती है जो अपने हल की लीक के पीछे चलनेवाले हरवाहे की तरह अपनी राह पर अपनी गति को एक जैसा बनाये रखता है। और इस एकात शान्ति मे कितनी शक्ति, कितनी स्वस्थता छिपी हुई है। यहा खिडकी के नीचे घनी-घनी घास के बीच मे सशक्त बुर्दोक तेज़ी से बढकर ऊपर निकल आता है; उसके ऊपर लवेज की रस-भरी डठले पहुच जाती है और उससे भी ऊपर कुमारी-कुज की लताओ की कोमल गुलाबी

डोरियां रेंगती रहती हैं ; और दूर खेतों में पकी हुई रई चमकती रहती है, जई पर बाले आ चुकी होती हैं, और हर पेड़ की हर पत्ती और हर डठल पर घास का हर तिनका अपनी भरपूर हद तक बढ़ने लगता है और खिल उठता है। मेरे जीवन का सबसे अच्छा समय एक औरत से प्यार करने मे बीता है," लाव्रेत्स्की अपने विचारों में खोया रहा, "अब एकातवास की नीरसता शायद मेरा दिमाग़ ठिकाने लगा दे, मुझे सात्वना दे और मुझे आराम से अपना काम शुरू करने के लिए तैयार करे।" और एक बार फिर वह निस्तब्धता के स्वर सुनने लगा, मन मे किसी आशा के बिना – फिर भी वह निरतर दुविधा मे पड़ा हुआ था, मानो किसी चीज़ की उम्मीद कर रहा हो ; नीरवता ने उसे चारो ओर से घेर लिया ; सूरज शात नीले आकाश को धीरे-धीरे पार कर रहा था और बादल सिर के ऊपर हौले-हौले मडला रहे थे, ऐसा लगता था जैसे उन्हे मालूम हो कि वे क्यो मडला रहे हैं और किधर जा रहे हैं। इसी समय दुनिया की दूसरी जगहो पर जीवन का कोलाहल मचा हुआ था, वह जल्दी-जल्दी आगे बढ़ रहा था और रास्ते मे टकराता जाता था ; यहा वह नि.शब्द रेंगता हुआ आगे बढ़ रहा था, जैसे दलदल की घास पर से पानी बहता है ; और शाम को बहुत देर तक लाव्रेत्स्की पीछे हटते हुए इस जीवन के बारे मे सोचने से अपने आपको अलग न कर सका जो अनजाने ही धीरे-धीरे फिसलता जा रहा था ; बीते हुए दिनों का ग़म उसके दिल मे वसत के शुरू की बर्फ की तरह पिघल रहा था – और बात कुछ विचित्र तो ज़रूर लगती थी, लेकिन अपनी मातृभूमि का प्रेम उसके हृदय मे कभी पहले इतनी गहराई और मज़बूती से नही जम पाया था।

२१

दो ही एक हफ्तो के अदर फ्योदोर इवानिच ने ग्लाफ़ीरा पेत्रोव्ना के उस छोटे-से घर को व्यवस्थित कर दिया, अहाते और बाग़ में सफ़ाई करवा दी, लाव्रिकी से आरामदेह फ़र्नीचर मगवाया गया, शहर से शराब, किताबें और पत्रिकाए मगायी गयी, अस्तबल मे घोड़े दिखायी देने लगे, मतलब यह कि फ्योदोर इवानिच ने अपनी ज़रूरत का सारा सामान जुटा लिया और ज़िदगी का एक ढर्रा बना

लिया, जिसके बारे मे यह नही कहा जा सकता था कि वह गाव के जमीदार की जिंदगी का ढर्रा था या सन्यासी की। उसके दिन एक जैसे बीतने लगे, लेकिन उसे कोई उकताहट नही थी, हालाकि वह किसी से मिलता नही था; वह बडी लगन से जमीन-जायदाद की देखभाल मे लग गया, घोड़े पर बैठकर वह देहात मे घूमता था और थोडा-बहुत पढता था। लेकिन वह पढता बहुत कम था, उसे बूढे आतोन के किस्से सुनना ज्यादा अच्छा लगता था। लाव्रेत्स्की आम तौर पर अपना पाइप और ठडी चाय का एक प्याला लेकर खिडकी के पास बैठ जाता था; आतोन पीठ के पीछे हाथ बाधकर खडा हो जाता था और पुराने जमाने की अपनी लबी चक्करदार कहानिया सुनाना शुरू कर देता था, उस ठाठदार पुराने जमाने की कहानिया जब रई और जई तौलकर नही बल्कि बडे-बडे बोरो मे दो-तीन कोपेक बोरे के हिसाब से बेची जाती थी, जब अभेद्य जगल और स्तेपी के अछूते मैदान चारो ओर बिल्कुल शहर तक फैले हुए थे। "और अब," बूढे ने, जो अस्सी की उम्र पार कर चुका था, शिकायत के स्वर मे कहा, "इतने जगल काट डाले गये है और इतनी जमीन पर हल चलवा दिया गया है कि कही गाडी गुजरने की जगह भी नही बची है।" आतोन अपनी मालकिन ग्लाफीरा पेत्रोव्ना के बारे मे भी बहुत-से किस्से सुनाता था; वह कितनी समझदार और किफायतशार थी; किस तरह एक नौजवान पड़ोसी सज्जन ने उनकी नजरो मे चढने की कोशिश की थी और अकसर उनसे मिलने आया करते थे, और किस तरह मालकिन उन्हे खुश करने के लिए गहरे लाल रग के फीतोवाली सैर-सपाटे के वक्त लगाने की टोपी और त्रू-त्रू-लेवैटाइन का अपना पीला गाऊन तक पहनने पर राजी हो गयी थी, लेकिन बाद मे जब उन्ही सज्जन ने बडी नासमझी का सबूत देते हुए यह पूछा था कि उनकी हैसियत कितने की है तो किस तरह मालकिन आगबबूला हो उठी थी और उन्हे उस घर मे कदम तक रखने से मना कर दिया था, और किस तरह उन्होने फौरन यह आदेश दे दिया था कि उनके मरने के बाद रत्ती-रत्ती हर चीज फ्योदोर इवानिच को मिले। और, सचमुच, लाव्रेत्स्की को अपनी बुआ की सारी गृहस्थी ज्यो की त्यो मिल भी गयी, सैर-सपाटे के वक़्त लगाने की गहरे लाल रग के फीतोवाली उस टोपी और त्रू-त्रू-लेवैटाइन के उस गाऊन समेत।

लाव्रेत्स्की को वहा जिन पुराने कागजात और दिलचस्प दस्तावेज़ो के मिलने की उम्मीद थी, वे तो वहा कही थे नही, बस एक पुरानी किताब के अलावा जिसमे उसके दादा प्योत्र अंद्रेइच ने एक जगह लिखा था: "सेंट पीटर्सबर्ग के शहर मे तुर्की के साम्राज्य के साथ महामहिम प्रिंस अलेक्सान्द्र अलेक्सान्द्रोविच प्रोज़ोरोव्स्की द्वारा की गयी शान्ति-सधि का उत्सव मनाया गया"; एक और जगह फेफड़े की दवा का नुस्खा लिखा था, जिसके साथ यह टिप्पणी भी थी: "मै हिदायतें होली ट्रिनिटी के चर्च के लाट पादरी फ्योदोर आव्क्सेंत्येविच ने जनरैल साहब की पत्नी प्रस्कोव्या फ्योदोरोव्ना साल्तिकोवा को दी थी", कही और एक राजनीतिक खबर दर्ज थी "अब फ़ासीसी शेरो की चर्चा बद हो गयी है," और उसी के पास यह दर्ज था "'मस्कोव्स्किये वेदोमोस्ती' ने सीनियर मेजर मिखाइल पेत्रोविच कोलिचेव के मरने की खबर छापी है। कही यह प्योत्र वसील्येविच कोलिचेव का बेटा तो नही है?" लाव्रेत्स्की को कुछ पुराने कलेडर और कल्पनाओ पर आधारित पुस्तके और एम० अबोदिक की वह रहस्यमयी रचना भी मिली, इस बहुत समय से भूली हुई लेकिन चिर-परिचित 'प्रतीक और सकेत-चिन्ह' पुस्तक ने उसके मन मे कितनी ही स्मृतियां जागृत कर दी। ग्लाफ़ीरा पेत्रोव्ना की शृगार-मेज़ मे लाव्रेत्स्की को काले फीते से बधा हुआ और काली लाख से मुहरबद एक छोटा सा पैकेट मिला जिसे दराज मे बिल्कुल अदर घुसेड रखा गया था। उस पैकेट मे आमने-सामने दो तस्वीरे थी एक उसके बाप की जवानी का पेस्टेल-चित्र, जिसमे उनके मुलायम बालो के छल्ले उनके माथे पर पड़े हुए थे, और उनकी आखे बादाम की शक्ल की और शिथिल थी और होठ अधखुले थे, और दूसरी तस्वीर जो धुधली पड़ गयी थी लगभग बिल्कुल मिट चुकी थी, सफेद पोशाक पहने एक मुरझायी हुई मुस्कानवाली औरत की थी जिसके हाथ मे सफेद गुलाब का फूल था — यह उसकी मा का चित्र था। ग्लाफ़ीरा पेत्रोव्ना कभी अपना चित्र बनवाने पर राजी नही हुई थी। 'मालिक सरकार फ्योदोर इवानिच' आन्तोन अक्सर लाव्रेत्स्की को बताया करता था, 'हम इस घर मे तो नही रहते थे, पर हम अभी तक आपके परदादा आंद्रेई अफ्नासेयेविच को याद है सच पूछो तो जब वह मरे हम तो पूरे अठारह बरस के भी नही थे। एक दफा बाग मे उनसे हमारी आमना-

सामना हो गया, और हम थर-थर कापने लगे, इतनी बात जरूर है; पर उन्होने किया कुछ नही, बस हमारा नाम पूछा और कमरे से एक रूमाल ले आने को भेज दिया। बहुत शानदार आदमी थे सचमुच,—हा, किसी से दबनेवाले नही थे, और यह सब कुछ इसलिए था कि उनके पास एक कमाल का तावीज था, आपके परदादा के पास; एथोस पर्वत के एक पादरी ने उन्हे भेट मे दिया था यह तावीज और उनसे उसने कहा था, इस पादरी ने, 'मै यह भेट आपको मेरे सरकार, इसलिए दे रहा हू कि आपने मेरी ऐसी अच्छी आवभगत की; जब तक आप इसे पहने रहेगे आपको किसी बात का डर नही रहेगा।' मालिक, आप जानिये, कैसा वक्त था वह, मालिक जो चाहे कर सकता था, कभी-कभी किसी भले आदमी के मन मे उनसे टक्कर लेने की बात समा जाती थी, लेकिन वह बस उसकी तरफ देखकर इतना कहते थे, 'बेचारी मछली'—यह बात वह हरदम कहते थे। और वह, आपके परदादा, भगवान उन पर अपनी कृपा बनाये रखे, एक छोटे-से लकडी के घर मे रहते थे, और जो सामान वह अपने पीछे छोड गये, चादी के बर्तन और न जाने क्या-क्या, अरे, सारी कोठरिया-तहखाने भरे थे उनसे! बहुत हाथ रोककर खर्च करते थे वह, हा। वह शराब की सुराही, जिसे आप कहते थे कि आपको बहुत अच्छी लगती है, वह भी उन्ही की थी वह वोद्का उसी मे से पीते थे। अब अपने दादा को ही ले ले, प्योत्र अद्रेइच को—उन्होने अपने लिए पत्थर की हवेली जरूर बनवा ली मगर कभी किसी लायक नही बन पाये; हर चीज उलट-पुलट हो गयी और उनकी हालत अपने बाप के मुकाबले हमेशा बुरी रही, कभी जीवन मे कोई सुख नही भोगा, सारा पैसा उडा दिया और अपने पीछे कोई चीज ऐसी नही छोड गये जिससे कोई उन्हे याद करता उनका छोडा हुआ तो चादी का एक चम्मच भी नही है—जो कुछ बचा है वह ग्लाफीरा पेत्रोव्ना की किफायतशारी और देखभाल की बदौलत।"

"क्या यह सच है," लाव्रेत्स्की बीच मे बोल पडा, "कि लोग उसे कजूस बुढिया कहते थे?"

"हा, लेकिन कौन कहता था उन्हे ऐसा!" आतोन ने नाराज होकर विरोध प्रकट किया। एक बार बूढे ने हिम्मत करके पूछा, "एक बात बताये, मालिक, हमारी मालकिन कहा है?"

"मैंने अपनी बीवी को तलाक दे दिया है," लाव्रेत्स्की ने बड़ी कोशिश करके कहा, "उनके बारे में कभी कुछ न पूछना।"

"अच्छा, सरकार," बूढ़े ने उदास भाव से जवाब दिया।

तीन सप्ताह बीत जाने के बाद लाव्रेत्स्की घोड़े पर बैठकर कलीतिन-परिवार के लोगों से मिलने ओ नगर गया और शाम उसने उन्ही लोगों के साथ बितायी। लेम्म वही था; लाव्रेत्स्की को वह बहुत अच्छा लगा। हालांकि अपने बाप की बदौलत उसे कोई बाजा बजाना नही आता था लेकिन वह संगीत का बहुत शौकीन था, असली, क्लासिकी संगीत का। पाशिन उस शाम कलीतिन के यहा नही था। गवर्नर-जनरल ने उसे किसी काम से शहर के बाहर भेज दिया था। लीजा अकेले ही और बहुत सही ढंग से पियानो बजा रही थी, लेम्म में अचानक स्फूर्ति आ गयी, और जोश में आकर उसने कागज का एक टुकड़ा उठाया और उसे नली की शक्ल में लपेटकर संगीत-निर्देशक की छड़ी की तरह इस्तेमाल करने लगा। मार्या द्मीत्रियेव्ना पहले तो इस दृश्य को देखकर हंसती रही, फिर उठकर सोने चली गयीं, उनका कहना था कि बीथोवेन के संगीत से उनके दिमाग पर इतना असर पड़ता है कि वह बर्दाश्त नही कर सकती। लाव्रेत्स्की आधी रात को लेम्म को उसके घर छोड़ने गया और सबेरे तीन बजे तक वहीं रहा। लेम्म बहुत बातें कर रहा था उसका झुका हुआ शरीर सीधा हो गया, उसकी आंखें फैल गयीं और उनमें चमक आ गयी माथे के ऊपर उसके बाल भी सीधे खड़े हो गये। कितने अरसे से किसी ने उसमें कोई दिलचस्पी नही ली थी, और लाव्रेत्स्की को स्पष्टतः उसमें दिलचस्पी थी वह बड़ी उत्सुकता और सहानुभूति से उससे सवाल पूछ रहा था। इस व्यवहार से बूढ़ा लेम्म द्रवित हो उठा, आख़िरकार उसने अपने मेहमान को अपनी संगीत-रचनाएं दिखायीं, स्वयं अपनी रचनाओं के कुछ टुकड़े बजाये और मुर्दा आवाज में गाकर सुनाये जो जिनमें शिलर की फ्रिडोलिन नामक गाथा भी शामिल थी जिसे उसने संगीतबद्ध किया था। लाव्रेत्स्की ने उसकी प्रशंसा की कुछ चीजें उसने दुबारा सुनी और चलने से पहले उसे कुछ दिन के लिए आकर अपने साथ रहने का निमंत्रण दिया। लेम्म ने जो उसे [illegible] बाहर तक आया था, फ़ौरन उसका निमंत्रण स्वीकार कर लिया और वह [illegible] से उसने हाथ मिलाया, लेकिन जब वह [illegible]

मुबह की पहली किरनो के बीच अकेले रह गया तो उसने
ोड़कर अपने चारो ओर देखा, काप उठा और अपराधी
: साथ अपने कमरे में वापस चला गया। "Ich bin wohl
.g" (शायद मै अपने होश मे नही था), उसने अपने छोटे-से
ार पर चढते हुए बुदबुदाकर कहा। कुछ दिन बाद जब लाव्रेत्स्की
ाी पर बैठकर उससे मिलने गया तो उसने बीमारी का बहाना
कोशिश की, लेकिन फ्योदोर इवानिच उसके कमरे तक गया
ो चलने के लिए राजी कर लिया। लेम्म सबसे ज्यादा प्रभावित
मे हुआ कि लाव्रेत्स्की ने खास तौर पर उसके लिए शहर
पियालो मगवाया था। दोनो कलीतिन के यहा गये और शाम
ायी लेकिन पिछली बार जैसे रुचिकर ढग मे नही। पानिशन
द था, वह अपनी हाल की यात्रा के बारे मे बहुत बाते करता
ार बड़े दिलचस्प तरीके मे देहात के उन रईसो की नकल
रहा जिनसे वह मिला था, लाव्रेत्स्की हसता रहा लेकिन
ने कोने मे त्योरिया चढाये चुपचाप बैठा रहा, उसके सिमटे-
ारीर मे रह-रहकर मकडी की तरह झुरझुरी उठती रही
स और कुठित भाव से देखता रहा, और उसमे चमक सिर्फ
ायी दी जब लाव्रेत्स्की चल देने के लिए उठ खडा हुआ। गाड़ी
ुढ़ा सकुचाया हुआ और दबा-सिकुड़ा बैठा था, लेकिन कोमल
ो गरमानेवाला वातावरण, मुखद बयार, धुधली परछाइया
ार बर्च की कलियो की सुगध, सितारो-जडी चद्रमाहीन गगन
ी जगमगाहट, घोड़ो की टापो की नपी-तुली आवाज और
हिनहिनाहट, सड़क के किनारे का सारा जादू, वसत का और
ा सारा सम्मोहन उस बेचारे जर्मन की आत्मा मे पैठ गया
हले उसी ने चुप्पी तोड़ी।

२२

म्म सगीत के बारे मे, लीजा के बारे मे और एक बार फिर
के बारे मे बाते करने लगा। लीजा के बारे मे बाते करते समय
पने शब्द ज्यादा धीरे-धीरे बोलता हुआ लगता था। लाव्रेत्स्की
रचीत का रुख उसकी सगीत-रचनाओ की ओर मोड़ दिया

और, कुछ-कुछ मजाक मे उसके लिए एक लिबरेटो लिख देने का वादा किया।

"हूं:, लिबरेटो!" लेम्म ने जवाब दिया। "नही, वह मेरे बस का नही है; अब मुझमे वह सधा हुआ अभ्यास, कल्पना की वह उड़ान नही रह गयी जो ओपेरा के लिए जरूरी होती है; मेरा हुनर घटता जा रहा है।.. लेकिन अगर मै अब भी कुछ कर पाऊ तो रोमांस की रचना करके मुझे सतोष होगा; अलबत्ता, मैं चाहूगा कि उसके बोल मुनासिब हों।. "

यह कहकर वह चुप हो गया और बड़ी देर तक आसमान की ओर आखे उठाये निश्चल बैठा रहा।

"मिसाल के लिए," उसने थोड़ी देर बाद कहा, "कुछ इस तरह के. 'ऐ सितारो। बेदाग सितारो!. '"

लाव्रेत्स्की ने थोड़ा-सा उसकी ओर मुडकर उसे देखा।

"'ऐ सितारो, बेदाग सितारो,'" लेम्म ने एक बार फिर दोहराया। "'ऊपर से तुम देखा करते सब लोगो को, जो अच्छे हैं उनको भी, जो अन्यायी है उनको भी लेकिन जिसके दिल मे कोई मैल नही है,'—या इसी तरह का कुछ—'समझ सकेगा तुमको' नही, ऐसे नही—'प्यार करेगा तुमको।' लेकिन मै कवि तो हू नही—हो भी नही सकता हू! इसी तरह की कोई चीज, लेकिन, कोई ऊंचे द की चीज।"

लेम्म ने अपनी हैट सिर पर पीछे की ओर झुका ली, निर रात्रि की धुधली-धुधली रोशनी मे उसका चेहरा पहले से ज्यादा पीला और ज्यादा नौजवान लग रहा था।

"'और तुम भी,'" वह कहता रहा, और उसकी आवाज डूबते डूबते एक गुजन मात्र रह गयी, "'तुम भी जानो हो, कौन प्यार करे है, कौन प्यार कर सके है, क्योंकि दिल मे तुम्हारे मैल नही है सिर्फ तुम्हीं से राहत मिल सकती है। ' नही, कुछ बात बनी नही! मै कवि तो हू नही " उसने कहा, "बहरहाल, इसी ढग की कोई चीज।"

"मुझे अफसोस है कि मै भी कवि न हुआ," लाव्रेत्स्की ने कहा।

"कोरा सपना!" लेम्म ने कहा। उसने आखे मूद ली, जैसे सोने की तैयारी कर रहा हो।

कुछ क्षण बीत गये... लाव्रेत्स्की सुनता रहा "सितारे, बेदाग सितारे, प्यार," बूढ़े ने अस्फुट स्वर मे कहा।

"प्यार," लाव्रेत्स्की ने मन ही मन दोहराया। वह विचारो मे डूब गया, और उसका मन भारी हो गया।

"बहुत ही सुदर धुन बाधी है आपने 'फिडोलिन' की, क्रिस्टोफर फ्योदोरिच," उसने जोर से कहा। "आपका क्या ख्याल है—यह फिडोलिन, जब काउट ने उसे अपनी बीवी के सामने पेश किया—तब उसके बाद वह उसकी बीवी से प्यार करने लगा, क्यो?"

"ऐसा तुम सोचते हो," लेम्म ने जवाब दिया, "क्योकि शायद तुम्हे तजुरबा " वह अचानक कहते-कहते रुक गया और घबराकर उसने मुह फेर लिया। लाव्रेत्स्की जबर्दस्ती हसा, उसने भी मुह फेर लिया और सडक की ओर देखने लगा।

जिस वक्त गाडी वसील्येव्स्कोये मे छोटी-सी बरसाती के सामने आकर रुकी उस वक्त सितारो की ज्योति मद पडने लगी थी और आसमान सवलाने लगा था। लाव्रेत्स्की ने अपने मेहमान को उसका कमरा दिखाया, और अपने पढने के कमरे मे वापस आकर खिडकी के पास बैठ गया। बाहर बाग मे बुलबुल भोर होने से पहले अपना आखिरी खुशी-भरा गीत गा रही थी। लाव्रेत्स्की को उस बुलबुल की याद आयी जो कलीतिन-परिवार के बाग मे गाती थी, उसे यह भी याद आया कि उसके पहले ही सुरो को सुनकर किस तरह लीज़ा की आखे धीरे-धीरे अधेरी खिडकी की ओर घूम जाती थी। वह उसके बारे मे सोचने लगा और उसके दिल का बोझ फिर हल्का हो गया। "बेदाग लडकी," वह अपनी आवाज कुछ दबाकर बुदबुदाया बेदाग सितारे," उसने कुछ देर बाद मुस्कराकर कहा और चुपचाप बिस्तर की ओर खिसक गया।

लेकिन लेम्म सगीत-रचनाओ की एक किताब घुटनो पर रखे बडी देर तक अपने पलग पर बैठा रहा। एक मधुर और अनुपम धुन उसके कानो मे गूजती रही; उसके मन मे हिलोर उठी और एक ज्योति-सी जल उठी, वह उसके व्याप्त अस्तित्व की उदासी और मिठास को महसूस कर सकता था... लेकिन वह उसे पकड नही पा रहा था।

"न कवि न सगीतकार," उसने आखिरकार कहा।

और उसका थका हुआ बोझल सिर तकिये मे धस गया।

२३

अगले दिन मेजबान और उसके मेहमान ने बाग़ मे लाइम के पुराने पेड के नीचे बैठकर चाय पी।

"उस्ताद!" लाव्रेत्स्की ने लगे हाथ कहा, "आपको जल्दी ही एक विजयोत्सव का कैटाटा तैयार करना पडेगा।"

"किस अवसर के लिए?"

"मिस्टर पाशिन और लीज़ा के विवाह के अवसर पर। कल आपने देखा था कि वह उसकी ओर किस तरह ध्यान दे रहा था! ऐसा लगता है कि उन दोनो का मामला पट गया है।"

"यह कभी नही होगा!" लेम्म चिल्ला पड़ा।

"क्यो नही होगा?"

"क्योकि यह नामुमकिन है। हालांकि," उसने कुछ देर रुकने के बाद कहा, "इस दुनिया मे सब कुछ मुमकिन है। ख़ास तौर पर आप लोगो के बीच, यहा रूस मे।"

"फ़िलहाल रूस की चर्चा तो हम लोग छोड़ ही दे, लेकिन इस शादी मे क्या ख़राबी है?"

"यह गलत है, सिरे से ग़लत है। येलिज़ावेता मिख़ाइलोव्ना खुले दिल की, नेक भावनाओवाली गभीर लडकी है, और वह · वह कलाप्रेमी होने का ढोग करता है, साफ़ बात है यह।"

"लेकिन वह उससे प्यार करती है, करती है न?"

लेम्म उठकर खडा हो गया।

"नही, वह उससे प्यार नहीं करती है। मेरा मतलब है कि उसका मन अभी भोला है और वह ख़ुद नही जानती कि प्यार क्या होता है। मादाम फॉन कलीतिना उससे कहती है कि वह बहुत अच्छा नौजवान है और वह मादाम फॉन कलीतिना की बात चुपचाप मान लेती है क्योंकि वह अभी बिल्कुल बच्ची है, हालांकि वह उन्नीस साल की हो चुकी है वह सवेरे प्रार्थना करती है, वह शाम को प्रार्थना करती है—यह सब कुछ बहुत ठीक है, लेकिन वह उससे प्यार नहीं करती। वह सिर्फ उस चीज से प्यार कर सकती है जो सुंदर हो, और वह सुंदर नही है मेरा मतलब है, उसकी आत्मा सुंदर नहीं है।"

लेम्म ने अपना यह वाक्य बाग की मेज के सामने छोड़कर

कदमो से इधर से उधर टहलते हुए और अपनी नज़रे ज़मीन पर जमाये रहकर बडे प्रवाह और बडे जोश के साथ दिया।

"प्यारे उस्ताद!" लाव्रेत्स्की अचानक बोला। "मैं समझता हू कि उस लडकी से, जो रिश्ते मे मेरी बहन लगती है, आप खुद प्रेम करते हैं।"

लेम्म ठिठक गया।

"मेहरबानी करके," उसने कापते स्वर मे कहना शुरू किया, "इस तरह मेरा मजाक न उडाओ। मैं पागल नही हू—मैं आगे दूर तक फैले अधेरे मे देख रहा हू, सुनहरे भविष्य मे नही झाक रहा हू।"

लाव्रेत्स्की का मन पश्चात्ताप से भर उठा, उसने बूढे से माफी माग ली। चाय पीने के बाद लेम्म ने उसे अपना कैंटाटा बजाकर सुनाया, और खाने के समय लाव्रेत्स्की के पहल करने पर फिर लीज़ा के बारे मे बातें करने लगा। लाव्रेत्स्की बडे ध्यान और उत्सुकता से सुनता रहा।

"आपका क्या ख्याल है, क्रिस्टोफर फ्योदोरिच," उसने आखिरकार कहा, "अब यहा हर चीज़ ठीक-ठीक लगती है, बाग भी फूला हुआ है,—अगर उसे दिन-भर के लिए यहा उसकी मा और मेरी बुआजी के साथ बुला लिया जाये तो कैसा रहे? आपको यह ख्याल पसद है?"

लेम्म ने अपना सिर प्लेट पर झुका लिया।

"अच्छी बात है," उसने इतने धीमे स्वर मे गुनगुनाकर कहा कि ठीक से सुनना भी मुश्किल था।

"और पाशिन के बिना ही हम लोगो का काम चल जायेगा?"

"बिल्कुल चल जायेगा," बूढे ने लगभग बच्चो जैसी मुस्कराहट के साथ जवाब दिया।

दो दिन बाद फ्योदोर इवानिच घोडे पर बैठकर कलीतिन-परिवार से मिलने शहर गया।

२४

सब लोग उसे घर पर ही मिले लेकिन उसने अपने मन की बात फौरन नही कही, वह पहले लीज़ा से इस मामले के बारे मे बात कर

लेना चाहता था। मौक़ा भी मिल गया: उन दोनों को ड्राइंग-रूम में अकेला छोड़कर बाकी सब लोग वहा से चले गये। वे बातें करने लगे, लीज़ा उसकी आदी हो चुकी थी,—सच तो यह है कि वह किसी से भी नही शर्माती थी। लाव्रेत्स्की उसकी बातें सुनता रहा, उसके चेहरे का अध्ययन करता रहा और मन ही मन लेम्म के शब्दों को दोहराते हुए उनका अनुमोदन करने लगा। कभी-कभी ऐसा होता है कि दो जान-पहचानवाले लोग, जिनमे आपस मे बहुत घनिष्ठता न हो, सहसा और क्षणिक रूप से एक-दूसरे की ओर आकृष्ट होते हैं और इस घनिष्ठता का आभास आखे बचाकर एक-दूसरे को देखने, चुपके-चुपके मित्रता के भाव से मुस्कराने और इशारे तक करने के रूप मे व्यक्त होता है। लाव्रेत्स्की और लीज़ा के साथ भी ठीक यही हुआ। "तो यह ऐसे हैं," उसे मेहरबान नज़रों से देखते हुए लीज़ा के मन मे यह विचार उठा। "तो ऐसी हो तुम," वह भी सोच रहा था। इसलिए उसे बहुत ताज्जुब नही हुआ जब लीज़ा ने उसे कुछ झिझकते-झिझकते बताया कि वह बहुत दिनों से अपने दिमाग का बोझ हल्का करना चाहती थी, लेकिन डरती थी कि कहीं वह बुरा न मान जाये।

"डरो नही, मुझे बता दो," उसने जवाब दिया और उसके सामने आकर ठहर गया।

लीज़ा ने अपनी निर्मल आखे उसकी ओर उठायीं।

"आप इतने दयालु है," उसने कहना शुरू किया, और उसके दिमाग मे यह विचार दौड़ गया "यह सचमुच दयालु है।" "आप मुझे माफ़ कीजियेगा, दरअसल मुझे आपसे इस बात की चर्चा करने की हिम्मत नही करनी चाहिये लेकिन आपने कैसे आप अपनी बीवी से अलग क्यों हो गये?"

लाव्रेत्स्की तिलमिला उठा, उसने लीज़ा की ओर देखा और उसके पास बैठ गया।

"मेरी बच्ची," उसने कहना शुरू किया, "मेहरबानी करके इस बात को न छेड़ो तुम्हारे हाथ कोमल सही, लेकिन दर्द तो होता।"

"मैं जानती हूं," लीज़ा ने इस तरह कहा जैसे उसने उसकी बात सुनी ही न हो, "उसने आपके साथ ज्यादती की है, उसने जो कुछ किया है उसे मैं उचित नहीं ठहराना चाहती; लेकिन जिस चीज को

ने जोड़ा है उसे कोई काटकर अलग कैसे कर सकता है?"
"इसके बारे मे हमारे विचार एक-दूसरे से बहुत दूर हैं, येलि-
मिखाइलोव्ना," लाव्रेत्स्की ने कुछ तीखेपन से जवाब दिया।
लोग एक-दूसरे को समझ नहीं पायेंगे।"
लीज़ा का चेहरा उतर गया, उसके शरीर मे हल्की-सी सिहरन
लेकिन वह चुप न रह सकी।
"आपको माफ करना भी होगा," वह नरमी से बुदबुदायी,
र आप चाहते हैं कि आपको माफ़ किया जाये।"
"माफी!" लाव्रेत्स्की बीच मे ही बोल पडा। "तुम्हे पहले उस
ो को जानना चाहिये जिसकी तरफ से तुम बोल रही हो। उस
को माफ कर दू, उसे अपने घर मे फिर से ले आऊ, उसे जो
ल खोखली है, जिसके आत्मा नाम की कोई चीज़ है ही नहीं!
तुमसे कहा किसने कि वह वापस आना चाहती है? अरे, वह
परिस्थितियो से बिल्कुल सतुष्ट है। ओह, इसके बारे में
करने से फायदा ही क्या है? उसका नाम भी कभी तुम्हारी
न पर नही आना चाहिये। तुम बिल्कुल निष्कलक हो, तुम जान
हीं सकती कि वह किस तरह की प्राणी है।"
"क्या आपके लिए उसका अपमान करना ज़रूरी है?" लीज़ा ने
ी कोशिश करके कहा। उसके हाथ अब स्पष्टत काप रहे थे।
ापने उसे खुद छोडा था, फ्योदोर इवानिच।"
"लेकिन मै तुमसे कहता हू," लाव्रेत्स्की अधीर होकर बोला,
म नही-जानती कि वह कैसी प्राणी है!"
"फिर आपने उससे शादी क्यो की थी?" लीज़ा ने अपनी आखे
ाते हुए दबी ज़बान मे कहा।
लाव्रेत्स्की जल्दी से उठ खडा हुआ।
"मैने शादी क्यो की थी? नौजवान था और नातजुर्बेकार था,
बाहरी सुदरता के चक्कर मे आ गया, उस पर मुग्ध हो गया।
औरतो को नही जानता था। मै कुछ भी नही जानता था। भगवान
कि तुम अपनी शादी के मामले मे ज्यादा भाग्यशाली रहो! लेकिन
ी बात मानो, कभी पूरे भरोसे के साथ कुछ नही कहा जा सकता।"
"हो सकता है कि मै भी अभागी रहू," लीज़ा ने कहा (उसका
र रुधा हुआ था), "लेकिन अपने भाग्य को चुपचाप स्वीकार कर

सना चाहिये मालूम नहीं मुझे इस बात को किस तरह कहना चाहिये, लेकिन जब तक हम अपने भाग्य को स्वीकार नहीं करेंगे..."

लाव्रेत्स्की ने मुड़िया भींच ली और पाव पटका।

"मेहरबानी करके नाराज न होइये, मुझे माफ़ कर दीजिये," लीज़ा ने जल्दी मे कहा।

उसी क्षण मार्या द्मीत्रियेव्ना ने कमरे मे प्रवेश किया। लीज़ा कमरे से चल देने के लिए उठ खड़ी हुई।

"ज़रा रुकना," लाव्रेत्स्की ने अचानक चौंककर कहा। "मैं तुमसे और तुम्हारी मा से एक एहसान करने के लिए कहने आया हू – क्या आप लोग मेरे यहा आ सकेगी, गृह-प्रवेश की पार्टी मे? जानती है, मैने एक पियानो ले लिया है; लेम्म मेरे यहा ही रह रहे है, लाइलक के फूल खिलने लगे हैं, आप लोग देहात की हवा मे एक सास लेकर उसी दिन लौट आइयेगा – ठीक है न?"

लीज़ा ने अपनी मा की ओर देखा, और मार्या द्मीत्रियेव्ना अपने चेहरे पर विषाद का भाव ले आयी; लेकिन लाव्रेत्स्की ने उन्हे अपनी जबान खोलने का मौका ही नही दिया और उनके दोनो हाथ फ़ौरन चूम लिये, मार्या द्मीत्रियेव्ना, जो भावुकता के मर्मस्पर्शी प्रदर्शनों के सामने हमेशा पिघल जाती थी और जिन्हे "उस उजड्ड" से इस तरह की शिष्टता की तनिक भी उम्मीद नहीं थी, नरम पड़ गयी और उन्होने अपनी सहमति दे दी। वह अभी सोच ही रही थी कि कौन-सा दिन इस काम के लिए तै किया जाये, कि इतने मे लाव्रेत्स्की लीज़ा के पास गया और अत्यत भाव-विभोर होकर दबे स्वर मे उससे बोला, "शुक्रिया, तुम बहुत अच्छी लड़की हो; मुझे अफसोस है.." और उसका पीला चेहरा उल्लसित लजायी हुई मुस्कराहट से खिल उठा; उसकी आखे भी मुस्करा दी – वह डर रही थी कि लाव्रेत्स्की शायद उसकी बात का बुरा मान गये होगे।

"क्या पाशिन हम लोगो के साथ आ सकते है?" मार्या द्मीत्रियेव्ना ने पूछा।

"ज़रूर," लाव्रेत्स्की ने जवाब दिया, "लेकिन क्या यह बेहतर नही होगा कि पार्टी मे सिर्फ घर के ही लोग हो?"

"लेकिन मै सोच रही थी ." मार्या द्मीत्रियेव्ना ने कहना शुरू किया "खैर, जैसा तुम चाहो," उन्होने इतना और जोड़ दिया।

लेनोच्का और शूरोच्का को साथ ले चलने का फैसला हुआ। मार्फा तिमोफेयेव्ना ने जाने से इकार कर दिया।

"मेरे लिए यह बहुत कठिन है, बेटा," उन्होंने सफाई देते हुए कहा, "मेरी बूढ़ी हड्डियो को बहुत कष्ट होगा, और मै नही समझती कि तुम्हारे यहा सोने की कोई जगह होगी, और मै अनजाने बिस्तर पर यो भी नही सो सकती। बच्चो को जाकर खेल-कूद आने दो।"

लाव्रेत्स्की को लीज़ा के साथ अकेले रहने का और कोई अवसर नही मिला, लेकिन उसने उसकी ओर इस ढग से देखा कि उसे अच्छा लगा, और वह थोड़ा लजायी भी, और उसे उस पर तरस भी आया। चलते वक़्त उसने लीज़ा से हाथ मिलाया, अकेले रह जाने पर वह विचारमग्न हो गयी।

२५

लाव्रेत्स्की जब घर पहुचा तो ड्राइंग-रूम की चौखट पर ही उसे एक लबा-सा दुबला-पतला आदमी मिला, जिसने एक फटा-पुराना नीला कोट पहन रखा था, जिसके चेहरे पर झुर्रिया होने के बावजूद स्फूर्ति थी, सफेद उलझे हुए बालोवाले गलमुच्छे, लबी सीधी नाक और छोटी-छोटी सूजी हुई आखे। यह था मिखालेविच, उसका यूनिवर्सिटी के दिनो का पुराना दोस्त। लाव्रेत्स्की शुरू मे तो उसे पहचान नही पाया, लेकिन उसका नाम सुनते ही उसने बडे तपाक से उसे गले लगा लिया। मास्को के बाद से उन्होने एक-दूसरे को नही देखा था। सवालो और उद्वेग-भरे शब्दो की बौछार शुरू हो गयी, बहुत दिन से दबी हुई यादे खोद निकाली गयी। जल्दी-जल्दी एक के बाद एक पाइप भरकर पीते हुए, बीच-बीच मे चाय की चुस्किया लेते हुए और अपने लबे-लबे हाथ चलाकर बाते करते हुए मिखालेविच ने लाव्रेत्स्की को अपने जीवन की घटनाओ के बारे मे बताया, उनमे से कोई विशेष रूप से रोचक बात नही थी, वह अपने प्रयासो मे किसी सफलता पर गर्व नही कर सकता था — लेकिन वह लगातार भर्रायी हुई आवाज़ मे घबरायी हुई हसी हसता रहा। महीना-भर पहले उसे ओ   नहर से कोई तीन सौ वेर्स्ता की दूरी पर एक धनी मालगुज़ार के गोदाम मे नौकरी मिल गयी थी, और लाव्रेत्स्की के विदेश से लौट आने की

खबर सुनकर वह पूरी कोशिश करके खास तौर पर अपने दोस्त से मिलने आया था। मिख़ालेविच अब भी उतनी ही हड़बड़ी से, उसी तरह जोर देकर और जोश के साथ बातें करता था जैसे वह जवानी में किया करता था। लाव्रेत्स्की ने भी उसे अपने जीवन की घटनाएं सुनाना शुरू किया, लेकिन मिख़ालेविच उसे बीच में ही रोककर जल्दी-जल्दी बुदबुदाया, "मै सुन चुका हूं, मेरे दोस्त, मै सुन चुका हू,-ऐसा सोच भी कौन सकता था?" और इसके फौरन बाद उसने बातचीत का रुख़ आम बातो की ओर मोड़ दिया।

"मै कल चला जाऊंगा, यार," उसने कहा, "लेकिन आज, अगर तुम माफ करो तो हम लोग रात को देर तक जागेंगे। मैं यह जानने के लिए बेचैन हू कि तुम्हारा क्या हाल है, तुम्हारे विचार, तुम्हारी आस्थाएं क्या हैं, तुम क्या बन गये हो, ज़िदगी ने तुम्हे क्या सिखाया है?" "जहा तक मेरा सवाल है, मै बहुत बदल गया हू, मेरे दोस्त: ज़िदगी की लहरे मेरे सीने को रौंदती हुई गुज़र गयी है – किसने कहा था यह? – हालाकि बुनियादी तौर पर मै बिल्कुल नही बदला हू; जो अच्छा है और जो सच है उसमे मै अब भी विश्वास रखता हू, लेकिन मैं सिर्फ विश्वास नहीं रखता – मै आस्था रखता हू, हां, आस्था। सुनो, तुम्हे मालूम है मै कविता भी थोड़ी-बहुत कर लेता हू; मेरी पक्तिया काव्यमयी नही होती हैं लेकिन वे सच्ची होती हैं। मै तुम्हे अपनी सबसे नयी कविता पढकर सुनाता हू; उसमे मैंने अपने दिल की बात कही है। सुनो।"

मिख़ालेविच अपनी कविता पढने लगा; वह काफी लबी थी और उसकी अतिम पक्तिया कुछ इस प्रकार थी

> मेरा मन है नये भावो के वश मे
> बच्चो जैसा है मेरा मन
> जो कुछ पूजा था मैंने
> उसको फूक दिया है
> और पूज रहा हू उसको
> जो फूक चुका हू।

अतिम दो पक्तिया पढते-पढ़ते मिख़ालेविच लगभग रो पड़ा। उसके चौडे-से मुह पर एक हल्की-सी सिहरन दौड़ गयी – जो गहरे

भावावेश का सकेत था, उसका सीधा-सपाट चेहरा चमक उठा। लाव्रेत्स्की सुनता रहा, सुनता रहा—और उसके मन मे विद्रोह की भावना मचल उठी वह मास्को के छात्र के इस बधे-टके और हरदम खौलते हुए उत्साह से तग आ चुका था। अभी पद्रह मिनट भी नही बीते थे कि उनके बीच बहस शुरू हो गयी, उस तरह की कभी न खत्म होनेवाली बहस जो सिर्फ रूसी ही कर सकते हैं। कई वर्ष एक-दूसरे से दूर बिल्कुल अलग-अलग दुनियाओ मे बिताने के बाद, दूसरे लोगो के विचारो की बात तो दूर रही खुद अपने विचारो को भी अस्पष्ट रूप से समझते हुए, बाल की खाल निकालते हुए और एक-दूसरे पर शब्दो की मार करते हुए वे दोनो सीधे अत्यत गूढ विषयो पर बहस करने लगे, और इस तरह बहस करते रहे जैसे वह उन दोनो के लिए जिदगी और मौत का सवाल हो, वे इतने जोश से चिल्ला रहे थे और गला फाड-फाडकर बहस कर रहे थे कि घर के सारे लोग चौक पडे और बेचारा लेम्म तो, जिसने मिखालेविच के आते ही अपने आपको अपने कमरे मे बद कर लिया था, घबरा उठा और उसे कुछ-कुछ डर भी लगने लगा।

"तो उसके बाद तुम्हारा क्या हाल है? निराश?" मिखालेविच आधी रात के बाद चिल्ला-चिल्लाकर कह रहा था।

"मै तुम्हे निराश आदमी लगता हू?" लाव्रेत्स्की ने जवाब दिया। "उस तरह के लोगो के चेहरे हमेशा पीले होते हैं और वे बीमारो जैसे होते है—मै तुम्हे एक हाथ से उठा दू?"

"अच्छा, अगर तुम निराश नही हो, तो तुम अविश्वासी हो, जो और भी बुरी बात है" (मिखालेविच के उच्चारण मे उसकी मातृभूमि उक्राइन की झलक मिलती थी)। "अविश्वासी होने का मतलब क्या होता है? भाग्य ने तुम्हारा साथ नही दिया—मान लिया, उसमे तुम्हारा दोष नही है—जन्म से ही तुम्हारी आत्मा उद्वेगमयी और प्यार करनेवाली थी और तुम्हे जबर्दस्ती औरतो से दूर रखा गया, स्वाभाविक बात है कि जिस पहली औरत से तुम्हारा पाला पडा उसने तुम्हे बेवकूफ बना दिया।"

"तुम्हे भी तो बेवकूफ बनाया उसने," लाव्रेत्स्की ने उदास भाव से जवाब दिया।

"माना, मान लिया, मै तो भाग्य का साधन था—सामन्त है

ये सब घिसी-पिटी बातें हैं —इसमे भाग्य का कोई दखल नही है; [illegible] वाली परिभाषाओं की पुरानी आदत है, और कुछ नही। लेकिन इनसे साबित क्या होता है?"

"इससे यह साबित होता है कि मुझे बचपन मे ही अपाहिज कर दिया गया।"

"अच्छा, तो अब अपने को सभाल लो! —तुम मर्द हो, हो न? तुम्हे दूसरे लोगों से ताक़त मांगते फिरने की जरूरत तो नही है! जो कुछ भी हो, जिसे कहते हैं, एक खास मिसाल को आम कायदा तो नही माना जा सकता, ऐसा नियम जो अटल हो।"

"नियम और कायदे का इससे क्या मतलब है," साबेलको बीच मे बोल पड़ा। "मैं नही मानता. "

"नही यह कायदा तुम्हारा है, तुम्हारा नियम. " मिखानेविच ने अपनी बारी आने पर कहा।

"तुम अहंकारी हो, बस और कुछ नही!" घंटे-भर बाद वह दहाड़-दहाड़कर कह रहा था। "तुम आत्म-सुख के पीछे थे, तुम जीवन मे सुख चाहते थे, तुम सिर्फ अपने लिए जीना चाहते थे "

"यह आत्म-सुख क्या बला होती है?"

"और हर तरफ तुमने धोखा ही खाया, हर चीज़ भरभराकर ढह पड़ी।"

'आत्म-सुख क्या होता है, मैं तुमसे पूछता हूं?"

'और उसे ढहना ही था। क्योंकि तुमने वहां पाँव जमाने की कोशिश की जहां इसके लिए कोई जगह नही थी, क्योंकि तुमने अपना घर बहती हुई रेत पर बनाया था "

'अपनी बात साफ़-साफ़ कहो, उपमाओं मे बातें न करो, क्योंकि इस तरह मैं तुम्हारी बात समझ नहीं पाता।"

"क्योंकि — अच्छी बात है, तुम यों अगर तुम्हारा जी चाहे — क्योंकि तुम्हारे अंदर कोई आस्था नही है [illegible] तुम्हारे दिल मे गर्मी नही है तुम्हारे पास बस दिमाग के अलावा कुछ नही है, बस एक दुच्चा दिमाग तुम बस एक [illegible], [illegible] [illegible] के [illegible] के [illegible] नही हो — बस और कुछ नही हो तुम!'

'[illegible] कहा मैं — और [illegible]?'

हा, वैसे ही जैसे तुम्हारे बाप थे, और तुम्हे इसका गुमान भी
ा।"

तब तो मै बस इतना ही कह सकता हू कि तुम कठमुल्ला हो!"
ी ज़ोर से चिल्लाया।

अफसोस!" मिखालेविच ने खेदपूर्वक कहा "दुर्भाग्य से मै
ह सम्मानित उपाधि पाने योग्य नही बन सका हू।

अब मेरी समझ मे आया कि तुम्हे क्या कहा जाये, मिखालेविच
को दो बजे चिल्लाकर कहा, "तुम न अविश्वासी हो न
हो, न वाल्तेयर-भक्त हो—तुम काहिल हो, हा, बस तुम
ही—सरासर काहिल, बहुत सधे हुए काहिल आम काहिल भी
आम काहिल, जो सधे हुए नही होते बैठे मक्खिया मारते
हैं और कुछ नही करते हैं, क्योकि उन्हे कुछ करना आता नही
च भी नही सकते लेकिन तुम तो सोचनेवाले आदमी हो—और
कार निकम्मे बैठे रहते हो तुम चुस्त और मुस्तैद हो सकते
किन तुम नही हो, तुम बस अपना पेट भर लेते हो और पड़े
हो और कहते हो ऐसा ही होना चाहिये, क्योकि जो कुछ लोग
रहते हैं वह सब सरासर बकवास है जिससे कोई बात नही
।"

"तुमसे यह किसने कह दिया कि मै पड़ा रहता हू? लाव्रेत्स्की
रोध करते हुए कहा, "तुम किस वजह से ऐसा सोचते हो कि
विचार इस तरह के है?"

"इसके अलावा, तुम सब लोग तुम्हारी बिरादरी की बिरादरी"
लेविच तनिक भी हताश हुए बिना कहता रहा, "तुम सब महज़
लिये काहिल हो। तुम्हे जर्मनो की कमज़ोरिया मालूम हैं, तुम्हे
म है कि अंग्रेज़ो और फ्रासीसियो मे क्या बुराई है,—और तुम्हारी
तुच्छ जानकारी को तुम्हारे शर्मनाक निकम्मेपन को, तुम्हारी
या किस्म की काहिली को उचित ठहराने के लिए सबसे बड़े साधन
तरह इस्तेमाल किया जाता है। तुममे से कुछ लोग तो इस पर
नही समाते कि वे बुद्धिमान लोगो की तरह पड़े रहते हैं, कुछ
नही करते, जबकि दूसरे लोग, बेवकूफ लोग, जूतिया चटकाते रहते
जी हा! हमारे बीच कुछ ऐसे लाजवाब शरीफ लोग है—याद
ना, मेरा इशारा तुम्हारी तरफ नही है ...

की जड़ता में डूबे रहते हैं, उसके आदी हो जाते हैं और उसमें ऐ
फंसे रहते हैं जैसे   जैसे मनाई में कुकुरमुत्ता," मिखालेविच ने बड़ी
गर्मी बात कही और अपनी उपमा पर खुद हंस दिया। "उफ़, उकताह
की यह जड़ता – यह हम रूसियों को तबाह कर देगी! मनहूस आलसी
हमेशा काम में जुट जाने का इरादा ही करता रहता है। ."

"तुम आखिर डाट-फटकार क्यों रहे हो?" – अब लाव्रेत्स्की की
चिल्लाने की बारी थी। "काम करने के बारे में   कोई चीज़ क
दिखाने के बारे में   चीखना-चिल्लाना बहुत अच्छी बात है।.. लेकिन
इससे अच्छा तो यह हो कि डाटने-फटकारने के बजाय मुझे यह बताओ
कि मैं क्या करूं, पोल्तावा नगर के डेमोस्थेनीज़*!"

"बस इतना ही जानना चाहते हो तुम? यह मैं आपको नहीं
बता सकता, जनाब, हर आदमी को यह बात खुद मालूम होनी
चाहिये," डेमोस्थेनीज़ ने व्यंग्य से जवाब दिया। "ज़मींदार! रईस!
और उसे यह भी नहीं मालूम कि क्या करे! तुम्हारे अंदर आस्था
नहीं है, वरना तुम्हें मालूम होता, जहां आस्था नहीं होती, वहां
ज्ञान भी प्रकट नहीं होता।"

"कम से कम मुझे दम लेने की फ़ुरसत तो दो, लानत है,
मुझे अपने चारों ओर नज़र तो डालने दो," लाव्रेत्स्की ने फ़रियाद
करते हुए कहा।

"एक मिनट नहीं दम लेने के लिए   एक सेकंड नहीं!" मिखाले-
विच ने हाथ बढ़ाते हुए बड़े रोब से कहा। "एक भी सेकंड नहीं!
मौत किसी का इंतज़ार नहीं करती, और ज़िंदगी को भी इंतज़ार नहीं
करना चाहिये।"

"और कैसे वक़्त पर, किस जगह पर लोगों ने अपने मन में
आलसी बनने की ठानी है!" वह चार बजे सवेरे ऐसी आवाज़ में
चिल्लाया जो चिल्लाते-चिल्लाते अब कुछ भर्रा गयी थी। "यहां! इस
वक़्त! रूस में! जब हर आदमी को एक कर्तव्य पूरा करना है,
भगवान के प्रति, देश के प्रति और खुद अपने प्रति एक गंभीर उत्तरदा-
यित्व निभाना है! हम सो रहे हैं और समय चुपचाप बीतता जा रहा
है; हम सो रहे हैं.."

---

* ई० पू० चौथी शताब्दी (३८४–३२२) का एथेंसवासी राजनेता और वक्ता, जिसने मक़दूनिया के फ़िलिप के खिलाफ़ यूनान का पक्ष लिया था। – सं०

"मै तुम्हे साफ-साफ बता दू," लाव्रेत्स्की ने अपना मत प्रकट
हुए कहा, "कि हम इस वक्त सो नही रहे हैं, बल्कि दूसरो
ोने से रोक रहे हैं। हम लोग दो मुर्गो की तरह चीख रहे हैं।
वह तीसरा मुर्गा बाग तो नही दे रहा है?"
इस मजाक पर मिखालेविच हस दिया और शात हो गया। "अच्छा,
सबेरे," उसने मुस्कराकर कहा और अपना पाइप रख दिया।
"कल सबेरे," लाव्रेत्स्की ने उसके शब्द दोहराये। लेकिन दोनो
घटे-भर से ज्यादा देर तक बाते करते रहे। लेकिन अब उनकी
ऊची नही थी, उनकी बातचीत दबी-दबी और उदास थी और
विषय कोमल था।
हालाकि लाव्रेत्स्की ने उसे रोकने की बहुत कोशिश की, लेकिन
लेविच अगले दिन चला गया। फ्योदोर इवानिच उसे रुकने के
राजी तो नही कर पाया लेकिन उन दोनो ने जी भरकर बाते
ी। था यह कि मिखालेविच के पास फूटी कौडी नही थी। पिछली
उसमे बहुत लबी गरीबी के स्पष्ट सकेत और आदते देखकर ला-
ी को बहुत दुख हुआ था, उसके जूतो की एडिया घिसी हुई
उसके कोट का पीछे का एक बटन गायब था, उसके हाथ दस्तानो
ादी नहीं थे, उसके बालो मे भूसी थी, वहा पहुचने पर उसे
ूछने का ख्याल भी नही आया था कि वह नहा ले, और खाने
क्त उसने मरभुक्खो की तरह खाया था, बोटिया हाथो से नोच-
कर और हड्डिया अपने मजबूत मैले दातो से तोडकर। यह भी
चला कि सरकारी नौकरी मे उसे कुछ नही मिला था, कि उसने
सारी आशाए अपने मौजूदा मालिक से लगा रखी थी जिसने उसे
इसलिए रख लिया था कि वह अपने दफ्तर मे "एक पढा-लिखा
मी" चाहता था। इसके बावजूद मिखालेविच बिल्कुल हताश नही
और हर चीज से विरक्त, आदर्शवादी और कवि का जीवन व्यतीत
था, लोगो की नियति के बारे में और स्वय अपने काम के
मे सचमुच हृदय से चिंतित रहता था और उनकी ओर पूरा
देता था, और अपने आपको जिदा रखने और भूख से न मरने
की ओर बहुत कम ध्यान देता था। मिखालेविच ने शादी नही
थी, लेकिन वह अनगिनत बार मुहब्बत मे फस चुका था और उसने
प्रेम के सभी पात्रो के नाम कविताए लिखी थी, एक विशेष

रूप में प्रेरणामय प्रसाप्ति करने वालोंवाली किसी रहस्यमयी "पोलिस्तानी महिला" की समर्पित थी। .. अलबत्ता, अफवाह यह थी कि यह पोलिस्तानी महिला एक आम यहूदिन थी, जिसकी घुड़सवार सेना के बहुत-से अफसरों से जान-पहचान थी... लेकिन, सोचने की बात है, उसके लिए इसका भी कोई महत्व नहीं था।

मिखालेविच की लेम्म से नहीं पटी: उसकी तूफानी बातचीत और उजड्ड तौर-तरीकों से वह जर्मन सहम गया, जो इस तरह के तौर-तरीकों का आदी नहीं था। एक गरीब भिखारी दूसरे भिखारी को बहुत जल्दी दूर से पहचान लेता है, लेकिन बुढ़ापे में उनके बीच दोस्ती शायद ही कभी हो पाती है—और इसमें कोई ताज्जुब की बात भी नहीं है. उनके बीच आपस में बांट लेने के लिए कोई भी चीज तो नहीं होती, आशाएं तक नहीं।

चलने से पहले मिखालेविच ने लाव्रेत्स्की के साथ एक और लंबी बातचीत की, उसने भविष्यवाणी की कि अगर उसके होश ठिकाने न आये तो वह तबाह हो जायेगा, उससे अनुरोध किया कि वह अपने किसानों की भलाई की ओर गंभीरता से ध्यान दे; उसने लाव्रेत्स्की के सामने अपने आपको आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया, उसने यह दावा किया कि मुसीबतों की आग में तपकर वह निखर चुका है, और उसी सांस में उसने कई बार यह भी दोहराया कि वह सुखी आदमी है, और उसने अपनी तुलना हवा में स्वच्छंद विचरनेवाले पक्षियों और कुमुदनी के फूल से की।

"बहरहाल, काली कुमुदनी," लाव्रेत्स्की ने चुटकी ली।

"बस रहने दो, मेरे यार, अपने आपको बहुत न समझो," मिखालेविच ने जवाबी वार किया, "तुम्हें भगवान का उपकार मानना चाहिये कि तुम्हारी नसों में भी ईमानदार आम लोगों जैसा खून दौड़ रहा है। मैं समझता हूं कि इस वक्त तुम्हें जरूरत किसी ऐसे फरिश्ते की है जो तुम्हें विरक्ति के इस दलदल से बाहर खींच लाये।"

"शुक्रिया, मेरे दोस्त," लाव्रेत्स्की ने कहा, "मैं इन फरिश्तों से भर पाया।

"चुप रहो, 'सिनीक' कहीं के!" मिखालेविच ने चिल्लाकर कहा।

"'सिनिक'," लाव्रेत्स्की उसका उच्चारण ठीक करते हुए बोला।
"बिल्कुल 'सिनीक'," मिखालेविच ने निर्लज्जता से दोहराया।
घोडागाड़ी पर बैठ जाने के बाद भी, जिसमे उसका चपटा, रग का, बेहद हल्का सूटकेस लाकर रख दिया गया था, वह बाते जा रहा था; स्पेनी ढग का लबादा पहने, जिसमे जग के रग बादामी कॉलर और शेर के दो पजो की शक्ल के बकसुए लगे वह रूस के भविष्य के बारे मे अपने विचारो की व्याख्या करता और अपना सावला हाथ हवा मे इस तरह हिलाता रहा मानो सुख-समृद्धि के बीज बिखेर रहा हो। घोडे आखिरकार चल पडे।
तीन आखिरी शब्द याद रखना," अपना शरीर गाडी के बाहर लकर और उसे सतुलित रखते हुए वह चिल्लाकर बोला, "धर्म, , मानवता!. अच्छा, फिर मिलेगे!" आख के ऊपर झुकी टोपीवाला उसका सिर छिप गया। लाव्रेत्स्की सीढियो पर अकेला रह गया, और वह सडक को तब तक एकटक देखता रहा जब घोडागाड़ी आखो से ओझल नही हो गयी। "मैं समझता हू कि का कहना ठीक है," उसने घर मे वापस जाते हुए सोचा, "मैं झता हू कि मैं आलसी हू।" मिखालेविच ने जो कुछ कहा था उसमे ज्यादातर बाते बेरोकटोक उसके दिल मे बैठ गयी थी, हालाकि वह बहस करता रहा था और उससे असहमति प्रकट करता रहा अगर कोई आदमी नेक हो तो कोई भी उसका सामना नही कर ता है।

२६

दो दिन बाद मार्या द्मीत्रियेव्ना सब बच्चो को लेकर वसील्येव्स्कोये ी, जैसा कि उन्होने वादा किया था। छोटी लड़किया तो ही बाग मे भागकर चली गयी, जबकि मार्या द्मीत्रियेव्ना शिथिल से कमरो मे टहलती रही और शिथिल भाव से ही हर चीज तारीफ करती रही। लाव्रेत्स्की के यहा आने को वह उसके ऊपर ना बहुत बडा एहसान समझती थी, लगभग बिल्कुल वैसा जैसे ई खैरात कर रही हो। जब आतोन और अप्राक्सिया ने जागीरी नौकरो के युगो पुराने ढग से उनका हाथ चूमा तो वह बहुत अनुग्रह-

पूर्वक मुस्कराती और उन्होंने रुकी हुई आवाज में धीरे-धीरे बातें हु
करने से अन्त को कहा। लाव्रेत्स्की को, जिसने इस अवसर के लिए ब
और नए बने हुए गाढ़े रंग के पतलून पहन रखे थे, इस बात से बड़ी खु
हुई कि अतिथि महिला को चाय माशेन्स्की के भाड़े के नौकर ने पिला
दिया — ज्ञान के अनुसार, उचित आचार-व्यवहार का कोई प
नहीं था। लेकिन गान के वक्त आनंद की फिर बन आयी। वह मार्फ़
तिमोफ़ेयेव्ना की कुर्सी के पीछे खड़ा हो गया और उसने अपनी जग
किसी को नहीं दी। वसील्येव्स्कोये में मेहमान आने के असाधारण हु
से वह बूढ़ा बहुत खुश और बौखलाया हुआ था। यह देखकर उसक
दिल खुश हो रहा था कि उसके मालिक का उठना-बैठना कैसे-कैसे
शरीफ लोगों के बीच था। उस दिन अकेला वही बहुत जोश में नहीं
था। लेम्म भी कुछ गिटपिटाया हुआ था। वह नसवार के रंग का एक
छोटा-सा दुमकटा कोट पहने हुए था, उसने अपना गुलूबंद कसकर
गर्दन में बांध रखा था और वह लगातार अपना गला साफ़ करता रहता
था और बेहद मिलनसारी से लोगों के लिए रास्ता छोड़ता था। लाव्रेत्स्की
को यह देखकर खुशी हुई कि उसके और लीज़ा के बीच घनिष्ठता की
जो भावना पैदा हो गयी थी वह अभी तक बनी हुई थी: उसने अंदर
आते ही बड़े मित्रता के भाव से अपना हाथ उसकी ओर बढ़ाया था।
खाने के बाद लेम्म ने अपने कोट की पीछेवाली जेब से, जिसे वह
काफ़ी देर से टटोल रहा था, स्वर-लिपि का एक लिपटा हुआ काग़ज़
निकाला, और अपने होंट ज़ोर से भींचकर उसे पियानो पर रख दिया।
वह एक 'रोमांज़ा' था जिसकी रचना उसने पिछली शाम पुराने
ढंग के जर्मन बोलों के आधार पर की थी, जिनमें सितारों की
ओर कुछ संकेत किया गया था। लीज़ा फ़ौरन पियानो पर बैठकर उसे
बजाने लगी। . . अफ़सोस! वह संगीत-रचना बहुत उलझी हुई और
निराशाजनक हद तक दुरूह निकली, स्पष्टतः संगीतकार ने कोई बहुत
ही गहरे और आवेगपूर्ण भावोद्‌गार व्यक्त करने की कोशिश की थी,
लेकिन इसमें वह सफल नहीं रहा था; प्रयास अवश्य था, पर और
कुछ नहीं था। लाव्रेत्स्की और लीज़ा दोनों ही ने इस बात को महसूस
किया, और लेम्म ने भी इस बात को ताड़ लिया—क्योंकि एक शब्द
भी कहे बिना उसने संगीत-रचना अपनी जेब में रख ली थी, और
जब लीज़ा ने उसे दुबारा बजाने का प्रस्ताव रखा था तो उसने बस

ा सिर हिला दिया था, और अर्थपूर्ण ढंग से कहा था, "बस ा ही बहुत है!"—और अपने कंधे भुकाकर वह अपने अंदर ट गया था और वहा से चला गया था।

शाम के करीब पूरी मडली मछलिया पकडने गयी। बाग के सबसे ले छोर पर जो तालाब था उसमे कार्प और ग्राउडलिंग मछलिया हुई थी। मार्या द्मीत्रियेव्ना को किनारे के पास छाया मे आराम-ी पर बिठा दिया गया, उनके पाव के नीचे दरी बिछा दी गयी उन्हे सबसे अच्छी बसी दे दी गयी, पुराना अभ्यस्त मछली पकडने-ा होने के नाते आतोन पूरी तरह उनकी खिदमत मे लग गया। बसी की डोर से जूझता रहा, उसने कटिया मे चारा लगाया, मे लगे हुए कीडे को थपथपाया, उस पर थूका और यहा तक किया अपने शरीर को बडी अदा से लहराकर डोर पानी मे फेकी। उसके दिन के आचरण के बारे मे लाव्रेत्स्की से अपनी बोर्डिंग-स्कूलवाली सीसी मे बात करते हुए मार्या द्मीत्रियेव्ना ने कहा, "Il n'y a s maintenant de ces gens comme ça comme autrefois."*

म दोनो बच्चियो को साथ लेकर और आगे बाध के पास ा गया; लाव्रेत्स्की लीज़ा की बगल मे जम गया। मछलिया तार चारे पर आ रही थी, जब कही बसी की डोर खीची जाती तो कार्प मछलिया अपनी सुनहली और रुपहली चमक हवा मे ेर देती थी; बच्चिया लगातार खुश होकर किलकारिया मार रही ; दो बार तो मार्या द्मीत्रियेव्ना के मुह से भी नाजुक दबी हुई ख निकल गयी। सबसे कम बार कटिया लाव्रेत्स्की और लीज़ा ने ची; इसकी वजह शायद यह थी कि वे दूसरो की अपेक्षा मछलिया डने की ओर कम ध्यान दे रहे थे, और अपने तिरेदे तैरकर किनारे क चले आने दे रहे थे। कुछ-कुछ लाली लिये हुए ऊचे-ऊचे सरकडे के चारो ओर कोमल ध्वनि से सरसरा रहे थे, तालाब का शात ल कोमल द्युति से चमक रहा था और उनके बोलने की आवाज़ कोमल थी। लीज़ा एक छोटे-से बेडे पर खडी थी, लाव्रेत्स्की एक वृक्ष के भुके हुए तने पर बैठा था, लीज़ा ने सफेद पेटीवाली सफेद शाक पहन रखी थी; उसकी तिनके की हैट एक हाथ मे भूल रही

---

* "आजकल के नौकर पहले जैसे नही रहे।" (फ्रासीसी)

थी, दूसरे से उसने कमान जैसी तनी हुई बंसी थाम रखी थी। लाव्रेत्स्की बगल की ओर से उसके साफ़-सुथरे लेकिन कुछ-कुछ कठोर मुद्रावाले चेहरे को, कानों के पीछे कसकर बंधे हुए उसके बालों को, उसके बच्चों जैसे कोमल गालों को, जिन्हें सूरज की किरनें चूम रही थीं, एकटक देख रहा था और सोच रहा था, "वाह, मेरे तालाब के पास खड़ी हुई तुम कितनी सुंदर लगती हो!" लीज़ा मुंह फेरे पानी को ऐसी आंखों से घूर रही थी जिन्हें देखने से अनुमान होता था कि वे या तो सिकोड़ रखी गयी हैं या मुस्करा रही हैं। पासवाला लाइम का पेड़ उन दोनों पर अपनी छाया डाल रहा था।

"जानती हो," लाव्रेत्स्की ने बातचीत का सिलसिला शुरू किया, "पिछली बार हम लोगों की जो बातचीत हुई थी उसके बारे में मैं बहुत कुछ सोचता रहा हूं, और मैं इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि तुम बेहद नेक हो।"

"अरे, मैं यह नहीं चाहती थी कि आप यह समझें कि..." लीज़ा ने कहना शुरू किया और झेंपकर चुप हो गयी।

"तुम नेक हो," लाव्रेत्स्की ने एक बार फिर कहा। "मैं अनगढ़ क़िस्म का आदमी हूं, लेकिन मैं कल्पना कर सकता हूं कि तुम सभी लोगों को नेक लगती होगी। मिसाल के लिए, लेम्म को ही ले लो; वह तो तुम्हारी मुहब्बत में दीवाना है।"

लीज़ा की भवों पर बल तो नहीं पड़े लेकिन वे फड़क ज़रूर उठीं; वह जब भी कोई अरुचिकर बात सुनती थी तो उसकी यही प्रतिक्रिया होती थी।

"आज मुझे उसके ऊपर बहुत तरस आया," लाव्रेत्स्की ने जल्दी से कहा, "उसके उस अभागे 'रोमांज़ा' की वजह से। नौजवानी में अयोग्य होना तो बर्दाश्त किया जा सकता है, लेकिन बुढ़ापे में असमर्थ हो जाना बहुत ही दुःख की बात है। सबसे बुरी बात तो यह होती है कि आदमी यह महसूस नहीं करता कि उसकी शक्तियां क्षीण होती जा रही हैं। बूढ़े को इससे बहुत तकलीफ़ होती होगी।... ज़रा देखना, मछली फंस रही है।... मैंने सुना है," लाव्रेत्स्की ने कुछ देर रुककर कहा, "कि व्लादीमिर निकोलाइच ने बहुत अच्छा रोमांज़ा लिखा है।"

"जी हां," लीज़ा ने जवाब दिया, "कोई खास बात नहीं है, लेकिन अच्छा है।"

"तुम्हारी क्या राय है," लाव्रेत्स्की ने पूछा, "क्या वह अच्छा तकार है?"

"मैं समझती हू कि उनमे सगीत की बडी प्रतिभा है, लेकिन ी तक उन्होने उसकी ओर गभीरता से ध्यान नही दिया है।'

"अच्छा, एक इसान की हैसियत से, क्या तुम उसे अच्छा कहोगी?"

लीज़ा ने हसकर फ्योदोर इवानिच पर जल्दी से एक नज़र ली।

"कैसी अजीब बात पूछते हैं आप भी!" उसने अपनी बसी की र खीचकर और उसे दुबारा पानी मे दूर फेकते हुए चिल्लाकर कहा।

"अजीब क्यो? मैं तुमसे उसके बारे मे एक ऐसे आदमी के नाते ा रहा हू जो अभी हाल ही मे यहा आया है, एक रिश्तेदार की सियत से।"

"रिश्तेदार?"

"हा। मेरा ख्याल है कि रिश्ते मे मैं तुम्हारा चाचा लगता हू।'

"व्लादीमिर निकोलाइच दिल के बहुत नेक हैं," लीज़ा ने कहा, वह बहुत गुणी हैं; मा को वह बहुत अच्छे लगते हैं।"

"तुम्हे अच्छा लगता है वह?"

"वह बहुत अच्छे आदमी हैं, मुझे क्यो नही अच्छे लगेगे?"

"आह!" लाव्रेत्स्की ने अस्फुट स्वर मे कहा और चुप हो गया। दासी और तिरस्कार का मिला-जुला भाव उसके चेहरे के आर-पार जली की तरह कौंध गया। उसके एकटक घूरते रहने से लीज़ा को लझन हो रही थी, लेकिन वह मुस्कराती रही। "खैर, भगवान न्हे सुखी रखे!" वह थोडी देर बाद बुदबुदाया मानो अपने आपसे ह रहा हो, और उसने अपना मुह दूसरी ओर फेर लिया।

लीज़ा शरमा गयी।

"आपका ख्याल ग़लत है, फ्योदोर इवानिच," वह बोली, आपको ऐसा नही सोचना चाहिये। लेकिन क्या व्लादीमिर निको-ाइच आपको अच्छे नही लगते?" उसने अचानक पूछा।

"नही, मुझे तो वह अच्छा नही लगता।"

"क्यो?"

"मेरा ख्याल है कि उसके पास बस दिल ही नही है।

लीज़ा के चेहरे से मुस्कराहट ग़ायब हो गयी।

"आपकी आदत लोगों को परखने में बहुत सख्ती से काम लेने की है," उसने बहुत देर रुकने के बाद कहा।

"मैं? मैं ऐसा नहीं समझता। मुझे क्या हक है लोगों को सख्ती से परखने का, जबकि मुझे खुद लोगों की मेहरबानी की जरूरत है? या तुम इस बात को भूल चुकी हो कि अगर कोई मुझ पर नहीं हंसता तो महज अपनी काहिली की वजह से... अरे हां," उसने इतना और पूछ लिया, "तुमने अपना वादा पूरा किया?"

"कौन-सा वादा?"

"तुमने मेरे लिए प्रार्थना की थी?"

"जी हां, मैंने की थी, और मैं आपके लिए रोज प्रार्थना करती हूं। लेकिन आप मेहरबानी करके इस बात का मजाक न उड़ाइयेगा।"

लाव्रेत्स्की ने लीजा को आश्वासन देना शुरू किया कि उसके मन मे कोसो दूर तक ऐसा करने का कोई विचार नहीं था, और यह कि दूसरे लोगो की आस्थाओ के प्रति उसके मन में बहुत गहरी सम्मान की भावना थी; फिर उसने धर्म के बारे मे, मानव इतिहास मे उसकी भूमिका के बारे मे, ईसाई-धर्म के महत्त्व के बारे में अपने विचार व्यक्त किये।

"आदमी के लिए जरूरी है कि वह ईसाई हो," लीजा ने थोड़ा प्रयास करके कहना शुरू किया, "इसलिए नही कि उसे दिव्य.. और... पार्थिव का बोध हो सके, बल्कि इसलिए कि हर आदमी को एक न एक दिन मरना है।"

लाव्रेत्स्की ने आश्चर्य से नजर उठाकर लीजा की ओर देखा और उसकी घूरती हुई आखों मे आखे डाल दी।

"अभी तुमने वह कौन-सा शब्द इस्तेमाल किया था?"

"वह शब्द मेरा नही है," लीजा ने जवाब दिया।

"तुम्हारा तो नही है.. लेकिन तुमने मरने की बात क्यों की?"

"मालूम नही। मैं उसके बारे मे अकसर सोचती रहती हूं।"

"अकसर?"

"जी हां।"

"तुम्हे इस वक्त देखकर किसी को आसानी से इस पर यकीन नही आयेगा· तुम्हारा चेहरा इतना खिला हुआ और खुश दिखायी दे रहा है, और तुम मुस्करा रही हो।..."

"जी हा, मैं इस वक्त बहुत सुश हू," लीज़ा ने भोलेपन से वाब दिया।

लाव्रेत्स्की की प्रबल इच्छा हुई कि उसके दोनो हाथ थाम ले और न्हे ज़ोर से दबा दे। .

"लीज़ा, लीज़ा," मार्या द्मीत्रियेव्ना ने ज़ोर से पुकारा, "यहा आओ, देखो मैंने कैसी कार्प मछली पकडी है!"

"अभी आयी, मा," लीज़ा ने जवाब दिया और उनके पास चली यी, और लाव्रेत्स्की को बेदवृक्ष पर बैठा छोड गयी। "मैं तो उससे स तरह बात करता हू जैसे मेरी ज़िदगी लगभग पूरी न हो चुकी हो," ह सोचने लगा। जाने से पहले लीज़ा अपनी हैट पेड की एक टहनी र टाग गयी थी। लाव्रेत्स्की हैट को, उसके लबे-लबे, कुछ मिजे ए फीतो को एक विचित्र, लगभग स्नेहमय भाव से एकटक खता रहा। लीज़ा ने जल्दी ही वापस आकर बेडे पर अपनी जगह फिर सभाल ली।

"आप ऐसा क्यो सोचते हैं कि व्लादीमिर निकोलाइच के दिल नही है?" उसने कई क्षण चुप रहने के बाद पूछा।

"मैं तुमसे बता चुका हू कि हो सकता है मेरी यह राय गलत हो; लेकिन, समय ही बतायेगा।"

लीज़ा विचारो मे खो गयी। लाव्रेत्स्की वसील्येव्स्कोये मे अपनी ज़िदगी के बारे मे, मिखालेविच के बारे मे, आतोन के बारे मे बाते करने लगा, वह लीज़ा से बात करने की ज़रूरत महसूस कर रहा था उसे वह सब कुछ बता देने की जो उसके मन मे हो रहा था, वह इतने प्यारे ढग से, इतने ध्यान से हर बात सुनती थी, और कभी-कभार वह जो टिप्पणी कर देती थी या अपनी राय व्यक्त कर देती थी वह उसे बेहद सीधी-सादी और समझदारी की लगती थी। उसने उसे यह बात बता भी दी। लीज़ा चकित रह गयी।

"सचमुच," वह बोली। "और मुझे हमेशा ऐसा लगता था कि मेरी नौकरानी नास्त्या की तरह ही मेरे भी कोई शब्द मेरे अपने नही हैं। उसने एक बार अपने मगेतर से कहा था, 'मेरे साथ तुम्हारा जी ऊबता जाता होगा, तुम तो मुझसे हमेशा इतनी अच्छी-अच्छी बाते करते हो और मेरे अपने कोई शब्द नही है।'"

"भगवान की कृपा है!" लाव्रेत्स्की ने सोचा।

इसी बीच शाम हो चली थी; मार्या द्मीत्रियेव्ना
दिया कि घर जाने का समय हो गया है। बच्चियो को मछलियो के तालाब के पास से जबर्दस्ती खीचकर लाना पड़ा और चलने के लिए तैयार करना पड़ा। लाव्रेत्स्की ने यह कहकर कि वह मेहमानो को आधे रास्ते तक छोड़ आयेगा घोड़ा कसने का आदेश दिया। मार्या द्मीत्रियेव्ना को घोड़ागाड़ी में बिठाते समय उसे सहसा लेम्म की याद आयी, लेकिन वह बूढ़ा कही नही मिला। मछली का शिकार खत्म होते ही वह कही गायब हो गया था। आतोन ने बड़ी फुर्ती से, जो उसकी उम्र को देखते हुए सराहनीय बात थी, गाड़ी के दरवाजे धड़ाधड़ बद किये और कड़ककर कहा, "चलो, कोचवान!" गाड़ी चल दी। पीछे की सीटो पर मार्या द्मीत्रियेव्ना और लीजा बैठी थी और सामने नौकरानी के साथ दोनो बच्चिया बैठी थी। सुखद शात सध्या थी, हल्की-हल्की गरमी पड़ रही थी और दोनो तरफ की खिडकिया गिरा दी गयी थी। लाव्रेत्स्की घोड़े पर बैठा लीजा की ओर गाड़ी के साथ दुलकी चाल से चला जा रहा था, उसने अपना हाथ दरवाजे पर टिका रखा था – रास उसने समतल गति से चलते हुए घोड़े की गर्दन पर डाल दी थी – और बीच-बीच में वह उस लडकी से दो-एक बातें कर लेता था। सूर्यास्त की लालिमा धूमिल हो चुकी थी, रात होने को आयी थी, लेकिन ऐसा लगता था कि हवा में गरमी कुछ बढ़ गयी थी। मार्या द्मीत्रियेव्ना थोड़ी ही देर में ऊघने लगी, बच्चियों और उनकी नौकरानी को भी नींद आ गयी। गाड़ी तेजी से बिना झटके खाये चली जा रही थी, लीजा आगे की ओर झुकी बैठी थी, उभरते हुए चांद की किरण उसके चेहरे पर पड़ रही थी, रात की महकती हुई हवा उसकी आंखों और उसके गालों पर पंखा झल रही थी। वह बहुत खुश थी। उसका हाथ गाड़ी के दरवाजे पर लाव्रेत्स्की के हाथ के पास रखा था। और वह भी खुश था, रात के शांत, सुखद, थोड़े-थोड़े गरम वातावरण में वह तेजी से आगे बढ़ रहा था, उसकी नजर उसके सुंदर जवान चेहरे पर जमी हुई थी और वह उसकी मंद मंद सुरीली आवाज सुन रहा था जिसमें वह अच्छी अच्छी और

ी-सादी बाते कह रही थी ; उसे पता भी नही चला कि कब आधा
ता कट गया। यह सोचकर कि मार्या द्मीत्रियेव्ना की नीद मे विघ्न
पडे, उसने लीजा का हाथ धीरे से दबाया और कहा, "अब हम
दोस्त है, है न ?" लीजा ने स्वीकृति मे सिर हिलाया, लाव्रेत्स्की
अपना घोडा रोक दिया। गाडी भूमती हुई और हचकोले खाती
आगे लुढकती चली गयी, लाव्रेत्स्की धीमी रफ्तार से घर की
र चल पड़ा। गरमी की रात का सुहानापन उसकी आत्मा मे प्रवेश
गया था, उसके चारो ओर की हर चीज अचानक अजीब लगने
ी थी, और फिर भी हर चीज इतने लबे अरसे से और इतने सुदर
से उसकी जानी-पहचानी लग रही थी, दूर की और पास की हर
ज पर गहरी शाति छायी हुई थी—और बहुत दूर तक दिखायी
रहा था हालाकि आख जो कुछ देखती थी उसमे से ज्यादातर चीजो
वह सही-सही थाह नही ले पाती थी, ऐसा लग रहा था कि स्वय
शाति यौवन की वासती लहर से सप्राण हो उठी है। लाव्रेत्स्की का
ड़ा धीरे-धीरे एक ओर से दूसरी ओर भूमता हुआ बडी चुस्ती से
ना जा रहा था, उसकी लबी गहरी परछाई भी उसके साथ चल
ी थी ; उसकी टापो की आवाज मे कोई बात थी जो विचित्र रूप
आकर्षक थी ; बटेरो की गूजती हुई चीख मे कोई बात थी जो
ल्लसित करनेवाली और मत्रमुग्ध कर लेनेवाली थी। सितारे एक चमक-
र धुध मे खो गये थे ; पतला-सा चाद समान ज्योति से चमक रहा
. उसकी रश्मिया आकाश के आर-पार नीली आभा बिखेर रही
और पास से होकर धीरे-धीरे गुजरते हुए भीने बादलो पर मोतिया मुनहरे
ब्बो की शक्ल मे पड रही थी, रात की स्फूर्तिदायक हवा आखो पर नमी की
क तह-सी उभार रही थी, धीरे-धीरे अग-अग मे व्याप्त होती जा रही थी
ोर बेरोक-टोक फेफडो मे प्रवाहित हो रही थी। लाव्रेत्स्की आनद-विभोर
ोकर उसे सारे का सारा पीने लगा, और आनद के इस आभास से वह
लकित हो उठा। "अभी हमारे पास एक तुरुप का पत्ता है," उसने सोचा,
हम उन्हे दिखा देगे।..." उसने यह कुछ नही कहा कि वह किसे
ेखा देगा या क्या दिखा देगा। .. फिर वह लीजा के बारे मे हवाई
क़िले बनाने लगा, वह सोचने लगा कि यह सभव नही है कि उसे
ाशिन से प्रेम हो, कि अगर वह स्वय लीजा से दूसरी परिस्थितियो
मिला होता तो—भगवान ही जाने

२१

इसी बीच शाम हो चली थी; मार्या द्मीत्रियेव्ना
दिया कि घर जाने का समय हो गया है। बच्चियों को मछलियों के तालाब के पास से जबर्दस्ती खींचकर लाना पड़ा और चलने के लिए तैयार करना पड़ा। लाव्रेत्स्की ने यह कहकर कि वह मेहमानों को आधे रास्ते तक छोड़ आयेगा घोड़ा कसने का आदेश दिया। मार्या द्मीत्रियेव्ना को घोड़ागाड़ी में बिठाते समय उसे सहसा लेम्म की याद आयी, लेकिन वह बूढ़ा कहीं नहीं मिला। मछली का शिकार खत्म होते ही वह कहीं गायब हो गया था। आन्तोन ने बड़ी फुर्ती से, जो उसकी उम्र को देखते हुए सराहनीय बात थी, गाड़ी के दरवाज़े धड़ाधड़ बंद किये और कड़ककर कहा, "चलो, कोचवान!" गाड़ी चल दी। पीछे की सीटों पर मार्या द्मीत्रियेव्ना और लीज़ा बैठी थीं और सामने नौकरानी के साथ दोनों बच्चियां बैठी थीं। सुखद रात सघ्या थी, हल्की-हल्की गरमी पड़ रही थी और दोनों तरफ की खिड़कियां गिरा दी गयी थीं। लाव्रेत्स्की घोड़े पर बैठा लीज़ा की ओर गाड़ी के साथ दुलकी चाल से चला जा रहा था, उसने अपना हाथ दरवाज़े पर टिका रखा था – रास उसने समतल गति से चलते हुए घोडे की गर्दन पर डाल दी थी – और बीच-बीच मे वह उस लडकी से दो-एक बाते कर लेता था। सूर्यास्त की लालिमा धूमिल हो चुकी थी, रात होने को आयी थी, लेकिन ऐसा लगता था कि हवा में गरमी कुछ बढ गयी थी। मार्या द्मीत्रियेव्ना थोड़ी ही देर मे ऊंघने लगी, बच्चियो और उनकी नौकरानी को भी नीद आ गयी। गाड़ी तेजी से बिना झटके खाये चली जा रही थी, लीज़ा आगे की ओर झुकी बैठी थी, उभरते हुए चाद की किरणे उसके चेहरे पर पड रही थी, रात की महकती हुई हवा उसकी आखो और उसके गालो पर पखा झल रही थी। वह बहुत खुश थी। उसका हाथ गाड़ी के दरवाज़े पर लाव्रेत्स्की के हाथ के पास रखा था। और वह भी खुश था, रात के सात, सुखद, थोडे-थोड़े गरम वातावरण मे वह तेजी से आगे बढ़ रहा था; उसकी नज़रे उसके सुदर जवान चेहरे पर जमी हुई थी और वह उसकी जवान, मद-मद सुरीली आवाज़ सुन रहा था जिसमे वह अच्छी-अच्छी और

सीधी-सादी बाते कह रही थी ; उसे पता भी नही चला कि कब
रास्ता कट गया। यह सोचकर कि मार्या द्मीत्रियेव्ना की नीद मे
न पड़े, उसने लीज़ा का हाथ धीरे से दबाया और कहा, "अब
दोनो दोस्त है, हैं न?" लीज़ा ने स्वीकृति मे सिर हिलाया, लाव्रे
ने अपना घोड़ा रोक दिया। गाडी भूमती हुई और हचकोले
हुई आगे लुढ़कती चली गयी, लाव्रेत्स्की धीमी रफ्तार से घर
ओर चल पडा। गरमी की रात का सुहानापन उसकी आत्मा मे
कर गया था, उसके चारो ओर की हर चीज़ अचानक अजीब
लगी थी, और फिर भी हर चीज इतने लबे अरसे से और इतने
ढग से उसकी जानी-पहचानी लग रही थी, दूर की और पास की
चीज़ पर गहरी शाति छायी हुई थी—और बहुत दूर तक दिख
दे रहा था हालाकि आख जो कुछ देखती थी उसमे से ज्यादातर च
की वह सही-सही थाह नही ले पाती थी, ऐसा लग रहा था कि
यह शाति यौवन की वासती लहर से सप्राण हो उठी है। लाव्रेत्स्की
घोड़ा धीरे-धीरे एक ओर से दूसरी ओर भूमता हुआ बडी चुस्ती
चला जा रहा था; उसकी लबी गहरी परछाई भी उसके साथ च
रही थी; उसकी टापो की आवाज़ मे कोई बात थी जो विचित्र
से आकर्षक थी, बटेरो की गूजती हुई चीख मे कोई बात थी
उल्लसित करनेवाली और मत्रमुग्ध कर लेनेवाली थी। सितारे एक चमक
दार धुध मे खो गये थे, पतला-सा चाद समान ज्योति से चमक र
या: उसकी रश्मिया आकाश के आर-पार नीली आभा बिखेर र
ी और पास से होकर धीरे-धीरे गुज़रते हुए भीने बादलो पर मोतिया सुनह
ब्बो की शक्ल मे पड रही थी, रात की स्फूर्तिदायक हवा आखो पर नमी क
क तह-सी उभार रही थी, धीरे-धीरे अग-अग मे व्याप्त होती जा रही थ
ौर बेरोक-टोक फेफड़ो मे प्रवाहित हो रही थी। लाव्रेत्स्की आनद-विभो
ोकर उसे सारे का सारा पीने लगा, और आनद के इस आभास से वह
लकित हो उठा। "अभी हमारे पास एक तुरुप का पत्ता है," उसने सोचा
हम उन्हे दिखा देगे। . " उसने यह कुछ नही कहा कि वह किसे
खा देगा या क्या दिखा देगा। . . फिर वह लीज़ा के बारे मे हवाई
ले बनाने लगा, वह सोचने लगा कि यह सभव नही है कि उसे
शिन से प्रेम हो, कि अगर वह स्वय लीज़ा से दूसरी परिस्थितियो
मिला होता तो—भगवान ही जानता है क्या कुछ न ...

कि वह इस मामले में अंत में सहमत था, हालांकि लीजा के "स्वर अपने कोई शब्द नहीं थे। बहरहाल, यह बात सच नहीं थी – उनके साथ स्वतः अपने शब्द थे। "आप इसका मजाक न उड़ाइएगा" – लाव्रेत्स्की के ध्यान में यह बात आयी। वह बड़ी देर तक सिर झुकाये घोड़े पर बैठा चलता रहा, फिर अपने आपको सम्भालते हुए उसने धीरे से कहा

जो कुछ पूजा था मैंने
उसको फूंक दिया है
और पूज रहा हूं उसको
जो फूंक चुका हूं

और चाबुक लगाकर घोड़े को सरपट दौड़ाता हुआ वह घर पहुंच गया।

घोड़े से उतरकर उसने कृतज्ञता के भाव से अनायास ही मुस्कराते हुए चारों ओर नजर डाली। रात – मेहरबान, खामोश रात पहाड़ियों की ढलानों पर और घाटियों पर फैली हुई थी; बहुत दूर से, उसकी महकती हुई गहराइयों से, न जाने कहां से – आसमान से या जमीन से – दबे पांव हल्की-हल्की और कोमल उष्णता की लहरें आ रही थीं। लाव्रेत्स्की अंतिम बार लीजा को मूक अभिवादन भेजकर तेजी से सीढ़ियों पर चढ़ गया।

अगला दिन कुछ बोझिल गुजरा। सुबह हल्की-हल्की फुहार पड़ रही थी। लेम्म की त्योरियों पर बल थे और उसके होंट पहले से भी ज्यादा कसकर बंद थे, मानो उसने उन्हें कभी न खोलने की क़सम खा रखी हो। बिस्तर पर लेटने के लिए जाते हुए लाव्रेत्स्की ने कुछ फ़ांसीसी पत्रिकाएं उठा लीं, जो दो हफ्ते से ज्यादा से उसकी मेज पर पड़ी थीं और उन्हें खोला तक नहीं गया था। उसने लापरवाही से उन पर लिपटा हुआ कागज खोला और पत्रिकाओं के स्तंभों पर दृष्टि डाली, जिनमें कोई नयी बात नहीं थी। वह उन्हें अलग रखने जा ही रहा था कि अचानक बिस्तर से उछल पड़ा जैसे किसी ने उसे डंक मार दिया हो। एक अखबार के एक लेख में हमारे पुराने परिचित मोसियो जूल्स ने अपने पाठकों तक एक "दुःखद समाचार" पहुंचाया था· मास्को की चित्ताकर्षक, मनमोहक महिला, उसने लिखा था, फ़ैशन की दुनिया

क मलिका, जो पेरिस के दीवानखानो की शोभा बढाती थी me de Lavretzki का लगभग अचानक देहात हो गया था. इसकी सूचना — जो दुर्भाग्यवश बिल्कुल सच थी — अभी-अभी मो- जूल्स के कानो तक पहुची थी। वह — उसने लिखा था — कहा कता है, मृतात्मा के मित्रो मे से था।

ाव्रेत्स्की कपडे पहनकर बाग मे चला गया. जब सुबह हुई ी वह उसी रास्ते पर इधर-उधर टहल रहा था।

२८

गले दिन सुबह चाय पीते वक्त लेम्म ने लाव्रेत्स्की से उसके वापस जाने के लिए घोडो का बदोबस्त करा देने को कहा। आ गया है कि मैं कुछ अपना काम शुरू करू, मेरा मतलब ीत सिखाने का काम," बूढे ने कहा, "यहा तो मैं बस अपना समय कर रहा हू।" लाव्रेत्स्की ने फौरन कोई जवाब नही दिया. वह ोया-खोया-सा लग रहा था। "अच्छी बात है," उसने आखिर- कहा, "मैं खुद आपके साथ जाऊगा।" क्रोध से गुर्राते हुए लेम्म ने छोटे-से सूटकेस मे नौकरो की मदद के बिना ही सारा सामान लिया, और स्वर-लिपियो के कुछ पन्ने फाडकर जला दिये। घोडे गये। कमरे से बाहर निकलते हुए लाव्रेत्स्की ने अपनी जेब मे ना अखबार ठूस लिया। रास्ते-भर लेम्म और लाव्रेत्स्की ने बहुत बातचीत की; दोनो अपने-अपने विचारो म ही खोये हुए थे और बात पर खुश थे कि दूसरा उसके विचारो मे विघ्न नही डाल था। वे एक-दूसरे से विदा भी कुछ रूखेपन से हुए, जैसा कि रूस स्तो के बीच अक्सर होता है। लाव्रेत्स्की ने बूढे को घोडागाडी पर घर तक पहुचा दिया. बूढा गाडी से उतरा उसने अपना सूटकेस और अपने दोस्त की तरफ हाथ बढाये बिना ही (वह अपना न दोनो हाथो मे अपने सीने से चिपकाये हुए था) उसकी ओर बगैर भी, उसने रूसी मे कहा, "गुड-बाई!" — 'गुड-बाई!' त्स्की ने भी कहा और कोचवान से उसे उसके कमरो पर ले चलने कहा। उसने शहर मे ज़रूरत के वक्त के लिए कमरे किराये पर रखे थे। कुछ खत लिखकर और जल्दी-जल्दी कुछ खाकर लाव्रेत्स्की

कलीतिन-परिवार से मिलने चल दिया। ड्राइंग-रूम मे उसकी मुलाकात सिर्फ पाशिन से हुई, जिसने उसे बताया कि मार्या द्मीत्रियेव्ना अभी आती होगी और अत्यत मर्मस्पर्शी हार्दिकता के साथ फ़ौरन उसने बातचीत करने लगा। उस दिन तक पाशिन लाव्रेत्स्की को बिल्कुल ही हेच भले ही न समझता रहा हो लेकिन उसके प्रति उसका व्यवहार कुछ सरपरस्ती का जरूर था, लेकिन लीज़ा ने पाशिन से लाव्रेत्स्की के यहा की अपनी यात्रा का वर्णन करते हुए उसका उल्लेख एक बहुत ही अच्छे और समझदार आदमी के रूप मे किया था; पाशिन के लिए इतना ही काफी था उसे उस "बहुत ही अच्छे" आदमी को अपने पक्ष मे करना था। पाशिन ने शुरू से ही तारीफ़ के पुल बाध दिये, यह बताया कि मार्या द्मीत्रियेव्ना का पूरा परिवार वसील्येव्स्कोये जाकर कितना प्रसन्न था, और उसके बाद, जैसा कि उसका तरीक़ा था, वह अपने बारे मे बढ-बढकर बातें करने लगा, उसने अपने कार-नामों के बारे मे बताया, जीवन के बारे में, समाज के बारे मे और सरकारी नौकरी के बारे में अपने विचारो की व्याख्या की, रूस के भविष्य के बारे मे कुछ टिप्पणिया की, और यह मत व्यक्त किया कि प्रातीय गवर्नरों को क़ाबू मे रखा जाना चाहिये; उसने अपना मज़ाक़ उडाते हुए भी दो-एक बातें कही, और लगे-हाथ यह भी बता दिया कि सेट पीटर्सबर्ग मे उसे de populariser l'idée du cadastre* का काम सौंपा गया था। इस विषय पर वह बड़ी देर तक बोलता रहा, सारी कठिनाइया पूरे आत्म-विश्वास के साथ चुटकी बजाते दूर कर दी, और प्रशासन और राजनीति की गभीर समस्याओ से इस तरह खिलवाड करता रहा मानो वे गेद हों।

इस तरह के कथन कि "मैं सरकार की जगह होता तो यही करता"; "एक समझदार आदमी होने के नाते आप मेरी इस बात मे सहज ही सहमत होंगे" हमेशा उसकी जबान की नोक पर रहते थे। लाव्रेत्स्की बडी उदासीनता से पाशिन की लफ़्फ़ाज़ी सुनता रहा। यह खूबसूरत, चुस्त-चालाक, बना-ठना नौजवान, जिसकी मुस्कराहट मे चमक थी, जिसकी आवाज़ मे मिठास थी और जिसकी आखो मे द्रोह थी, उसे अच्छा नहीं लगता था। पाशिन को, जो परिस्थिति को बहुत

---

* भूमि के सर्वेक्षण के विचार का प्रचारक। (फ्रांसीसी)

जल्दी भाप लेता था, शीघ्र ही अनुमान हो गया कि जिस आदमी के साथ वह बातचीत कर रहा था उसे उसके प्रवचन मे कोई खास मजा नही आ रहा था, इसलिए वह कोई बहाना बनाकर वहा से खिसक गया, और उसने मन ही मन यह फैसला कर लिया कि लाव्रेत्स्की भले ही बहुत अच्छा आदमी हो, लेकिन वह अक्खड, aigri* और en somme,** कुछ हास्यास्पद आदमी है। मार्या द्मीत्रियेव्ना अपने साथ गेदेओनोव्स्की को लिये हुए आयी; फिर मार्फा तिमोफेयेव्ना और लीजा आयी, और उनके बाद घर के बाकी लोग आये, कुछ देर बाद आयी सगीत-प्रेमी मादाम बेलेनीत्सिना, वह दुबली-पतली, छोटे कद की एक महिला थी, जिनका चेहरा बच्चो जैसा सुदर था और देखने मे थका हुआ लगता था, उन्होने एक सरसराता हुआ काला गाऊन और सोने के भारी कडे पहन रखे थे और हाथ मे एक रग-बिरगा पखा लिये हुए थी; उनके साथ उनके पति भी थे, बडे-बडे हाथ-पाववाले गुलाबी रगत के गोलमटोल आदमी, जिनकी पलको का रग कुछ फीका था और जिनके होंटो पर हमेशा एक जैसी मुस्कराहट रहती थी; उनकी पत्नी सबके सामने उनसे कभी बात नही करती थी, लेकिन घर पर जब उन्हे प्यार आता था तब वह उन्हे अपना नन्हा-मुन्ना सुअर कहती थी; पाशिन भी लौट आया था; कमरे लोगो से और शोर से भरे हुए थे। लाव्रेत्स्की को इस तरह की भीड पसद नही थी; वह बेलेनीत्सिना से खास तौर पर झुंझलाया हुआ था जो उसे अपने बिना कमानी के चश्मे से बराबर घूरे जा रही थी। वह फौरन वहा से उठकर चला गया होता लेकिन लीजा की वजह से बैठा रहा, वह अकेले मे उससे कुछ कहना चाहता था, लेकिन बडी देर तक उसे कोई उपयुक्त अवसर नही मिल पाया, और उसे अपनी आखो से देख-देखकर मन ही मन खुश हो लेने पर सतोष करना पडा; उसका चेहरा उसे इतना प्यारा और इतना नेक इससे पहले कभी नही लगा था। बेलेनीत्सिना की बगल मे बैठी हुई वह और भी सुदर लगती थी। मादाम बेलेनीत्सिना लगातार अपनी कुर्सी पर कसमसा रही थी, अपने छोटे-छोटे पतले कधे बिचका रही थी, दबी-दबी हसी हस रही

* रूखा। (फ्रासीसी)
** बहरहाल। (फ्रासीसी)

कैलीतिन-परिवार से मिलने चल दिया। ड्राइंग-रूम में उसकी मुलाक़ात सिर्फ़ पाशिन से हुई, जिसने उसे बताया कि मार्या द्मीत्रियेव्ना अभी आती होगी और अत्यन्त मर्मस्पर्शी हार्दिकता के साथ फ़ौरन उसने बातचीत करने लगा। उस दिन तक पाशिन लाव्रेत्स्की को बिल्कुल ही हेय भले ही न समझता रहा हो लेकिन उसके प्रति उसका व्यवहार कुछ सरपरस्ती का ज़रूर था. लेकिन लीज़ा ने पाशिन से लाव्रेत्स्की के यहां की अपनी यात्रा का वर्णन करते हुए उसका उल्लेख एक बहुत ही अच्छे और समझदार आदमी के रूप में किया था; पाशिन के लिए इतना ही काफ़ी था उसे उस "बहुत ही अच्छे" आदमी को अपने पक्ष में करना था। पाशिन ने शुरू से ही तारीफ़ के पुल बांध दिये, यह बताया कि मार्या द्मीत्रियेव्ना का पूरा परिवार वसील्येव्स्कोये जाकर कितना प्रसन्न था, और उसके बाद, जैसा कि उसका तरीक़ा था, वह अपने बारे में बढ़-चढ़कर बातें करने लगा, उसने अपने कारनामों के बारे में बताया, जीवन के बारे में, समाज के बारे में और सरकारी नौकरी के बारे में अपने विचारों की व्याख्या की, रूस के भविष्य के बारे में कुछ टिप्पणियां कीं, और यह मत व्यक्त किया कि प्रांतीय गवर्नरों को क़ाबू में रखा जाना चाहिये; उसने अपना मज़ाक़ उड़ाते हुए भी दो-एक बातें कहीं, और लगे-हाथ यह भी बता दिया कि सेंट पीटर्सबर्ग में उसे de populariser l'idée du cadastre* का काम सौंपा गया था। इस विषय पर वह बड़ी देर तक बोलता रहा, सारी कठिनाइयां पूरे आत्म-विश्वास के साथ चुटकी बजाते दूर कर दीं, और प्रशासन और राजनीति की गंभीर समस्याओं से इस तरह खिलवाड़ करता रहा मानो वे गेंद हों।

इस तरह के कथन कि "मैं सरकार की जगह होता तो यही करता", "एक समझदार आदमी होने के नाते आप मेरी इस बात से सहज ही सहमत होंगे" हमेशा उसकी ज़बान की नोक पर रहते थे। लाव्रेत्स्की बड़ी उदासीनता से पाशिन की लफ़्फ़ाज़ी सुनता रहा: यह ख़ूबसूरत, चुस्त-चालाक, बना-ठना नौजवान, जिसकी मुस्कराहट में चमक थी, जिसकी आवाज़ में मिठास थी और जिसकी आंखों में टोह थी, उसे अच्छा नहीं लगता था। पाशिन को, जो परिस्थिति को बहुत

* संपत्ति के सर्वेक्षण के विचार का प्रचारक। (फ्रांसीसी)

जल्दी भाप लेता था, शीघ्र ही अनुमान हो गया कि जिस आदमी के साथ वह बातचीत कर रहा था उसे उसके प्रवचन मे कोई खास मजा नही आ रहा था, इसलिए वह कोई बहाना बनाकर वहा से खिसक गया, और उसने मन ही मन यह फैसला कर लिया कि लाव्रेत्स्की भले ही बहुत अच्छा आदमी हो, लेकिन वह अक्खड, aigri* और en somme,** कुछ हास्यास्पद आदमी है। मार्या द्मीत्रियेव्ना अपने साथ गेदेओनोव्स्की को लिये हुए आयी, फिर मार्फा तिमोफेयेव्ना और लीजा आयी, और उनके बाद घर के बाकी लोग आये, कुछ देर बाद आयी सगीत-प्रेमी मादाम बेलेनीत्सिना, वह दुबली-पतली, छोटे कद की एक महिला थी, जिनका चेहरा बच्चो जैसा सुदर था और देखने मे थका हुआ लगता था, उन्होने एक मरमराता हुआ काला गाऊन और सोने के भारी कडे पहन रखे थे और हाथ मे एक रग-बिरगा पखा लिये हुए थी, उनके साथ उनके पति भी थे, बडे-बडे हाथ-पाववाले गुलाबी रगत के गोलमटोल आदमी, जिनकी पलको का रग कुछ फीका था और जिनके होटो पर हमेशा एक जैसी मुस्कराहट रहती थी, उनकी पत्नी सबके सामने उनसे कभी बात नही करती थी, लेकिन घर पर जब उन्हे प्यार आता था तब वह उन्हे अपना नन्हा-मुन्ना सुअर कहती थी, पाशिन भी लौट आया था, कमरे लोगो से और शोर से भरे हुए थे। लाव्रेत्स्की को इस तरह की भीड पसद नही थी, वह बेलेनीत्सिना से खास तौर पर भुभलाया हुआ था जो उसे अपने बिना कमानी के चश्मे से बराबर घूरे जा रही थी। वह फौरन वहा से उठकर चला गया होता लेकिन लीजा की वजह से बैठा रहा वह अकेले मे उससे कुछ कहना चाहता था, लेकिन बडी देर तक उसे कोई उपयुक्त अवसर नही मिल पाया, और उसे अपनी आखो से देख-देखकर मन ही मन खुश हो लेने पर सतोष करना पडा उसका चेहरा उसे इतना प्यारा और इतना नेक इससे पहले कभी नही लगा था। बेलेनीत्सिना की बगल मे बैठी हुई वह और भी सुदर लगती थी। मादाम बेलेनीत्सिना लगातार अपनी कुर्सी पर कसमसा रही थी अपने छोटे-छोटे पतले कधे बिचका रही थी दबी-दबी हसी हस रही

---

* चिडचिडा। (फ्रासीसी)

** कुल मिलाकर। (फ्रासीसी)

थी, कभी अपनी आंख सिकोड़ लेती थी और कभी अचानक उ
फिर पूरा खोल लेती थी। लीज़ा शांत बैठी थी, वह लोगों की अ
में आंखें डालकर देख रही थी और बिल्कुल नहीं हंस रही थी। मर
पोलिनेव्ना मार्फ़ा तिमोफ़ेयेव्ना, बेलेनीत्सिन और गेदेओनोव्स्की
साथ ताश खेलने बैठ गये जो बहुत धीरे-धीरे अटक-अटककर बो
रहा था, लगातार गलतियां कर रहा था, आंखें मटका रहा था और
रूमाल से अपना मुंह पोंछ रहा था। पाशिन के चेहरे पर उदासी छायी
थी, वह अपने आपको उदास अर्थपूर्ण स्वर में बड़े रूखेपन से व्यक्त
कर रहा था – जैसे सारी दुनिया को जता रहा हो कि अगर उसकी
प्रतिभा को पनपने का अवसर मिलता तो वह मेधावी पुरुष बन सकता
था – लेकिन मादाम बेलेनीत्सिना के अनुरोधों के बावजूद, जो बड़ी निर्लज्जता
से चोंचले कर रही थी, उसने अपना गाना गाने से इंकार कर दिया;
लाव्रेत्स्की की मौजूदगी से उसे कुछ संकोच हो रहा था। फ्योदोर इवानिच भी
बहुत कम बोल रहा था; कमरे में उसके आते ही लीज़ा को उसके
चेहरे के विचित्र भाव पर कुछ आश्चर्य हुआ था उसे ऐसा लगा था
कि वह उससे कुछ कहना चाहता था, लेकिन उससे पूछते लीज़ा को
डर लगता था, न जाने क्यों। आखिरकार, जब वह दूसरे कमरे
में चाय बनाने जा रही थी, उसने अनायास ही अपना सिर उसकी
ओर घुमाया। वह फौरन उसके पीछे-पीछे बाहर निकल आया।

"आपको क्या हुआ है?" उसने चायदान सामोवार पर रखते हुए कहा।

"क्यों, तुमने कुछ देखा है क्या?" उसने पूछा।

"आप आज वैसे नहीं लग रहे हैं जैसे रोज़ लगते हैं।"

लाव्रेत्स्की मेज़ पर झुक आया।

"मैं तुम्हें एक खबर बताना चाह रहा था," वह बोला, "लेकिन अब वह नामुमकिन है। फिर भी इस लेख में जिस हिस्से पर निशान लगा है वह तुम पढ़ लेना," उसने उसे वह अखबार देते हुए, जो वह अपने साथ लाया था, इतना और कहा। "मेहरबानी करके किसी को इसके बारे में बताना नहीं; मैं कल सबेरे आऊंगा।"

लीज़ा चकरा गयी।.. पाशिन दरवाज़े पर आ खड़ा हुआ। लीज़ा ने अखबार अपनी जेब में रख लिया।

"तुमने 'ओबरमान' पढ़ा है, येलिज़ावेता मिखाइलोव्ना?" पाशिन

ाचारमग्न होकर पूछा।

लीज़ा ने बुदबुदाकर कुछ कहा और ऊपर चली गयी। लाव्रेत्स्की -रूम में लौटकर ताश की मेज़ के पास चला गया। मार्फा तिम्ना का चेहरा झुंझलाहट के मारे लाल हो रहा था, उनकी की डोरियां खुलकर इधर-उधर उड़ रही थीं उन्होंने अपने जोड़ी-दिओनोव्स्की के बारे में शिकायत करते हुए कहा कि वह बिल्कुल आदमी था।

"देखो, ताश खेलना," वह बोली, "उतना आसान काम नहीं मा परियों के क़िस्से गढ़ना।"

इस दोष का अपराधी आंखें झपकाता रहा और अपना चेहरा ा रहा। लीज़ा आकर एक कोने में बैठ गयी, लाव्रेत्स्की ने उसकी देखा और उसने उसकी ओर – और दोनों ही लगभग भय-विस्मित करने लगे। लाव्रेत्स्की को उसकी मुखमुद्रा में घबराहट और कार की छिपी हुई निंदा का आभास मिला। लाख चाहते हुए हे उससे बोल न सका, एक ही कमरे में उसके साथ दूसरे मेह-के बीच केवल एक और मेहमान की तरह रहना उसके लिए कष्टदायक था, उसने वहां से चले जाने का फ़ैसला किया। से विदा लेते हुए उसने किसी तरह इतना दोहरा दिया कि वह आयेगा, और साथ ही यह भी कह दिया कि उसे उसकी मित्रता रा भरोसा था।

"आइयेगा," लीज़ा ने चेहरे पर घबराहट का वही भाव लिये जवाब दिया।

लाव्रेत्स्की के चले जाने के बाद पाशिन चहक उठा वह गेदे-स्की को सलाह देने लगा, मादाम बेलेनीत्सिना की ओर व्यंग-ध्यान देने लगा और आखिरकार उसने अपना गाना गाया। लीज़ा के साथ बात करने और उसकी ओर देखने का उसका अब भी पहले जैसा ही था – अर्थपूर्ण और कुछ उदासी-भरा।

लाव्रेत्स्की को फिर रात-भर नींद नहीं आयी, वह उदास नहीं न ही वह परेशान था, वह बिल्कुल शांत था, लेकिन उसे नींद आ रही थी। उसे बीती हुई बातों की याद भी नहीं सता रही वह बस अपने बीते हुए जीवन में घूरता रहा, उसका दिल नपे-ढंग से एक भारीपन के साथ धड़क रहा था, एक-एक करके घंटे

बीतते गये, लेकिन उसने सोने की बात सोची तक नही। कभी-कभी उसके दिमाग मे यह विचार बिजली की तरह कौंध जाता: "यह सच नही है, यह सरासर बकवास है" – और तब वह ठहर जाता, सिर झुका लेता और फिर अपने जीवन का सिंहावलोकन करने लगता।

२६

अगले दिन सुबह जब लाव्रेत्स्की आया तो मार्या द्मीत्रियेव्ना ने तनिक भी हार्दिकता का परिचय नही दिया। "सच कहती हूँ, इसने तो ढर्रा ही बाध लिया है रोज-रोज आने का," उन्होंने सोचा। यो भी वह उन्हे बहुत पसद तो कभी नही था, और पाशिन ने, जिसके असर मे वह थी, पिछली रात बडी चालाकी से उनके कान मे लगे हाथ उसके बारे मे प्रशसा के कुछ शब्द डाल दिये थे। चूंकि वह उसे मेहमान नही मानती थी, और एक रिश्तेदार की, जो परिवार के ही एक आदमी जैसा था, आवभगत करना उन्होंने जरूरी नही समझा, इसलिए नतीजा यह हुआ कि आधे घटे से भी कम मे वह बाहर मैदान मे पेडो के बीच से जानेवाले एक छायादार रास्ते पर लीज़ा के साथ टहल रहा था। लेनोच्का और शूरोच्का फूलों के बागीचे में उनसे कुछ ही कदम की दूरी पर इधर-उधर भाग-दौड रही थी।

लीज़ा हमेशा की तरह शात थी, लेकिन उसका रग हमेशा से ज्यादा पीला था। उसने अपनी जेब से बहुत छोटे आकार मे तह किया हुआ अखबार का पन्ना निकाला और लाव्रेत्स्की को दे दिया।

"बहुत बुरा हुआ!" वह बोली।

लाव्रेत्स्की ने कोई जवाब नही दिया।

"लेकिन शायद यह सच न हो," लीज़ा ने फिर कहा।

"इसीलिए मैंने तुमसे किसी को न बताने को कहा था।"

लीज़ा चलकर थोडी दूर आगे बढ गयी।

"यह बताइये," उसने कहना शुरू किया, "आपको तकलीफ नहीं महसूस होती? बिल्कुल नहीं?"

"मुझे खुद नही मालूम कि मैं क्या महसूस करता हूं," लाव्रेत्स्की ने कहा।

"लेकिन आपको पहले तो उनसे मुहब्बत थी, थी न?"

"हा।"

"बहुत ज्यादा?"

"हा।"

"और आपको उनके मरने का तनिक भी दुख नही है?"

"मेरे लिए तो वह इससे पहले ही मर गयी थी।"

"आप जो कुछ कह रहे हैं वह पाप है। मुझसे नाराज न होइये। आप मुझे अपना दोस्त कहते है—दोस्त हर बात कह सकता है। मुझे तो सचमुच बहुत बुरा लग रहा है—कल आपके चेहरे पर जो भाव था वह मुझे तनिक भी अच्छा नही लगा। आपको याद है अभी उस दिन आप उनकी शिकायत कर रहे थे?—और शायद उस वक्त वह मर चुकी थी। बडी भयानक बात है। जैसे आपको कोई सजा दी गयी हो।"

लाव्रेत्स्की कटु भाव से मुस्करा दिया।

"क्या तुम ऐसा समझती हो? बहरहाल अब मै आजाद हू।"

लीजा सिहर उठी।

"मेहरबानी करके इस तरह की बात न कीजिये। आपकी यह आजादी किस काम की है आपके लिए? आपको इस वक्त इसके बारे मे नही बल्कि क्षमा के बारे में सोचना चाहिये।"

"क्षमा तो मैं उसे बहुत पहले ही कर चुका," लाव्रेत्स्की तिरस्कार के भाव से हाथ हिलाकर बीच में बोल दिया।

"नही, यह नही कह रही थी मैं," लीजा ने अपनी बात पूरी करते हुए जवाब दिया। "आपने मेरी बात को गलत समझा। आपको क्षमा मागना चाहिये।"

"किससे?"

"भगवान से। और कौन माफ कर सकता है हमे भगवान के अलावा?"

लाव्रेत्स्की ने उसका हाथ पकड लिया।

"अरे, येलिजावेता मिखाइलोव्ना, मेरा विश्वास करो," वह करुण स्वर में बोला, "मुझे पहले ही बहुत काफी सजा मिल चुकी है। मै हर चीज का प्रायश्चित कर चुका हू, विश्वास करो।"

"आपको खुद भी इसका पूरा भरोसा नही हो सकता," लीजा

ने मंद स्वर में कहा, 'आप भूल गये, अभी हाल ही में, जब आप मुझसे बातें कर रहे थे—आप उन्हें माफ करने को तैयार नहीं थे।

वे चुपचाप चलते रहे।

"और आपकी बेटी का क्या होगा?" लीजा ने ठिठककर अचानक पूछा।

लाव्रेत्स्की चौंक पड़ा।

"ओह, उसकी तुम चिन्ता न करो! मैंने सारी तरफ खत लिखवा दिये हैं। मेरी बेटी के भविष्य का, जैसे कहा जाता है... जिसे कहते हैं... पूरा बंदोबस्त कर दिया गया है। चिन्ता न करो।"

लीजा दुखी होकर मुस्करा दी।

"लेकिन तुम ठीक कहती हो," लाव्रेत्स्की कहता रहा, "किस काम की है मेरी आजादी मेरे लिए? उसमें मेरा क्या भला होगा?"

"आपको वह अखबार कब मिला था?" लीजा ने उसके सवाल का जवाब दिये बिना कहा।

"जिस रोज तुम आयी थीं उसके अगले दिन।"

"तो क्या... तो क्या आपने एक आंसू भी नहीं बहाया?"

"नहीं, मैं हक्का-बक्का रह गया, और आंसू आते भी कहां से? बीती बातों पर रोना, जबकि वे सारी की सारी राख होकर मेरे दिल से निकल चुकी हैं!... उसके अपराध से मेरा सुख नष्ट नहीं हुआ बल्कि उससे मुझे सिर्फ यह पता चला कि वह सुख कभी था ही नहीं। आंसू बहाने के लिए था भी क्या? लेकिन, खैर, कौन जाने?—अगर यह खबर मुझे दो हफ्ते पहले मिली होती तो शायद मुझे ज्यादा तकलीफ हुई होती।.."

"दो हफ्ते पहले?" लीजा ने पूछा। "पिछले दो हफ्तों में ऐसा क्या हुआ होगा?"

लाव्रेत्स्की ने कोई जवाब नहीं दिया और लीजा का चेहरा लज्जा के मारे बेहद लाल हो गया।

"हां, हां, तुमने ठीक अंदाजा लगाया है," लाव्रेत्स्की सहसा चिल्ला पड़ा, "उन दो हफ्तों के अंदर मुझे एक बेदाग औरत के दिल की कीमत मालूम हुई, और मेरे गुजरे हुए दिन मुझसे और भी दूर चले गये हैं।"

लीज़ा अटपटा महसूस करने लगी और वह धीरे-धीरे चलकर की उन क्यारियो की ओर चली गयी जहा लेनोच्का और शूरोच्का रही थी।

"मुझे खुशी है कि वह अखबार मैंने तुम्हे दिखा दिया," लाव्रेत्स्की सके पीछे-पीछे चलते हुए कहा। "तुमसे कुछ भी न छिपाने की मेरी पड गयी है, और मैं उम्मीद करता हू कि तुम भी मेरे ऊपर ही भरोसा करोगी।"

"क्या आप सचमुच ऐसा सोचते है?" लीज़ा ने ठहरते हुए बुद-कर कहा। "तब तो मुझे लेकिन नही! यह नामुमकिन है!"

"क्या बात है? बता दो मुझे।"

"सचमुच, मैं नही समझती कि मुझे ऐसा करना चाहिये। ," उसने मुस्कराते हुए लाव्रेत्स्की की ओर देखकर कहा, "किसी आधा भरोसा करने से क्या फायदा? आप जानते हैं, आज मुझे खत मिला?"

"पाशिन का?"

"जी हा। . आपको कैसे मालूम?"

"उसने शादी का प्रस्ताव रखा है तुम्हारे सामने?"

"जी हा," लीज़ा ने जवाब दिया और लाव्रेत्स्की की आखो आखे डालकर गभीर भाव से देखा।

जवाब मे लाव्रेत्स्की ने भी लीज़ा की ओर गभीरता से ।

"तो, क्या जवाब दिया तुमने उसे?" उसने बडी मुश्किल से खारकर कहा।

"क्या जवाब दू, समझ मे नही आता," लीज़ा ने जवाब दिया, र अपने हाथ नीचे कर लिये।

"क्यो? तुम उससे प्यार करती हो न?"

"हा, वह मुझे पसद है, बहुत भले आदमी मालूम होते हैं।"

"तुमने यही बात इन्हीं शब्दो मे तीन दिन पहले भी कही थी। जानना यह चाहता हू कि क्या तुम उसे उसी गहरी तीव्र भावना प्यार करती हो जिसे हम आम तौर पर प्यार कहते हैं?"

"जिस तरह आप समझते है—उस तरह नही।"

"तुम्हे उससे प्यार नही है?"

"जी नही। लेकिन क्या यह जरूरी है?"

"क्या!"

"मा को वह पसद हैं," लीज़ा कहती रही, "वह नेक आदमी हैं, मुझे उनमे कोई बुराई दिखायी नही देती।"

"फिर भी तुम झिझकती हो?"

"जी हा। और शायद – आपकी वजह से, आपने जो कुछ कहा था उसकी वजह से। याद है परसो आपने क्या कहा था? लेकिन यह कमजोरी है। "

"अरे, नादान बच्ची!" लाव्रेत्स्की चिल्लाया और उसकी आवाज़ काप गयी। "दुविधा का खेल न खेलो, जो तुम्हारे दिल की पुकार है उसे कमजोरी मत कहो, उस दिल की जो प्यार के बिना अपने आपको किसी के हवाले नही करना चाहता। इस आदमी के तई, जिससे तुम्हे प्यार नही है और जिसकी होकर तुम रहना चाहती हो, इतनी भयानक जिम्मेदारी अपने कंधो पर मत लो।.."

"मैं तो वही करती हू जो मुझसे कहा जाता है, मैं अपने ऊपर कोई भी जिम्मेदारी नही लेती," लीज़ा ने कहना शुरू किया।

"वही करो जो तुम्हारा दिल कहता है: वही तुम्हे बतायेगा कि सच क्या है," लाव्रेत्स्की बीच मे बोल पडा। "अनुभव, विवेक- यह सब धूल-मिट्टी है, बेकार का दिखावा है! इस दुनिया में जो सबसे बडा, जो एकमात्र सुख है उसमे अपने आपको वचित न करो!"

"और यह बात आप कह रहे हैं, फ्योदोर इवानिच? आपने खुद भी तो प्यार की शादी की थी – क्या आप सुखी रहे?"

लाव्रेत्स्की ने झल्लाकर अपने दोनो हाथ ऊपर उठा दिये।

"अरे मेरी बात न करो! तुम समझ ही नही सकती कि एक नौजवान निष्कपट बहुत ही बुरे ढग से पाला गया लड़का किस चीज़ को प्यार समझकर धोखा खा सकता है! इसके अलावा, मैं अपने साथ बेइमानी क्यों करूं? मै अभी तुम्हे बता रहा था कि मैंने कभी जाना ही नही कि सुख क्या होता है। यह बात सच नहीं है! मै सुखी था!"

"मै समझती हू, फ्योदोर इवानिच " लीज़ा ने धीमी आवाज़ मे कहा (यह उसकी आदत थी कि जब वह किसी से असहमति प्रकट करती थी तो अपनी आवाज़ नीची कर लेती थी, इसके अलावा वह

कलीतिन-परिवार के यहां से विदा होते समय लाव्रेत्स्की की मुठभेड़ पाशिन से हो गयी; दोनों ने बड़े सम्मान से झुककर एक-दूसरे का अभिवादन किया।

लाव्रेत्स्की ने घर जाकर अपने आपको कमरे में बंद कर लिया। वह ऐसे भावावेगों के चंगुल में जकड़ा हुआ था जिनका अनुभव उसे पहले शायद ही कभी हुआ हो। क्या वह बहुत पहले की बात थी जब वह "शान्तिपूर्ण जड़ता" की स्थिति में था? नदी की तली से जा टकराया था, जैसा कि उसने व्यक्त किया था? उसकी हालत क्यों बदल गयी थी? क्या चीज उसे उबारकर धरातल पर लायी थी? एक बहुत ही मामूली, अनिवार्य, हालांकि हमेशा अप्रत्याशित घटना-मौत? हां, लेकिन वह अपनी बीवी के मरने के बारे में या खुद अपनी आजादी के बारे में इतना नहीं सोच रहा था जितना इस बात के बारे में कि लीज़ा पाशिन को क्या जवाब देगी। उसने महसूस किया कि पिछले तीन दिनों के अंदर वह उसे दूसरी ही नज़र से देखने लगा था; उसे याद आया कि किस तरह घर लौटते हुए और रात के सन्नाटे में उसके बारे में सोचते हुए, उसने अपने आपसे कहा था, "काश! ..." वह "काश", जिसका संबंध उसने अतीत के साथ जोड़ा था, जो अप्राप्य था, अब साकार हो गया था, हालांकि उस रूप में नहीं जिस रूप में उसने उसकी कल्पना की थी,—लेकिन उसकी यह आज़ादी बहुत ही कम थी। "वह अपनी मा की बात मानेगी," उसने सोचा, "वह पाशिन से शादी कर लेगी, लेकिन वह उसे ठुकरा भी देगी—तो उससे मुझे क्या फर्क पड़ेगा?" आईने के सामने से गुज़रते हुए उसने एक नज़र अपने चेहरे पर डालकर कंधे बिचका दिये।

इसी तरह की उधेड़बुन में दिन बहुत जल्दी बीत गया; शाम हुई। लाव्रेत्स्की कलीतिन-परिवार के यहां गया। वह जल्दी-जल्दी क़दम बढ़ाता हुआ चल रहा था, लेकिन घर के पास पहुंचकर उसकी रफ्तार धीमी हो गयी। बरसाती के सामने पाशिन की घोड़ागाड़ी खड़ी थी। "छोड़ो भी," लाव्रेत्स्की ने सोचा, "मुझे बहुत अहंकार नहीं करना चाहिये," और वह घर में चला गया। अंदर उसे कोई भी नहीं मिला, और ड्राइंग-रूम में भी कोई आवाज़ सुनायी नहीं दे रही थी; उसने दरवाज़ा

और उसका मकान का ठीक आम लगती है।

लाव्रेत्स्की ने तुरंत उन्हें आश्वस्त कर दिया कि उसकी कोई इच्छा मिलकर बात की नहीं थी।

"सोचो तो भला?" वृद्ध महिला कहती रही। "कौन है वह? क्या वह पापिन अभी तक वहां जमा हुआ है? लीज़ा से मिले? नहीं? वह यहां आना चाहती थी। और वह आ भी क्यों न—बड़ी उम्र है इसकी।"

लीज़ा कमरे में आयी और लाव्रेत्स्की को देखकर सहम गयी।

"मैं बस ज़रा-सी देर के लिए आयी हूं, मार्फ़ा तिमोफ़ेयेव्ना," लीज़ा ने कहना शुरू किया

"ज़रा-सी देर के लिए क्यों?" वृद्धा ने उसकी बात काटते हुए कहा। "तुम सब युआरी लड़कियां इतनी उड़ी-उड़ी क्यों फिरती हो? देखो हमारे यहां एक मेहमान आये हैं—बैठकर उनसे बातें करो, उनका मन बहलाओ।"

लीज़ा एक कुर्सी की कगर पर बैठ गयी, नज़र उठाकर लाव्रेत्स्की को देखा—और उसने महसूस किया कि उसे उनको पानिन के साथ अपनी मुलाकात का नतीजा बता देना चाहिये। लेकिन यह काम वह करती कैसे? वह अटपटा भी महसूस कर रही थी और लज्जित भी थी। वह लाव्रेत्स्की को बहुत दिन से नहीं जानती थी, इस आदमी को जो शायद ही कभी गिरजे जाता था और जो अपनी बीवी के मरने की खबर सुनकर ज़रा भी परेशान नहीं हुआ था—और वह थी कि अपने सारे भेद उसके सामने खोलकर रख दे रही थी। माना कि वह उसमें दिलचस्पी रखता था, वह खुद भी उस पर भरोसा करती थी और उसकी ओर आकृष्ट होती थी; फिर भी वह लज्जा अनुभव करती थी, जैसे कोई अजनबी उस निष्कलंक कुआरी कन्या के कमरे में घुस आया हो।

मार्फ़ा तिमोफ़ेयेव्ना ने उसे इस दुविधा से उबार लिया।

"तुम उनका मन नहीं बहलाओगी," वह बोली, "तो कौन बहलायेगा, बेचारे का मन? मैं तो उसके लिए बहुत बूढ़ी हूं, वह मेरे लिए बहुत ज़्यादा होशियार और नस्तास्या कार्पोव्ना के लिए उम्र में बहुत बड़ा है—उसे तो बस जवानों के बीच ही संतोष मिलता है।"

मैं फ्योदोर इवानिच का मन बहलाने के लिए क्या कर सकती लीज़ा बोली। "अगर वह चाहें तो मैं उनके लिए पियानो पर जा सकती हूं," उसने झिझकते-झिझकते कहा।

बहुत अच्छा रहेगा, बड़ी होशियार लड़की है," मार्फा तिमो-ा ने कहा। "जाओ, बच्चो, नीचे जाओ, जब फुरसत पाना लौट आना, मैं गुलामचोर फंस गयी, बड़े अफसोस की बात है, इसका बदला लेना होगा।"

लीज़ा उठ खड़ी हुई। लाव्रेत्स्की भी उसके पीछे-पीछे बाहर निकल या। सीढ़ियां उतरते-उतरते लीज़ा ठहर गयी।

"ठीक ही कहा जाता है," उसने कहना शुरू किया, "कि इंसान । दिल विरोधों से भरा हुआ है। आपकी मिसाल से मुझे डरना और सभल जाना चाहिये था प्यार की शादी पर से मेरा भरोसा उठ जाना चाहिये था, लेकिन मैं "

तुमने उससे इकार कर दिया ?" लाव्रेत्स्की ने उसकी बात काटकर पूछा।

'नहीं, लेकिन मैंने हां भी नहीं की है। मैंने उन्हें सब कुछ बता दिया है जो कुछ मैं महसूस करती थी और उनसे इतज़ार करने को कहा है। आप सतुष्ट हैं ? लीज़ा ने जल्दी से मुस्कराकर कहा, और सीढ़ियों के जगले का हल्का-सा सहारा लेकर नीचे भाग गयी।

'आप क्या सुनना चाहते हैं ?' उसने पियानो का ढक्कन उठाते हुए पूछा।

'जो तुम्हारा जी चाहे ' लाव्रेत्स्की ने ऐसी जगह बैठते हुए जवाब दिया जहां से वह उसे देख सके।

लीज़ा ने बजाना शुरू किया और बड़ी देर तक अपनी उगलियों पर से नज़रें नहीं हटायीं। आखिरकार उसने नज़र उठाकर लाव्रेत्स्की को देखा और पियानो बजाना बद कर दिया — उसका चेहरा लीज़ा को बहुत विचित्र और अनोखा लगा।

'आपको हुआ क्या है ?" उसने पूछा।

"कुछ भी नहीं," लाव्रेत्स्की ने जवाब दिया, "मैं बहुत खुश हूं मैं तुम्हारी वजह से बहुत खुश हूं, तुम्हें देखकर मुझे खुशी होती है बजाती रहो।"

'मुझे ऐसा लगता है," लीज़ा ने कुछ देर रुककर कहा, "

अगर उन्हें सचमुच मुझसे प्यार होता तो वह मुझे यह सब न लिख[ते।] उन्हें यह महसूस करना चाहिये था कि मैं उन्हें अभी जवाब नहीं [दे] सकती।"

"महत्त्व इस बात का नहीं है," लाव्रेत्स्की ने अपना मत व्यक्त किया "महत्त्व की बात यह है कि तुम उससे प्यार नहीं करती हो।"

"ऐसी बातें न कीजिये! हम लोग इस तरह की बातें कैसे कर सकते हैं! मैं आपकी स्वर्गवासी पत्नी के बारे में सोचती रहती हूं और आपसे मुझे डर लगता है।"

"क्या ख्याल है तुम्हारा वोल्देमार, मेरी लिजेन बहुत अच्छा पियानो बजाती है न?" मार्या द्मीत्रियेव्ना पाशिन से कह रही थी।

"जी हां," पाशिन ने कहा, "सचमुच बहुत अच्छा बजाती है।"

मार्या द्मीत्रियेव्ना ने अपने नौजवान जोड़ीदार पर कोमल दृष्टि डाली, लेकिन उसने और भी ज्यादा रोब की और व्यस्तता की मुद्रा धारण करते हुए चौदह राजा बोल दिये।

३१

लाव्रेत्स्की कोई नौजवान तो था नहीं, उसके मन में लीज़ा के प्रति जो भावना थी उसके बारे में वह अधिक समय तक किसी भ्रम में नहीं रह सकता था, उस दिन आखिरकार उसने महसूस किया कि वह उससे प्रेम करता था। इस विचार से उसने किसी गर्वोल्लास का अनुभव नहीं किया। "क्या मैं इससे अधिक उपयोगी कोई काम करने के बारे में नहीं सोच सकता," उसने अपने मन में कहा, "बजाय इसके कि पैंतीस साल की उम्र में मैं अपनी आत्मा एक बार फिर एक औरत के हवाले कर दूं? लेकिन लीज़ा उसकी जैसी नहीं है; वह अपमानजनक आत्म-बलिदानों की मांग नहीं करेगी; वह मुझे अपनी पढ़ाई से दूर हटाने की कोशिश नहीं करेगी, वह स्वयं मुझे कठिन और ईमानदारी की मेहनत के लिए प्रेरित करेगी, ताकि हम दोनों कंधे से कंधा मिलाकर एक उच्च ध्येय की ओर आगे बढ़ें। हां," उसने अपने विचारों का क्रम भंग करते हुए सोचा, "यह सब कुछ तो बहुत ठीक है, लेकिन मुसीबत तो यह है कि मेरे साथ जाने की उसे तनिक भी इच्छा नहीं है। क्या उसने कहा नहीं था कि मुझसे उसे

ता है? लेकिन पानिन में भी उसे प्रेम नहीं है। कैसी बेकार
मन्नी है यह।"

लाव्रेत्स्की वसील्येव्स्कोये वापस चला गया, लेकिन वह वहां
दिन भी रहना बर्दाश्त नहीं कर सका — उसे इतनी उकताहट
ही थी वहां। इसके अलावा वह सशय में पड़ा हुआ था मोसियो
ने जिस खबर का एलान किया था उसकी पुष्टि की जरूरत थी,
उसके पास कोई पत्र भी नहीं आया था। वह शहर लौट गया
शाम उसने कलीतिन-परिवार के साथ बितायी। उसके लिए इस
न को भाप लेना कठिन नहीं था कि मार्या दीमित्रियेव्ना उसे अरुचि
दृष्टि से देखती थी, लेकिन पिकेट के खेल में उनसे पंद्रह रूबल
कर वह उन्हें थोड़ा-सा रास्ते पर ले आया — और उसने लगभग
आधा घंटा लीज़ा के साथ अकेले बिताया, हालांकि अभी पिछली ही
शाम उसकी मां ने उसे यह सलाह दी थी कि वह इस आदमी के
साथ बहुत घुल-मिलकर बातें न किया करे "qui a un si grand
ridicule"* लाव्रेत्स्की ने लीज़ा में एक परिवर्तन देखा — वह
अधिक विचारमग्न हो गयी थी, उसने लाव्रेत्स्की को उसके गायब
रहने के लिए झिड़का और पूछा कि क्या अगले दिन वह प्रार्थना के
लिए गिरजे चलेगा? (अगले दिन इतवार था।)

"जरूर चलिये," इससे पहले कि वह कोई जवाब दे पाता,
लीज़ा ने कहा, "हम दोनों मिलकर उनकी आत्मा की शांति के लिए
प्रार्थना करेंगे।" इसके बाद उसने कहा कि उसकी समझ में नहीं आ
रहा था कि क्या करे — पानिन को अपने जवाब के लिए और अधिक
इंतजार कराना उसके लिए उचित था कि नहीं।

"क्यों?" लाव्रेत्स्की ने पूछा।

"क्योंकि," वह बोली, "अब मुझे कुछ-कुछ आभास हो चला
कि वह फैसला क्या होगा।"

यह कहकर कि उसके सिर में दर्द हो रहा है, उसने ढीलेपन
से ऊनी डोरियों के छोर लाव्रेत्स्की की ओर बढ़ा दिये और ऊपर अप
मरे में चली गयी।

अगले दिन लाव्रेत्स्की प्रार्थना करने गिरजे गया। जब वह

---

*"जिसका ऐसा हास्यास्पद चेहरा हो उसी को। (फ्रांसीसी)

पहुंचा तो लीज़ा पहले से ही वहां मौजूद थी। लीज़ा को उसके आने का पता चल गया, हालांकि उसने सिर घुमाकर देखा भी नहीं। वह तन्मय होकर प्रार्थना कर रही थी, उसकी आंखों में एक कोमल ज्योति चमक रही थी और वह बहुत हौले-हौले अपना सिर झुका और उठा रही थी। लाव्रेत्स्की को ऐसा लगा कि वह उसके लिए प्रार्थना कर रही है—और उसकी आत्मा एक अकथनीय स्नेह से भर उठी। एक ही समय में वह सुखी भी था और उसके मन में कुछ लज्जा भी थी। सारे और निश्चल खड़े हुए लोग, जाने-पहचाने प्रियजनों के चेहरे, पवित्र गायन, लोबान की सुगंध, खिड़कियों से आती हुई रोशनी की लंबी तिरछी किरणें, दीवारों और गोल गुंबद की छत का अंधेरा—यह सब कुछ उसके हृदय को छू रहा था। गिरजे में वह बहुत समय से नहीं आया था, ईश्वर से संपर्क स्थापित किये बहुत समय बीत चुका था। इस समय भी उसने प्रार्थना के कोई शब्द नहीं कहे—उसने शब्द-हीन प्रार्थना भी नहीं की—लेकिन एक क्षण के लिए वह, अपने शरीर से न सही, अपनी समस्त आत्मा से विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए साष्टांग ज़मीन पर लेट गया। उसे याद आया कि किस तरह बचपन में वह गिरजाघर में इतनी देर तक प्रार्थना करता था कि अपने माथे पर उसे किसी के शीतल स्पर्श का आभास होने लगता था; वह सोचा करता था कि यह रक्षक फरिश्ता मेरा स्वागत कर रहा है और मुझ पर दैवी वरण की मुहर लगा रहा है। उसने लीज़ा की ओर देखा। "तुम मुझे यहां लायी हो," उसने सोचा, "मुझे छू दो, मेरी आत्मा को छू दो।" वह अभी तक चुपके-चुपके प्रार्थना कर रही थी; लाव्रेत्स्की को ऐसा लगा कि उसका चेहरा उल्लास से भरा हुआ है, उसके हृदय में एक बार फिर स्नेह उमड़ आया, और उसने एक और आत्मा की शांति के लिए और स्वयं अपनी आत्मा के क्षमा कर दिये जाने के लिए प्रार्थना की।

बाहर बरसाती में उन दोनों की मुलाकात हुई; लीज़ा ने प्रफुल्लित तथा कोमल गंभीरता के भाव से उसका अभिवादन किया। गिरजाघर के अहाते में नयी-नयी उगी हुई घास पर और औरतों की रंग-बिरंगी पोशाकों और रूमालों पर सूरज अपनी चमकीली रोशनी बिखेर रहा था; आस-पास के गिरजाघरों के घंटों की गूंज हवा में फैली हुई थी, पर गौरैया चहक रही थी। लाव्रेत्स्की नंगे सिर खड़ा था, उसके

चेहरे पर मुस्कराहट थी; हवा के हल्के झोंके उसके बालो से और लीज़ा की हैट के फीतो से खेल रहे थे। उसने लीज़ा को और नेनोच्का को, जो उसके साथ आयी थी, सहारा देकर गाड़ी पर चढाया, अपनी जेब का सारा पैसा गरीबो को दे दिया और धीरे-धीरे अपने घर की ओर चल पडा।

३२

फ्योदोर इवानिच के लिए मुसीबत के दिन शुरू हो गये। वह लगातार बुखार की हालत मे रहने लगा। रोज सबेरे वह खुद डाकखाने जाता, बडी बेचैनी से खत और पैकेट खोलता, लेकिन उसे कुछ भी ऐसा न मिलता जिससे किस्मत का फैसला करनेवाली उस अफवाह की पुष्टि या खडन हो सके। कभी-कभी उसे अपने आपसे घिन होने लगती "यह हो गयी है मेरी हालत," वह सोचता, "कि मैं खून के प्यासे गिद्ध की तरह अपनी बीवी के मरने की पक्की खबर मिलने की राह देख रहा हू।" वह कलीतिन-परिवार के लोगो से मिलने रोज जाता था, लेकिन वहा भी उसकी बेचैनी कम नही होती थी, घर की मालकिन स्पष्टत उससे रूठी रहती थी, और उस पर बडा उपकार करके उससे मिलती थी, पाशिन उसके साथ जरूरत से ज्यादा शिष्टता बरतता था, लेम्म मानव-द्वेष का रवैया अपनाये रहता था और उसके सलाम के जवाब मे सिर भी मुश्किल से ही हिलाता था, और सबसे बुरी बात तो यह थी कि लीज़ा भी ऐसा लगता था कि उससे दूर ही रहने की कोशिश करती थी। जब कभी सयोग से वह उसके साथ अकेली रह जाती थी तो वह बिल्कुल घबरायी हुई रहती थी जबकि पहले वह उसके प्रति पूर्ण विश्वास का भाव व्यक्त करती थी, उसकी समझ मे नही आता था कि उससे क्या कहे और वह भी अटपटा महसूस करता था। कुछ ही दिनो के अदर लीज़ा उससे बिल्कुल भिन्न हो गयी थी जैसी कि वह उसे जानता था – उसमे एक चिता-सी छिपी हुई मालूम होती थी, उसकी हर गति मे, उसकी आवाज़ मे, और उसकी हसी तक मे एक ऐसी कपकपी पैदा हो गयी थी जो इससे पहले नही थी। अपने आप मे ही खोये रहने के कारण मार्या द्मीत्रियेव्ना को किसी तरह का कोई शक नही हुआ; लेकिन मार्फा तिमोफेयेव्ना अपनी लाड़ली

पर कड़ी नज़र रखने लगी। लाव्रेत्स्की को बार बार इस बात का एहसा[स]
होता था कि उसने लीज़ा को यह अखबार क्या दिखाया : वह न चा[हते]
हुए भी महसूस करता रहता था कि शुद्ध कुमारिकाएं आत्मा को उस
मनोजगत में कोई बात बहुत अप्रिय लगती होगी। उसका यह
विश्वास था कि लीज़ा में जो परिवर्तन आया था उसका कारण उ[स]
आई है था। उसको यह दुविधा कि वह पानशिन को क्या जवाब दे
एक बार लीज़ा ने एक किताब लाकर उसे दी वाल्टर स्काट का उ[पन्यास]
उपन्यास था जो उसने उससे पढ़ने के लिए ली थी।

"यह वाली?" उसने पूछा।

"नहीं अभी मेरा पढ़ने को जी नहीं चाहता" लीज़ा ने ज[ाने]
के लिए मुड़ते हुए जवाब दिया।

"एक मिनट रुको तो कबसे मैं तुमसे अकेले में नहीं मिला हू[ं]
जैसे तुम मुझसे डरती हो।"

"डरती तो हू।"

"हे भगवान क्यों?"

"मालूम नहीं।"

लाव्रेत्स्की ने कुछ नहीं कहा।

"अच्छा, यह बताओ," उसने फिर बात छेड़ी "तुम अभी त[क]
कोई फैसला कर पायी कि नहीं?"

"क्या मतलब आपका?" वह आखें झुकाकर बोली।

"तुम जानती हो मेरा मतलब क्या है।"

लीज़ा का चेहरा अचानक लाल हो गया।

"अरे, मुझसे न पूछिये," वह किंचित उत्तेजना से बोली, "मुझे
कुछ नहीं मालूम, मैं अपने आपको भी नहीं जानती।"

और यह कहते-कहते वह चली गयी।

अगले दिन लाव्रेत्स्की कलीतिन-परिवार के यहा दोपहर के खाने
के बाद पहुचा और उसने देखा कि सध्या की वदना की तैयारी हो रही
है। खाने के कमरे के एक कोने मे एक चौकोर मेज पर, जिस पर साफ़
मेजपोश बिछा हुआ था, दीवार के सहारे टिकी हुई सुनहरे फ्रेमों में
छोटी-छोटी पवित्र मूर्तियां रखी थी, जिनके प्रभा-मडल में छोटे-छोटे
धुधले नग जड़े हुए थे। स्लेटी रग का फ्राक-कोट और जूते पहने एक
बढ़ा नौकर चुपचाप धीरे-धीरे चलता हुआ कमरे के पार आया, उसने

लीब का निशान बनाया, झुका और चुपचाप
गया। ड्राइंग-रूम खाली था और उसमें रोशनी
लाब्रेत्स्की खाने के कमरे में इधर-उधर टहलता
पूछा कि क्या उस दिन किसी का सन्त-दिवस था।
ताया गया कि ऐसा नहीं था, सन्ध्या-वन्दना येलिजावेता
र्फा तिमोफ़ेयेव्ना की इच्छा के अनुसार हो रही
चमत्कारी देव-प्रतिमा लाने को था लेकिन वह
र किसी बीमार को अच्छा करने के लिए ले जायी
बाद दो पादरियों को साथ लिये हुए पुरोहित आ
म्र का बड़ी-सी गंजी चाँदवाला आदमी था वह
ला औरतें बैठके में से धीरे-धीरे कतार बाँधकर
। और उसके पास आशीर्वाद लेने के लिए पहुँचकर
ने चुपचाप झुककर उनका अभिवादन किया और
। झुककर उसके अभिवादन का जवाब दिया। थोड़ी
एक बार फिर खामा और उसने सोने की कढ़ाई
री मद स्वर में पूछा

यें मार्फ़ा तिमोफ़ेयेव्ना ने कहा।
न कपड़े पहनने लगा। कमर में ऊपर तक का ढीला
एक पादरी ने बड़े विनीत स्वर में आस का एक अंश
की सुगंध उठी। नौकर-नौकरानियाँ हॉल में से आकर
ने एक-दूसरे से सटकर खड़ी हो गयीं। रोस्का, जो इससे
ब नयी आयी थी अचानक सेडी में आराती हुई साने
आ पहुँची लोग उसे दुतकारकर बाहर निकालने को
लगे, लेकिन वह सहम गयी और इधर-उधर भागने
र बैठ गयी, एक नौकर ने उसे उठा लिया और लेकर
या। वन्दना शुरू हुई। लाब्रेत्स्की एक कोने में दुबक गया,
र विचित्र भाव, जाने विषाद-सा छाया हुआ था, वह
नहीं पा रहा था कि वह क्या महसूस कर रहा था।
ज़ेला कुर्सियों के सामने सबसे आगे खड़ी थी, उन्होंने सख़्ता-
र सबर हटाते हुए रोब-दाबवाली महिला जैसी अप्रसन्न

हुई उदासीनता के साथ अपने सीने पर सलीब का निशान
और फिर अचानक नजर ऊपर उठाकर छत की ओर ताकने
वह रुकी हुई लग रही थी। मार्फा तिमोफेयेव्ना चिंतित दिखलाई
रही थी नस्तास्या कार्पोव्ना जमीन तक नीचे झुक गयी और
सावधानी से अपना लिबास सरसराती हुई उठी ; लीजा इस तरह नि
खड़ी थी जैसे वहीं गड़कर रह गयी हो, उसके चेहरे पर एक
के भाव से पता चलता था कि वह बड़ी लगन से दत्तचित्त होकर प्रा
कर रही थी। वंदना के अंत में जब उसने सलीब को चूमा तो
उसी तरह पुरोहित के बड़े-से लाल हाथ को भी चूमा। मार्फा ति
येव्ना ने पुरोहित को चाय पीने के लिए निमंत्रित किया, पुरोहित ने प्रार्थ
समय पहनने के अपने कपड़े उतारे, सामान्य लोगों जैसी मुद्रा धारण की
क्रमश पार करके महिलाओं के साथ ड्राइंग-रूम में चला गया।
भाव से बातचीत शुरू हुई। पुरोहित ने रूमाल से लगातार अपनी
बाद पोंछते हुए चार प्याली चाय पी, और लगे हाथ यह भी बता दि
कि व्यापारी अवोशनिकोव ने गिरजाघर के गुम्बद पर सुन
पत्तर चढ़ाने के लिए सात सौ रूबल का दान दिया था, और इस
अलावा उसने चित्तिया पड जाने का शर्तिया इलाज भी बताया।

लाव्रेत्स्की ने जोड-तोड करके लीजा के पास अपने बैठने की ज
बना ली, लेकिन वह बडी कठोरता से जडवत् अलग बैठी रही
उसने उसकी ओर एक बार नजर घुमाकर देखा तक नहीं। ऐसा ल
रहा था कि वह जान-बूझकर उसकी उपेक्षा कर रही थी; लगता
कि किसी निर्मम और गभीर हर्षोत्कर्ष ने उसे जकड लिया है। लाव्रेत्स
को न जाने क्यो मुस्कराने और कोई मनबहलाव की बात कहने
इच्छा हुई, लेकिन उसके दिल मे परेशानी थी, और आखिरकार
रहस्य मे खोया हुआ ही चला गया। उसने महसूस किया कि लीज
मे कोई बात ऐसी थी जिसकी तह तक वह नही पहुच सकता था

इसी तरह एक बार और लाव्रेत्स्की ड्राइग-रूम मे बैठा गेदेओनो
व्स्की की खुशामद-भरी लेकिन उकता देनेवाली गप्पे सुन रहा था
कि अचानक न जाने क्यो उसने अपना सिर घुमाया और लीजा को
बड़ी एकाग्रता से प्रश्न-भरी नजर से देखते हुए पाया। वह नजर,
वह रहस्यमयी नजर उसी पर जमी हुई थी। लाव्रेत्स्की रात भर
उसके बारे में सोचता रहा। उसका प्रेम कच्ची उम्र के लड़को जैसा

नही था, आहे भरना और तडपना उसे शोभा नही देता था, और लीजा स्वय इस प्रकार की भावनाए प्रेरित नही करती थी, लेकिन हर उम्र के आदमी के लिए प्रेम की अपनी यातनाए होती हैं—और ये सारी यातनाए उसे भोगनी पडी।

३३

एक दिन लाव्रेत्स्की अपनी आदत के अनुसार कलीतिन-परिवार के यहा गया हुआ था। दिन-भर की गर्मी के बाद ऐसी सुहानी शाम शुरू हुई थी कि तेज हवा से अपनी नफरत के बावजूद मार्या मीत्रियेव्ना ने बाग की तरफ के सारे दरवाजे-खिडकिया खोल देने का आदेश दे दिया था और यह एलान कर दिया था कि वह ताश नही खेलेगी क्योकि ऐसे मौसम मे जब आदमी को प्रकृति का आनद लेना चाहिये, ताश खेलना बडी पाप की बात है। पाशिन वहा अकेला मेहमान था। सध्या के सौदर्य से प्रेरित होकर और कलात्मक सवेदनो के प्रवाह को अनुभव करते हुए उसने कविता-पाठ करने का फैसला किया, क्योकि वह लाव्रेत्स्की के सामने गाने को तैयार नही था उसने लेर्मोन्तोव की कुछ कविताए (तब तक पुश्किन का दुबारा प्रचलन नही हुआ था) अच्छे ढग से पढी, लेकिन बहुत ज्यादा समझ-बूझ के साथ और अनावश्यक बारीकिया पैदा करते हुए, और फिर मानो अपने भावातिरेक पर सहसा लज्जित होकर उसने प्रसिद्ध कविता 'दिवास्वप्न' के प्रसग मे युवा पीढी को लताडना और उसकी निदा करना शुरू कर दिया, वह यह साबित करने का कोई मौका नही चूकता था कि अगर उसके हाथ मे सत्ता होती तो वह हर चीज को अपने ढग से किस तरह बदल देता। "रूस," वह कह रहा था, "योरप से पीछे रह गया है, हमे उसके बराबर पहुचना होगा। दावा किया जाता है कि हमारी उम्र कम है—यह बकवास है, हममे जिस चीज की कमी है वह है आविष्कार की क्षमता, खोम्याकोव* ने खुद माना है कि हमने चूहेदान तक ईजाद नही किया। नतीजा यह है कि मजबूरन हम दूसरो से मागना पडता है। लेर्मोन्तोव का कहना है कि हम बीमार

* एक दार्शनिक।—अनु०

है, – मैं उनसे सहमत हू ; लेकिन हम बीमार इसलिए हैं कि हम सिर्फ आधी हद तक ही योरपियन बन पाये हैं ; जो हमारे रोग का कारण है उसी से हमे अपना इलाज करना होगा ("Le cadastre," लाव्रेत्स्की ने सोचा)। हमारे बीच जो सबसे प्रखर बुद्धिवाले लोग हैं, les meilleures têtes," वह कहता रहा, "बहुत पहले इस बात को मान चुके हैं ; सभी कौमें बुनियादी तौर पर एक जैसी होती है, बस अच्छी सस्थाए बना देने की जरूरत होती है और सारा काम हो जाता है। मैं दावे के साथ कह सकता हू कि चीजो को प्रचलित जातीय रीति-रिवाजो के अनुसार ढाला जा सकता है ; यह हमारा काम है, जनता का काम है . (वह 'सरकारी अफसरो' कहते-कहते रह गया) – कर्मचारियो का काम है ; लेकिन अगर जरूरत हुई, आप चिता न करें, तो सस्थाएं खुद जातीय रीति-रिवाजो को नये सिरे से ढाल लेगी।" मार्या द्मीत्रियेव्ना उसकी हर बात पर सहमति के भाव से अपना सिर हिला रही थी। "यह देखो," वह सोच रही थी, "हमारे ड्राइग-रूम मे कैसा प्रतिभाशाली आदमी अपने विचार व्यक्त कर रहा है।" लीजा खिड़की के सहारे चुपचाप बैठी थी, लाव्रेत्स्की भी चुप था, मार्फा तिमोफेयेव्ना, जो कोने में अपनी सहेली के साथ बैठी ताश खेल रही थी, मुह ही मुह में कुछ बुदबुदा रही थी। पाशिन कमरे मे इधर से उधर तक टहल रहा था और धाराप्रवाह बोल रहा था, लेकिन छिपे हुए क्रोध के स्वर में : ऐसा लगता था कि वह एक पूरी पीढ़ी को नही बल्कि अपनी जान-पहचान के कई लोगो को धिक्कार रहा है। उसके प्रवचन के बीच-बीच में निस्तब्धता के जो अतराल आते थे उन्हें एक बुलबुल के प्रथम सन्ध्या-कालीन बोल भर देते थे, जिसने कलीतिन-परिवार के बाग की लाइलक की एक बड़ी-सी झाड़ी में अपना घोंसला बना रखा था। लाइम-वृक्षों की निश्चल फुनगियों के ऊपर गुलाबी आकाश पर पहले सितारे टिमटिमाने लगे थे। लाव्रेत्स्की उठ खड़ा हुआ और पाशिन की बातों का खंडन करने लगा, दोनों में बहस शुरू हो गयी। लाव्रेत्स्की रूस के नौजवानों और स्वतंत्रता का पक्ष ले रहा था, वह अपनी और अपनी पीढ़ी की बलि चढ़ा देने को तैयार था लेकिन वह नये इन्सानों, उनकी आस्थाओं और आकांक्षाओं का डटकर समर्थन कर रहा था, पाशिन

ने चिढ़कर और तीखेपन से उसका जवाब दिया, वह अपनी इस बात

अडा रहा कि समझदार लोगो को हर चीज बदल देनी चाहिये, बहस के जोश मे वह ऐसी हद पर पहुच गया जहा उसने दरबार के अपने और सरकारी नौकरी को भुलाकर लाव्रेत्स्की को बाबा आदम के जमाने का यानूस कह दिया, और–बहुत गोल-मोल ढग से ही सही – समाज मे की सदिग्ध स्थिति की ओर सकेत तक किया। लाव्रेत्स्की ने न अपना क्रोध कने दिया, और न ही उसने अपनी आवाज ऊची की (उसे याद ा कि मिखालेविच ने भी उसे बाबा आदम के जमाने का कहा था – ाम वाल्टेयरवादी), और उसने बडे शात भाव से हर बात पर शन को हरा दिया। उसने उसके सामने साबित कर दिया कि चीजो एक झटके मे बदलना, अफसरो के अक्खड दिमागो मे पैदा होनेवाले परिवर्तनो को ऊपर से थोपना कितना अव्यावहारिक था, जिन्हे तो अपनी मातृभूमि की जानकारी के आधार पर उचित ठहराया सकता था और न ही किसी आदर्श के आधार पर, वह नकारात्मक क्यो न हो, उसने स्वय अपनी शिक्षा का उदाहरण दिया, सबसे ने और सबसे बढ़कर इस बात का तकाजा किया कि लोक-सत्य को नम्रता की भावना से स्वीकार किया जाये – जिस भावना के बिना केवल हम गलती को चुनौती नही दे सकता, अतिम बात यह कि उसने य और शक्ति के अधाधुध अपव्यय की निदा को, जिसे वह बिल्कुल चत समझता था, वापस नही लिया।

"यह सब तो बिल्कुल ठीक है!" पाशिन ने, जो इस समय तक ी तरह झुझला चुका था, "लेकिन अब रूस वापस आकर आपका ादा क्या करने का है?"

"जमीन जोतने का," लाव्रेत्स्की ने जवाब दिया, "और उसे तना अच्छा हो सके जोतने का।"

"बहुत ही नेक इरादा है, बेशक," पाशिन ने जवाब दिया मुझे बताया गया है कि इस मामले मे आप बहुत कामयाब रहे है। किन आप इतना तो मानेगे कि हर आदमी इस तरह के काम के लिए क नही होता। "

"Une nature poétique."* मार्या द्मित्रियेव्ना बीच मे ल पडी, "बेशक जमीन नही जोत सकता ... et puis** तुम्हारे

---

* कवि स्वभाव। (फ्रासीसी)

** फिर। (फ्रासीसी)

हैं, – मैं उनसे सहमत हूं; लेकिन हम बीमार इसलिए हैं कि हम सिर्फ आधी हद तक ही योरपियन बन पाये हैं, जो हमारे रोग का कारण है उसी से हमें अपना इलाज करना होगा ("Le cadastre," लाव्रेत्स्की ने सोचा)। हमारे बीच जो सबसे प्रखर बुद्धिवाले लोग हैं, les meilleures têtes," वह कहता रहा, "बहुत पहले इस बात को मान चुके हैं, सभी कौमें बुनियादी तौर पर एक जैसी होती हैं, बस अच्छी संस्थाएं बना देने की जरूरत होती है और सारा काम हो जाता है। मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि चीजों को प्रचलित जातीय रीति-रिवाजों के अनुसार ढाला जा सकता है; यह हमारा काम है, जनता का काम है. (वह 'सरकारी अफसरों' कहते-कहते रह गया) – कर्मचारियों का काम है; लेकिन अगर जरूरत हुई, आप चिंता न करें, तो संस्थाएं खुद जातीय रीति-रिवाजों को नये सिरे से ढाल लेंगी।" मार्या द्मीत्रियेव्ना उसकी हर बात पर सहमति के भाव से अपना सिर हिला रही थी। "यह देखो," वह सोच रही थी, "हमारे ड्राइंग-रूम में कैसा प्रतिभाशाली आदमी अपने विचार व्यक्त कर रहा है।" लीज़ा खिड़की के सहारे चुपचाप बैठी थी, लाव्रेत्स्की भी चुप था, मार्फ़ा तिमोफ़ेयेव्ना, जो कोने में अपनी सहेली के साथ बैठी ताश खेल रही थी, मुंह ही मुंह में कुछ बुदबुदा रही थी। पांशिन कमरे में इधर से उधर तक टहल रहा था और धाराप्रवाह बोल रहा था, लेकिन छिपे हुए क्रोध के स्वर में। ऐसा लगता था कि वह एक पूरी पीढ़ी को नहीं बल्कि अपनी जान-पहचान के कई लोगों को धिक्कार रहा है। उसके प्रवचन के बीच-बीच में निस्तब्धता के जो अन्तराल आते थे उन्हें एक बुलबुल के प्रथम सन्ध्याकालीन बोल भर देते थे, जिसने कलीतिन-परिवार के बाग की लाइलक की एक बड़ी-सी झाड़ी में अपना घोंसला बना रखा था। लाइम वृक्षों की निश्चल फुनगियों के ऊपर गुलाबी आकाश पर पहले सितारे टिमटिमाने लगे थे। लाव्रेत्स्की उठ खड़ा हुआ और पांशिन की बातों का खण्डन करने लगा, दोनों में बहस शुरू हो गयी। लाव्रेत्स्की रूस के नौजवानों और स्वतन्त्रता का पक्ष ले रहा था, वह अपनी और अपनी पीढ़ी की बलि चढ़ा देने को तैयार था, लेकिन वह नये इन्सानों, उनकी आस्थाओं और आकांक्षाओं का डटकर समर्थन कर रहा था। पांशिन ने चिढ़कर और तैश में उसका जवाब दिया, वह अपनी इस बात

पर अड़ा रहा कि समझदार लोगों को हर चीज़ बदल देनी चा
और बहस के जोश मे वह ऐसी हद पर पहुच गया जहा उसने दरबार के
पद और सरकारी नौकरी को भुलाकर लाव्रेत्स्की को बाबा आदम के जमा
दकियानूस कह दिया, और–बहुत गोल-मोल ढग से ही सही – समा
उसकी सदिग्ध स्थिति की ओर सकेत तक किया। लाव्रेत्स्की ने न अपना
भड़कने दिया, और न ही उसने अपनी आवाज ऊची की (उसे
आया कि मिखालेविच ने भी उसे बाबा आदम के जमाने का कहा
लेकिन वाल्टेयरवादी), और उसने बड़े शात भाव से हर बात
पानिन को हरा दिया। उसने उसके सामने साबित कर दिया कि
को एक झटके मे बदलना, अफसरो के अक्खड़ दिमागो मे पैदा होने
उन परिवर्तनो को ऊपर से थोपना कितना अव्यावहारिक था,
न तो अपनी मातृभूमि की जानकारी के आधार पर उचित ठह
जा सकता था और न ही किसी आदर्श के आधार पर, वह नकार
ही क्यो न हो; उसने स्वय अपनी शिक्षा का उदाहरण दिया,
पहले और सबसे बढ़कर इस बात का तकाज़ा किया कि लोक-सत्
विनम्रता की भावना से स्वीकार किया जाये – जिस भावना के बिना
साहस गलती को चुनौती नही दे सकता. अतिम बात यह कि
समय और शक्ति के अधाधुध अपव्यय की निदा को, जिसे वह वि
उचित समझता था, वापस नही लिया।

"यह सब तो बिल्कुल ठीक है!" पानिन ने, जो इस समय
पूरी तरह झुझला चुका था, "लेकिन अब रूस वापस आकर अ
इरादा क्या करने का है?"

"ज़मीन जोतने का," लाव्रेत्स्की ने जवाब दिया, "और
जितना अच्छा हो सके जोतने का।"

"बहुत ही नेक इरादा है, बेशक," पानिन ने जवाब
"मुझे बताया गया है कि इस मामले मे आप बहुत कामयाब रहे
लेकिन आप इतना तो मानेंगे कि हर आदमी इस तरह के काम के
ठीक नही होता। "

"Une nature poétique,"* मार्या द्मीत्रियेव्ना बीच
बोल पड़ी, "बेशक ज़मीन नही जोत सकता et puis** गु

* कवि स्वभाव। (फ्रांसीसी)

** फिर। (फ्रांसीसी)

तो नौकरी ही ऐसी है, ब्लादीमिर निकोलाइच, जिसमें हर काम en grand* करना पड़ता है।"

इसे पचा पाना पाशिन के भी बस के बाहर था। वह झेंप-सा गया और उसने विषय बदल दिया। उसने बातचीत का रुख तारों-भरी रात के सौंदर्य की ओर, शुबर्ट के संगीत की ओर मोड़ने की कोशिश की – लेकिन बातचीत में झोल बढ़ता ही गया, आखिरकार उसने मार्या द्मीत्रियेव्ना के सामने पिकेट की एक बाज़ी खेलने का सुझाव रखा। "क्या! ऐसी रात को?" उन्होंने दबी आवाज़ से विरोध किया, लेकिन फिर भी ताश मंगवा लिये।

पाशिन ने ज़ोर की आवाज़ करते हुए एक नयी गड्डी खोली; लीज़ा और लाव्रेत्स्की मानो आपस में समझौता करके एकसाथ उठे और जाकर मार्फ़ा तिमोफ़ेयेव्ना के पास बैठ गये। अचानक वे दोनों इतनी खुशी महसूस कर रहे थे कि उन्हें अकेले एकसाथ रहते कुछ डर भी लगता था – उन्हें इस बात का भी आभास था कि पिछले कुछ दिनों का अटपटापन हमेशा के लिए दूर हो गया था। वृद्धा ने आंख बचाकर लाव्रेत्स्की को गाल पर थपथपाया, अर्थपूर्ण ढंग से आंख मारी, कई बार अपना सिर हिलाया और दबे स्वर में कहा, "तुमने उस लाल-बुझक्कड़ को कई सीढ़ी नीचे उतार दिया, शुक्रिया।" कमरे में खामोशी छा गयी, बस मोमबत्तियों की हल्की-सी चटचटाहट और कभी-कभी किसी के मेज़ पर उंगलियों से टप-टप करने की आवाज़, कोई विस्मयादिबोधक स्वर या नंबर गिनने की आवाज़ सुनायी दे जाती थी – और खुली हुई खिड़की में से रात की ओस-मिली ठंडक के साथ झरने की तरह अंदर आता हुआ ढिठाई की हद तक तेज़ और मीठा बुलबुल के गीत का स्वर।

३४

लाव्रेत्स्की और पाशिन की बहस के दौरान लीज़ा एक शब्द भी नहीं बोली थी, लेकिन उसने पूरी बहस बड़े ध्यान से सुनी और समझी थी और वह पूरी तरह लाव्रेत्स्की के पक्ष में थी। राजनीति में उसकी

---

* बड़े पैमाने पर। (फ़्रांसीसी)

दिलचस्पी बहुत थोड़ी थी; लेकिन उस दरबारी अफसर के आत्म-विश्वासपूर्ण स्वर से (इससे पहले कभी वह इस तरह बेलगाम नहीं हुआ था) लीज़ा को बड़ी नफरत हुई, रूस के प्रति उसके तिरस्कार के रवैये पर वह अपमानित महसूस करके रह गयी। अपने देशभक्त होने की बात लीज़ा के दिमाग़ में कभी उठी ही नहीं थी, लेकिन रूसी लोगों के बीच वह अपनापन महसूस करती थी, रूसियों के सोचने के परंपरागत ढंग से उसे खुशी होती थी, उसकी मां की ज़मीन-जायदाद की देखभाल करनेवाला किसान कारिंदा जब शहर आता था तो वह घंटों सहज भाव से उससे बातें करती रहती थी, और उसमें बराबरवालों की तरह ऐसे बात करती थी जिसमें बड़े-छोटे का कोई भेदभाव नहीं रहता था। लाव्रेत्स्की इन सब बातों को महसूस करता था; खुद पानिन की बात का जवाब देने के लिए वह कभी इतना परेशान न होता, उसने जो कुछ कहा था वह सिर्फ लीज़ा को लक्ष्य करके कहा गया था। वे एक-दूसरे से नहीं बोले थे, उनकी आंखें भी शायद ही कभी चार हुई हों, लेकिन उन दोनों ने महसूस किया कि उस शाम वे एक-दूसरे से बहुत घनिष्ठ हो गये थे, कि वे दोनों एक ही चीज़ों को पसंद और नापसंद करते थे। एक ही बात पर उनके बीच मतभेद था, लेकिन मन ही मन लीज़ा को यह आशा थी कि वह उसे ईश्वर की ओर ले आयेगी, वे दोनों मार्फा तिमोफेयेव्ना के पास बैठे थे और ऐसा लग रहा था कि वे बड़े ध्यान से ताश का खेल देख रहे हैं; सचमुच वे खेल देख भी रहे थे—लेकिन इसी बीच उनके सीनों में उमंग बढ़ रही थी, और किसी भी चीज़ की ओर से उनका ध्यान चूकता नहीं था: उन्हीं के लिए बुलबुल गा रही थी और उन्हीं के लिए सितारे चमक रहे थे और उन्हीं के लिए पेड़ चुपके-चुपके कानाफूसी कर रहे थे मानो गर्मी की शिथिलता और उष्णता से उन्हें नींद आ रही हो। लाव्रेत्स्की ने उस भावना को, जो उसकी आत्मा में बाढ़ की तरह उमड़ आयी थी, पूरी तरह अपने ऊपर छा जाने दिया—और उसमें उसे आनंद आया, लेकिन उस सुकुमारी के निष्कलंक हृदय में जो कुछ हो रहा था उसे शब्दों में व्यक्त [illegible] स्वयं उसके लिए भी वह एक रहस्य [illegible] एक रहस्य रहने दिया जाये। न [illegible] न किसी [illegible] है और न कोई ईश्वर [illegible]

लिए पैदा हुआ है, वह धरती की कोख में कैसे बढ़ता और अंकुरित होता है।

दस बजे। नस्तास्या कार्पोव्ना को साथ लेकर मार्फ़ा तिमोफ़ेयेव्ना ऊपर चली गयी, लाव्रेत्स्की और लीज़ा कमरा पार करके बाग़ में जानेवाले खुले दरवाज़े पर खड़े अंधेरे में देखते रहे और फिर एक-दूसरे की ओर देखकर मुस्करा दिये; उनका जी चाह रहा था कि एक-दूसरे का हाथ थामे जी भरकर बातें करते रहें। वे मार्या द्मीत्रियेव्ना और पाशिन के पास वापस चले गये जो अभी तक पिकेट खेल रहे थे। आख़िरकार, आख़िरी बादशाह की भी कटने की बारी आ गयी और मार्या द्मीत्रियेव्ना आह भरती हुई और कराहती हुई आराम कुर्सी पर रखे हुए गद्दों पर से उठी, पाशिन ने अपनी हैट उठा ली, अपनी मेज़बान का हाथ चूमा, यह मत व्यक्त किया कि कुछ लोग भाग्यशाली थे कि अगर वे चाहें तो जाकर सो जायें या सुहानी रात का आनंद लें, जबकि उसे रात-भर जागकर सवेरे तक कुछ बेवकूफ़ी के कागज़ात में सिर खपाना पड़ेगा, उसने बड़ी रुखाई से झुककर लीज़ा से विदा ली (उसे यह उम्मीद नहीं थी कि जब वह विवाह का प्रस्ताव रखेगा तो उससे जवाब के लिए इंतज़ार करने को कहा जायेगा – और इसलिए वह उससे चिढ़ा हुआ था) और घर से बाहर निकल आया। लाव्रेत्स्की भी उसके पीछे-पीछे बाहर आ गया। फाटक पर दोनों एक-दूसरे से अलग हुए। पाशिन ने अपनी छड़ी की नोक कोचवान की गर्दन में गड़ाकर उसे जगाया और गाड़ी में बैठकर चल दिया। लाव्रेत्स्की का जी घर जाने को नहीं चाह रहा था वह शहर को पीछे छोड़कर देहात की ओर निकल गया। रात शांत और प्रकाशमय थी, हालांकि चांद नहीं निकला था, लाव्रेत्स्की बड़ी देर तक ओस से भीगी घास पर टहलता रहा, वह एक सकरी-सी पगडंडी पर आ निकला और उस पर चलने लगा, वह उसे एक लम्बी-सी बाड़ और उसमें एक छोटे-से फाटक की ओर ले गयी, उसने न जाने किस लिए उसे धक्का दिया: फाटक चूं-चूं करता हुआ खुल गया, मानो वह उसके हाथ के स्पर्श की प्रतीक्षा ही कर रहा हो। लाव्रेत्स्की एक बाग़ में खड़ा था, वह लाइम-वृक्षों के बीच में गुज़रनेवाले एक रास्ते पर कई क़दम आगे बढ़ा और फिर आश्चर्यचकित होकर ठिठक गया: उसने कलीतिन-परिवार के बाग़ को पहचान लिया था।

जल्दी से वह हेज़ेल की एक झाड़ी की अंधेरी आड़ मे च
और बड़ी देर तक वहा निश्चल खड़ा सोचता रहा और अ
बिचकाता रहा।

"यह मात्र सयोग नही है!" उसने सोचा।

चारो ओर निस्तब्धता छायी हुई थी, घर मे से कोई
तक उसके कानो मे नही पहुच रही थी। वह सतर्क होकर चलत
छायादार रास्ते के एक मोड पर घूमते ही अचानक पूरा घर
दृष्टि के सामने आ गया, ऊपर की दो खिड़कियो मे झिल
हुई रोशनी के अलावा हर जगह अंधेरा था लीज़ा के कमरे
परदे के पीछे एक मोमबत्ती जल रही थी, और मार्फा तिमे
के सोने के कमरे मे देव-प्रतिमा के सामने छोटे-से चिराग क
रोशनी थी और वह उसके सुनहरे फ्रेम पर अपनी मद कोमल
बिखेर रहा था, नीचे, बाल्कनी की ओर जानेवाला दरवाज़
खुला हुआ था। लाव्रेत्स्की बाग मे लकड़ी की बेंच पर बैठ गय
अपना चेहरा हाथ पर टिकाकर उस दरवाज़े की ओर और
की खिड़की की ओर एकटक देखने लगा। शहर मे कही घटाघ
घड़ी ने आधी रात के घटे बजाये, घर के अदर की छोटी-सी
ने भी तीखे स्वर मे टनटनाकर बारह बजाये, रात को पहरा दे
चौकीदार ने तख्ते पर खट-खट की आवाज़ की। लाव्रेत्स्की कुछ
नही रहा था, कुछ उम्मीद नही कर रहा था, वह इस आभ
ही मग्न था कि वह लीज़ा के निकट था उसके बाग मे बैठा
था, उसी बेंच पर जिस पर वह खुद कई बार बैठी होगी।
के कमरे की बत्ती बुझ गयी।

"विदा, प्रियतमे," लाव्रेत्स्की ने अपनी जगह से हिले
दबे स्वर मे कहा, उसकी आखे अंधेरी खिड़की पर जमी हुई

अचानक नीचे की मंज़िलवाली खिड़की मे रोशनी चमक
फिर वह रोशनी दूसरी खिड़की मे पहुची, फिर तीसरी मे।
हाथ मे मोमबत्ती लिये कमरो मे चल रहा था। "कही लीज़ा तो
है? नामुमकिन!" लाव्रेत्स्की अपनी जगह से उठ खड़ा हुआ।
एक जानी-पहचानी आकृति की झलक दिखायी दी—लीज़ा
रूम मे आयी। सफ़ेद गाउन पहने, गुथी हुई चोटिया अपने कधो
लटकाये, वह चुपचाप मेज़ के पास गयी, झुककर मोमबत्ती उस

रखी और कुछ ढूढने लगी ; फिर अपना मुह बाग की ओर मोड़कर वह खुले दरवाज़े की ओर बढी और आकर चौखट पर खड़ी हो गयी, सफेद पोशाक मे लिपटी हुई एक सुडौल दुबली-पतली आकृति। लाव्रेत्स्की बुरी तरह काप उठा।

"लीज़ा!" उसके होठो से लगभग बिल्कुल ही न सुनायी देनेवाला अस्फुट स्वर फूट पडा।

वह चौक पडी और अधेरे मे झाकने लगी।

"लीज़ा!" लाव्रेत्स्की ने अधिक ऊचे स्वर मे फिर कहा और आड से बाहर निकल आया।

लीज़ा ने सहमकर अपनी गर्दन बाहर निकालकर देखा और पीछे हट गयी। उसने उसे पहचान लिया था। लाव्रेत्स्की ने उसे तीसरी बार पुकारा और अपनी बाहे उसकी ओर फैला दी। दरवाज़े के पास मे हटकर वह बाग़ मे आ गयी।

"आप?" उसने बुदबुदाकर कहा। "आप यहा?"

"मैं.. मैं. मेरी पूरी बात सुन लो," लाव्रेत्स्की ने कानाफूसी के स्वर में कहा और उसका हाथ पकडकर उसे बेंच की ओर ले चला।

वह कोई विरोध किये बिना उसके पीछे चलती रही; उसके चेहरे के उडे हुए रग, उसकी जमी हुई नज़र, उसके हर हाव-भाव से अकथनीय आश्चर्य व्यक्त हो रहा था। लाव्रेत्स्की ने उसे बेंच पर बिठा दिया और उसकी ओर मुह करके खडा हो गया।

"मैंने यहा आने के बारे मे सोचा नही था," उसने कहना शुरू किया, "मै खिचा चला आया।.. मै.. मै. तुमसे प्यार करता हू।" उसने अनायास ही घबराकर कहा।

लीज़ा ने धीरे-धीरे नज़रे उठाकर उसकी ओर देखा, ऐसा लग रहा था कि अब जाकर उसे इस बात का आभास हुआ था कि वह कहा है और क्या हो रहा है। वह उठना चाहती थी लेकिन उठ न सकी, और उसने अपना मुह दोनो हाथो मे छिपा लिया।

"लीज़ा," लाव्रेत्स्की ने बुदबुदाकर कहा, "लीज़ा," उसने दोहराया और घुटनो के बल उसके कदमो पर झुक गया।

हल्की-सी कपकपी मे लीज़ा के कधे हिल उठे, उसके रक्त-विवर्ण हाथो की उगलियो ने उसके चेहरे को और कसकर दबोच लिया।

"क्या बात है?" लाव्रेत्स्की ने क्षीण स्वर मे पूछा, और उसे

क दबी हुई सिसकी सुनायी दी। उसका दिल ज़ोर से धड़कने लगा।
ह उन आसुओ का मतलब समझता था। "तुम मुझसे प्यार करती
?" उसने दबी आवाज़ मे पूछा और उसके घुटनो को छू लिया।
"उठिये," उसने लीज़ा को कहते सुना, "उठिये, फ्योदोर इवानिच।
हम लोग यह कर क्या रहे है?"

वह उठकर उसके बगल मे बैठ गया। वह अब रो नही रही थी
और अपनी भीगी आखो से उसे बडे ध्यान से देख रही थी।

"मुझे डर लगता है, हम लोग कर क्या रहे है?" उसने दोहराया।

"मैं तुमसे प्यार करता हू," लाव्रेत्स्की ने एक बार फिर बुदबुदाकर कहा, "मैं अपनी सारी जिदगी तुम्हारे ऊपर निछावर कर देने को तैयार हू।"

वह एक बार फिर कापी जैसे किसी ने उसे डक मार दिया हो
और अपनी नज़रे आसमान की ओर उठा दी।

"सब कुछ भगवान के हाथ मे है," वह बोली।

"लेकिन तुम्हे मुझसे प्यार है, लीज़ा? हम सुखी रह सकेगे?"

उसने अपनी नज़रे झुका ली, लाव्रेत्स्की ने धीरे से उसे अपने
पास खीच लिया, और लीज़ा का सिर उसके कधे पर धस गया।
उसने अपना सिर झुकाया और उसके पीले होटो को अपने होटो से
छू लिया।

आधे घटे बाद लाव्रेत्स्की बाग के फाटक के पास खडा था। उसने
देखा कि उसमे ताला बद है, इसलिए उसे मजबूरन चारदीवारी फादनी
पडी। वह शहर लौट गया और सोती हुई सडको पर चलने लगा।
उसकी आत्मा अपार अप्रत्याशित सुख की भावना मे भर उठी थी,
उसकी सारी शकाए दूर हो गयी थी। "दूर हो जाओ, बीते ज़माने की
धुधली परछाइयो!" उसने सोचा। "वह मुझसे प्यार करती है, वह मेरी
होकर रहेगी।" सहसा उसे ऐसा लगा कि उसके सिर के ऊपर का
सारा वातावरण विजयोल्लास मे भरी अलौकिक ध्वनि के विस्फोट
मे भर उठा है; वह ठहर गया; स्वर-लहरी ने ऊचे उठते-उठते
अधिक उत्कृष्ट रूप धारण कर लिया, और सगीत की प्रबल बाढ़

के रूप में आगे बढ़ती गयी – और ऐसा लगने लगा कि उसके उल्लास की सारी व्यापकता उस स्पंदनशील संगीत में बोल रही है, गा रही है। उसने अपने चारों ओर नज़र दौड़ायी, ये आवाज़ें एक छोटे-से घर की ऊपरवाली मंज़िल की दो खिड़कियों में तैरती हुई आ रही थीं।

"लेम्म!" लाव्रेत्स्की ने पुकारकर कहा और उस घर की ओर दौड़ा। "लेम्म! लेम्म!" उसने ऊंचे स्वर में दोहराया।

स्वर डूब गये और खिड़की में ड्रेसिंग-गाऊन पहने एक बूढ़े आदमी की आकृति दिखायी दी, सीना खुला हुआ और बाल बिखरे हुए।

"अच्छा!" उसने बड़ी गरिमा से कहा। "तुम हो?"

"क्रिस्टोफ़र फ्योदोरिच, कैसा शानदार संगीत है! भगवान के लिए, मुझे अंदर आ जाने दीजिये।"

एक शब्द भी कहे बिना बूढ़े ने शाही अंदाज़ से अपना हाथ बढ़ाकर सड़क परवाले दरवाज़े की चाभी खिड़की में से नीचे फेंक दी। लाव्रेत्स्की एक साथ कई-कई सीढ़ियां फलांगकर तेज़ी से झपटता हुआ कमरे में आया और लेम्म से लिपटने ही वाला था कि लेम्म ने बड़े रोब से हाथ से कुर्सी की ओर इशारा किया और झटके से रूसी में कहा, "बैठ जाओ और सुनो।" यह कहकर वह खुद पियानो के सामने बैठ गया, बड़े गर्व और कठोरता से चारों ओर देखा और पियानो बजाने लगा। न जाने कबसे लाव्रेत्स्की ने इस तरह की कोई चीज़ नहीं सुनी थी भावावेग से भरी हुई उस कोमल धुन ने पहले ही सुर से उसके मन को अपने वश में कर लिया; वह सारी की सारी जगमगा रही थी, प्रेरणा, उल्लास और सौंदर्य की ज्वाला में पिघली जा रही थी, उसमें उतार-चढ़ाव आ रहे थे; वह हर उस चीज़ के बारे में बता रही थी जो इस धरती पर अनमोल, वर्णन से परे और पवित्र है, उसमें अमिट उदासी का उच्छ्वास था, और वह दम तोड़ती हुई गगन-लोक की ओर चढ़ती जा रही थी। लाव्रेत्स्की उठ पड़ा और हर्षातिरेक से ठिठुरा हुआ खड़ा रहा, उसका चेहरा सफ़ेद पड़ गया था। ऐसा लगता था कि वह संगीत नव-प्राप्त प्रेम के तूफ़ान से अभी तक कांपती हुई उसकी हृदयतंत्री के तारों को छेड़ रहा था; उसमें स्वयं प्रेम का स्पंदन था। "एक बार और," अंतिम सुर के डूबते-डूबते उसने दबी आवाज़ से कहा। बूढ़े ने उसे गिद्ध जैसी पैनी दृष्टि से देखा, अपने सीने को हाथ से थपका, और धीरे-धीरे अपनी भाषा में कहा, "मैं

यह रचना इसलिए कर सका कि मैं महान सगीतकार हू," और यह कहकर उसने वह सराहनीय सगीत-रचना एक बार फिर बजाकर सुनायी। कमरे मे कोई मोमबत्ती नही जल रही थी, आसमान पर चढते हुए चाद की तिरछी किरने खिडकी मे से आ रही थी, कोमल हवा ध्वनि मे भकृत थी, वह छोटा-सा कमरा, जिसमे कोई खास सरो-सामान नही था, एक पवित्र स्थान लग रहा था और रुपहले धुधलके मे बूढे का सिर उदात्त और प्रेरणामय दिखायी दे रहा था। लाव्रेत्स्की ने पास जाकर उसे गले लगा लिया। पहले तो लेम्म पर उसके इस आलिगन की कोई प्रतिक्रिया नही हुई, बल्कि उसने उसे अपनी कुहनी से पीछे ढकेल तक दिया, बडी देर तक वह उसी कठोर और लगभग रूठी हुई मुद्रा से निश्चल बैठा रहा, और उसने सिर्फ दो बार बुदबुदाकर कहा, "अच्छा!" आखिरकार उसके बदले हुए चेहरे पर तनाव कुछ कम हुआ और लाव्रेत्स्की की हार्दिक बधाइयो के जवाब मे पहले तो वह धीरे से मुस्कराया, फिर उसकी आखो से आसू बह चले और वह बच्चो की तरह सुबक-सुबककर रोने लगा।

"कमाल की बात है," वह बोला, "कि तुम ठीक इसी वक्त आये; लेकिन मै जानता हू, मुझे सब मालूम है।"

"आपको सब मालूम है?" लाव्रेत्स्की ने चौककर पूछा।

"तुमने मेरी सगीत-रचना सुनी," लेम्म ने जवाब दिया। "तुम्हे इसका अदाजा नही था कि मुझे सब मालूम है?"

लाव्रेत्स्की को पौ फटने तक नीद नहीं आयी, वह रात-भर अपने पलग पर बैठा रहा। और लीज़ा भी नही सोयी वह प्रार्थना करती रही।

३५

पाठक लाव्रेत्स्की के बचपन और उसके लालन-पालन की परिस्थितियो से परिचित हो चुके है, अब हम लीज़ा की शिक्षा-दीक्षा के बारे मे कुछ शब्द कहेगे। वह दस साल की थी जब उसके पिता का देहात हो गया; लेकिन उन्होने उस पर अपना बहुत समय खर्च नही किया था। कारोबार की चिताओ मे डूबे, हमेशा अपनी दौलत बढाने की योजनाओ मे उलझे, स्वभाव से चिडचिडे, रूखे और अधीर, वह मास्टरो,

गवर्नेसो, कपडो और अपने बच्चो की दूसरी जरूरतो के लिए पै
देने मे कभी कोई आपत्ति नही करते थे, लेकिन "चिल्ल-पो मचा
हुए बच्चो को लाड-प्यार करने" से उन्हे चिढ थी, जैसा कि वह क
करते थे, सच तो यह है कि उनको दुलारने का उनके पास समय
बहुत थोडा होता था – वह काम करते थे, कारोबार की समस्याओ
को निबटाते रहते थे, सोते बहुत कम थे, कभी-कभार ताश खेल ले
थे, और फिर काम मे जुट जाते थे, वह अपनी तुलना दावने क
मशीन मे जुते हुए घोडे से करते थे। "हा, मेरी जिदगी जरूरत
ज्यादा जल्दी खत्म हो गयी," उन्होने अपनी मृत्यु-शय्या पर लेटे-ले
सूखे हुए होठो पर कटु मुस्कराहट लिये हुए कहा था। मार्या दीत्रियेव्न
भी लीजा को उससे कुछ ज्यादा समय नही देती थी जितना कि उनके
पति देते थे, हालाकि उन्होने लाव्रेत्स्की से डीग मारी थी कि उन्होंने
बच्चो को अकेले पाला था; वह उसे पहना-उढाकर बिल्कुल गुडिया
बनाये रहती थी, मिलने आनेवालो के सामने उसका सिर सहलाती
थी और उसके मुह पर उसे बडी होशियार बच्ची और लाडली कहती
थी, और बस; लगातार देखभाल करना उन आलसी महिला के बस
के बाहर था। पिता के जीवनकाल मे लीजा अपनी गवर्नेस पेरिस की
मादाम मोरो नामक एक महिला की देखभाल मे रही, और उनके
मरने के बाद उसे मार्फा तिमोफ़ेयेव्ना की निगरानी मे सौंप दिया गया।
मार्फा तिमोफेयेव्ना से पाठक परिचित ही हैं; मादाम मोरो सूखी
हुई एक छोटी-सी महिला थी जिनके तौर-तरीके छोटी-छोटी चिडियो
जैसे थे और उनका दिमाग भी चिडियो जैसा था। अपनी जवानी मे
उन्होने खूब गुलछर्रे उडाये थे, लेकिन बुढापा निकट आ जाने पर उन्हे
दो ही चीजो का शौक बाकी रह गया था – मिठाई और ताश। पेट
पूरा भरा होने पर जब वह ताश नही खेल रही होती थी या बाते नही
कर रही होती थी तो उनका चेहरा मौत के मुखौटे जैसा हो जाता था
वह मौजूद तो रहती थी – बैठी रहती थी, देखती रहती थी, सास
लेती रहती थी, और फिर भी साफ नजर आता था कि उनके दिमाग
मे कोई भी विचार नही है। आप यह भी नही कह सकते थे कि वह
नेकदिल थी· नेकदिल चिडिया जैसी कोई चीज होती ही नहीं। वजह
चाहे यह रही हो कि उन्होंने अपनी जवानी वाही-तबाही गवा दी थी,
चाहे पेरिस की हवा इसका कारण रही हो जिसमे उन्होने बचपन

' सास ली थी, लेकिन उनमे एक तरह के छिछोरे शक्कीपन क
T जो इन घिसे-पिटे शब्दो मे व्यक्त होता था "Tout ça
es bêtises."* वह व्याकरण की दृष्टि से गलत लेकिन
रिस की बोलचाल की भाषा बोलती थीं, वह गप नही लडाते
ौर उनमे कोई चपलता नही थी—एक गवर्नेस मे कोई इससे
ौर क्या गुण चाह सकता था? उन्होने लीज़ा पर बहुत ही
सर डाला, उनसे ज्यादा गहरा असर तो उस बच्ची पर
गाया अगाफ्या व्लास्येव्ना का था।

इस औरत का जीवन अत्यत रोचक था। वह किसान पर्ि
 पैदा हुई थी, सोलह साल की उम्र मे उसका ब्याह एक कि
े कर दिया गया था, लेकिन वह अपनी दूसरी किसान बहनो से
भिन्न थी। उसका बाप उस जमीन-जायदाद पर बीस साल से का
लगा हुआ था, उसने ढेरो पैसा कमाया था और बेटी को लाड-
मे बहुत बिगाड़ा था। वह बेहद खूबसूरत लडकी थी, मारे इ
की रानी थी, चतुर, हिम्मतवाली और मुह मे ज़बान रखती
उसके मालिक, मार्या द्मीत्रियेव्ना के पिता द्मीत्री पेस्तोव ने, जो
विनम्र आदमी थे, एक बार उसे दावनी के समय देखा, उससे
की, और उसके पीछे दीवाने हो गये। बहुत जल्दी ही वह वि
हो गयी; पेस्तोव हालाकि विवाहित आदमी थे लेकिन वह उसे अ
घर ले आये और उसे भद्र महिलाओ जैसे कपडो मे सजा दिया। अ
फ्या ने जल्दी ही अपने को इस नयी भूमिका के अनुसार ऐसा द
लिया मानो उसने कभी कोई और जीवन बिताया ही न हो। उस
रग निखरता गया और शरीर गदराता गया, मलमल की आस्ती
के नीचे उसकी बाहें ऐसी "मैदे की लोई जैसी गोरी" हो गयी
किसी सौदागर की पत्नी की हो; उसका सामोवार कभी मेज़ पर
नही हटाया जाता था; उसे रेशम और मखमल के अलावा कुछ
और पहनना नापसद था और वह परो के बिस्तर पर सोती थी। ऐ
आराम की यह जिदगी पाच साल तक चलती रही और उसके ब
द्मीत्री पेस्तोव की मृत्यु हो गयी, उनकी विधवा को, जो रहमदि
मालकिन थी, अपने स्वर्गवासी पति की स्मृति का ध्यान रखते हु

* यह सब बकवास है। (फ्रासीसी)

अपनी मौत के बाद [illegible] का व्यवहार करना अच्छा नहीं लगा
दुर्भाग्य और भी कि अगाफ्या ने दूसरा [illegible] [illegible] हुई [illegible]
थी। लेकिन उन्होंने उसकी शादी एक ग्वाले से करके उसे [illegible]
गाँवों के [illegible] से [illegible] दिया। तीन साल बीत गये। गर्मियों में
एक दिन मालकिन अपनी मवेशियों का बाड़ा देखने गयी। अगाफ्या
ने कुछ ऐसी [illegible] दही [illegible] खिलायी और वह देखने में
[illegible] साफ-सुथरी प्रसन्न और संतुष्ट दिखायी दे रही थी कि उसकी
मालकिन ने उसे माफ कर दिया और उसे घर में आने की इजाजत
दे दी। छः महीने के अंदर ही उन्हें उससे इतना गहरा लगाव हो गया
कि उन्होंने सारे गृहस्थी का प्रबंध उसे सौंप दिया। अगाफ्या एक बार
फिर पनप उठी। उसका शरीर भर उठा और रंग निखर आया,
उसकी मालकिन को उस पर पूरा भरोसा था। इस तरह पांच साल
और बीत गये। उसके बाद अगाफ्या एक बार फिर दुर्भाग्य ने घेर
लिया। उसका पति, जिसे उसने नौकरी देकर खिदमतगार बना दिया
था, शराब पीने लगा, घर में अक्सर गायब रहने लगा और अंत
में उसने अपनी मालकिन के चाँदी के छः चम्मच चुराकर कुछ समय
के लिए अपनी बीवी के सन्दूक में छिपा दिये। बात खुल गयी। वह फिर
ग्वाला बना दिया गया और अगाफ्या अपने ऊँचे पद से नीचे आ गयी,
उसे घर से तो नहीं निकाला गया लेकिन उसका दर्जा घटाकर सीने-
पिरोने का काम दे दिया गया, अब उसे सिर पर लैस की टोपी पहनने
के बजाय रूमाल बाँधना पड़ता था। सबको यह देखकर बड़ा आश्चर्य
हुआ कि अगाफ्या ने चुपचाप इस तूफान के आगे सिर झुका दिया।
उस वक्त उसकी उम्र तीस से ऊपर थी, उसके सारे बच्चे मर गये
थे और उसका घरवाला भी बहुत दिन जिंदा नहीं रहा। वक्त आ गया
था कि उसके होश ठिकाने आ जाते और उसके होश ठिकाने आ भी
गये। वह बहुत चुप रहने लगी और धर्मपरायण हो गयी, वह आधी
रात की हर प्रार्थना में और हर सामूहिक वंदना में जाती थी, उसने
अपने सारे अच्छे-अच्छे कपड़े दे डाले थे। उसने चुपचाप, दबकर,
शांत भाव से, किसी से झगड़ा किये बिना और सब कुछ बर्दाश्त
करते हुए पंद्रह साल काट दिये। अगर उसका अपमान किया जाता तो
वह चुपचाप सिर झुका लेती और उपदेश का उपकार मानती। उसकी
मालकिन ने तो उसे बहुत पहले ही माफ कर दिया था, और वह उसे

सिर पहले की तरह ही मानने लगी थी और उन्होंने उसे अपनी टोप
तक उपहार में दे दी थी, लेकिन अगाफ्या ने सिर पर रूमाल बाधन
फिर भी नही छोड़ा और वह हमेशा काले कपड़े पहनती रही; औ
अपनी मालकिन के मरने के बाद वह और भी खामोश और विनम्र
हो गयी। रूसी आदमी में डर और प्यार बड़ी जल्दी जागता है, लेकिन
उसका सम्मान कोई आसानी से प्राप्त नही कर सकता यह सम्मान न तो
बहुत जल्दी दिया जाता है और न ही बिना सोचे-समझे हर आदमी
को। अगाफ्या के लिए घर के सभी लोगो के दिल मे बड़ी इज्जत थी
उसकी पिछली गल्तियो की कभी कोई चर्चा भी नही करता था, जैसे
वे उसके पुराने मालिक के साथ ही दफन कर दी गयी हो।

जब कलीतिन ने मार्या द्मीत्रियेव्ना से शादी कर ली तो उनका
इरादा गृहस्थी की जिम्मेदारी अगाफ्या को सौप देने का था, लेकिन
"मालिक के डर से" वह किसी तरह राजी न हुई, जब वह उससे
ऊचे स्वर मे बोले तो वह बड़ी विनम्रता से सिर झुकाये कमरे के
बाहर चली गयी। लोगो को आकने के मामले मे कलीतिन बेवकूफ
नही थे, उन्होंने अगाफ्या को भी आका और उसे भूले नही। जब
वह शहर चले गये तो उन्होंने खुद उसकी रजामदी से लीजा की देख-
भाल की जिम्मेदारी उसे सौप दी, जो उस समय पाच वर्ष
की होनेवाली थी।

शुरू में तो लीजा को अपनी नयी आया की कठोर और गभीर
मुद्रा से डर लगा, लेकिन शीघ्र ही वह उसकी आदी हो गयी और
उससे बहुत प्यार करने लगी। वह स्वय बहुत गभीर स्वभाव की बच्ची
थी, उसका नाक-नक्शा कुछ-कुछ अपने बाप की तरह तीखा था,
लेकिन उसकी आखे उनकी जैसी नही थी, उनमे कोमल एकाग्रता और
सहानुभूति का ऐसा भाव था जैसा बच्चो मे विरला ही पाया जाता है।
उसे गुड़िया का शौक नही था, वह न बहुत जोर से हसती थी और
न बहुत देर तक, और हमेशा शात मुद्रा धारण किये रहती थी।
[illegible] उसकी प्रकृति चिंतनशील रहने की नही थी, लेकिन उसके
पास चिंतन करने के लिए सामग्री का कभी अभाव नही रहता था
कुछ देर चुप रहने के बाद वह आम तौर पर अपने से बड़े किसी आदमी
की ओर [illegible] मुड़ बैठती थी जिससे पता चलता था कि उसका
[illegible] दिमाग हर वक्त रहनेवाली किसी नयी छाप के बारे मे सोच रहा

था। उसने तुतलाना बहुत जल्दी छोड दिया था और तीन ही वर्ष की आयु मे बिल्कुल साफ बोलने लगी थी। अपने बाप से वह डरती थी, अपनी मा के प्रति उसकी भावनाएं कुछ अनिश्चित-सी थी वह न तो उनसे डरती थी और न ही उनके प्रति कोई स्नेह प्रकट करती थी, यो तो प्रकट रूप मे वह अगाफ्या के प्रति भी कोई स्नेह प्रदर्शित नही करती थी, हालाकि वही अकेली ऐसी थी जिससे वह प्यार करती थी। अगाफ्या को उसने अलग करके देखना असभव था। दोनो जब साथ होती थी तो एक विचित्र दृश्य प्रस्तुत करती थी। अगाफ्या ऊपर से नीचे तक काले कपड़े पहने और सिर पर एक काला रूमाल बाधे, तनकर सीधी बैठी हुई मोजा बुनती होती थी, उसका पीला चेहरा मोम जैसा निस्तेज होने के बावजूद अब भी सुदर और भावपूर्ण लगता था; उसके पावों के पास एक छोटी-सी आराम-कुर्सी पर बैठी लीजा भी उसी तरह अपना नन्हा-मुन्ना कामकाज करती रहती थी या अपनी निर्मल आखे ऊपर उठाये गभीर भाव से वह सुनती रहती जो अगाफ्या उसे बता रही होती थी; और अगाफ्या उसे परियो की कहानिया नही सुनाती थी, वह धीमे और समतल स्वर मे उसे पवित्र मरियम के जीवन के बारे मे, साधु-सतो, शहीदो और पुण्यात्मा स्त्री-पुरुषो के जीवन के बारे मे बताती थी, वह उसे बताती थी कि किस तरह सत लोग निर्जन स्थानो मे रहते थे, किस तरह वे मुक्ति खोजते थे, किस तरह वे भूख-प्यास और मुसीबते झेलते थे और राजाओ से नही डरते थे बल्कि ईसा मसीह के प्रति श्रद्धा रखते थे, किस तरह आकाश की चिड़िया उन्हे खाना लाकर देती थी और जगल के पशु उनकी आज्ञा का पालन करते थे, जहा उनका खून बहाया जाता था वहा किस तरह फूल उग आते थे। "सजावट के फूल?" एक बार लीजा ने पूछा था—उसे फूलो का बहुत शौक था। अगाफ्या लीजा से बड़ी विनम्रता और गभीरता से बात करती थी मानो उसे इस बात का आभास हो कि इतने उत्कृष्ट और पवित्र शब्द बोलने का उसे अधिकार नहीं था। लीजा मत्रमुग्ध होकर सुनती रहती—और एक सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ ईश्वर की छवि सुखद शक्ति के साथ उसकी आत्मा मे चुपके-चुपके पैठ गयी और उसने उसे शुद्ध और श्रद्धामय भय से भर दिया, जबकि ईसा ने उसके लिए एक निकट घनिष्ठ अस्तित्व का रूप धारण कर

लिया, किसी ऐसी चीज़ का जो उसकी जैसी ही हो अगाफ्या ने उसे प्रार्थना करना भी सिखाया। कभी-कभी वह लीज़ा को सुबह तड़के जगा देती, जल्दी-जल्दी उसे कपड़े पहनाती और भुरके में उसे साथ लेकर प्रातःकालीन प्रार्थना के लिए चल देती लीज़ा दबे पांव उसके पीछे-पीछे चलती रहती और पहर की सर्दी और धुंधलका, ठंडा और खाली गिरजाघर इन आकस्मिक अनुपस्थितियों की गोपनीयता, भुरके में वापस आकर बिस्तर में लेट जाना – जो कुछ वर्जित था, विचित्र था तथा पवित्र था उस सबका यह अद्भुत मिश्रण उस बच्ची को उसकी आत्मा की गहराइयों तक रोमांचित कर देता था। अगाफ्या कभी किसी को डांटती-डपटती नहीं थी और वह लीज़ा को उसके चिड़चिड़ेपन के लिए झिड़कती भी नहीं थी। जब वह नाराज़ होती थी तो हमेशा चुप हो जाती थी और लीज़ा जानती थी कि उस चुप्पी का क्या मतलब होता था बच्चों की तेज़ी से काम करनेवाली समझदारी के बल पर वह यह भी समझ लेती थी कि कब अगाफ्या दूसरों से नाराज़ रहती थी – मार्या द्मीत्रियेव्ना से या स्वयं कलीतिन से। अगाफ्या ने तीन साल से ऊपर लीज़ा की देखभाल की जिसके बाद उसकी ज़िम्मेदारी मादाम मोरो ने संभाल ली लेकिन नीरस तौर-तरीक़ोंवाली और बार-बार कहकर "Tout ça c'est des bêtises" कहनेवाली वह चंचल फ्रांसीसी औरत लीज़ा का वह स्नेह न पा सकी जो उसकी प्यारी आया को प्राप्त था बीज जड़ पकड़ चुके थे। इसके अलावा, अगाफ्या हालांकि अब लीज़ा की देखभाल नहीं करती थी, फिर भी वह थी तो घर में ही और अक्सर अपनी पाली हुई बच्ची से मिलती रहती थी, जो उसके प्रति अब भी पहले जैसी ही निष्ठा रखती थी।

लेकिन जब मार्फ़ा तिमोफ़ेयेव्ना कलीतिन के यहां रहने आयी तो उससे अगाफ्या की नहीं बनी। उस असहनशील और अपनी जैसी करनेवाली वृद्ध महिला को इस औरत की, जो पहले किसान थी, गंभीर और प्रतिष्ठित मुद्रा पसंद नहीं आयी। अगाफ्या तीर्थयात्रा पर चली गयी और फिर लौटकर नहीं आयी। इस तरह की अफवाहें भी सुनी गयी थीं कि वह सन्यास लेकर किसी मठ में रहने लगी थी। लेकिन लीज़ा के हृदय पर उसने अपनी जो छाप डाली थी वह अमिट थी। वह गिरजाघर में सामूहिक प्रार्थना के लिए जाती रही, जिसकी

प्रतीक्षा वह त्योहार के दिन की तरह करती थी, वह आनंद-विभोर होकर प्रार्थना करती थी, एक प्रकार के सयत तथा सकुचाये हुए उत्साह के साथ जिस पर मार्फा तीमोफ़ेयेव्ना को मन ही मन बड़ा आश्चर्य होता था। मार्फा तिमोफ़ेयेव्ना ने हालांकि लीज़ा की स्वतत्रता पर कभी किसी प्रकार का बधन नही लगाया लेकिन उन्होंने भी उसके उत्साह को थोडा मद करने और उसे आवश्यकता से अधिक साष्टाग दडवत करने से रोकने की कोशिश की – वह इसे भले घर की लड़कियों के लिए शोभनीय नही समझती थीं। लीज़ा पढने मे अच्छी थी, मतलब यह कि वह जी लगाकर पढती थी; उसे किन्ही विशेष प्रतिभाओं पर आधारित योग्यताओं का या अत्यत प्रखर बुद्धि का वरदान प्राप्त नही था, वह केवल मेहनत करके सीख लेती थी। वह पियानो अच्छा बजा लेती थी, लेकिन यह तो लेम्म ही जानता था कि इसके लिए उसे कितना मूल्य चुकाना पडता था। वह बहुत ज्यादा पढती नही थी; उसके "अपने कोई शब्द नही" थे, लेकिन उसके अपने विचार अवश्य थे और वह अपने ढर्रे पर चलती थी। वह बिल्कुल अपने बाप जैसी थी: उन्होंने भी कभी किसी से नही पूछा था कि उन्हे क्या करना चाहिये। और इस तरह वह बढती रही, चुपचाप, बिना किसी उतावली के, यहा तक कि वह उन्नीस साल की हो गयी। वह बहुत सुदर थी, लेकिन उसे इसका आभास नही था। उसकी प्रत्येक गति मे एक सहज, कुछ हद तक अनगढ लालित्य कूट-कूटकर भरा हुआ था, उसकी आवाज मे अछूते यौवन की चादी जैसी खनक थी, तनिक-सी भी हर्षप्रद सवेदना मे उसके होंठों पर एक मोहक मुस्कान खेलने लगती थी, और उसकी आखे एक गहरी और हौले-हौले महलाती हुई रोशनी से चमक उठती थी। वह कर्तव्य-निष्ठा की तीव्र भावना मे ओत-प्रोत थी, किसी का भी अपमान करने से डरती थी, उसका हृदय दयामय और कोमल था, वह किसी व्यक्ति विशेष से प्यार न करते हुए भी सभी से प्यार करती थी; केवल ईश्वर से वह अपार श्रद्धा के साथ, भीरुता के साथ, कोमलता के साथ प्यार करती थी। लाव्रेत्स्की पहला आदमी था जिसने उसके जीवन के इस समतल प्रवाह को आलोडित कर दिया था।

तो ऐसी थी लीज़ा।

अगले दिन सबेरे ग्यारह बजे के कुछ ही बाद लाव्रेत्स्की कलीतिन-परिवार के यहा गया। रास्ते मे उसकी मुठभेड़ पाशिन से हुई, जो अपना घोडा सरपट दौडाता हुआ उसके पास से निकल गया और उसने अपनी हैट भवो तक नीचे भुका ली। कलीतिन-परिवार के यहा उसे अदर नही आने दिया गया – उन लोगो से परिचय होने के बाद इस प्रकार का यह पहला अनुभव था। मार्या द्मीत्रियेव्ना "आराम फरमा रही थी" – खिदमतगार ने आकर बताया, "मालकिन" के सिर मे दर्द था। मार्फा तिमोफेयेव्ना और येलिज़ावेता मिखाइलोव्ना घर पर नही थी। लाव्रेत्स्की अपने मन मे यह धुधली-सी उम्मीद लिये बाग मे टहलता रहा कि शायद लीज़ा से भेट हो जाये, लेकिन वहा उसे कोई न मिला। दो घटे बाद आने पर भी उसे खिदमतगार ने वही बात बतायी और उसे तिरछी नज़रो से देखा। लाव्रेत्स्की ने सोचा कि एक ही दिन मे तीसरी बार आना उचित न होगा, इसलिए उसने वसील्येव्स्कोये जाने का फैसला किया जहा उसे कुछ काम निबटाना था। रास्ते मे वह योजनाए बनाता रहा, जिनमे से हर एक दूसरी से ज्यादा समझदारी की थी, लेकिन जब वह अपनी बुआ के छोटे-से गाव मे पहुचा तो उसका सारा उत्साह ठडा पडने लगा, उसने आतोन से बाते करना शुरू किया, सयोगवश वह बूढा भी उदास यादो से भरा हुआ था। उसने लाव्रेत्स्की को बताया कि किस तरह ग्लाफीरा पेत्रोव्ना ने मरने से पहले अपना हाथ खुद अपने दातो से काट लिया था – और फिर कुछ देर बाद उसने आह भरकर कहा था "हर आदमी, मालिक, कभी न कभी अपने आपको खा जाता है।" जब लाव्रेत्स्की शहर लौटने लगा तो बहुत देर हो चुकी थी। कल के सगीत की धुन उसके कानो मे गूज रही थी और लीज़ा की आकृति अपनी भरपूर कोमल स्पष्टता के साथ उसकी आखो के सामने उभर रही थी, यह सोच-सोचकर वह फूला नही समा रहा था कि वह उससे प्यार करती थी, और वह शातचित्त होकर और सुख की भावना के साथ घोडागाडी पर शहर मे अपने घर पहुचा।

हॉल मे कदम रखते ही जिस चीज़ से उसका पाला पड़ा वह थी चौली की सुगध जो उसे सख्त नापसद थी, कुछ ऊचे-ऊचे सफरी

गट्ठर और सूटकेस भी रखे हुए थे। अपने निजी नौकर का चेहरा भी, जो भागा-भागा उसका स्वागत करने आया था, उसे कुछ अजीब-सा लगा। उसके मस्तिष्क पर जो प्रभाव अंकित हुए थे उनका विश्लेषण करने के लिए रुके बिना उसने बैठके की चौखट पार की।.. उससे मिलने के लिए सोफ़े पर से काली रेशमी झालरदार पोशाक पहने एक औरत उठी वह बैटिस्ट का रूमाल अपने चेहरे की ओर उठाकर कुछ कदम आगे बढ़ी उसने बेहद सजे-संवरे बालोंवाला अपना सुवासित सिर झुकाया – और उसके कदमों पर गिर पड़ी। तब जाकर लाव्रेत्स्की ने उसे पहचाना वह औरत उसकी बीवी थी।

उसने दम साध लिया। वह दीवार के सहारे टिक गया।

"थियोडोर, मुझे दुतकारो नहीं!" उसने फ़्रांसीसी में कहा, और उसकी आवाज़ तेज़ छुरी की तरह उसके हृदय को चीरती चली गयी।

वह शून्य भाव से आंखें फाड़े उसे देखता रहा, फिर भी एक क्षण के लिए उसे यह आभास अवश्य हुआ कि वह पहले से ज़्यादा गोरी और कुछ मोटी हो गयी थी।

"थियोडोर!" उसने फिर कहा वह रह-रहकर अपनी आंखें ऊपर उठाती और गुलाबी पालिश किये हुए नाखूनोंवाले अपने सुंदर हाथों को बड़ी सावधानी से मलती। "थियोडोर, मैंने तुम्हारे साथ अन्याय किया है, घोर अन्याय किया है – नहीं, मैं दुष्ट औरत हूं, लेकिन मेरी बात सुन लो, पछतावे से मेरा सीना छलनी हो गया है, मैं खुद अपने लिए एक बोझ बन गयी हूं, अब अपनी यह हालत मुझसे बर्दाश्त नहीं होती, कितनी बार मैं तुमसे फरियाद करने को हुई, लेकिन डरती थी कि तुम मुझ पर नाराज़ होगे; मैंने अपनी पिछली जिंदगी से नाता तोड़ने का फ़ैसला कर लिया है.. puis, j'ai été si malade, मैं बहुत बीमार थी," उसने अपने माथे और गाल पर हाथ फेरते हुए इतना और कहा, "मैंने अपनी मौत की अफ़वाहों का फ़ायदा उठाकर सब कुछ छोड़ देने की ठान ली; दिन-रात पल-भर भी आराम किये बिना मैं भागी हुई यहां आयी, बहुत संकोच करने के बाद मैं तुम्हारे सामने आने का साहस जुटा पायी, मेरी किस्मत का फ़ैसला करनेवाले – paraître devant vous, mon juge; लेकिन यह याद करके कि तुम हमेशा कितने दयावान थे मैंने अपने हृदय के कंपनों को परास्त कर दिया; मैंने

मास्को में तुम्हारा पता मालूम किया। यकीन जानो," धीरे-धीरे फर्श पर से उठकर आराम-कुर्सी की कगार पर बैठते हुए वह कहती रही, "मर जाने का ख्याल भी कई बार मेरे दिमाग में आया, और मैं वह भयानक कदम उठाने से भी नही झिझकूगी – उफ, यह ज़िंदगी अब मेरे लिए बस एक असह्य बोझ बनकर रह गयी है! – लेकिन अपनी बेटी का, अपनी नन्ही आदा का ख्याल हर बार मेरा हाथ रोक लेता था; वह यही है, दूसरे कमरे मे सो रही है, बेचारी बच्ची! थक गयी है – तुम उसे देखना, बहरहाल वह तो तुम्हारे सामने निर्दोष है, उफ, मैं कितनी दुखी हू, कितनी दुखी!" मादाम लाव्रेत्स्की ने रो-रोकर कहा और उनके आसू बह चले।

आखिरकार लाव्रेत्स्की को होश आया, दीवार से हटकर वह दरवाज़े की ओर बढ़ा।

"तुम जा रहे हो?" उसकी बीवी ने घोर निराशा मे डूबे हुए स्वर में कहा। "उफ, कैसे निर्दयी हो! एक शब्द भी नही कहा धिक्कारा तक नही यह तिरस्कार मेरे लिए जानलेवा है भयानक है!"

लाव्रेत्स्की रुक गया।

"तुम मुझसे क्या कहलाना चाहती हो?" उसने भावशून्य स्वर मे कहा।

"कुछ नही, कुछ भी नही," वह जल्दी से बोल पड़ी मैं जानती हू कि मेरा किसी चीज़ पर हक नही रह गया है. मैं तुम्हें यकीन दिलाती हू, ऐसा नही है कि मेरे होश-हवास मेरा साथ छोड बैठे हो; मुझे कोई उम्मीद नही है, यह उम्मीद करने की तो मैं हिम्मत भी नही कर सकती कि तुम मुझे माफ कर दोगे. मैं तुमसे बस यह प्रार्थना करने का साहस करती हू कि तुम मुझे हुक्म दो कि मैं क्या करू, मैं कहा रहू? तुम जो भी हुक्म दोगे, वे चाहे कुछ भी हो, मैं दासी की तरह उनका पालन करूगी।

"मुझे तुमको कोई हुक्म नही देना है," लाव्रेत्स्की ने उसी निर्जीव स्वर में जवाब दिया, "तुम जानती हो कि हमारे बीच जो भी सबध था वह खत्म हो चुका है . अब तो पहले से भी ज्यादा। तुम्हारा जहा जी चाहे रहो, और अगर तुम्हें खर्चे की तगी है '

"उफ, ऐसे भयानक शब्द न कहो," वर्वारा पाव्लोव्ना बोल उठी

ही बोल पडी, "मुझे माफ कर दो, कम से कम... कम से कम इस बच्ची की खातिर." और यह कहती हुई वह अचानक भागकर दूसरे कमरे मे गयी और क्षण-भर मे अपनी गोद मे बहुत अच्छे कपड़े पहने हुए एक बच्ची को लिये वापस आयी। उसके सुदर गुलाबी भोले मुखडे पर, उसकी बडी-बडी काली उनीदी आखो पर सुनहरे बालो की लबी-लबी लटे बिखरी थी; वह मुस्करा दी और अपनी मा की गर्दन पर अपना छोटा-सा गदबदा हाथ रखकर रोशनी से चकाचौंध होकर पलके झपकाने लगी।

"Ada, vois, c'est ton pére,"* वर्वारा पाव्लोव्ना ने बच्ची की आखो पर से लटे हटाते हुए और उसे चूमते हुए कहा, "prie le avec moi."**

"C'est ça, papa,"*** बच्ची ने तुतलाकर कहा।

"Oui, mon enfant, n'est ce pas, que tu l' aimes?"****

यह लाव्रेत्स्की की सहनशक्ति के बाहर था।

"किस नाटक मे बिल्कुल ऐसा ही सीन था?" वह बुदबुदाता हुआ बाहर चला गया।

वर्वारा पाव्लोव्ना कुछ क्षण तक जडवत् खडी रही, फिर उसने अपने कधो को हल्का-सा झटका दिया, बच्ची को दूसरे कमरे मे ले गयी, और कपडे उतारकर उसे सुला दिया। वह एक किताब लेकर लैम्प के पास बैठ गयी, कोई घटे-भर तक राह देखती रही और फिर खुद सोने के लिए लेट गयी।

"Eh bien, madame?"***** जब वह अपनी कार्सेट की डोरी खोल रही थी तो उसकी नौकरानी ने पूछा, जो एक फ्रांसीसी लडकी थी जिसे वह अपने साथ पेरिस से लायी थी।

"Eh bien, Justine,"****** उसने जवाब दिया, "पहले से कुछ ज्यादा हो गये है, लेकिन मै समझती हू कि दयालु अब भी

---

* "आदा, यह तुम्हारे बाप है।" (फ्रांसीसी)

** "मेरे साथ इनके लिए प्रार्थना करो।" (फ्रांसीसी)

*** "हां यह मेरे बाप है।" (फ्रांसीसी)

**** "हा मेरी बच्ची, तुम तो इन्हे प्यार करती हो?" (फ्रांसीसी)

***** "ठीक है मादाम?" (फ्रांसीसी)

****** "ठीक है जस्टिन।" (फ्रांसीसी)

पहले जैसे ही है। मुझे रातवाले दस्ताने दे दो, और कल के लिए मेरा ऊचे कालरवाला सुरमई गाऊन निकालकर रख दो; और आदा के लिए मटन-चाप न भूलना।. मै दावे से कह सकती हू कि यहा उनका मिलना मुहाल है, लेकिन कोशिश तो करनी ही चाहिये।"

"A la guerre, comme à la guerre,"* जस्टीन ने जवाब दिया और मोमबत्ती बुझा दी।

३७

लाव्रेत्स्की दो घटे से ज्यादा शहर की सडको पर भटकता रहा। उसे उस रात की याद आयी जो उसने पेरिस के बाहरी इलाके मे बितायी थी। उसका दिल दर्द के मारे टुकडे-टुकडे हुआ जा रहा था, और उसका सिर, जो सुन्न और निश्चेत हो गया था, उन्ही अधकारमय, निरर्थक, भीषण विचारो से चकरा रहा था। "वह जिदा है, वह लौट आयी है," वह बार-बार बदहवास होकर लगातार अस्फुट स्वर मे कहता रहा। उसने महसूस किया कि लीज़ा उससे छिन गयी थी। उसका गुस्सा भडक उठा, यह घातक प्रहार उस पर अचानक वज्रपात की तरह हुआ था। उसने ऐसी नादानी कैसे की कि उस बकवास लेख पर, उस फटीचर चीथडे अखबार पर विश्वास कर लिया? "चलो, मान लो कि मैने उस पर विश्वास नही किया था," उसने सोचा, "उससे फर्क क्या पडता? मुझे कभी पता न चलता कि लीज़ा मुझसे प्यार करती है, उसे भी पता न चलता।" उसके लिए अपनी बीवी की मूरत, उसकी आवाज़ और उसकी आखो से पीछा छुडाना नामुमकिन हो रहा था और वह अपने आपको कोस रहा था, सारी दुनिया को कोस रहा था।

थकन और पीडा से चूर होकर भोर पहर से कुछ पहले वह लेम्म के यहा पहुचा। बड़ी देर तक तो किसी ने उसकी दस्तक का जवाब नहीं दिया; आखिरकार खिड़की मे बूढे का सिर रात को लगाने की टोपी पहने दिखायी दिया; वह बहुत चिडचिडा और सूखा-सिकुडा हुआ लग रहा था, उस अनुप्राणित और

---

* लड़ाई तो हमेशा लड़ाई है। (फ्रासीसी)

प्रभावशाली आकृति से सर्वथा भिन्न जिसने अभी चौबीस ही घंटे पहले अपनी उत्कृष्ट कलात्मकता के शिखर से लाव्रेत्स्की का राजसी तज से सर्वेक्षण किया था।

"क्या बात है?" लेम्म ने पूछा। "मैं रोज तुम्हारे लिए नही बजा सकता, मैंने दवा पी रखी है।"

लाव्रेत्स्की का चेहरा बहुत विचित्र लगा होगा, क्योकि बूढे ने अपनी आखो पर हाथो का छज्जा बनाकर इतनी रात गये आनेवाले को बडे ध्यान से देखा और दरवाजा खोल दिया।

लाव्रेत्स्की कमरे मे आया और एक कुर्सी पर धमकर बैठ गया; बूढा अपना भडकीले रग का घिसा हुआ ड्रेसिंग-गाऊन लपेटता, कापता हुआ और अपने होंट चबाता हुआ उसके सामने खडा था।

"मेरी बीवी आ गयी है," लाव्रेत्स्की बोला; उसने अपना सिर उठाया और अचानक हस पडा।

लेम्म हक्का-बक्का रह गया, वह मुस्कराया तक नही; उसने बस अपना गाऊन और कसकर लपेट लिया।

"जाहिर है, आपको नही मालूम होगा," लाव्रेत्स्की कहता रहा, "मैंने समझा था मैंने एक अखबार मे पढा था कि वह मर गयी।"

"ओ-ओह, तुम्हे यह पढे अभी बहुत दिन नही हुए न?" लेम्म ने पूछा।

"नही, बहुत दिन नही हुए।"

"ओ-ओह, बूढे ने अपनी भवे ऊपर उठाकर फिर कहा। "और अब वह यहा आ गयी है?"

"हा। वह मेरे घर पर है; मै मैं बडा अभागा हू।"

वह कटुता से मुस्कराया।

"तुम अभागे आदमी हो, " लेम्म ने धीरे-धीरे दोहराया।

"क्रिस्टोफर फ्योदोरिच," लाव्रेत्स्की ने कहना शुरू किया, "क्या आप मेरी एक चिट्ठी पहुचा देंगे?"

"हू। जान सकता हू किसे?"

"येलिज़ावे "

"ओह, हा, हा, मैं समझा। अच्छी बात है, पहुचा दूगा। कब पहुचानी है?"

"कल, जल्दी से जल्दी।"

"हू। मैं अपनी खाना पकानेवाली कैथरीन को भेज सकता हू। नही, मैं खुद ही चला जाऊगा।"

"और आप मुझे जवाब भी ला देगे?"

"हा, ला दूगा।"

लेम्म ने आह भरी।

"हा, मेरे बदनसीब नौजवान दोस्त, तुम सचमुच बदनसीब नौजवान हो।"

लाव्रेत्स्की ने लीजा के नाम कुछ शब्द लिखे, उसे अपनी बीवी के आने के बारे मे बताया और उससे मिलने की इजाजत मागी – फिर वह सकरे-से सोफे पर ढेर हो गया और उसने अपना मुह दीवार की ओर कर लिया, बूढा अपने बिस्तर पर लेट गया, बेचैन होकर करवटे बदलता रहा और खासता रहा, और घूट-घूट करके अपनी दवा पीता रहा।

सुबह हुई और दोनो उठ पडे। उन्होने एक-दूसरे को अजीब नजरो से देखा। उस क्षण लाव्रेत्स्की का जी चाहा कि आत्महत्या कर ले। खाना पकानेवाली कैथरीन उनके लिए बहुत बुरी कॉफी लेकर आयी। घडी ने आठ बजाये। लेम्म ने अपनी हैट पहनी और यह कहकर निकल पडा कि वैसे तो वह कलीतिन-परिवार के यहा दस बजे सगीत सिखाने जाता था, लेकिन वह कोई अच्छा-सा बहाना गढ लेगा। लाव्रेत्स्की फिर छोटे सोफे पर लेट गया और उसकी आत्मा की गहराइयो मे क्रूर उन्माद की नयी हिलोरे उठने लगी। वह सोचने लगा कि किस तरह उसकी बीवी ने उसे घर से निकाल दिया था, वह लीजा की स्थिति की कल्पना करने लगा उसने अपनी आखे मूद ली और दोनो हाथो की उगलिया सिर के पीछे फसा ली। आखिरकार लेम्म ने वापस आकर उसे कागज का एक टुकडा दिया जिस पर लीजा ने पेंसिल से लिखा था "आज हम नही मिल सकेगे, शायद कल शाम को। विदा।" लाव्रेत्स्की ने भावशून्यता और अन्यमनस्कता से लेम्म को धन्यवाद दिया और घर चला गया।

उसने देखा कि उसकी बीवी नाश्ता कर रही थी, आदा, जिसका सिर बालो के छोटे-छोटे छल्लो मे ढका हुआ था, नीले रिबनोवाली छोटी-सी सफेद फ्राक पहने बैठी मटन-चाप खा रही थी। लाव्रेत्स्की के अन्दर आते ही वर्वारा पाव्लोव्ना फौरन उठ खडी हुई और बडी विनम्रता

से उससे मिलने के लिए आगे बढ़ी। लाव्रेत्स्की उसे अपने साथ पढ़ने के कमरे में ले गया, अंदर से दरवाज़ा बंद कर लिया और कमरे में टहलने लगा, वह विनयपूर्वक हाथ बांधे बैठी रही और उसकी हर गतिविधि को ऐसी आंखों से देखती रही जो अभी तक खूबसूरत थीं, हालांकि उन्हें थोडा-बहुत बनाया-सवारा गया था।

काफी देर तक लाव्रेत्स्की अपने आपको बोलने के लिए तत्पर न कर सका, उसने महसूस किया कि उसे अपने आप पर कोई क़ाबू नहीं था, उसे साफ दिखायी दे रहा था कि वर्वारा पाव्लोव्ना को उससे तनिक भी डर नहीं लग रहा था और वह सिर्फ़ ऐसा जता रही थी कि किसी भी क्षण मूर्च्छित होकर गिर पड़ेगी।

"सुनिये, मादाम," आखिरकार उसने गहरी-गहरी सांसें लेकर और अपने दांत भींचकर कहना शुरू किया, "एक-दूसरे को धोखा देने की कोई जरूरत नहीं है, मुझे आपके पछतावे पर ज़रा भी यकीन नहीं है; अगर वह सच्चा भी होता तो भी मेरे लिए आपके पास वापस जाना, आपके साथ रहना नामुमकिन था।"

वर्वारा पाव्लोव्ना होंट भींचे और आंखें सिकोड़े बैठी रही।

"यह नफरत है," वह सोच रही थी, "खेल खत्म हो चुका है! मैं अब उसकी नज़रों में औरत भी नहीं रही।"

"नामुमकिन," लाव्रेत्स्की ने कोट के बटन ऊपर तक बंद करते हुए दोहराया। "मालूम नहीं आप यहां आयी किसलिए; शायद पैसे खत्म हो गये होंगे।"

"उफ! तुम मेरा अपमान कर रहे हो," वर्वारा पाव्लोव्ना ने दबी ज़बान से कहा।

"लेकिन आप अभी तक – बदकिस्मती से – मेरी बीवी हैं। मैं आपको निकाल तो सकता नहीं, मैं आपके सामने यह सुझाव रखना चाहता हूं। आप, अगर चाहें तो आज ही, लाव्रिकी जा सकती हैं; वहां रहिये; जैसा कि आपको मालूम है, वहां एक बहुत अच्छा घर है, आपके गुज़ारे की रकम के अलावा जिस चीज़ की भी आपको जरूरत होगी वह आपको मिलेगी। मंजूर है?"

वर्वारा पाव्लोव्ना ने एक कढ़ा हुआ रूमाल अपने चेहरे की ओर उठाया।

"मैं तुम्हें पहले ही बता चुकी हूं," उसने घबराहट के मारे

फड़कते हुए होटो से कहा, "कि तुम मेरे साथ जो भी सलूक ठीक समझोगे वह मुझे मजूर होगा, अब मुझे तुमसे बस एक बात पूछनी को रह गयी है—क्या तुम मुझे कम से कम अपनी इस उदारता का शुक्रिया अदा करने दोगे?"

"शुक्रिया अदा किये बिना ही रहने दीजिये—इसी तरह बेहतर है।" लाव्रेत्स्की ने जल्दी से कहा। "तो," दरवाजे की ओर बढते हुए वह कहता रहा, "मैं भरोसा रखू कि "

"कल मैं लाव्रिकी चली जाऊगी," वर्वारा पाव्लोव्ना ने बडे अदब से अपनी जगह से उठते हुए बुदबुदाकर कहा। "लेकिन फ्योदोर इवानिच ." (अब वह उसे थियोडोर नही कह रही थी।)

"क्या चाहिये?"

"मैं जानती हू कि अभी तक मैने माफ किये जाने का हक हासिल नही किया है, लेकिन क्या मैं इस बात की उम्मीद रख सकती हू कि आगे चलकर "

"ओह्, वर्वारा पाव्लोव्ना," लाव्रेत्स्की ने उसकी बात बीच मे ही काट दी, "तुम बहुत चालाक औरत हो, लेकिन मैं भी बेवकूफ नही हू; मैं जानता हू कि तुम्हे उसकी रत्ती-भर परवाह नही है। माफ तो मैं तुम्हे बहुत पहले कर चुका हू, लेकिन हमारे बीच हमेशा एक गहरी खाई रही है।"

"तुम देख लेना मैं तुम्हारी हर बात पूरी कर दूगी," वर्वारा पाव्लोव्ना ने सिर झुकाकर जवाब दिया। "मैं अपना पाप भूली नही हू; मुझे यह जानकर भी ताज्जुब नही होगा कि तुम्हे मेरे मरने की खबर सुनकर खुशी तक हुई थी," उसने बडी दबी जबान से उस अखबार की ओर इशारा करते हुए कहा, जिसे लाव्रेत्स्की मेज पर छोड गया था।

फ्योदोर इवानिच चौंक पडा; उस लेख पर पेंसिल के निशान लगे हुए थे। वर्वारा पाव्लोव्ना ने आखो मे और भी अधिक दीनता भरकर उसे देखा। इस क्षण वह लाजवाब लग रही थी। पेरिस का सुरमई रग का गाऊन उसके छरहरे कमसिन लडकियो जैसे बदन से चिपका हुआ था; सफेद कॉलर मे लिपटी हुई उसकी सुडौल नाजुक गर्दन, उसके सीने का हल्का-हल्का चढ़ाव-उतार, बिना चूडियो या अगूठियो के नगे हाथ—उसके बने-सवरे सिर से लेकर उसके जूते की नोक तक,

जो कम उम्र-सी दिखायी दे रही थी, उसकी पूरी आकृति अत्यन्त सौम्य थी।

लाव्रेत्स्की ने गहरी नफ़रत से उसे घूरकर देखा ; उसका जी चाहा कि ज़ोर से चिल्लाये "शाबाश!" और घूसा उसकी कनपटी पर दे मारे, मगर वह अपनी एड़ी पर घूम गया। घंटे-भर बाद वह वसील्येव्स्कोये जा रहा था, और दो घंटे बाद वर्वारा पाव्लोव्ना ने शहर की सबसे ठाटदार गाड़ी किराये पर ली, सादे नक़ाब के साथ एक मामूली-सी तिनकों की हैट लगायी और एक सादा-सा बिना आस्तीन का कोट पहना, आदा को जस्टीन के हवाले किया और ख़ुद कलीतिन-परिवार के यहां चल दी। नौकरों से हासिल की गयी जानकारी से उसे पता चला था कि उसका पति वहां रोज़ जाता था।

३८

लाव्रेत्स्की की बीवी जिस दिन ओ... शहर में पहुंची थी, वह उसके लिए बहुत मनहूस और लीज़ा के लिए भी बहुत बोझिल दिन था। नीचे जाकर उसने अभी अपनी मां को सलाम किया ही था कि इतने में बाहर घोड़े की टापों की आवाज़ सुनायी दी, और यह देखकर वह सहम गयी कि पाशिन घोड़े पर सवार अहाते में चला आ रहा था। "इतनी जल्दी वह अपना जवाब लेने आये होंगे," उसने सोचा, और उसका यह सोचना गलत भी नहीं था ; कुछ देर बैठके में टहलने के बाद पाशिन ने बाग़ में चलने का सुझाव रखा, जहां उसने अपने भाग्य का फ़ैसला पूछा। लीज़ा ने साहस बटोरकर कह दिया कि वह उसकी पत्नी नहीं बन सकती थी। पाशिन ने बगल की ओर मुंह करके खड़े रहकर और अपनी हैट माथे पर झुकाकर उसकी पूरी बात सुनी ; बड़ी शिष्टता से, लेकिन बदले हुए स्वर में उसने लीज़ा से पूछा कि क्या यह उसका अटल फ़ैसला था और क्या उसकी तरफ़ से कोई ऐसी बात हुई थी जिसकी वजह से उसने अपना इरादा बदल दिया था ; फिर उसने अपनी आंखों पर हाथ फेरा, छोटी-सी झटकेदार आह भरी और अपना हाथ फिर हटा लिया।

"मैं घिसे-पिटे रास्ते पर नहीं चलना चाहता था," उसने खोखले में कहा। "मैंने सोचा था कि अपने लिए ख़ुद अपनी पसंद का

जीवन-साथी चुन लू ; लेकिन साफ मालूम होता है कि मेरे नसीब मे कुछ और ही लिखा है। विदा, मेरे सुनहरे सपने। " उसने बहुत झुककर लीज़ा से विदा ली और मुडकर घर की ओर चल दिया।

लीज़ा ने सोचा था कि वह फौरन चला जायेगा, लेकिन वह मार्या द्मीत्रियेव्ना के कमरे मे गया और वहा लगभग घटे-भर रहा। चलते वक्त उसने लीज़ा से कहा, "Votre mère vous appelle, adieu à jamais .."* – अपने घोडे पर सवार हुआ और घर की सीढियो से घोडा सरपट दौडाते हुए दूर चला गया। लीज़ा ने देखा कि मार्या द्मीत्रियेव्ना रो रही थी, पाशिन ने उन्हे अपनी किस्मत के फैसले के बारे मे बता दिया था।

"तुमने मेरे साथ यह क्या किया, क्या किया तुमने ? " व्यथित विधवा ने अपना प्रलाप इस तरह शुरू किया। " फिर तुम किसे चाहती ? क्या वह तुम्हारे लायक नही था ? वह दरबार की नौकरी कर रहा है। और तुम उसमे दिलचस्पी नही लेती हो। सेंट पीटर्सबर्ग मे किसी भी इज्जतदार लडकी से शादी कर सकता था। अरे बेटी, कितना अरमान था मुझे इस शादी का। क्या तुम्हे अपना इरादा बदले बहुत दिन हो गये ? ऐसी बात अचानक तो नही हो सकती, यह मनहूस हवा किसी की चलायी हुई है। कही ऐसा तो नही है कि वह आस्तीन का साप, वह मेरा रिश्ते का भाई इसके पीछे हो ? तुमने भी क्या विश्वासपात्र ढूढा है। "

"और, वह, बेचारा," मार्या द्मीत्रियेव्ना कहती रही, "कितना मेरा सम्मान करता है वह, अपनी मुसीबत मे भी कितना ध्यान रखता है। उसने वादा किया है कि वह मेरा साथ कभी नही छोडेगा। अरे मैं इसे बर्दाश्त नही कर पाऊगी। अरे बेटी, सिर फटा जा रहा है मारे दर्द के। पलाशा को मेरे पास भेज दो। अगर तुमने अपना इरादा न बदला तो तुम मेरी मौत का कारण बनोगी – सुन लिया ? "

उसे कई बार कर्त्तव्यनिष्ठ लडकी न होने पर धिक्कारने के बाद, मार्या द्मीत्रियेव्ना ने उसे वहा से चलता कर दिया।

लीज़ा अपने कमरे मे गयी। पाशिन और मा के साथ अपने तकरार के बाद वह अभी ठीक से सभल भी नही पायी थी कि एक नया तूफान

---

* "आपकी मा आपको बुला रही है। हमेशा के लिए विदा। " (फ्रासीसी)

टूट पडा, और सो भी एक ऐसी जगह से जहा से उसे इसका के
खतरा भी नही था। मार्फा तिमोफ़ेयेव्ना पाव पटकती हुई कमरे मे अ
और अंदर आते ही उन्होने दरवाज़ा धड़ से बद कर दिया। बुआ
चेहरा उतरा हुआ था, उनकी टोपी टेढ़ी थी, आखे अगारो की त
दहक रही थी, और उनके हाथ और होंट काप रहे थे। लीज़ा च
रह गयी। उसने अपनी समझदार और सजीदा बुआ को ऐसी हालत
पहले कभी नही देखा था।

"क्या खूब, मेम साहब," मार्फा तिमोफ़ेयेव्ना ने कापते हु
फुसफुसाहट के स्वर मे अटक-अटककर कहा, "क्या खूब! और
लच्छन तुमने सीखे कहा, मेरी लाडो! मुझे थोडा-सा पानी देना
मुझसे बोला भी नही जा रहा है।"

"शात हो जाइये, बुआजी, बात क्या है?" लीज़ा ने उन्हे पान
का गिलास थमाते हुए कहा। "क्यो, मैं तो समझती थी कि पाशि
आपको खुद बहुत ज़्यादा पसद नही है।"

मार्फा तिमोफ़ेयेव्ना ने गिलास रख दिया।

"नही पिया जाता – दातो मे बहुत लगता है। पाशिन कहा से आ
गया बीच मे? पाशिन का क्या मतलब इस बात से? मुझे यह बताओ,
मेम साहब, तुम्हे यह रातो को चोरी-छिपे मुलाकाते करना किसने
सिखाया – क्यो? बोलो, क्या कहती हो?"

लीज़ा का रग पीला पड गया।

"मुकरने की कोशिश न करना," मार्फा तिमोफ़ेयेव्ना कहती रही।
"शूरोच्का ने खुद अपनी आखो से सब कुछ देखा है और मुझे बताया
है। मैंने उसे बेकार की बकवास करने से मना कर रखा है, मगर वह
झूठ नही बोलती।"

"मैं मुकर किसी बात से नही रही हू, बुआजी," लीज़ा ने मद
स्वर मे कहा।

"अच्छा! तो यह बात है, क्यो, मेम साहब? तो तुमने उस
बूढ़े भोले पापी से मुलाकात तै की थी?"

"नहीं।"

"फिर कैसे हुआ यह?"

"मैं नीचे बैठक मे किताब लेने जा रही थी, वह बाग मे थे –
उन्होंने मुझे पुकारा।"

तुम चली गयीं? बहुत मूढ़। क्या तुम्हें उससे प्यार है,
?"
उनसे प्यार है," लीजा ने बुदबुदाकर कहा।
भगवान! इसे उससे प्यार है!" मार्फा तिमोफेयेव्ना ने
टोपी अपने सिर पर से उतार ली। "ब्याहे आदमी से प्यार
लो, और सुनो, वाह! उससे प्यार करती है!"
ोंने मुझे बताया कि " लीजा ने कहना शुरू किया।
बताया उसने, शिकारी बाज़ कहीं का?"
ोंने मुझे बताया कि उनकी बीवी मर चुकी है।"
तिमोफेयेव्ना ने सलीब का निशान बनाया।
ावान उसकी आत्मा को शांति दे," उन्होंने फुसफुसाकर
बड़ी ढीठ छिनाल थी, भगवान उसे क्षमा करे। मैं समझी।
है वह। बड़ा चलता-पुर्ज़ा आदमी मालूम होता है। इधर
ी को ख़त्म किया और उधर फ़ौरन दूसरी पर डोरे डालने
मेशा चुपके-चुपके! एक बात मैं तुम्हें बता दू, बेटी हमारे
, जब मैं जवान थी, इस तरह की हरकतों पर लड़कियों
ी तरह ख़बर ली जाती थी। मुझसे नाराज़ न होना, बेटी,
ोग ही सच बात पर नाराज़ होते हैं। आज उसे अंदर न आने
हुक्म मैंने दिया था। मैं उसे प्यार करती हू, लेकिन इस बात
मैं उसे कभी माफ़ नहीं करूगी। बड़ा आया विधुर कहीं का!
थोड़ा-सा पानी तो दो। जहा तक पाशिन को चलता कर
बात है, तुमने बहुत समझदार लड़की होने का सबूत दिया
गर रात-बिरात उन बकरों की जात के लोगों के साथ, उन
के साथ न उठा-बैठा करो, मुझ बुढ़िया का दिल न तोड़ना!
। बताये देती हू, तुम्हें पता चल जायेगा कि मैं ख़ाली चुमकारना-
ना ही नहीं जानती—मैं काट भी सकती हू। विधुर कहीं

ार्फा तिमोफ़ेयेव्ना चली गयीं और लीजा एक कोने में बैठकर
ककर रोने लगी। उसका कलेजा मुंह को आ रहा था, उसने
ुछ नहीं किया था जिसकी वजह से उसका ऐसा अपमान किया
। प्यार से उसे कोई ख़ुशी नसीब नहीं हुई थी कल रात में दो
बह रो चुकी थी। उसके हृदय में अभी इस नयी और सुखद

भावना का ज्वार उठना शुरू ही हुआ था कि उसे उसकी इतनी भारी कीमत चुकानी पड़ रही थी और उसका पवित्र भेद अजनबी हाथों के क्रूर स्पर्श का शिकार हो गया था। वह लज्जित और आहत अनुभव कर रही थी, उसमें कटुता भर आयी थी, पर उसके मन में शंका या भय का लेश भी नहीं था – और लाव्रेत्स्की उसे पहले से भी ज्यादा प्यारा हो गया था। वह तभी तक डावाडोल रही थी जब तक उसने अपने मन को नहीं समझा था, पर उस मुलाकात के बाद, उस चुंबन के बाद वह बिल्कुल नहीं डगमगायी; वह जानती थी कि वह प्यार करती थी – और वह सच्चाई से, निष्ठा से प्यार करती थी, ऐसे लगाव के साथ प्यार करती थी जो दृढ़ था, जीवन-भर कायम रहनेवाला था और हर बाधा से टक्कर लेने को तैयार था; वह महसूस करती थी कि दुनिया की कोई ताकत उस बंधन को तोड़ नहीं सकती थी।

३६

यह सूचना पाकर कि वर्वारा पाव्लोव्ना लाव्रेत्स्काया उनसे मिलने आयी है, मार्या द्मीत्रियेव्ना बहुत परेशान हुईं। उनकी समझ में न आया कि उससे मिलें या न मिलें, वह डरती थी कि कहीं फ्योदोर इवानिच बुरा न मान जाये। अततः, जिज्ञासा का पलड़ा भारी पड़ा। "देखा जायेगा," उन्होंने सोचा, "वह भी है तो अपनी रिश्तेदार ही," और अपनी आराम-कुर्सी में धमकर बैठते हुए उन्होंने खिदमतगार से कहा, "भेज दो!" कुछ क्षण बीते, दरवाजा खुला, वर्वारा पाव्लोव्ना तेज़ी से कमरे के पार सरकती हुई मार्या द्मीत्रियेव्ना के पास पहुंची और उन्हें अपनी कुर्सी से उठने का मौका दिये बिना ही उनके सामने लगभग बिल्कुल घुटनों के बल झुक गयी।

"आपका बेहद शुक्रिया, बुआजी," उसने धीमी कांपती हुई आवाज़ में रूसी में कहना शुरू किया। "बेहद शुक्रिया, मुझे तो उम्मीद भी नहीं थी कि आप इतनी रवादारी के साथ पेश आयेंगी आप तो बिल्कुल फ़रिश्ते जैसी नेक हैं।"

यह कहकर वर्वारा पाव्लोव्ना ने अचानक मार्या द्मीत्रियेव्ना का एक हाथ पकड़ लिया और उसे अपने हल्के कासनी रंग के दस्ताने से ढँके हाथ में दबाकर मुलायम के अंदाज में अपने भरे-भरे गुलाबी

होंठों तक ले आयी। बेहद बढ़िया कपड़ों में सजी-बनी इस खूबसूरत औरत को अपने कदमों में लगभग गिरा हुआ देखकर मार्या द्मीत्रियेव्ना हक्का-बक्का रह गयीं, उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करें। उनका जी चाह रहा था कि अपना हाथ खींच ले, उसे बैठने के लिए जगह दें, कोई अच्छी बात कहें, इसके बजाय वह उठीं और उन्होंने वर्वारा पाव्लोव्ना के चिकने महकते हुए माथे को चूम लिया। वर्वारा पाव्लोव्ना भाव-विभोर हो उठी।

"कैसी हो, bonjour," मार्या द्मीत्रियेव्ना ने कहा, "मैंने तो कभी उम्मीद भी नहीं की थी . लेकिन, जाहिर है, तुमसे मिलकर बहुत खुशी हुई। तुम जानो, बेटी, मियां-बीवी के बीच मैं फैसला करनेवाली कौन। "

"मेरे पति की कोई गलती नहीं है," वर्वारा पाव्लोव्ना बीच में ही बोल पड़ी, "सारा कसूर अकेले मेरा है।"

"तुम्हारा ऐसा सोचना तारीफ के काबिल है," मार्या द्मीत्रियेव्ना ने जवाब दिया, "बेहद तारीफ के काबिल। तुम यहां बहुत दिन से हो? उससे मिलीं? लेकिन, मेहरबानी करके बैठो तो।"

"कल ही आयी," बड़ी विनम्रता से बैठते हुए वर्वारा पाव्लोव्ना ने जवाब दिया। "मैं फ्योदोर इवानिच से मिल चुकी हूं। मैंने उनसे बात भी की है।"

"अच्छा! तो इस पर उनका रवैया कैसा रहा?"

"मैं डरती थी कि मेरे इस तरह अचानक आ जाने से वह नाराज होंगे," वर्वारा पाव्लोव्ना ने फिर कहना शुरू किया, "लेकिन मुझे देखते ही उन्होंने मुंह नहीं फेर लिया।"

"कहने का मतलब यह कि उसने यह नहीं किया कि .. हां, हां, मैं समझी," मार्या द्मीत्रियेव्ना ने टिप्पणी की। "वह देखने में जरा रूखा जरूर है, लेकिन दिल का बहुत नेक है।"

"फ्योदोर इवानिच ने मुझे माफ नहीं किया है, वह मेरी पूरी बात भी सुनने को तैयार नहीं थे। लेकिन उन्होंने इतना एहसान जरूर किया कि रहने के लिए मुझे लाव्रिकी वाला घर दे दिया है।"

"वाह! बहुत ही खूबसूरत जगह है।"

"उनका हुक्म पूरा करने के लिए मैं कल ही जा रही हूं, लेकिन इसे अपना कर्तव्य समझा कि जाने से पहले आप से मिल लूं।"

भावना का ज्वार उठना शुरू ही हुआ था कि उसे उसकी इतनी भारी कीमत चुकानी पड़ रही थी और उसका पवित्र भेद अजनबी हाथों के क्रूर स्पर्श का शिकार हो गया था! वह लज्जित और आहत अनुभव कर रही थी, उसमें कटुता भर आयी थी, पर उसके मन में शंका या भय का लेश भी नहीं था—और लाव्रेत्स्की उसे पहले से भी ज्यादा प्यारा हो गया था। वह तभी तक डावांडोल रही थी जब तक उसने अपने मन को नहीं समझा था, पर उस मुलाकात के बाद, उस चुंबन के बाद वह बिल्कुल नहीं डगमगायी, वह जानती थी कि वह प्यार करती थी—और वह सच्चाई से, निष्ठा से प्यार करती थी, ऐसे लगाव के साथ प्यार करती थी जो दृढ़ था, जीवन-भर कायम रहनेवाला था और हर बाधा से टक्कर लेने को तैयार था, वह महसूस करती थी कि दुनिया की कोई ताकत उस बंधन को तोड़ नहीं सकती थी।

३९

यह सूचना पाकर कि वर्वारा पाव्लोव्ना लाव्रेत्स्काया उनसे मिलने आयी है, मार्या द्मीत्रियेव्ना बहुत परेशान हुईं, उनकी समझ में न आया कि उससे मिलें या न मिलें, वह डरती थीं कि कहीं फ्योदोर इवानिच बुरा न मान जाये। अंततः, जिज्ञासा का पलड़ा भारी पड़ा। "देखा जायेगा," उन्होंने सोचा, "वह भी है तो अपनी रिश्तेदार ही," और अपनी आराम-कुर्सी में धमककर बैठते हुए उन्होंने खिदमतगार से कहा, "भेज दो!" कुछ क्षण बीते, दरवाजा खुला, वर्वारा पाव्लोव्ना तेजी से कमरे के पार सरकती हुई मार्या द्मीत्रियेव्ना के पास पहुंची और उन्हें अपनी कुर्सी से उठने का मौका दिये बिना ही उनके सामने लगभग बिल्कुल घुटनों के बल झुक गयी।

"आपका बेहद शुक्रिया, बुआजी," उसने धीमी कांपती हुई आवाज में रूसी में कहना शुरू किया। "बेहद शुक्रिया, मुझे तो उम्मीद भी नहीं थी कि आप इतनी रवादारी के साथ पेश आयेंगी, आप तो बिल्कुल फरिश्तों जैसी नेक हैं।"

यह कहकर वर्वारा पाव्लोव्ना ने अचानक मार्या द्मीत्रियेव्ना का एक हाथ पकड़ लिया और उसे अपने हल्के कासनी रंग के दस्तानों के बीच हौले से दबाकर खुशामद के अंदाज से अपने भरे-भरे गुलाबी

"शुक्रिया, बहुत-बहुत शुक्रिया, बेटी। आदमी को अपने रिश्तेदारों को कभी न भूलना चाहिये। जानती हो, मुझे इस बात पर ताज्जुब होता है कि तुम इतनी अच्छी रूसी बोलती हो। C'est étonnant."*

वर्वारा पाव्लोव्ना ने आह भरी।

"मै विदेश मे जरूरत से ज्यादा अरसे तक रही हू, मार्या द्मीत्रियेव्ना, यह मै जानती हूं; लेकिन मेरा दिल हमेशा रूसी रहा है और मै अपनी जन्मभूमि को भूली नही हूं।"

"बिल्कुल, बिल्कुल; यह तो बडी अच्छी बात है। लेकिन फ्योदोर इवानिच को तुम्हारे आने की उम्मीद नही थी। हा, एक बात मै तुम्हे बता दू: la patrie avant tout.** अरे, कैसा सुदर कोट है यह, क्या मै देख सकती हू?"

"आपको पसद है?" वर्वारा पाव्लोव्ना ने जल्दी से उसे अपने कधो पर से सरकाते हुए कहा। "बहुत सादा है, मादाम बाउद्रा के यहा का है।"

"वह तो देखते ही पता चल जाता है। मादाम बाउद्रा के यहा का। ... कैसा सुदर और सजीला है! मुझे यकीन है कि तुम अपने साथ ढेरों अच्छी-अच्छी चीजें लायी होगी। काश मैं उन्हे देख पाती।"

"मेरा बनाव-सिगार का सारा साज-सामान आपकी खिदमत में हाजिर है, मेरी प्यारी बुआजी। अगर आप कहें तो मैं कुछ चीजें आपकी नौकरानी को दिखा दूं। मेरे साथ पेरिस की एक नौकरानी है—बहुत अच्छी पोशाके बनाती है।"

"तुम्हारी बड़ी मेहरबानी है, बेटी। लेकिन सचमुच, मै तुम्हें तकलीफ देना नही चाहती।"

"मुझे तकलीफ क्या होगी भला," वर्वारा पाव्लोव्ना ने हल्की-सी झिड़की के स्वर में कहा, "अगर आप मुझे खुशी ही पहुचाना चाहती हैं, तो मेरी हर चीज को अपना ही समझकर जैसे चाहिये इस्तेमाल कीजिये।"

मार्या द्मीत्रियेव्ना द्रवित हो उठी।

---

* यह अजीब बात है। (फ्रांसीसी)

** मातृभूमि सबसे मुख्य बात है। (फ्रांसीसी)

"Vous êtes charmante,"* उन्होने बुदबुदाकर कहा। "लेकि
तुम अपनी हैट और दस्ताने क्यो नही उतार देती ?"

"सच, उतार दू ?" वर्वारा पाव्लोव्ना ने अत्यत करुण भाव
अपने हाथ थोडे से सामने रखकर कहा।

"अरे, क्यो नही ; मै उम्मीद करती हू तुम खाना हम लोग
के साथ ही खाओगी न ? मै मै तुम्हे अपनी बेटी से मिलाऊगी,
मार्या द्मीत्रियेव्ना कुछ बेचैन नजर आ रही थी। "अरे, जो होग
देखा जायेगा ! .." उन्होने सोचा। "आज उसका जी कुछ अच्छ
नही है।"

"ओह, ma tante,** बडी मेहरबानी आपकी।" वर्वारा पाव्लोव्न
ने कहा और रूमाल उठाकर आखे पोछने लगी।

एक नौकर लडके ने आकर गेदेओनोव्स्की के आने की सूचना दी
वह पुराना गप्पी बार-बार झुकता और बनावटी मुस्कराहटे बिखेरत
हुआ अदर आया। मार्या द्मीत्रियेव्ना ने अपनी मेहमान का उससे परिचय
कराया। शुरू मे तो वह बहुत सकपकाया लेकिन वर्वारा पाव्लोव्ना
ने इतने मोहक ढग से आदर-भाव प्रकट किया कि थोडी ही देर मे
उसके कान सनसनाने लगे, और इधर-उधर की झूठी-सच्ची खबरे,
गपशप और चापलूसी की बाते उसके मुह से शहद की बूदो की तरह
टपकने लगी। वर्वारा पाव्लोव्ना मुस्कराहट रोके सुनती रही और फिर
धीरे-धीरे बातचीत मे शामिल हो गयी। उसने बडी विनम्रता से पेरिस
के बारे मे, अपनी यात्राओ के बारे मे, बाडेन के बारे मे बाते की,
दो बार उसकी बातो पर मार्या द्मीत्रियेव्ना जी खोलकर हस पडी,
और दोनो बार वह खुद आह भरकर रह गयी, मानो मन ही मन इस
अशोभनीय आमोद-प्रमोद पर अपने आपको धिक्कार रही हो, उसने
अगली बार आदा को भी अपने साथ ले आने की इजाजत ले ली,
अपने दस्ताने उतारकर उसने à la guimauve साबुन से महकते हुए
अपनी चिकनी खालवाले हाथो से बताया कि झालर पर, लैस और
गुच्छे कहा और कैसे लगाये जाते थे, उसने एक नये अंग्रेजी सेंट
विक्टोरियाज एसेंस की शीशी लाने का वादा किया और जब मार्या

* कितनी प्यारी हो तुम। (फ्रासीसी)
** बुआजी। (फ्रासीसी)

ous êtes charmante,"* उन्होंने बुदबुदाकर कहा। 'लेकिन
नी हैट और दस्ताने क्यों नहीं उतार देती ?
"च, उतार दूं ?" वर्वारा पाव्लोव्ना ने अत्यंत करुण भाव से
थ थोड़े से सामने रखकर कहा।
अरे, क्यों नहीं, मैं उम्मीद करती हूं तुम खाना हम लोगों
हो खाओगी न ? मैं मैं तुम्हें अपनी बेटी से मिलाऊंगी
पीत्रियेव्ना कुछ बेचैन नजर आ रही थी। अरे जो होगा
जायेगा!" उन्होंने सोचा। 'आज उसका जी कुछ अच्छा
।"
ओह, ma tante.** बड़ी मेहरबानी आपकी! वर्वारा पाव्लोव्ना
ा और रूमाल उठाकर आंखें पोंछने लगी।
क नौकर लड़के ने आकर गेदेआनोव्स्की के आने की सूचना दी।
राना गप्पी बार-बार झुकता और बनावटी मुस्कराहट बिखेरता
अंदर आया। मार्या पीत्रियेव्ना ने अपनी मेहमान का उससे परिचय
ा। शुरू में तो वह बहुत सकपकाया लेकिन वर्वारा पाव्लोव्ना
तने मोहक ढंग से आदर-भाव प्रकट किया कि थोड़ी ही देर में
कान सनसनाने लगे और इधर-उधर की झूठी-सच्ची खबरें
प और चापलूसी की बातें उसके मुंह से शहद की बूंदों की तरह
ने लगीं। वर्वारा पाव्लोव्ना मुस्कराहट रोके सुनती रही और फिर
-धीरे बातचीत में शामिल हो गयी। उसने बड़ी विनम्रता से पेरिस
बारे में अपनी यात्राओं के बारे में बाडेन के बारे में बातें कीं।
बार उसकी बातों पर मार्या पीत्रियेव्ना जी खोलकर हंस पड़ीं
र दोनों बार वह खुद आह भरकर रह गयी मानो मन ही मन इस
नीय आमोद-प्रमोद पर अपने आपको धिक्कार रही हो उसने
सी बार आदा को भी अपने साथ ले आने की इजाजत ले ली
ने दस्ताने उतारकर उसने à la guimauve साबुन से महकते हुए
पनी चिकनी गोलवाले हाथों से बताया कि आजकल पर बैंस और
कैसे कहां और कैसे लगाये जाते थे उसने सब नयी अंग्रेजी मेज
स्टोरियाज शराब की शीशी लाने का वादा किया और जब मार्या

ग्रीग्रियेव्ना उसे उपहार के रूप में स्वीकार करने पर तैयार हो गयी तो वह बच्चों की तरह खुश हो गयी, वापस आने पर पहली बार रूसी गिरजाघर के घंटों की आवाज़ सुनकर उसने जो रोमांच अनुभव किया था उसे याद करके उसकी आंखों में आंसू उमड़ आये, "वह आवाज़ सीधे मेरे दिल में उतर गयी," उसने बुदबुदाकर कहा।

उसी समय लीज़ा कमरे में आयी।

सुबह से ही, उसी क्षण से, जबसे उसने लाव्रेत्स्की का भेजा हुआ पर्चा पढ़ा था और आतंक से उसका खून जम गया था, लीज़ा उसकी बीवी से मुठभेड़ के लिए अपना जी कड़ा करती रही थी, उसे पूर्वाभास हो गया था कि वह उससे ज़रूर मिलेगी। उसने फैसला कर लिया था कि अपनी पापमय आशाओं के प्रायश्चित के रूप में वह उससे कतराने की कोशिश नहीं करेगी। उसके प्रारब्ध में अचानक आ जानेवाले इस संकट ने उसे उसके अस्तित्व की जड़ों तक हिला दिया था, कोई दो ही घंटों के अंदर उसका चेहरा उतर गया था, लेकिन उसने एक आंसू भी नहीं बहाया था। "मेरी यही सज़ा है!" उसने बड़ी कठिनाई से और भावावेश के साथ उन व्यथापूर्ण, कुत्सित भावावेगों के ज्वार को दबाते हुए अपने आपसे कहा, जो उसके लिए अत्यंत कष्टप्रद थे। "अच्छा, मुझे चलना चाहिये!" लाव्रेत्स्काया के आने की खबर सुनते ही उसने सोचा और वह नीचे उतर गयी। . दरवाज़ा खोलने का साहस बटोरने से पहले वह बड़ी देर तक बैठके के बाहर खड़ी रही, "मैंने उसके साथ अन्याय किया है"—अपने मन में यह विचार लिये हुए उसने बैठके में प्रवेश किया और अपने आपको उसकी ओर देखने पर मजबूर किया, अपने आपको मुस्कराने पर मजबूर किया। वर्वारा पाव्लोव्ना उसे देखते ही उससे मिलने के लिए आगे बढ़ी, थोड़ा-सा झुककर लेकिन सम्मान के भाव से उसका अभिवादन किया। "मैं अपना परिचय करा दूं," उसने अपने स्वर में मिठास भरते हुए कहा, "तुम्हारी मां ने मेरे साथ इतना बड़ा उपकार किया है कि मैं उम्मीद करती हूं कि तुम भी... मेरे साथ मेहरबानी का सलूक करोगी।" अंतिम शब्द बोलते हुए वर्वारा पाव्लोव्ना के चेहरे की मुद्रा, उसकी कुटिल, मुस्कराहट, उसकी निर्मम फिर भी कोमल दृष्टि, उसके हाथों और कंधों के हाव-भाव, जो गाउन वह पहने थी वह तक, उसके समस्त अस्तित्व ने लीज़ा के मन में ऐसी नफ़रत की भावना

पैदा की कि वह कोई जवाब न दे सकी और बस इतना कर पायी कि उसने बड़ी मुश्किल से अपना हाथ आगे बढ़ा दिया। "यह लड़की मुझे बर्दाश्त नहीं कर सकती" वर्वारा पाव्लोव्ना ने लीज़ा की सर्द उंगलियां भींचते हुए सोचा और मार्या द्मीत्रियेव्ना की ओर मुड़कर बुदबुदाकर कहा, "Mais elle est delicieuse!"* लीज़ा के चेहरे पर हल्की-सी लाली दौड़ गयी वर्वारा पाव्लोव्ना के इस उद्गार में उसे चिढ़ाने और अपमान करने जैसा भाव मालूम हुआ लेकिन उसने अपने विचारों पर विश्वास न करने का फैसला किया और खिड़की के पास कशीदाकारी के अपने अड्डे के सामने जाकर बैठ गयी। यहां भी वर्वारा पाव्लोव्ना ने उसे चैन नहीं लेने दिया उसके पास आकर उसने उसकी सुरुचि और उसके कौशल के लिए उसे सराहना शुरू किया। लीज़ा का हृदय बड़े ज़ोर से और पीड़ाजनक ढंग से धड़क रहा था, भरसक प्रयत्न करके वह अपनी ठोडी ऊपर उठाये बैठी रही। उसे ऐसा लग रहा था कि वर्वारा पाव्लोव्ना को सब कुछ मालूम था और वह उसे यातना देकर द्वेषपूर्ण आनंद प्राप्त कर रही थी। सौभाग्यवश जब गेदेओनोव्स्की ने वर्वारा पाव्लोव्ना से बात करना शुरू किया और उसका ध्यान हटा लिया तब जाकर लीज़ा को राहत मिली।

लीज़ा अपनी कशीदाकारी पर झुकी हुई नज़रें बचाकर उसे देखती रही। यह है वह औरत, उसने सोचा जिससे वह किसी ज़माने में प्यार करते थे। लेकिन उसने लाव्रेत्स्की का विचार फ़ौरन अपने दिमाग से निकाल दिया उसे डर था कि वह कहीं अपना आत्मसंयम न खो दे, उसे महसूस हो रहा था कि उसका सिर धीरे-धीरे चकरा रहा था। मार्या द्मीत्रियेव्ना संगीत की बातें करने लगी।

"मैंने सुना है बेटी," उन्होंने कहना शुरू किया कि तुम संगीत में बहुत निपुण हो।

"बहुत दिन से मैंने कुछ बजाया नहीं है वर्वारा पाव्लोव्ना ने फुर्ती से पियानो के सामने बैठकर उसके परदों पर बड़ी दक्षता से अपनी उंगलियां दौड़ाते हुए जवाब दिया। बजाऊं?"

"ज़रूर, ज़रूर।

---

* बहुत प्यारी है यह! (फ़्रांसीसी।)

वर्वारा पाव्लोव्ना ने हेंडल की एक शानदार और कठिन धुन बहुत ही निपुणता के साथ बजायी। उसके वादन में बडी शक्ति और दक्षता थी।

'शाबाश!' गेडेओनोव्स्की तारीफ करते हुए चिल्लाया।

शानदार!' मार्या द्मीत्रियेव्ना ने भी अपनी तारीफ जोड दी। "अच्छा वर्वारा पाव्लोव्ना," उन्होंने पहली बार उसे उसके नाम से पुकारते हुए अपना मत व्यक्त किया, 'मैं सच कहती हू तुमने मुझे चकित कर दिया तुम्हें तो कन्सर्टों मे हिस्सा लेना चाहिये। यहा एक संगीतकार है जर्मन है, बूढा है, सनकी लेकिन संगीत का अच्छा जानकार है, वह लीजा को सिखाता है, तुम्हें सुनकर तो वह दीवाना हो जायेगा।"

"येलिजावेता मिखाइलोव्ना भी बजाती है?" वर्वारा पाव्लोव्ना ने अपना सिर थोडा-सा उसकी ओर घुमाते हुए पूछा।

"हा, बुरा नही बजाती है और उसे संगीत का चाव है, मगर तुम्हारे मुकाबले मे क्या है वह? लेकिन यहा एक नौजवान है, वह ऐसा आदमी है जिससे तुम्हे जरूर मिलना चाहिये। उसने कलाकार का दिल पाया है और वह बडी सुंदर धुनें रचता है। वही पूरी तरह तुम्हे समझ सकता है।"

"नौजवान?" वर्वारा पाव्लोव्ना ने पूछा। "कौन है वह? कोई गरीब है?"

"अरे नही, अच्छी से अच्छी रईसज़ादिया उस पर जान छिड़कती है, और यही नही बल्कि सेंट पीटर्सबर्ग मे भी। दरबार में नौकर है, जिसकी ऊंचे से ऊंचे लोगो के बीच आवभगत होती है। तुमने शायद उसके बारे मे सुना हो· पाशिन, व्लादीमिर निकोलाइच। वह यहा सरकारी काम से आया हुआ है मै तो कहती हूं आगे चलकर मंत्री बनेगा।"

"और कलाकार है?"

"हा, उसका दिल कलाकार का है, और इतना तमीज़दार है कि बस। तुम उससे मिलोगी। यहा अकसर आता रहता है, मैंने आज शाम को उसे यहा बुलाया है; उम्मीद तो है कि आयेगा," मार्या द्मीत्रियेव्ना ने हल्की-सी आह भरकर और होंठो पर कुटिलतापूर्ण उदास मुस्कराहट लाकर कहा।

लीज़ा उस मुस्कराहट को समझ गयी लेकिन उसकी मनोदशा ऐसी नहीं थी कि उसका बुरा मानती।

"और नौजवान?" वर्वारा पाव्लोव्ना ने कहा।

"अट्ठाईस साल का, और बेहद खूबसूरत। Un jeune homme accompli,* सचमुच।"

"मैं तो कहता हूं कि हर नौजवान को ऐसा ही होना चाहिये " गेदेओनोव्स्की ने अपनी राय दी।

वर्वारा पाव्लोव्ना ने सहसा स्ट्राम की एक उल्लासमयी वाल्ट्ज़ की धुन छेड़ दी और उसकी शुरुआत ऐसी चौंका देनेवाली तीखी गिटकिरी से की कि गेदेओनोव्स्की चकरा गया वाल्ट्ज़ के बीच में उसने अप्रत्याशित ढंग से एक उदासी-भरा टुकड़ा जोड़ दिया और अंत में 'लूसिया' की तान बजायी Fra poco ** उसे अचानक ध्यान आया कि उल्लास-भरा संगीत उसकी स्थिति के अनुरूप नहीं है। 'लूसिया' की तान सुनकर, जिसमें भावुकतापूर्ण अंशों पर ज़ोर दिया गया था, मार्या द्मीत्रियेव्ना पर गहरा असर हुआ।

"क्या भावना है!" उन्होंने दबी आवाज़ में गेदेओनोव्स्की से अपना मत प्रकट किया।

'लाजवाब!" गेदेओनोव्स्की ने अपनी आंखें आकाश की ओर नचाते हुए फिर कहा।

खाने का वक्त हो गया। मार्फ़ा तिमोफ़ेयेव्ना जब नीचे उतरकर आयी तब तक सूप परोसा जा चुका था। उन्होंने बड़ी रुखाई से वर्वारा पाव्लोव्ना का अभिवादन किया उसकी रस्मी बातचीत का जवाब हां-हूं में देती रहीं और उसकी ओर नज़र उठाकर देखा भी नहीं। वर्वारा पाव्लोव्ना थोड़ी ही देर में समझ गयी कि बुढ़िया से कुछ हासिल होनेवाला नहीं है इसलिए उसने उनसे बात करने की कोशिश बंद कर दी, इसके विपरीत मार्या द्मीत्रियेव्ना अपनी मेहमान पर और भी मेहरबान हो गयी, अपनी बुआ की अशिष्टता से वह चिढ़ गयी। लेकिन मार्फ़ा तिमोफ़ेयेव्ना वर्वारा पाव्लोव्ना से ही नहीं कतरा रही थीं, वह लीज़ा की ओर भी नहीं देख रही थीं हालांकि उनकी आंखें

---

* बेहद अच्छा नौजवान। (फ्रांसीसी)

** थोड़े ही बाद। (फ्रांसीसी)

भरपूर चमक रहा था। वह पत्थर की मूरत की तरह बैठे हुए थे चेहरा पीला और उतरा हुआ और होंठ बंद और वह कुछ बो नहीं रहा था। लीज़ा शांत दिखायी दे रही थी, सचमुच, उनके मन में जो तूफान मचा हुआ था वह रुक गया था, उसे एक विचित्र मदहोशता का आभास हो रहा था, जैसे किसी आदमी को मौत की सजा सुना दी गयी हो। सारा वक्त वर्वारा पाव्लोव्ना बहुत बातें नहीं कर रही थी वह एक बार फिर संकोचशील हो गयी थी और उनके चेहरे पर मार्मिक उदासी का भाव आ गया था। अकेले गेदेओनोव्स्की ने अपने फिकरे सुनाकर बातचीत का क्रम बनाये रखा था, बीच-बीच में बार-बार वह बड़ी बेचैनी से मार्फा तिमोफ़ेयेव्ना को देखता जाता था और अपना गला साफ करता था – उनके सामने जब भी वह कोई झूठ बोलनेवाला होता था तो उसकी आवाज बैठ जाती थी – लेकिन उन्होंने न कोई बाधा डाली और न ही उसे टोका। खाना खत्म हो जाने के बाद पता यह चला कि वर्वारा पाव्लोव्ना ह्विस्ट खेलने की बहुत शौकीन थी, यह जानकारी पाकर मार्या द्मीत्रियेव्ना खुशी के मारे फूली न समायी और उन्होंने मन ही मन कहा, "सचमुच, वह फ्योदोर इवानिच भी कैसा बेवकूफ होगा! जरा सोचो तो, ऐसी औरत की कद्र नहीं कर सका!"

वह उसके और गेदेओनोव्स्की के साथ ताश खेलने बैठ गयीं, और मार्फा तिमोफ़ेयेव्ना यह कहकर लीज़ा के साथ ऊपर चली गयीं कि उसकी तबियत कुछ ठीक नहीं लग रही थी और उसके सिर में यकीनन दर्द था।

"हां, उसके सिर में बहुत सख्त दर्द है," मार्या द्मीत्रियेव्ना ने अपनी आंखें नचाकर वर्वारा पाव्लोव्ना को संबोधित करते हुए कहा। "मुझे भी कभी-कभी अधसीसी का ऐसा भयानक दर्द होता है कि . ."

"सच!" वर्वारा पाव्लोव्ना ने धीरे से कहा।

लीज़ा अपनी बुआ के कमरे में गयी और निढाल होकर एक कुर्सी पर बैठ गयी। मार्फा तिमोफ़ेयेव्ना बड़ी देर तक और खामोशी से उसे देखती रही, फिर वह चुपचाप उसके सामने घुटने टेककर बैठ गयी और कुछ कहे बिना उसके हाथ चूमने लगी। लीज़ा आगे झुक आयी, उसके चेहरे पर लाली दौड़ गयी – और वह रोने लगी, लेकिन उसने मार्फा तिमोफ़ेयेव्ना को उठाया नहीं, न ही उसने अपने हाथ

हटाये, उसने महसूस किया कि उसे उन्हें हटाने का, उस वृद्ध महिला को अपना पश्चात्ताप और सहानुभूति प्रकट करने से, पिछले दिन जो कुछ हुआ था उसके लिए क्षमा मांगने से रोकने का कोई अधिकार ही नहीं था, और मार्फा तिमोफेयेव्ना उन बेचारे, पीले और अशक्त हाथों को चूमे चली जा रही थी और उनकी आंखों से और लीज़ा की आंखों से मूक आंसू बह रहे थे, और बिल्ला मात्रोस चौड़ी-सी आराम कुर्सी पर बुनाई के ऊन के बीच बैठा क्षीण स्वर में म्याऊं-म्याऊं कर रहा था और देव-प्रतिमा के सामने रखे हुए छोटे-से तेल के दिये की लंबी-सी लौ कांप रही थी और झिलमिला रही थी जबकि दूसरे कमरे में दरवाज़े के पीछे नस्तास्या कार्पोव्ना छिपकर खड़ी थी और अपने चारखानेदार रूमाल का गोला बनाकर उससे अपनी आंखें पोंछ रही थी।

४०

इसी बीच नीचे बैठके में बैठी हुई मंडली ह्विस्ट खेल रही थी। मार्या द्मीत्रियेव्ना जीत रही थी, इसलिए वह बहुत खुश थी। एक नौकर ने आकर पाशिन के आगमन की सूचना दी।

मार्या द्मीत्रियेव्ना अपने पत्ते रखकर कुर्सी पर पहलू बदलने लगी। वर्वारा पाव्लोव्ना ने उनकी ओर रहस्यमयी मुस्कराहट के साथ एक नज़र देखा और फिर अपनी आंखें दरवाज़े की ओर मोड़ लीं। पाशिन ऊंचे कॉलरवाला काला अंग्रेज़ी फ्राक-कोट पहने हुए अंदर आया जिसके गले तक के सारे बटन बंद थे। "मेरे लिए आपका हुक्म मानना इतना आसान नहीं था लेकिन देखिये मैं आ गया हूं" उसका चिकना-चुपड़ा चेहरा जिस पर अभी कुछ ही देर पहले दाढ़ी बनायी गयी थी और जिस पर कोई मुस्कराहट नहीं थी यही भाव व्यक्त करता था।

"सचमुच, वोल्देमार," मार्या द्मीत्रियेव्ना ने ऊंचे स्वर में कहा, "तुम तो हमेशा बिना सूचना के ही आ जाया करते थे!"

पाशिन ने मार्या द्मीत्रियेव्ना का जवाब सिर्फ अपनी आंखों से दिया, उनके सामने बड़ी शिष्टता से झुका, लेकिन उनका हाथ नहीं चूमा। उन्होंने उसका परिचय वर्वारा पाव्लोव्ना से कराया, वह एक कदम पीछे हट गया, उसके सामने उतनी ...

किंचित सौम्यता और आदर-भाव के साथ, और ताश की मेज़ के पास बैठ गया। बाज़ी जल्दी ही खत्म हो गयी। पाशिन ने येलिज़ावेता मिखाइलोव्ना की कुशल पूछी, पता चला कि उसकी तबियत कुछ खराब है, उसने बुदबुदाकर खेद प्रकट किया; फिर वह हर शब्द को कूटनीतिज्ञ की तरह तौल-तौलकर और बड़े तीखे ढग से हर शब्द का उच्चारण करते हुए वर्वारा पाव्लोव्ना से बाते करने लगा और बडी शिष्टता से उसके जवाब सुनने लगा। पर उसके कूटनीतिज्ञों जैसे लहजे की गभीरता का वर्वारा पाव्लोव्ना पर कोई प्रभाव नही पडा और उस पर कोई समरूप प्रतिक्रिया नही हुई। इसके विपरीत, वह हसती-खिलखिलाती बडे ध्यान से उसका अध्ययन करती रही, सहज भाव से बातें करती रही, और उसके नथुने हल्के-हल्के फड़कते रहे मानो वह चुहलबाज़ी की उमग को दबाने की कोशिश कर रही हो। मार्या द्मीत्रियेव्ना उसके गुणो की तारीफ के पुल बाधने लगी; पाशिन ने शिष्टता से अपना सिर उस हद तक तिरछा झुका लिया जहां तक उसके कॉलर ने इजाज़त दी, और निश्चयपूर्वक कहा कि "उसे पहले ही से इस बात का पूरा विश्वास था," और वह ऐसे ढर्रे पर बढ चला जिसने उसे लगभग मेटरनिख़ के प्रसग तक पहुचा दिया। वर्वारा पाव्लोव्ना ने अपनी मख़मली आखे सिकोडकर दबे स्वर में कहा, "क्यो, मगर आप तो कलाकार भी हैं, मेरी तरह और फिर सिर के झटके से पियानो की तरफ इशारा करते हुए धीमे से कहा, "Venez!"* इस एक शब्द "venez!" का, जो मानो उसके मुह में बातचीत के सहज प्रवाह मे निकल गया था, पाशिन पर तात्कालिक और लगभग जादुई प्रभाव पडा। उसकी गभीर मुद्रा गायब हो गयी, उसके चेहरे पर मुस्कराहटें बिखर गयीं, वह चुस्त हो गया, उसने अपने कोट के बटन खोले और एक बार फिर कहा, "अफ़सोस! मैं तो कोई ख़ास कलाकार नही हू, लेकिन मैंने सुना है कि आप सचमुच कलाकार हैं," और इसके साथ ही वह वर्वारा पाव्लोव्ना के पीछे-पीछे पियानो के पास चला गया।

"इससे इसका वह गीत सुनो—तैरते हुए बादवाला," मार्या द्मीत्रियेव्ना ने लहककर कहा।

---

* 'आइये' (फ़ासीसी)

की ओर मुडकर धीरे से कहा ; "आइये, कोई दुगाना गायें। आपको 'Son geloso'* आता है, या 'La ci darem',** या 'Mira la bianca luna'?"***

"कभी मै 'Mira la bianca luna' गाया करता था," पानिन ने जवाब दिया, "लेकिन वह बहुत जमाने पहले की बात है और मै उसे भूल चुका हू।"

"कोई बात नही, हम पहले धीमी आवाज मे उसे तैयार किये लेते है। मुझे बैठ जाने दीजिये।"

वर्वारा पाव्लोव्ना पियानो पर बैठ गयी। पानिन उसके बगल मे खडा था। उन्होंने पूरा दुगाना धीमी आवाज में गाया, वर्वारा पाव्लोव्ना ने कई बार उसकी गलतिया ठीक की, फिर उन्होंने उसे ऊंचे स्वर मे गाया और दो बार दोहराया · Mira la bianca lu... u... una. वर्वारा पाव्लोव्ना की आवाज मे वह पहलेवाली ताजगी नही रह गयी थी लेकिन उसने गीत को बडी होशियारी से निभाया। पानिन शुरू मे तो कुछ शर्माया और कुछ बेसुरा भी रहा, लेकिन जल्दी ही वह तरग मे आ गया. उसका प्रदर्शन भले ही सर्वथा दोषरहित न रहा हो, लेकिन इस कमी को उसने अपने कधे बिचकाकर और शरीर को भुमाकर और बीच-बीच मे सच्चे गायक की तरह अपना हाथ उठाकर पूरा कर दिया। वर्वारा पाव्लोव्ना ने थालबर्ग की दो-तीन चीजें बजाकर सुनायीं और एक फ़ासीसी गीत बडे नखरे से गाकर सुनाया। मार्या द्मीत्रियेव्ना को अपना अपार हर्ष व्यक्त करने के लिए शब्द न मिल सके, कई बार उनका जी लीजा को बुलवा लेने को चाहा, गेदेओनोव्स्की को भी प्रशसा करने के लिए शब्द नही मिल रहे थे, इसलिए वह बस अपना सिर ही हिलाता रहा, थोडी देर बाद उसने अचानक जम्हाई ली और वह उसे बडी मुश्किल से छिपा सका। उसकी जम्हाई वर्वारा पाव्लोव्ना की नजर से न चूक सकी, उसने सहसा पियानो की ओर पीठ फेर ली और बोली "Assez de musique comme ça,****

---

* मुझे ईर्ष्या होती है। (इतालवी)

** मुझे अपना हाथ दो। (इतालवी)

*** [illegible] वह पीला चांद। (इतालवी)

सगीत बस।" (फ्रांसीसी)

ढ बातें करें ' और यह कहकर उसने अपने हाथ बांध लिये।
ez de musique." पाशिन ने खुश होकर दोहराया और
ी बातचीत करने लगा – हल्की-फुल्की चुस्त और फ्रांसीसी
कुल वैसा ही है जैसा पेरिस के अच्छे से अच्छे दीवानखानों
है मार्या द्मीत्रियेव्ना ने उनकी बेतुकी नखरेदार बातें सुनते
। पाशिन को बेहद मज़ा आ रहा था उसकी आंखें चमक
उसके चेहरे पर मुस्कराहटों के फूल खिले हुए थे शुरू में
द्मीत्रियेव्ना को अपनी ओर घूरता हुआ देखकर वह अपने चेहरे
फेरता था अपनी भवें सिकोड़ लेता था और झटके के साथ
ता था . लेकिन बाद में वह उनको बिल्कुल भूल ही गया
ी तरह इस अर्ध-ऐहिक अर्ध-कलात्मक बातचीत का आनंद
खो गया। ऐसा लगता था कि वर्वारा पाव्लोव्ना अच्छी खासी
ट थी उसके पास हर चीज़ का जवाब मौजूद था वह कभी
नहीं करती थी उसे कभी किसी चीज़ के बारे में कोई शंका
ाती थी साफ नज़र आता था कि उसने हर तरह के चतुर
के साथ काफी और अक्सर बातचीत की थी। उसके सभी विचार
ावनाएं पेरिस के गिर्द घूमती थीं। पाशिन ने बातचीत का रुख
य की ओर मोड़ दिया पता यह चला कि पाशिन की तरह ही
ी केवल फ्रांसीसी की किताबें पढ़ती थी जार्ज सैंड को पढ़कर
झुंझलाहट होती थी बाल्ज़ाक का वह सम्मान करती थी हालांकि
उनसे ऊब जाती थी सू और स्क्राइब को उसकी राय में मानव
ाव की गहरी जानकारी थी और द्यूमा और फेवल को वह पूजती
लेकिन सच की बात पूछी जाये तो पॉल द कॉक को वह इन
े ज्यादा पसंद करती थी हालांकि उसने उसका नाम तक नहीं
ा। वास्तव में साहित्य में उसे विशेष रुचि नहीं थी। अगर किसी
ब में उसकी अपनी स्थिति की दूर की भी झलक दिखायी देती थी
वर्वारा पाव्लोव्ना बड़ी होशियारी से उससे साफ कतरा जाती थी
की बातचीत में प्रेम का कोई उल्लेख नहीं होता था सच तो यह
कि जहां तक भावावेशों का संबंध था उसकी बातचीत के मंद प्रवाह
कुछ हद तक संयम का ही रंग था विरक्ति और विनम्रता का।
शिन आपत्ति करता वह भी आपत्ति करती विचित्र बात थी
ट उसके होंठों से शब्द तो कटु आलोचना के निकलते थे जो कभी-

कभी कड़ी निंदा के शब्द भी होते थे, लेकिन इन शब्दों की प्र
मानो सहलाती थी और दुलार करती थी और उसकी आखें बोल
थी वे सुदर आखे वास्तव मे क्या कहती थी यह बताना कठिन
लेकिन उनका अभिप्राय धुधला-धुधला और कुछ मीठा-मीठा
रुचिकर होता था। पाशिन ने उनकी तह मे छिपे हुए अर्थ को
लेने की कोशिश की, उसने भी कोशिश की कि उसकी आखें बो
लेकिन उसने महसूस किया कि उसकी सारी कोशिशें बेकार थीं;
समझ गया कि विदेश की शेरनी होने के नाते वर्वारा पाव्लोव्ना
स्थान उससे बहुत बढ़-चढ़कर था, और इसलिए उसे कुछ बेचैनी
रही थी। वर्वारा पाव्लोव्ना की एक आदत थी कि जिस आदमी से
बात कर रही होती थी उसकी आस्तीन को हल्के से छू लेती थी;
क्षणिक सपर्कों का व्लादीमिर निकोलाइच पर अत्यत असातिजनक प्रभ
पड़ता था। वर्वारा पाव्लोव्ना मे यह गुण था कि वह बड़ी आसानी
लोगो मे घुल-मिल जाती थी; दो ही घंटे में पाशिन को ऐसा ल
जैसे वह उसे बरसो से जानता हो, जबकि लीज़ा, वह लड़की जि
वह वास्तव मे प्यार करता था, और जिसके सामने उसने अभी
शाम को ही विवाह का प्रस्ताव रखा था, मानो एक कुहरे मे छिप
हुई थी। चाय आयी; बातचीत और भी बेतकल्लुफ हो गयी। मा
पीत्रियेव्ना ने नौकर छोकरे को बुलाने के लिए घंटी बजायी और उ
कहा कि जाकर लीज़ा से कह दे कि अगर उसके सिर
दर्द ठीक हो गया हो तो वह नीचे आ जाये। लीज़ा के ना
की चर्चा होते ही पाशिन ने आत्म-त्याग का विषय छेड़ दिया और
सवाल उठाया कि आत्म-त्याग की प्रवृत्ति पुरुषों में अधिक होती
या स्त्रियों में। मार्या पीत्रियेव्ना फौरन उत्तेजित हो उठी, उन्हों
दावा किया कि आत्म-त्याग की प्रवृत्ति स्त्रियों में पुरुषों से अधि
होती है, कसम खाकर कहा कि वह इस बात को फौरन वहीं बै
बैठे साबित कर सकती है, वह अपने तर्कों के जाल में उलझती ग
और अत में एक पोच-सा उदाहरण देकर चुप हो गयी। वर्वारा पाव्लोव्ना
ने सगीत की एक किताब उठा ली, उसके पीछे अपना मुह छिपा लिय
और कुतर-कुतरकर केक खाते हुए उसने पाशिन की ओर झुकक
अपने होंठों पर और अपनी आखों में शातिपूर्ण मुस्कराहट लिये हु
आवाज़ में कहा, "Elle n'a pas inventé la poudre, la bonne

dame."* वर्वारा पाव्लोव्ना की ढिठाई पर पाशिन कुछ चौंक पड़ा और चकित रह गया, लेकिन उसे इस बात का ज़रा भी शक नहीं हुआ कि स्पष्टवादिता के इस अप्रत्याशित विस्फोट में स्वयं उसके प्रति कितना तिरस्कार भरा हुआ था, और मार्या द्मीत्रियेव्ना ने उसके प्रति जिस नेकी और लगन का परिचय दिया था, उसे जो खाने खिलाये थे और जो रकमें उधार दी थीं, उन सबको भुलाकर उसने (मनहूस आदमी ने) वैसी ही मुस्कराहट के साथ और उसी लहजे में जवाब दिया, "Je crois bien"** —नहीं, ऐसी भी नहीं, बल्कि "J'crois ben!"

वर्वारा पाव्लोव्ना उस पर एक मित्रता-भरी दृष्टि डालकर उठ खड़ी हुई। लीज़ा अंदर आयी, मार्फ़ा तिमोफ़ेयेव्ना ने उसे रोकने की बेकार कोशिश की वह अपनी इस अग्नि-परीक्षा को झेलने पर तुली हुई थी। वर्वारा पाव्लोव्ना उससे मिलने के लिए पाशिन के साथ आगे बढ़ी, जिसने फिर कूटनीतिज्ञों जैसी मुद्रा धारण कर ली थी।

"कैसी तबियत है?" उसने लीज़ा से पूछा।

"बेहतर हूं, शुक्रिया," उसने जवाब दिया

"हम लोग यहां थोड़ा-बहुत गा-बजा रहे थे [illegible] है कि तुमने वर्वारा पाव्लोव्ना का गाना नहीं सुना। बेहद अच्छा गाती हैं, en artiste consommée"***

"यहां आओ, ma chère,"**** मार्या द्मीत्रियेव्ना ने पुकारा।

वर्वारा पाव्लोव्ना ने बच्चे की तरह आदेश का पालन किया और जाकर उनके चरणों के पास एक छोटे-से स्टूल पर बैठ गयी। मार्या द्मीत्रियेव्ना ने उसे इसलिए बुला लिया था कि उनकी बेटी को पाशिन के साथ अकेले बात करने के लिए कम से कम एक क्षण का समय तो मिल जाये, वह अभी तक अपने मन में यह उम्मीद पाले हुए थीं कि उस लड़की का दिमाग ठिकाने आ जायेगा। इसके अलावा उन्हें एक विचार सूझा था, जिसे फौरन बता देने के लिए वह बहुत उत्सुक थीं।

---

* वह कोई ऐसा चमत्कार नहीं कर देगी। (फ़्रांसीसी)

** हां, मैं ऐसा सोचता हूं। (फ़्रांसीसी)

*** जैसे असली गायक हैं। (फ़्रांसीसी)

**** मम प्रिये। (फ़्रांसीसी)

"क्या तुम जानती हो," उन्होंने वर्वारा पाव्लोव्ना से कानाफूसी करते हुए कहा, "मै तुम्हारे और तुम्हारे पति के बीच समझौता करा देना चाहती हू; मै यह तो नही कहती कि मै कामयाब ही हो जाऊगी, लेकिन मै कोशिश कर सकती हू। वह मुझे बहुत मानता है, यह तो तुम जानती ही हो।"

वर्वारा पाव्लोव्ना ने अपनी नजरे धीरे-धीरे मार्या द्मीत्रियेव्ना की ओर उठायी और अपने हाथ बाधकर अत्यत सुदर मुद्रा धारण कर ली।

"आप मुझे उबार लेगी, ma tante," वह करुण स्वर मे बोली। "मेरी समझ मे नही आता कि आप मेरे साथ जो इतनी नेकी कर रही हैं उसका धन्यवाद आपको कैसे दू, लेकिन मैने फ्योदोर इवानिच के साथ बहुत अन्याय किया है; वह मुझे माफ नही कर सकते।"

"लेकिन क्या तुमने सचमुच .." मार्या द्मीत्रियेव्ना ने टोह लेते हुए पूछना शुरू किया।

"मुझसे न पूछिये," वर्वारा पाव्लोव्ना आखे झुकाकर बीच मे ही बोल पडी। "मेरी कच्ची उम्र थी और मै चचल थी। .. लेकिन उसकी आड लेकर मै अपने आपको माफ नही करना चाहती।"

"खैर, बहरहाल, कोशिश क्यो न कर देखे? हिम्मत न हारो," मार्या द्मीत्रियेव्ना ने जवाब दिया, और वह उसका गाल थपथपाने ही जा रही थी कि उन्होंने उसके चेहरे को एक नजर कुछ आशका के भाव से देखा। "लजीली तो खासी है," उन्होंने सोचा, "मगर है पक्की शेरनी।"

"क्या तुम कुछ बीमार हो?" इसी बीच पाशिन लीजा से कह रहा था। "जी हा, मेरी तबियत कुछ ठीक नही है।"

"मै तुम्हे समझता हू," काफी देर चुप रहने के बाद वह बोला। "हा मै तुम्हे समझता हू।"

"क्या मतलब आपका?"

"मै तुम्हे समझता हू," पाशिन ने जानते-बूझते दोहराया। उसे कहने के लिए बस यही शब्द मिले।

लीजा घबरा उठी, फिर उसने सोचा "क्या हो गया!" पाशिन रहस्यमय मुद्रा धारण करके चुप हो गया, और कठोर दृष्टि से एक ओर को देखने लगा।

"मै समझता हू कि ग्यारह बज चुका है," मार्या द्मीत्रियेव्ना

ने अनुमान लगाते हुए कहा।

मेहमान इस इशारे को समझकर चल देने को उठ खड़े हुए। वर्वारा पाव्लोव्ना से वादा ले लिया गया कि वह अगले दिन खाना खाने आयेगी और आदा को भी साथ लायेगी, गेदेओनोव्स्की ने, जो एक कोने में बैठे-बैठे लगभग ऊंघ गया था, उसे घर पहुंचा आने का प्रस्ताव रखा। पाशिन ने गंभीरता से सबके सामने बारी-बारी से झुककर विदा ली, और बाहर सीढ़ियों पर वर्वारा पाव्लोव्ना को गाड़ी पर चढ़ने के लिए सहारा देते समय उसने उसका हाथ कसकर दबाया और गाड़ी चल देने पर ऊंचे स्वर में कहा, "Au revoir!"* गेदेओनोव्स्की उसकी बगल में बैठा था, रास्ते भर वह अपने नाजुक पांव की नोक, मानो अनजाने में, उसके पांव पर टिकाये हुए उसे भरमाती रही; वह बौखला उठा और उसकी तारीफ के पुल बांधने लगा, वह खीसें निकालकर हंसती रही और जब सड़क की बत्ती की रोशनी गाड़ी में आती तो वह उसे आंखों से इशारे करती। उसने वाल्ट्ज की जो धुन बजायी थी वह उसके दिमाग में गूंज रही थी, उमंगों से उसके शरीर में सनसनी हो रही थी, वह कहीं भी हो बस अपनी कल्पना में रोशनियों की, नाचघर की, संगीत की धुन पर थिरकती हुई आकृतियों की तस्वीर बनाते ही उसकी नस-नस में जैसे आग दौड़ जाती थी, उसकी आंखों में अजीब-सा धुंधलापन छा जाता था, उसके होंठों पर मुस्कराहट खेलने लगती थी, और उसका सारा शरीर मद्यपानोन्मद के लालित्य के आभास से रोमांचित हो उठता था। घर पहुंचकर वर्वारा पाव्लोव्ना बड़ी फुर्ती से गाड़ी पर से उतरी—जिस तरह उसने यह काम किया था क्या उस तरह किसी शेरनी के अलावा कोई कर सकता था?—वह गेदेओनोव्स्की की ओर मुड़ी और ऐन उसके मुंह पर मस्ती-भरा ठहाका मारकर हंस पड़ी।

"बड़ी दिलचस्प हस्ती है," प्रिवी काउंसिलर साहब घर की ओर जाते हुए सोच रहे थे, जहां एक नौकर गिलास में दवा लिये उनका इंतजार कर रहा था। "शुक्र है कि मैं इज्जतदार आदमी हूं, लेकिन यह समझ में नहीं आया कि वह हंसी क्यों?"

मार्फा तिमोफेयेव्ना रात-भर लीजा के पलंग के सिरहाने बैठी रही।

---

* फिर मिलेंगे! (फ्रांसीसी)

उसने उस दूसरी सतानेवाली आकृति को, उस किसी तरह टाले न टलनेवाले दुष्ट, मोहक और घृणास्पद चेहरे को दूर हटा दिया था। बूढ़े आतोन ने देखा कि उसके मालिक कुछ उखडे-उखडे है, दो-एक बार दरवाजे के पीछे और दो-एक बार चौखट पर आह भरने के बाद आखिरकार वह साहस बटोरकर उनके पास गया और उन्हे कोई गरम चीज पी लेने की सलाह दी। लाव्रेत्स्की उस पर बरस पडा उससे निकल जाने को कहा और फिर उससे माफी माग ली, लेकिन इससे आतोन की उदासी और भी बढ गयी। लाव्रेत्स्की के लिए बैठके मे और ज्यादा देर टिकना नामुमकिन हो गया था, ऐसा लग रहा था कि दीवार पर टगी हुई तस्वीर मे से उसके परदादा बडे तिरस्कार से अपने इस कमजोर वशज को देख रहे थे। "छि! बेचारा मछली का बच्चा!" उनका विकृत मुह उसकी हसी उडाता हुआ लग रहा था। "चलो, उठो," उसने अपने आपसे कहा "ऐसा तो नही हो सकता कि मै अपने आपको बिखर जाने दू, इस खरोच से हार मान लू?" (युद्ध मे बुरी तरह घायल होनेवाले सिपाही हमेशा अपने जख्मो को "खरोच" कहते है। अपने आपको धोखा दिये बिना आदमी इस पृथ्वी पर रह नही सकता।) "आखिर क्या मै पिनपिनानेवाला लडका हू? अच्छी बात है मैने बहुत पास से देखा, सुख का जीवन मे एक ही बार मिलनेवाला अवसर लगभग मेरे हाथ मे आ गया था—और वह अचानक आखो से ओझल हो गया, लाटरी मे भी तो यही होता है, पहिया थोडा-सा और घूम जाता तो भिखारी धनवान बन जाता। अगर ऐसा नही होनेवाला है तो नही होनेवाला है, बस इतनी ही बात है। मै दात भीचकर अपने काम मे जुट जाऊगा और अपने आपको चुप रहने पर मजबूर करूगा, यह कोई पहली बार तो है नही कि मुझे अपने आपको सभालना पडा है। मै भाग क्यो खडा हुआ, मै शुतुरमुर्ग की तरह अपनी चोच झाडी मे छिपाये यहा क्या कर रहा हू? अपने किये का नतीजा भुगतने की मुझमे हिम्मत नही है?—बकवास! आतोन!" उसने जोर से पुकारा, "घोडागाडी [illegible] फौरन लाओ। हा," उसने फिर सोचा, "मुझे अपने [illegible] रहने पर मजबूर करना होगा, [illegible]।"

इस तरह की दलीलो से [illegible] कोशिश की, लेकिन पीडा [illegible]

४१

नाजेन्स्की डेढ़ दिन वसील्येव्स्कोये में रहा और उसने अपना ज्यादातर वक्त आस-पास के इलाके में टहलने में बिताया। वह किसी एक जगह ज्यादा देर नहीं टिक सकता था. उसका हृदय पीड़ा से व्यथित था, वह निरंतर उग्र और अशक्त भावावेगों की सारी यातनाएं झेल रहा था। उसे वे भावनाएं याद आयीं जो गांव पहुंचने के अगले ही दिन उसके हृदय में उमड़ आयी थीं, उसे वे योजनाएं याद आयीं जो उसने उस समय बनायी थीं, और उसे अपने आप पर बेहद गुस्सा आया। जिस चीज को वह अपना कर्तव्य जानता था, अपने भविष्य का एकमात्र काम समझता था, उससे कौन-सी चीज खींचकर उसे दूर हटा ले गयी? सुख की प्यास – एक बार फिर सुख की प्यास! "लगता है कि मिखालेविच ठीक कहता था," उसने सोचा। "तुम दूसरी बार जीवन के सुख का स्वाद लेना चाहते थे," वह अपने आपसे कहता रहा, "तुम यह भूल चुके हो कि जब यह एक बार भी किसी आदमी को नसीब होता है तब भी वह उसके लिए एक विलास होता है, एक ऐसा वरदान जिस पर उसका कोई उचित अधिकार नहीं होता। तुम कहते हो वह पूरा नहीं था, वह छलावा था? अच्छी बात है, तो साबित करो कि तुम्हें पूरा और सच्चा सुख पाने का अधिकार है! अपने चारों ओर देखो – कौन है जिसे सुख नसीब है, जो सुखी है? उस किसान को देखो जो दरांती लिये चरागाह की ओर जा रहा है – शायद वह अपने भाग्य से सन्तुष्ट है? अच्छा, यह बताओ क्या तुम उससे जगह बदलने को तैयार होगे? अपनी मां के बारे में सोचो उसने जिंदगी से जो कुछ मांगा था वह कितना थोड़ा था, – और उसकी झोली में डाला क्या गया? ऐसा लगता है कि तुमने पान्शिन से कहा था कि तुम रूस जमीन जोतने आए हो तो तुम [illegible] डींग मार रहे थे, तुम अपने बुढ़ापे में लड़कियों [illegible] के लिए आये हो। जैसे ही तुम्हें अपने छुटकारा पाने की खबर मिली तुमने सब कुछ छोड़-छाड़ दिया, तुम दुनिया की हर चीज को भूल [illegible] और स्कूली लड़के की तरह तितली के पीछे भाग पड़े। [illegible] दिमाग ने इन विचारों के बीच सोचा की आकृति बार-बार [illegible] थी, उसने कोशिश करके उसे दूर हटा दिया, [illegible]

उस दूसरी सतानेवाली आकृति को, उस किसी तरह टाले न
वाले दुष्ट, मोहक और घृणास्पद चेहरे को दूर हटा दिया था।
आतोन ने देखा कि उसके मालिक कुछ उखड़े-उखड़े है, दो-एक
दरवाजे के पीछे और दो-एक बार चौखट पर आह भरने के बाद
रकार वह साहस बटोरकर उनके पास गया और उन्हे कोई गरम
पी लेने की सलाह दी। लाव्रेत्स्की उस पर बरस पडा, उससे
ल जाने को कहा और फिर उससे माफी माग ली, लेकिन इससे
ोन की उदासी और भी बढ गयी। लाव्रेत्स्की के लिए बैठके मे
ज्यादा देर टिकना नामुमकिन हो गया था ऐसा लग रहा था
दीवार पर टगी हुई तस्वीर मे से उसके परदादा बडे तिरस्कार से
े इस कमजोर वशज को देख रहे थे। "छि! बेचारा मछली
बच्चा!" उनका विकृत मुह उसको हसी उडाता हुआ लग रहा
। "चलो, उठो," उसने अपने आपसे कहा, "ऐसा तो नही हो
ता कि मै अपने आपको बिखर जाने दू, इस खरोच से हार
र लू?" (युद्ध मे बुरी तरह घायल होनेवाले सिपाही हमेशा अपने
मो को "खरोच" कहते है। अपने आपको धोखा दिये बिना आदमी
पृथ्वी पर रह नही सकता।) "आखिर क्या मै पिनपिनानेवाला
ता हू? अच्छी बात है मैने बहुत पास से देखा, सुख का जीवन
एक ही बार मिलनेवाला अवसर लगभग मेरे हाथ मे आ गया था–
र वह अचानक आखो से ओझल हो गया, लाटरी मे भी तो यही
ता है, पहिया थोडा-सा और घूम जाता तो भिखारी धनवान बन जाता
र ऐसा नही होनेवाला है तो नही होनेवाला है बस इतनी
त है। मै दात भीचकर अपने काम मे जुट जाऊगा और अपने आप
र रहने पर मजबूर करूगा यह कोई पहली बार तो है नही
के अपने आपको सभालना पडा है। मै भाग क्या खडा हुआ
तुरमुर्ग की तरह अपनी चोच झाडी मे छिपाये यहा क्या कर रहा
? अपने किये का नतीजा भुगतने की मुझमे हिम्मत नही है?
बकवास! आतोन!" उसने जोर से पुकारा "घोडागाडी जुतवाक
रन लाओ। हा उसने फिर सोचा 'मुझे अपने आपको
हने पर मजबूर करना होगा मुझे सभल जाना होगा।
इस तरह की दलीलो से लाव्रेत्स्की ने अपनी पीडा कम करने
कोशिश की अधिक पीडा गहरी और तीखी थी और अत्यधिक

वाली सीढ़िया सीधी उनकेवाले हिस्से मे जाकर निकलती थी। उसने यही रास्ता अपनाने का फैसला किया। सयोग ने उसका साथ दिया, अहाते मे ही उसे शूरोच्का मिल गयी जो उसे मार्फा तिमोफेयेव्ना के पास ले गयी। उनकी आदत के खिलाफ उसने उन्हे अकेला पाया, बिना टोपी लगाये दबी-सिकुडी और दोनो हाथो मे अपना सीना जकडे एक कोने मे बैठी थी। लाव्रेत्स्की को देखकर वह बहुत परेशान हुई, जल्दी से उठ खडी हुई और कमरे मे इधर-उधर इस तरह टहलने लगी जैसे अपनी टोपी ढूढ रही हो।

"अरे, तुम हो, तुम हो," उन्होने उससे नजरे बचाते हुए और कमरे मे इधर-उधर चीजो को खखोलते और बुडबुडाते हुए कहना शुरू किया, "आओ, आओ, कैसे हो? हा, तो! क्या किया जाये? कल कहा थे तुम? तो वह आ गयी, हा, जाहिर है। खैर, किया ही क्या जा सकता है।"

लाव्रेत्स्की कुर्सी मे धसकर बैठ गया।

"हा, बैठ जाओ, बैठ जाओ," वृद्ध महिला कहती रही। "सीधे ऊपर ही आ गये? अरे, हा, ठीक तो है। अच्छा? तो तुम मुझसे मिलने आये हो? शुक्रिया।"

वृद्धा ने बोलना बद कर दिया, लाव्रेत्स्की की समझ मे नही आ रहा था कि उनसे क्या कहे, लेकिन वह उसकी बात समझ गयी।

"लीजा हा, लीजा अभी थोडी देर पहले तो यही थी," वह अपने बटुए की डोरी बाधती और खोलती हुई कहती रही। "उसका जी अच्छा नही है। शूरोच्का, कहा हो तुम? यहा आओ, बेटी, आखिर तुम चुपचाप क्यो नही बैठ सकती? मेरे भी सिर मे दर्द हो रहा है। मै समझती हू कि यह सब कुछ उस गाने-बजाने की वजह से है।"

"कौन-सा गाना, बुआजी?"

"अरे, वे न जाने कबसे अलाप रहे हैं – अरे, क्या कहते हैं उन्हे दुगाने। और सारे के सारे इटैलियन मे ची-ची और चा-चा, जैसे चिडिया बोलती है। वे लोग ऐसे-ऐसे सुर निकालते है कि सारे दातो मे दर्द होने लगे। वही पाशिन और तुम्हारी जोरू। और कितनी जल्दी दोनो मे गहरी छनने लगी, कोई तकल्लुफ नही, जैसे रिश्तेदार हो। मगर सोचो तो, कुत्ता भी अपने रहने का ठिकाना ढूढता है। जब तक

वाली सीढ़िया सीधी उनकेवाले हिस्से में जाकर निकलती थी। उसने यही रास्ता अपनाने का फैसला किया। सयोग ने उसका साथ दिया, अहाते में ही उसे शूरोच्का मिल गयी जो उसे मार्फा तिमोफेयेव्ना के पास ले गयी। उनकी आदत के खिलाफ उसने उन्हें अकेला पाया बिना टोपी लगाये दबी-सिकुड़ी और दोनो हाथो से अपना सीना जकड़े एक कोने में बैठी थी। लाव्रेत्स्की को देखकर वह बहुत परेशान हुई, जल्दी में उठ खड़ी हुई और कमरे में इधर-उधर इस तरह टहलने लगी जैसे अपनी टोपी ढूढ़ रही हो।

"अरे, तुम हो, तुम हो," उन्होंने उससे नजरे बचाते हुए और कमरे में इधर-उधर चीजो को खखोलते और बुडबुडाते हुए कहना शुरू किया, "आओ, आओ, कैसे हो? हा, तो! क्या किया जाये? कल कहा थे तुम? तो वह आ गयी, हा, जाहिर है। खैर, किया ही क्या जा सकता है।"

लाव्रेत्स्की कुर्सी मे धमकर बैठ गया।

"हा, बैठ जाओ, बैठ जाओ," वृद्ध महिला कहती रही। "सीधे ऊपर ही आ गये? अरे, हा, ठीक तो है। अच्छा? तो तुम मुझसे मिलने आये हो? शुक्रिया।"

वृद्धा ने बोलना बद कर दिया, लाव्रेत्स्की की समझ में नही आ रहा था कि उनसे क्या कहे, लेकिन वह उसकी बात समझ गयी।

"लीजा हा, लीजा अभी थोडी देर पहले तो यही थी" वह अपने बटुए की डोरी बाधती और खोलती हुई कहती रही। "उसका जी अच्छा नही है। शूरोच्का, कहा हो तुम? यहा आओ बेटी, आखिर तुम चुपचाप क्यो नही बैठ सकती? मेरे भी सिर मे दर्द हो रहा है। मै समझती हू कि यह सब कुछ उस गाने-बजाने की वजह से है।"

"कौन-सा गाना, बुआजी?"

"अरे, वे न जाने कबसे अलाप रहे है – अरे क्या कहते है उन्हें दुगाने। और सारे के सारे इटैलियन में ची-ची और चा-चा जैसे चिड़िया बोलती है। वे लोग ऐसे-ऐसे सुर निकालते है कि सारे दातो मे दर्द होने लगे। वही पाशिन और तुम्हारी बीवी और कितनी जल्दी दोनो में गहरी छनने लगी, कोई तकल्लुफ नही, जैसे रिश्तेदार हो। मगर सोचो तो, कुत्ता भी अपने रहने का ठिकाना ढूढ़ता है। जब तक

पास लोग मौजूद हों जो उसे दुतकारने को तैयार न हों तब तक वह भला कैसे मर सकता है।"

"फिर भी मुझे कभी यक़ीन न आता," लाव्रेत्स्की ने अपना मत प्रकट करते हुए कहा, "बड़ी हिम्मत की ज़रूरत है।"

"नहीं, बेटा हिम्मत की नहीं, बल्कि हिसाब बिठाने की। भगवान उसे क्षमा करे! सुना है तुम उसे मारिको भेज रहे हो?"

"जी हां, मैं वह ज़मीन-जायदाद वग़ैरा पाव्लोव्ना के इस्तेमाल के लिए दिये दे रहा हूं।"

"पैसा भी मांगा है उसने?"

"अभी तक तो नहीं।"

"ख़ैर, उसमें भी देर नहीं लगेगी। लेकिन ठीक से तुम्हारी सूरत तो मैंने अभी देखी, बेटा। तुम बीमार तो नहीं हो न?"

"जी नहीं।"

"शूरोच्का!" मार्फ़ा तिमोफ़ेयेव्ना ने पुकारकर कहा। "जाकर येलिज़ावेता मिख़ाइलोव्ना को बता दो – नहीं, मेरा मतलब है, उससे जाकर पूछो वह नीचे है न?"

"हां।"

"अच्छा, उससे जाकर पूछो कि उसने मेरी किताब का क्या किया। उसे मालूम होगा।"

"बहुत अच्छा।"

वृद्धा फिर कमरे मे इधर-उधर फिरने लगी, अल्मारी की दराज़े खोलने और बंद करने लगी। लाव्रेत्स्की निश्चल बैठा रहा।

यकायक सीढ़ियों पर हल्के क़दमों की आहट सुनायी दी और लीज़ा अंदर आयी।

लाव्रेत्स्की उठा और उसने झुककर अभिवादन किया, लीज़ा दरवाज़े पर ही ठिठक गयी।

"लीज़ा, बेटी लीज़ा," मार्फ़ा तिमोफ़ेयेव्ना ने बड़बड़ाते हुए कहा, "मेरी किताब कहां है? तुमने किताब का आख़िर किया क्या?"

"कौन-सी किताब, बुआजी?"

"हे भगवान, वही किताब! मगर मैंने तुम्हें इसलिए नहीं बुलवाया। ख़ैर, कोई बात नहीं। नीचे क्या हो रहा है? देखो, फ़्योदोर आया है। तुम्हारे सिर का दर्द कैसा है?"

"ठीक है।"

"तुम तो हमेशा ही कहती हो ठीक है। वहा नीचे क्या हो रहा है–फिर वही गाना-बजाना?"

"नही, वे लोग ताश खेल रहे हैं।"

"ठीक है, वह हरफनमौला है। शूरोच्का, तेरा बाग मे जाकर खेलने को जी चाह रहा है न। जा, भाग जा।"

"जी नही, मार्फा तिमोफेयेव्ना। "

"चलो, बहस न करो, भाग जाओ। नस्तास्या कार्पोव्ना बाग मे अकेली हैं, जाओ, उनका साथ दो। चलो, बडी अच्छी लडकी है।" शूरोच्का चली गयी। "कमबख्त मेरी टोपी कहा है? अब कहा चली गयी वह?"

"मैं ढूढे देती हू," लीज़ा ने कहा।

"तुम अपनी जगह बैठी रहो। मेरी टागे अभी चलती है। मैं समझती हू मेरे सोने के कमरे मे होगी।"

लाव्रेत्स्की को कनखियो से देखती हुई मार्फा तिमोफेयेव्ना बाहर निकल गयी। उन्होने दरवाज़ा खुला छोड दिया था, लेकिन अचानक वापस आकर उसे बद कर दिया।

लीज़ा अपनी कुर्सी पर पीछे टेक लगाकर बैठ गयी और धीरे-धीरे उसने अपना चेहरा दोनो हाथो से ढक लिया, लाव्रेत्स्की अपनी जगह से नही हिला।

"तो हमारी अगली मुलाकात इस तरह होनी थी,' उसने चुप्पी तोडते हुए कहा।

लीज़ा ने अपने हाथ चेहरे पर से हटा लिये।

"हा," लीज़ा ने धीमी आवाज़ मे कहा। "हमे बहुत जल्दी सज़ा मिल गयी।"

"सज़ा," लाव्रेत्स्की ने बुदबुदाकर कहा। "सज़ा तुम्हे किस बात की मिली है?"

लीज़ा ने आखे उठाकर उसकी ओर देखा। उनमे न व्यथा थी न चिंता; वे सिकुडी और मुरझायी हुई लग रही थी। लीज़ा के चेहरे और थोडे-से खुले हुए होटो पर मुर्दनी-सी छायी हुई थी।

लाव्रेत्स्की का हृदय दया और प्रेम से मसोस उठा।

"तुमने मुझे लिखा था सब कुछ खत्म हो चुका है," उसने क्षीण

कहा। "हम दोनो कितने सुख रह सकते थे!"

लीज़ा ने एक बार फिर उसकी ओर देखा।

"अब आप खुद ही देख लीजिये, फ्योदोर इवानिच, खुशी का दारोमदार हम लोगो पर नही बल्कि भगवान पर है।"

"हा, क्योंकि तुम। .."

बगलवाले कमरे का दरवाज़ा जल्दी से खुला और मार्फा तिमोफेयेव्ना हाथ मे टोपी लिये हुए फिर दिखायी दी।

"मिल गयी, कमबख्त," उन्होने लाव्रेत्स्की और लीज़ा के बीच मे खड़े होकर कहा। "शायद मैं ही इधर-उधर रखकर भूल गयी थी। बुढापे मे आदमी का यही हाल हो जाता है, हाय! ज़रा सोचो तो, जवानी भी कुछ इससे ज्यादा अच्छी नही होती। अपनी बीवी के साथ तुम भी लाव्रिकी जा रहे हो?" उन्होने फ्योदोर इवानिच की ओर मुडकर इतना और पूछ लिया।

"उसके साथ लाव्रिकी? मैं? मालूम नही," उसने कुछ देर रुककर बुदबुदाकर कहा।

"नीचे जाओगे तुम?"

"आज नही।"

"खैर, तुम जैसा ठीक समझो, मगर, लीज़ा, तुम्हे नीचे जाना चाहिये। हे भगवान, मैंने अभी तक बुलफिच को दाना नही दिया। ज़रा रुको, मैं अभी। "

और मार्फा तिमोफेयेव्ना अपनी टोपी पहने बिना जल्दी से बाहर निकल गयी।

लाव्रेत्स्की जल्दी से बढकर लीज़ा के पास आ गया।

"लीज़ा," उसने विनयपूर्वक कहना शुरू किया, 'हम हमेशा के लिए अलग हो रहे हैं, मेरा दिल टुकडे-टुकडे हुआ जा रहा है – विदा होते वक्त अपना हाथ तो मुझे दो।"

लीज़ा ने सिर ऊपर उठाया। उसने थकी-थकी धुधली आखो से उसे देखा।.

"नही," वह बुदबुदाकर बोली, और अपना आगे बढा हुआ हाथ उसने पीछे खीच लिया। "नही, लाव्रेत्स्की" (उसने पहली बार यह नाम लिया था), "मैं आपको अपना हाथ नही दूगी। फायदा क्या है? चले जाइये, मैं आपसे विनती करती हू। आप जानते है कि मैं आपसे

से, सभी लोग मेरी इज्जत करते हैं, और दुनिया की कोई ताकत मुझसे कोई ऐसा काम नहीं करवा सकती जो मर्यादा के खिलाफ हो या अनुचित हो। हालांकि मुझे अंदेशा था कि तुम इस बात से नाराज होगे, लेकिन, फ्योदोर इवानिच उससे मिलने से इकार कर देने को मेरा दिल राजी नहीं हुआ . बहरहाल, वह मेरी रिश्तेदार है – तुम्हारे रिश्ते से; तुम अपने आपको मेरी जगह रखकर देखो , मुझे क्या अधिकार था कि उसके लिए अपने दरवाजे बंद कर देती – ठीक बात है न ?"

"आपको इसकी वजह से फिक्र करने की जरूरत नहीं है, मार्या द्मीत्रियेव्ना," लाव्रेत्स्की ने जवाब दिया। "आपने ठीक ही किया; मैं जरा भी नाराज नहीं हूं। वर्वारा पाब्लोव्ना को उसकी जान-पहचानवालों के बीच उठने-बैठने से रोकने का मेरा कोई इरादा नहीं है; मैं आज इधर सिर्फ इसलिए नहीं आया कि मैं उससे नहीं मिलना चाहता था – बस और कोई बात नहीं है।"

"अरे, कितनी खुशी हुई मुझे तुम्हारे मुंह से यह बात सुनकर, फ्योदोर इवानिच," मार्या द्मीत्रियेव्ना ने खुश होकर कहा, "हालांकि मैं मानती हूं कि तुम्हारे उदार स्वभाव को जानते हुए मुझे हमेशा तुमसे यही उम्मीद थी। रहा मेरे चिंता करने का सवाल – तो वह कोई ऐसी ताज्जुब की बात नहीं है, क्योंकि मैं भी तो औरत हूं और मां हूं। और तुम्हारी बीबी, तुम जानते हो. जाहिर है, मैं तुम्हारा न्याय नहीं कर सकती – मैंने खुद उससे यही बात कही; लेकिन वह बेचारी ऐसी भली है, सचमुच जी खुश हो जाता है उससे मिलकर। मेरी समझ में नहीं आता कि ऐसा कैसे हो सकता है कि कोई उसे पसंद न करे।"

लाव्रेत्स्की व्यंगपूर्वक मुस्कराया और अपनी हैट से खेलने लगा।

"और, फ्योदोर इवानिच, इसके अलावा मैं तुमसे यह भी कहना चाहती थी," मार्या द्मीत्रियेव्ना उसके और पास आकर अपना बर्खा चलाती रही, "काश तुमने देखा होता कि कैसी विनम्रता से वह पेश आती है, कैसा अदब करती है वह! सचमुच दिल पसीज उठता है। और अगर तुम सुनते कि वह तुम्हारे बारे में कैसे बात करती है! कहती है: सारा दोष मेरा है, मैंने उनकी कद्र नहीं पहचानी, वह कहती है; वह आदमी नहीं है, वह कहती है, फरिश्ता है, फरिश्ता। सचमुच, यही कहती है वह – फरिश्ता। इतना पछतावा है उसे... कसम

खाकर कहती हू कि मैंने अपनी जिंदगी मे किसी को इतना पछताते नही देखा।"

"माफ कीजियेगा, मार्या द्मीत्रियेव्ना, मैं बस एक बात जानना चाहता हू," लाव्रेत्स्की ने दबी जबान से कहा, "मैंने सुना है कि वर्वारा पाव्लोव्ना यहा गा रही थी—क्या वह उस हालत मे गा रही थी जब उसे पछतावा हो रहा था, क्यो?   "

"अरे नही, ऐसी बात कहना बडी ज्यादती है। उसने तो बस मुझे खुश करने के लिए गाया और पियानो बजाया, क्योकि मैंने बार बार उससे अनुरोध किया, बल्कि लगभग उसे हुक्म दिया। वह उदास लग रही थी, बेहद उदास, तो मैंने सोचा, इसका जी बहलाने को मैं क्या करू—और फिर मैंने यह भी सुन रखा था कि उसमे यह कमाल का गुण भी है। मैं तुम्हे यकीन दिलाती हू, फ्योदोर इवानिच, वह बिल्कुल टूट चुकी है, तुम्हारा जी चाहे तो सेर्गेई पेत्रोविच से पूछ लो—एक ऐसी औरत जिसका दिल टूट चुका है, tout-à-fait*, सचमुच, तुम जानते ही हो।"

लाव्रेत्स्की ने बस अपने कधे बिचका दिये।

"और फिर वह तुम्हारी आदा कैसी नन्ही फरिश्ता जैसी है, कैसी प्यारी बच्ची है। इतनी भोली, और इतनी होशियार बच्ची है कि बस क्या कहू, और फ्रासीसी तो बहुत ही बढिया बोलती है, और रूसी भी समझती है—मुझे बुआ कहा उसने। और तुम तो जानते ही हो, वह अपनी उम्र के दूसरे बच्चो की तरह शर्मीली नही है, बिल्कुल नही। और कितनी मिलती है तुमसे, फ्योदोर इवानिच, कि बस कमाल है। वही आखे, वही भवे मतलब यह कि बिल्कुल तुम्हारी नकल है। मुझे छोटे बच्चो मे कोई खास लगाव नही है यह मै मानती हू मगर तुम्हारी छोटी बच्ची पर तो बस मैं अपना दिल लुटा बैठी हू।"

"मार्या द्मीत्रियेव्ना," लाव्रेत्स्की ने उनकी बात काटते हुए कहा, "क्या मैं आपसे पूछ सकता हू कि मुझे यह सब कुछ बताकर आप चाहती क्या है?"

"चाहती क्या हू?" मार्या द्मीत्रियेव्ना ने, एक बार ओ-डि-कोलोन फिर सूघा और एक घूट पानी पिया। "अरे, मैं तो यह सब कुछ तुम्हे

---

* बिल्कुल। (फ्रासीसी)

इसलिए बता रही हू, फ्योदोर इवानिच, कि... मैं बहरहाल तुम्हारी रिश्तेदार हू, मुझे तुमसे गहरी दिलचस्पी है मैं जानती हू कि तुम्हारा दिल बिल्कुल खरा है! सुनो, mon cousin, मैं बहरहाल अनुभवी औरत हू और मैं कोई ऊटपटाग बात नही कहूगी: उसे माफ कर दो, अपनी बीवी को माफ कर दो।" मार्या पीोत्रियेव्ना की आखो मे अचानक आंसू डबडबा आये। "ज़रा सोचो उसकी कच्ची उम्र, उसकी कच्ची समझ शायद कोई बुरी मिसाल रही हो उसकी मा ऐसी नही थी जो उसे ठीक रास्ते पर लगा सकती। उसे माफ़ कर दो, फ्योदोर इवानिच, उसे काफी सज़ा मिल चुकी है।"

आसू मार्या पीोत्रियेव्ना के गालो पर बहने लगे, उन्होंने उनको पोछा नही उन्हे रोने मे मज़ा आता था। लाव्रेत्स्की ऐसे बैठा था मानो काटो पर बैठा हो। हे भगवान," उसने सोचा, "कैसी मुसीबत है, कैसा बुरा दिन रहा है आज का!"

"तुमने कोई जवाब नही दिया," मार्या पीोत्रियेव्ना ने फिर कहना शुरू किया "क्या मतलब समझू मै इसका? क्या तुम सचमुच इतने निर्दयी हो सकते हो? नही मै यह नही मान सकती। मुझे लगता है कि मेरी बात तुम्हारी समझ मे आ गयी है। फ्योदोर इवानिच, भगवान तुम्हे तुम्हारी उदारता का फल देगा, और अब अपनी बीवी को मेरे हाथो से स्वीकार करो।"

लाव्रेत्स्की अनायास ही अपनी कुर्सी से उठ खड़ा हुआ, मार्या पीोत्रियेव्ना भी उठी और फुर्ती से एक परदे के पीछे जाकर वार्वारा पाव्लोव्ना का हाथ अपने हाथ मे पकड़े हुए वापस आयी। पीली और निर्जीव, आंखे झुकाये वह [illegible] कोई विचार या अपनी कोई इच्छा-शक्ति रह ही न गयी हो – और उसने पूरी तरह अपने आपको मार्या पीोत्रियेव्ना के हाथों में सौंप दिया हो।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

म बात से तुम और ज्यादा नाराज हो जाओगे, मैंने इसकी बात
ही नही, मैं तुम्हे इससे ज्यादा अच्छी तरह जानती हू। आओ
बीवी को मेरे हाथो मे स्वीकार करो आओ वर्वारा इगो
घुटनो के बल बैठ जाओ (यह कहकर उन्होंने उसकी बाह को
ा दिया), और मेरा आशीर्वाद।

"एक मिनट ठहरिये, मार्या दीत्रियेव्ना" लाव्रेत्स्की ने उनकी
काटते हुए धीमे लेकिन भीषण स्वर मे कहा मैं दावे के साथ कह
ा हू कि आपको नाटक पैदा करने का बडा शौक है (लाव्रेत्स्की
कहना गलत नही था मार्या दीत्रियेव्ना मे नाटकीय प्रभाव पैदा
ा का स्कूली लडकियोंवाला जोश अभी तक बाकी था) आपको
मे मजा आता है लेकिन दूसरे लोगो को उससे बहुत तकलीफ हो
ती है। लेकिन, मैं आपसे बाते करनेवाला नही हू इस सीन मे
य पात्र आप नही हैं। आप मुझसे क्या चाहती हैं मेम साहब
ने अपनी बीवी की ओर मुडते हुए कहा। तुम्हारे लिए मै जो
ड भी कर सकता था क्या वह मै कर नही चुका हू ' मुझे यह बताने
कोशिश न करो कि यह सारा ढोंग तुम्हारा खडा किया हुआ नही
, मैं तुम्हारी बात पर यकीन नही करूगा – और तुम जानती हो कि
तुम्हारा यकीन नही कर सकता। फिर तुम चाहती क्या हो तुम
नाक औरत हो – तुम किसी मतलब के बिना कुछ भी नही करती।
म्हे यह समझ लेना चाहिये कि जिस तरह मै पहले तुम्हारे साथ रहता
उस तरह रहने का कोई सवाल नही है इसलिए नही कि मै तुमसे
ाराज हू, बल्कि इसलिए कि अब मै वह आदमी नही रहा जो पहले
ा। जिस दिन तुम वापस आयी थी उसके अगले ही दिन मैंने यह बात
ुम्हे बता दी थी और अपने दिल की गहराई मे तुम भी मेरी इस
ात को ठीक समझती होगी। लेकिन तुम दुनिया की नजरो मे फिर से
अपने लिए वही पहलेवाली जगह बनाना चाहती हो तुम्हारे लिए मेरे
घर मे रहना ही काफी नही है तुम एक ही घर मे मेरे साथ रहना
चाहती हो – है न यही बात '

'मै तो बस यह चाहती हू कि आप मुझे माफ कर दे' वर्वारा
पाव्लोव्ना ने आंखे उठाये बिना ही कहा।

वह चाहती है कि तुम उसे माफ कर दो मार्या दीत्रियेव्ना ने
दोहराया।

"और मेरी खातिर नही, बल्कि आदा की खातिर," वर्वारा पाव्लोव्ना ने दबे स्वर मे कहा।

"उसकी खातिर नही, बल्कि आदा की खातिर," मार्या द्मीत्रियेव्ना ने फिर उसी के शब्दो को दोहराया।

"बहुत अच्छी बात है। तो यही चाहती हो न तुम?" लाव्रेत्स्की ने कोशिश करके कहा। "अच्छी बात है, मैं यह भी मान लेता हू।"

वर्वारा पाव्लोव्ना ने उसे पैनी दृष्टि से देखा, और मार्या द्मीत्रियेव्ना भाव-विह्वल होकर बोली, "चलो, भगवान की कृपा से," और उन्होंने एक बार फिर वर्वारा पाव्लोव्ना को बाह पकडकर खीचा।

"अब मेरे हाथो से स्वीकार करो। . "

"एक मिनट ठहरिये, मैं आपको बताता हू," लाव्रेत्स्की ने टोकते हुए कहा। "मैं तुम्हारे साथ रहने को तैयार हू, वर्वारा पाव्लोव्ना," वह कहता रहा, "मतलब यह कि मैं तुम्हे लाव्रिकी ले जाऊगा और जब तक मैं बर्दाश्त कर पाऊगा तब तक वहा तुम्हारे साथ रहूगा, फिर मैं चला जाऊगा और कभी-कभी आता रहूगा। देखो, मैं तुम्हे धोखा नही देना चाहता, लेकिन मुझसे इससे ज्यादा कुछ करने को न कहो। तुम खुद हसोगी अगर मैं अपनी इन सम्मानित बहन की बात ज्यो की त्यो मानकर तुम्हे अपने सीने से लगा लूं और तुम्हें यकीन दिलाने लगू कि जो कुछ हुआ है वह दरअसल नहीं हुआ, कि कटे हुए पेड मे फिर फूल आ सकते हैं। लेकिन इतनी बात मेरी समझ मे आती है होनी के आगे आदमी को सिर झुका देना चाहिये। तुम इन शब्दो को उस अर्थ मे नही समझोगी जो इनसे मेरा मतलब है . लेकिन कोई बात नही। मैं एक बार फिर कहता हू, मैं तुम्हारे साथ रहूगा . नही, यह वादा मैं नही कर सकता मैं तुमसे सुलह-समझौता कर लूगा, मैं एक बार फिर तुम्हे अपनी बीवी मान लूगा।"

"इस बात पर कम से कम उससे हाथ तो मिला लो," मार्या द्मीत्रियेव्ना ने कहा, जिनके आसू इतनी ही देर मे सूख चुके थे।

"मैंने अभी तक वर्वारा पाव्लोव्ना को धोखा नही दिया है," लाव्रेत्स्की ने जवाब दिया। "वह मेरी बात का विश्वास करेगी। मैं उसे लाव्रिकी पहुचा आऊगा; और याद रखना, वर्वारा पाव्लोव्ना, जैसे ही तुम लाव्रिकी छोडकर चली जाओगी वैसे ही यह करार खत्म समझा जायेगा। और अब, आपकी इजाजत से, मैं चलूगा।"

वह झुककर दोनो महिलाओ से विदा लेकर चला गया।

"तुम इसे अपने साथ नही ले जा रहे हो, मार्या द्मीत्रियेव्ना पीछे से पुकारकर कहा।

"जाने दीजिये," वर्वारा पाव्लोव्ना ने धीमी आवाज मे उनसे कहा और फौरन उनके गले से लिपट गयी, उन पर कृतज्ञता के शब्दो की बौछार करने लगी, उनके हाथो को चूमने लगी और उन्हे अपनी उपकारिणी कहने लगी।

मार्या द्मीत्रियेव्ना ने उसके चापलूसी के शब्दो को अनुग्रहपूर्वक स्वीकार किया, लेकिन दिल ही दिल मे वह लाव्रेत्स्की से वर्वारा पाव्लोव्ना से और अपने रचे हुए उस पूरे नाटक से असतुष्ट थी। वह उतना मर्मस्पर्शी नही बन पाया जितनी उन्हे आशा थी, उन्होने सोचा वर्वारा पाव्लोव्ना को अपने पति के चरणो मे गिर पडना चाहिये था।

"आखिर तुम मेरी बात समझी क्यो नही?" उन्होने पूछा। "मैं तुमसे बराबर कहे जा रही थी नीचे!"

"ऐसे ही बेहतर है, बुआजी, चिता न करे—सब कुछ बहुत शानदार ढग से पूरा हो गया" वर्वारा पाव्लोव्ना ने उन्हे यकीन दिलाया।

"सचमुच, उसका दिल बिल्कुल बर्फ का डला है" मार्या द्मीत्रियेव्ना ने अपना मत व्यक्त किया। "अलबत्ता तुम तो नही रोयी लेकिन मैने तो उसके सामने आसू बहा-बहाकर अपनी आखे फोड ली। तो वह तुम्हे लाव्रिकी मे कैद कर देना चाहता है। इसका मतलब क्या यह है कि तुम मुझसे भी मिलने नही आ सकोगी? सारे मर्द ऐसे ही निर्दयी होते है," उन्होने बडे जानकार ढग से सिर हिलाते हुए कहा।

"लेकिन औरते तो नेकी और उदारता की कद्र करना जानती है," वर्वारा पाव्लोव्ना ने बुदबुदाकर कहा और मार्या द्मीत्रियेव्ना के सामने धीरे से घुटनो के बल बैठकर उसने अपनी बाहे उनकी भारी-भरकम कमर के चारो ओर लपेट ली और अपना चेहरा उनके शरीर मे सटा दिया। उसके चेहरे पर एक चोर मुस्कराहट थी और मार्या द्मीत्रियेव्ना की आखो मे एक बार फिर आसू बहने लगे।

घर पहुचकर लाव्रेत्स्की अपने नौकर की कोठरी मे बद हो गया और एक सोफे पर ढेर होकर सुबह तक वैसे ही पडा रहा।

६६

अगले दिन इतवार था। सुबह की प्रार्थना के लिए बजनेवाले गिरजाघर के घंटों से लाव्रेत्स्की की आंख नही खुली – उसने रात-भर पलक नही भपकायी थी – लेकिन उन घटों की आवाज़ मे उसे उस दूसरे इतवार की याद हो आयी जब वह लीज़ा के अनुरोध पर गिरजाघर गया था। वह जल्दी मे उठा, उसका मन उससे कह रहा था कि आज भी वहा उससे उसकी भेंट होगी। वह चुपचाप घर से बाहर निकला और वर्वारा पाव्लोव्ना के लिए, जो अभी तक सो रही थी, एक संदेश छोड गया कि वह खाना खाने वापस आयेगा, और तेज कदम बढाता हुआ उस ओर चल पडा जहा से घटो की एकरस दयनीय ध्वनि उसे अपनी ओर बुलाती हुई-सी लग रही थी। वह बहुत सवेरे पहुच गया था; गिरजाघर मे प्राय: कोई भी नही था; एक पादरी गानेवालो की मडली मे प्रार्थनाओ के लिए निर्धारित अलग-अलग समयो के विवरण का पाठ कर रहा था; सीने की गहराई से निकलनेवाली उसकी भौंरे के गुजन जैसी आवाज़, जो बीच-बीच में खासी आ जाने से रुक जाती थी, चढाव-उतार के साथ सुनायी दे रही थी। लाव्रेत्स्की ने दरवाजे के पास अपने लिए एक जगह चुन ली। एक-एक करके उपासकगण आते, रुकते, अपने सीने पर सलीब का निशान बनाते, और हर तरफ मुडकर भुकते; शात, खाली गिरजाघर मे उनके कदमो की आहट प्रतिध्वनित होती और मेहराबदार छत के नीचे उसकी खोखली गूज थरथराती रहती। एक छोटी-सी टूटी-मारी बुढिया तार-तार लबादा और हुड पहने लाव्रेत्स्की के पास घुटनो के बल झुकी बडी श्रद्धा से प्रार्थना कर रही थी, उसके पीले, सूखे, पोपले चेहरे पर भक्तिभाव के आवेग से तनाव था, उसकी लाल आखे मुडेर पर रखी हुई पवित्र देव-प्रतिमाओ की ओर ऊपर उठी हुई थी और उन्हे एकटक देख रही थी, थोडी-थोडी देर बाद वह अपने लबादे के नीचे से एक सूखा हुआ हडीला हाथ निकालती और सलीब का चौडा-सा नपा ... बनाती। घनी दाढी और गभीर चेहरेवाला एक किसान, ... और अस्त-व्यस्त हालत मे गिरजाघर में आया और ... बल गिरकर जल्दी-जल्दी अपने सामने सलीब का निशान ... और हर बार भुकने के बाद वह झटका देकर तेजी के

साथ अपना सिर पीछे की ओर हटाता था। उसके चेहरे और उसके हर हाव-भाव में ऐसा करुण विषाद झलक रहा था कि लाव्रेत्स्की उसे सबोधित करके उससे यह पूछने का लोभ सवरण न कर सका कि उसे क्या कष्ट है। किसान हडबड़ाकर चौक पड़ा और उदास भाव से उसे घूरने लगा। "मेरा बेटा मर गया" उसने स्पष्ट उत्तर दिया और फिर प्रार्थना करने लगा। इन लोगो को गिरजाघर में जो सान्त्वना मिलती है वह और कहा मिल सकती है? लाव्रेत्स्की ने सोचा और स्वय प्रार्थना करने की कोशिश करने लगा लेकिन उसके मन पर एक बोझ-सा रखा हुआ था और उसके हृदय में कटुता थी और उसका दिमाग दूसरी बातो की ओर दौड रहा था। वह लीजा की राह देख रहा था लेकिन लीजा नहीं आयी। गिरजाघर लोगो से भरने लगा लेकिन वह फिर भी नही आयी। प्रार्थना शुरू हो गयी थी पादरी बाइबिल का पाठ कर चुका था अन्तिम प्रार्थना की घटी बज चुकी थी लाव्रेत्स्की ने अपनी जगह बदली और अचानक उसे लीजा दिखायी पड गयी। वह उसके पहुचने से पहले से गिरजाघर में मौजूद थी लेकिन लाव्रेत्स्की ने उसे देखा नही था, वह दीवार और गायक-मडली के बीच सिमटी सिकुडी खडी थी वह न हिली-डुली थी न उसने मुडकर इधर उधर देखा ही था। पूरी प्रार्थना के दौरान लाव्रेत्स्की ने उस पर से अपनी नजरें नहीं हटायी वह उससे विदा ले रहा था। उपासको की भीड छटने लगी लेकिन वह अभी तक वही जमी हुई थी ऐसा लग रहा था कि वह लाव्रेत्स्की के चले जाने की राह देख रही थी। आखिरकार उसने अन्तिम बार अपने सामने सलीब का निशान बनाया और सिर घुमाये बिना बाहर चली गयी उसके साथ एक नौकरानी थी। लाव्रेत्स्की उसके पीछे-पीछे बाहर निकला और सडक पर आकर वह उसके बराबर आ पहुचा, वह सिर भुकाये और चेहरे पर नकाब डाले तेज कदमो से चल रही थी।

"गुड मार्निंग, येलिजावेता मिखाइलोव्ना" उसने बनावटी सहजता से ऊचे स्वर मे कहा। "मैं तुम्हे घर तक पहुचा दू।"

वह कुछ नही बोली वह उसके साथ चलने लगा।

"तुम मुझसे सतुष्ट हो?" उसने अपनी आवाज नीची करते हुए कहा। "तुमने सुन लिया कल क्या-क्या हुआ?"

"हा, हा," उसने दबे स्वर मे कहा "बहुत अच्छा हुआ।

और यह कहकर वह और तेज चलने लगी।

"तुम मनुष्ट हो?"

लीजा ने सिर्फ अपना सिर हिला दिया।

"फ्योदोर इवानिच," उसने सधी हुई लेकिन धीमी आवाज में कहना शुरू किया, "मैं आपसे कहना चाहती थी – अब हम लोगों से मिलने न आया कीजिये, जितनी जल्दी हो सके चले जाइये, हम लोग बाद में मिल सकते हैं – किसी और वक्त, शायद साल-भर में। लेकिन इस वक्त, मेरी खातिर इतना कीजिये; जैसा मैं कहती हूं वैसा कीजिये, मैं आपके हाथ जोड़ती हूं।"

"मैं तुम्हारा हर हुक्म मानने को तैयार हूं, येलिजावेता मिखाइ-लोव्ना – लेकिन क्या हम इस तरह एक-दूसरे से अलग होंगे? क्या तुम मुझसे एक शब्द भी नहीं कहोगी? "

"फ्योदोर इवानिच, आप इस वक्त मेरे साथ चल तो रहे हैं लेकिन आप मुझसे बहुत दूर हो चुके हैं, बहुत-बहुत दूर। और सिर्फ आप ही नहीं। "

"बोलो, बताओ, मैं तुम्हारे पांव पड़ता हूं!" लाव्रेत्स्की ने मिन्नत करते हुए कहा। "क्या मतलब है तुम्हारा?"

"आपको उसकी खबर मिल जायेगी, शायद . लेकिन जो कुछ भी हो, सब कुछ भुला दीजियेगा नहीं, मुझे न भुलाइयेगा, मेरे बारे में कभी-कभी सोचा कीजियेगा।"

"क्या मैं तुम्हें भुला सकता हूं? "

"बस, अब मैं चली। मेरे पीछे मत आइयेगा।"

"लीजा," लाव्रेत्स्की ने कहना शुरू किया।

"विदा, विदा!" उसने अपना नकाब और नीचे खींचकर दो बार कहा और लगभग भागती हुई तेजी से आगे बढ़ गयी।

लाव्रेत्स्की उसकी दूर जाती हुई आकृति को खड़ा घूरता रहा, फिर वह सिर झुकाये पीछे मुड़ा और सड़क पर दूसरी ओर चल दिया। वह लेम्म से टकराते-टकराते बचा, लेम्म भी अपनी हैट नाक पर झुकाये और नजरें जमीन पर गड़ाये चला जा रहा था।

[illegible]ने चुपचाप एक-दूसरे को देखा।

[illegible] कहना है आपका?" लाव्रेत्स्की ने आखिरकार कहा।

[illegible] कह सकता हूं," लेम्म ने उदास भाव से जवाब दिया।

मैं कुछ भी नही कहता। हर चीज मुर्दा है और हम भी मुर्दा है। (Alles ist todt und wir sind todt) तुम दाहिनी ओर जा रहे हो?"

"जी हा।"

"मैं बायीं ओर जाऊगा। गुड-बाई!"

अगले दिन सुबह फ्योदोर इवानिच अपनी बीवी के साथ लाव्रिकी के लिए रवाना हो गया। वह आदा और जस्टीन के साथ आगे-आगे बग्घी पर जा रही थी, वह पीछे-पीछे तरनतास* मे। रास्ते-भर वह छोटी-सी सुदर बच्ची खिडकी के पास से नही हटी हर चीज देखकर वह आश्चर्यचकित रह जाती थी किसान झोपडिया कुए घोडो की गर्दनो पर रखे हुए जुए टनटनाती हुई घटिया और बेशुमार कौए, जस्टीन को भी वैसा ही आश्चर्य हो रहा था, वर्वारा पाव्लोव्ना को उनकी टिप्पणियो और विस्मयबोधक उद्‌गारो पर हसी आ रही थी। उसका जी बहुत खुश था ओ मे चलने से पहले उसने अपने पति से सारी स्थिति साफ कर ली थी।

"मैं आपकी स्थिति समझती हू उसने अपने पति से कहा था और उसकी आखो मे कुटिलता की जो चमक थी उससे लाव्रेत्स्की जान गया था कि वह उसकी स्थिति को बिल्कुल अच्छी तरह समझती थी 'लेकिन आप मेरे बारे मे कम से कम इतना तो मानेगे कि मेरे साथ रहना बहुत आसान है। मैं न तो खुद आपके ऊपर बोझ बनूगी न आपके रास्ते मे रुकावट डालूगी मै तो बस इतना चाहती थी कि आदा का भविष्य सुरक्षित हो जाये बस।

"खैर, तुम्हारे तो सारे मसूबे पूरे हो गये फ्योदोर इवानिच ने अपना मत व्यक्त किया था।

'अब तो मेरी बस एक ही मनोकामना रह गयी है हमेशा के लिए सबसे अलग-थलग रहकर वही दूर जिदगी गुजार दू मै आपकी उदारता कभी नहीं भूलूगी।

'छि! बस रहने दो लाव्रेत्स्की ने उसे टोकते हुए कहा।

---

* एक तरह की रूसी घोडागाडी। – अनु०

और मैं इस बात का भी पूरा ख्याल रखूंगी कि आपको आपके और घर की शांति में कोई विघ्न न पड़ने पाये।" उसने यह सब पूरा कर दी दिया, जो उसने पहले से तैयार कर रखा था।

लाव्रेत्स्की ने उसके सामने बड़ा ज्यादा झुककर आभार प्रकट किया था। वर्वारा पाव्लोव्ना समझ गयी थी कि उसका पति मन ही मन उसके प्रति कृतज्ञ था।

अगले दिन शाम को वे साथ लाव्रेत्स्की पहुंच गये। हफ्ते-भर बाद लाव्रेत्स्की अपनी बीवी के पास उसके जेब-खर्च के लिए पांच हजार रूबल छोड़कर मास्को चला गया — और उसके जाने के अगले ही दिन पान्शिन, जिससे वर्वारा पाव्लोव्ना ने अनुरोध किया था कि उन्हें बनवास में वह उसे भुला न दे, मैदान में आ गया। उसने उसका खोलकर स्वागत किया और बहुत देर रात गये तक घर के ऊंची-ऊंची छतोंवाले कमरे और बाहर का बाग गाने-बजाने और मस्ती-भरी बातों की बातचीत से गूंजते रहे। पान्शिन तीन दिन तक वर्वारा पाव्लोव्ना का मेहमान रहा, विदा होते समय उसने उसके सुंदर हाथों को अपने हाथों में दबाकर जल्दी ही फिर आने का वादा किया। उसने अपना वादा निभाया भी।

४५

अपनी मा के घर में दूसरी मंजिल पर लीज़ा का अपना एक छोटा-सा कमरा था, एक साफ़-सुथरी हवादार कोठरी जिसमें सफ़ेद पलंग बिछा था, कोनों में और खिड़कियों के सामने फूलों के गमले रखे थे, एक छोटी-सी लिखने की मेज़, एक किताबों की अल्मारी और दीवार पर एक सलीब थी। इस कोने को बच्चों का कमरा कहा जाता था; लीज़ा इसी में पैदा हुई थी। लाव्रेत्स्की से मिलकर गिरजाघर से लौटने के बाद उसने अपने कमरे को हमेशा से ज्यादा अच्छी तरह साफ़ किया था, हर चीज़ को झाड़ा-पोंछा था, अपनी सारी कापियों और अपनी सहेलियों की चिट्ठियों को अच्छी तरह देखभालकर उन्हें फ़ीतों में बांधा था, सारी दराज़ों के ताले बंद किये थे, फूलों में पानी दिया था और हर फूल को अपनी उंगलियों से छुआ था। यह सब काम उसने बड़े आराम से, चुपचाप, अपने चेहरे पर हार्दिक और कोमल

और मैं इस बात का भी पूरा ध्यान रखूगी कि आपकी अ
मन की शाति मे कोई विघ्न न पडने पाये," उसने वह ब
कर ही दिया, जो उसने पहले से तैयार कर रखा था।

लाव्रेत्स्की ने उसके सामने बहुत ज्यादा झुककर आभार प्र
किया था। वर्वारा पाव्लोव्ना समझ गयी थी कि उसका पति मन
मन उसके प्रति कृतज्ञ था।

अगले दिन शाम को वे लोग लाव्रिकी पहुच गये; हफ्ते-भर ब
लाव्रेत्स्की अपनी बीवी के पास उसके जेब-खर्च के लिए पाच हज
रूबल छोडकर मास्को चला गया—और उसके जाने के अगले
दिन पाशिन, जिससे वर्वारा पाव्लोव्ना ने अनुरोध किया था कि उस
बनवास मे वह उसे भुला न दे, मैदान मे आ गया। उसने उसका
खोलकर स्वागत किया, और बहुत देर रात गये तक घर के ऊची-ऊ
छतोवाले कमरे और बाहर का बाग गाने-बजाने और मस्ती-भरी फ्रांसी
की बातचीत से गूजते रहे। पाशिन तीन दिन तक वर्वारा पाव्लोव
का मेहमान रहा; विदा होते समय उसने उसके सुदर हाथो को अपने
हाथो मे दबाकर जल्दी ही फिर आने का वादा किया। उसने अपना
वादा निभाया भी।

४५

अपनी मा के घर मे दूसरी मजिल पर लीजा का अपना एक छोटा-
सा कमरा था, एक साफ-सुथरी हवादार कोठरी जिसमे सफेद पलग
बिछा था, कोनो मे और खिडकियो के सामने फूलो के गमले रखे
थे एक छोटी-सी लिखने की मेज, एक किताबो की अल्मारी और
दीवार पर एक सलीब थी। इस कोने को बच्चो का कमरा कहा जाता
था, लीजा इसी मे पैदा हुई थी। लाव्रेत्स्की से मिलकर गिरजाघर
से लौटने के बाद उसने अपने कमरे को हमेशा से ज्यादा अच्छी तरह
साफ किया था, हर चीज को झाडा-पोछा था, अपनी सारी कापियो
और अपनी सहेलियो की चिट्ठियो को अच्छी तरह देखना
था, सारी दराजो के ताले बद किये थे, [illegible]
- हर फूल को अपनी उगलियो से छुआ था। [illegible]
[illegible] मे, चुपचाप, अपने पलंग पर हा[illegible]

ा का भाव लिये हुए किया था। फिर उसने कमरे के बीच में खड़
खड़े रहकर धीरे-धीरे चारो ओर नजर डाली थी, और उस मे
पास जाकर जिसके ऊपर सलीब टगी थी वह घुटनो के बल बै
थी, हाथो की उगलिया फसाकर उन पर अपना सिर टिका लिय
और देर तक निश्चल बैठी रही थी।

मार्फा तिमोफेयेव्ना अदर आयी और उन्होने उसे इस मुद्रा मे पाया
ा ने उन्हे अदर आते नही देखा। वह दबे पाव बाहर चली गय
कई बार जोर से खासी। लीज़ा जल्दी से उठी और उसने अपन
पोछीं, जिनमे अनबहे चमकदार आसू झिलमिला रहे थे।

"अच्छा, तो तुम अपनी यह छोटी-सी कोठरी जो सन्यासिनी क
ी जैसी है, फिर से झाड-पोछकर साफ कर रही हो" मार्फ
फेयेव्ना ने कहा और गुलाब के एक छोटे-से पौधे पर झुक गयी
"कितनी अच्छी महक है इसकी!"

लीज़ा ने विचारमग्न होकर बुआजी को देखा।

"वह क्या शब्द कहा था आपने?", उसने क्षीण स्वर मे पूछा

"कौन-सा शब्द भला?" बुढ़िया ने जल्दी से पूछा। "क्या मतल
तुम्हारा? यह बहुत बुरी बात है" उन्होने अचानक अपनी टोप
उतार फेंकी और लीज़ा के छोटे-से पलग पर बैठते हुए कहा "य
मेरी बर्दाश्त के बाहर है। चार दिन हो गये मुझे काटो पर लोट
ए, मैं यह ढोंग नही करती रह सकती जैसे मैं कुछ जानती ही नह
ी—मुझसे अब यह नही देखा जाता कि तुम्हारा रग पीला पडता ज
हा है और तुम घुलती जा रही हो और हरदम रोती रहती हो
ही देख सकती नही देख सकती!"

"क्यो आपको हुआ क्या है बुआजी?" लीज़ा ने बुदबुदाक
हा। "मैं तो बिल्कुल ठीक हू।"

"बिल्कुल ठीक हो!" मार्फा तिमोफेयेव्ना ने चिल्लाकर कहा
यह जाकर तुम किसी और से कहना मुझसे नही! बिल्कुल ठी
! अभी घुटनो के बल कौन बैठा था? किसकी पलकें अभी तक आसुअ
भीगी हुई है? बिल्कुल ठीक हू! अपना हुलिया तो देखो क्या ह
ना सी है अपनी—अपनी सूरत देखो अपनी आख देखो! बिल्
, बिल्कुल ठीक हू! क्या मैं जानती नही कि यह सब कुछ क्यो है?"

"सब ठीक हो जायेगा, बुआजी थोड़े दिन की बात है।"

"ठीक हो जायेगा मगर कब? हे प्रभु! क्या तुम्हें इतनी बुरी तरह उससे प्यार है? लेकिन वह तो बूढ़ा है, बेटी लीज़ा। ख़ैर, मैं मानती हू कि वह अच्छा आदमी है, वह किसी को जान-बूझकर नुक़सान नही पहुचाता, लेकिन उससे क्या हुआ? अच्छे तो हम सभी लोग है, दुनिया बहुत बड़ी है, उस तरह के बहुतेरे लोग हैं।"

"मैं कहती हू आपसे कि सब ठीक हो जायेगा, बल्कि ठीक हो चुका है।"

"मेरी बात सुनो, लीज़ा बेटी," मार्फ़ा तिमोफ़ेयेव्ना ने लीज़ा को अपने पास बिठाकर कभी उसके बालो पर और कभी उसके रूमाल पर हाथ फेरते हुए कहा, "अभी जबकि घाव हरा है तुम्हें ऐसा लगता है कि तुम अपनी इस व्यथा पर कभी काबू नही पा सकोगी। लेकिन, मेरी बेटी, सिर्फ़ मौत एक ऐसी चीज़ है जिसका कोई इलाज नहीं है! तुम बस अपने आपसे यह कहो 'मैं हार नही मानूगी, चाहे जो हो जाये!' और तुम्हारे सीने पर से यह सारा बोझ इतनी आसानी से हट जायेगा कि तुम्हें खुद ताज्जुब होगा। ज़रा थोड़ा-सा बर्दाश्त करने की कोशिश करो।"

"बुआजी," लीज़ा ने जवाब दिया, "सब कुछ गुज़र चुका है, सब ठीक हो गया है।"

"सब ठीक हो गया! सब ठीक तो ज़रूर हो गया! अरे, ज़रा देखो तो, तुम्हारी बेचारी छोटी-सी नाक कैसी नुकीली हो गयी है, और तुम कहती हो कि सब ठीक हो गया! अच्छा तरीका है सब कुछ ठीक करने का!"

"हा, सब ठीक हो गया है, बुआजी, बस अगर आप मेरा साथ देने पर राज़ी हो जाये," लीज़ा ने अचानक जोश मे आकर मार्फ़ा तिमोफ़ेयेव्ना के गले मे बाहे डालते हुए कहा। "मेरी अच्छी बुआजी, मेरे साथ दोस्ती निभाइये, मेरी मदद कीजिये, नाराज़ न होइये, समझने की कोशिश कीजिये। . ."

"क्यो, बात क्या है, क्या बात है, बेटी? मेहरबानी करके मुझे इस तरह न डराओ, मुझे इस तरह न देखो, मै चीखने लगूगी; जल्दी से बताओ मुझे, क्या बात है?"

"मै . . मैं चाहती हू . ." लीज़ा ने अपना मुह मार्फ़ा तिमोफ़ेयेव्ना के सीने मे छिपा लिया। "मैं चाहती हू कि किसी मठ मे चली जाऊ,"

उसने दबी आवाज़ मे कहा।

बूढा पलग पर से लगभग उछल पडी।

"तोबा करो, लीज़ा, बेटी, तुम नही जानती कि तुम कह क्या रही हो! हे भगवान, ऐसी बात भी कहना है कोई।" आखिरकार जब वह बोलने लायक हुई तो उन्होने हकला-हकलाकर कहा। "लेट जाओ, बेटी, थोडी देर सो लो, यह सब कुछ रात-रात भर न सोने से होना है, बेटी।"

लीज़ा ने अपना सिर उठाया, उसके गाल तमतमाये हुए थे।

"नही, बुआजी," वह बोली, "ऐसा न कहिये, मैने अपना इरादा पक्का कर लिया है, मैंने प्रार्थना की है, मैंने ईश्वर से सलाह ली है, सब खत्म हो चुका है, आपके साथ मेरी जिदगी भी खत्म हो चुकी है। ऐसी सीख बेकार थोडे ही गयी है, और यह कोई पहली बार तो है नही कि मैंने ऐसी बात सोची हो। मेरे जीवन मे सुख आया ही नही; जब सुख की आस भी बधी थी तब भी मेरा मन आशका से बोझल था। मैं सब कुछ जानती हू—खुद अपने पाप और दूसरो के और यह भी कि पापा ने अपनी दौलत कैसे बटोरी थी मुझे सब कुछ मालूम है। प्रार्थनाओ से, प्रार्थनाओ से इस सारे पाप को धोना होगा। मैं आपके बारे मे सोचकर बहुत दुखी हो जाती हू मा और लेनोच्का के बारे मे सोचकर दुखी हो जाती हू, लेकिन कुछ किया नही जा सकता; मैं महसूस करती हू कि यहा की जिदगी मेरे लिए नही है, मैंने अतिम बार घर के हर आदमी से और हर चीज़ से विदा ले ली है, मैं एक बुलावे पर जा रही हू, मेरा हृदय पीडा से तग आ चुका है, मैं हमेशा के लिए अपने आपको इन सब चीज़ो से दूर कही बद कर लेना चाहती हू। मुझे रोकिये मत मुझे अपना फैसला बदल देने के लिए समझाने-बुझाने की कोशिश मत कीजिये, बल्कि मेरी मदद कीजिये, नही तो मैं अकेली चली जाऊगी।"

मार्फा तिमोफेयेव्ना हक्का-बक्का अपनी पोती की बाते सुनती रही।

"यह बीमार है, इसे सरसाम हो गया है" उन्होने सोचा "हमे डाक्टर को बुलवाना चाहिये लेकिन किसे? गेदेओनोव्स्की उस दिन किसी की तारीफ कर रहा था, लेकिन वह परले दर्जे का झूठा है—शायद इस बार वह सच बोल रहा हो?" लेकिन जब पहली बार

गह बात उनको गमभ में आयी कि लीजा न बीमार है और न उनकी गरगामी हालत है और जब लीजा ने उनकी हर आपत्ति और विरोध का एक ही जवाब दिया, तो मार्फा तिमोफ़ेयेव्ना इतना डर गयीं और दुखी हुई कि बयान नहीं किया जा सकता।

"मगर तुम नहीं जानती, बेटी," उन्होंने उसे समझाना शुरू किया, "इन मठों की जिंदगी कैसी होती है! वहा वे लोग, बेटी, तुम्हें सन के बेहद बुरे तेल का बना हुआ खाना देंगे, तुम्हें मोटे, खुरदुरे कपड़े नीचे पहनने के लिए देंगे, सर्दी में बाहर भेज देंगे, तू यह सब झेल नही पायेगी, लीजा बेटी! अगाफ्या का किया-धरा है यह सब कुछ – उसी ने तुझे इस गलत रास्ते पर लगाया। लेकिन वह पहले जिंदगी का मजा लूट चुकी थी, वह अपने सुख के लिए जी चुकी थी, तुम्हे भी जिंदगी मजे में बितानी है। कम से कम मुझे चैन से मर तो जाने दो, फिर जो तुम्हारे जी मे आये करना। और यह तुमने कहां देखा है कि कोई किसी बकरे की वजह से – भगवान हमें क्षमा करे; – किसी मर्द की वजह से मठ मे चला जाये? अरे, अगर तुम्हारा इतनी ही बुरी तरह जी चाहता है तो तीर्थयात्रा पर चली जाओ, किसी संत की प्रार्थना कर डालो, गिरजाघर मे किसी की वंदना करा दो, मगर सिर पर काला हुड न चढाओ, मेरी बेटी, मेरी लाडली!..."

और यह कहकर मार्फा तिमोफ़ेयेव्ना फूट-फूटकर रोने लगीं।

लीजा ने उन्हे तसल्ली दी, उनके आसू पोछे, खुद रोयी, लेकिन उसने अपना इरादा किसी तरह न बदला। हर तरफ से निराश होकर मार्फा तिमोफ़ेयेव्ना ने धमकियो का सहारा लिया – उन्होंने कहा कि वह उसकी मा को सब कुछ बता देंगी, लेकिन सब बेकार। आखिरकार लीजा वृद्धा का हार्दिक अनुरोध मानकर अपना इरादा छः महीने के लिए स्थगित रखने पर राजी हो गयी; लेकिन इसके बदले में मार्फा तिमोफ़ेयेव्ना से यह वादा ले लिया गया कि अगर इस दौरान मे लीजा ने अपना इरादा न बदला तो वह उसकी मदद करेंगी और मार्या द्मीत्रियेव्ना की सहमति प्राप्त कर देंगी।

सर्दी की पहली लहर आते ही वर्वारा पाव्लोव्ना, अपने इस वचन के – कि वह अपने आपको सबसे अलग करके कहीं दूर जाकर एकांत

बंद हो जायेगी, सेंट पीटर्सबर्ग चली गयी जहां अपने लिए काफी पैसे का पहले से बंदोबस्त करके उसने एक छोटा-सा लेकिन बहुत आकर्षक फ्लैट किराये पर ले लिया, जो पाशिन ने उसके लिए ढूंढ दिया था, वह उससे पहले ही ओ से चल दिया था। ओ में अपने प्रवास के अंतिम दिनों में वह मार्या द्मीत्रियेव्ना की नज़रों से बिल्कुल उतर गया था, उसने अचानक उनके यहां जाना छोड़ दिया था और लगभग हमेशा लाव्रिकी में ही बना रहता था। वर्वारा पाव्लोव्ना ने उसे अपना गुलाम बना लिया था न इसमें कुछ कम न ज्यादा, उसके ऊपर उसका जो असीम, अटल और सम्पूर्ण वश था उसे किसी और शब्द से बयान ही नहीं किया जा सकता।

लाव्रेत्स्की ने जाड़ा मास्को में बिताया और अगले वसंत में उसके पास खबर पहुंची कि लीज़ा ने रूस के एक सुदूरतम भाग में ब मठ में जाकर सन्यास ले लिया था।

उपसंहार

आठ साल बीत गये। फिर वसंत आ गया। लेकिन पहले हम कुछ शब्दों में मिख़ालेविच पाशिन और मादाम लाव्रेत्स्काया के बारे में बता दें कि उनका क्या अंजाम हुआ और उनसे विदा लें। ज़िंदगी में कई उतार-चढ़ाव आने के बाद मिख़ालेविच को अपना असली काम मिल गया, उसे एक सरकारी स्कूल में लड़कों की देखभाल करनेवाले प्रवर कर्मचारी की नौकरी मिल गयी है। वह अपनी ज़िंदगी से संतुष्ट है, और उसकी निगरानी में जो लड़के हैं वे उस पूजते हैं, लेकिन पीठ पीछे वे उसकी नकल भी उतारते हैं। पाशिन सरकारी सीढ़ी पर काफी ऊंचा चढ़ गया है और डायरेक्टर का पद पाने के मंसूबे बना रहा है वह कुछ झुककर चलने लगा है जो कि व्लादीमिर क्रॉस के बोझ का नतीजा है जो वह अपने गले में पहने रहता है। उसमें जो अफसर था वह उसके अंदर के कलाकार पर पूरी तरह हावी हो गया है अभी तक नौजवान लगनेवाला उसका चेहरा कुछ पीला पड़ गया है उसके बाल कुछ कम हो गये हैं और वह अब गाता नहीं है न ही तस्वीरें बनाता है लेकिन चोरी-छुपके साहित्य में टांग अड़ाता रहता है उसने कहावत की शैली में एक

हास्य-नाटक लिखा है और चूंकि आजकल सभी लेखक अनिवार्य रूप से किसी न किसी चीज या किसी न किसी व्यक्ति का "चित्रण" करते है, इसलिए उसने भी उसमें एक नखरेवाली का चित्रण किया है, और उसे वह अकेले मे अपनी जान-पहचान की दो-तीन ऐसी महिलाओ को पढ़कर सुनाता है जो उसकी भक्त है। लेकिन उसने अभी तक शादी नही की है, हालांकि उसके सामने इसके कई बहुत अच्छे अवसर आ चुके है। इसमें दोष वर्वारा पाव्लोव्ना का है। जहा तक उसका सवाल है वह पहले की तरह ही पेरिस मे रहती है फ्योदोर इवानिच ने उसे अपने नाम की एक हुडी देकर उससे अपनी जान छुड़ा ली है और इस बात का पक्का बंदोबस्त कर लिया है कि वह फिर अचानक हमला नही कर देगी। उसकी उम्र पहले से कुछ ज्यादा लगने लगी है और उसका बदन भी ज्यादा भरा-भरा लगने लगा है, लेकिन वह अब भी है आकर्षक और तरहदार। हर आदमी का एक आदर्श होता है, वर्वारा पाव्लोव्ना को अपना आदर्श द्यूमा के बेटे की नाट्य-रचनाओ के रूप मे मिल गया है। वह बडी पाबदी से थिएटर मे जाती है, जहा मच पर तपेदिक की मारी और घुल-घुलकर मरती हुई कैमेलिया की नाजुक बेल जैसी महिलाओ का चित्रण किया जाता है; वह मादाम दोश* होना मानव-सुख की पराकाष्ठा समझती है, एक बार उसने कहा था कि वह अपनी बेटी के लिए इससे ज्यादा और कुछ नही चाहेगी। हम आशा ही कर सकते है कि भाग्य mademoiselle आदा को ऐसे सुख से सुरक्षित रखेगा, भरे-भरे गुलाबी गालोवाली बच्ची से बढकर वह अब कमज़ोर सीनेवाली एक छोटी-सी मुरझायी हुई लडकी बन गयी है, उसका स्वभाव अभी से चिड़चिड़ा हो गया है। वर्वारा पाव्लोव्ना के प्रशसको की सख्या घट गयी है, लेकिन वे अब भी सूरत दिखाने आते रहते हैं, उनमें से कुछ को शायद वह अपने जीवन-भर अटकाये रखेगी। आजकल इनमे से सबसे ज्यादा जोशीला जाकुर्दालो-स्कुबीर्निकोव नामक एक आदमी है, जो मूछे रखनेवाली नस्ल के लोगो मे से है और फौजी गार्ड से रिटायर हो चुका है, उसकी उम्र अडतीस साल की है और शरीर बेहद गठा हुआ और फुर्तीला है। ...म लाव्रेत्स्काया के दीवानखाने मे आम तौर पर आनेवाले फ्रासीसी

उसे "le gros taureau de l'Ukraine"* कहते है, वर्वारा पाव्लोव्ना उसे कभी अपनी ठाठदार शाम की पार्टियो में नही बुलाती है लेकिन उसके प्रति उसकी सद्भावना निश्चित रूप से बनी हुई है।

तो इस तरह आठ साल बीत गये। एक बार फिर आकाश पर वसत के खिले हुए उल्लास के रग बिखर गये, एक बार फिर वसत धरती पर और लोगो पर अपनी मुस्कान लुटाने लगा एक बार फिर उसका कोमल स्पर्श पाकर दुनिया खिलने लगी, प्यार करने लगी और गाने लगी। ओ शहर मे इन आठ बरसो मे बहुत ही थोडा परिवर्तन हुआ है, लेकिन ऐसा लगता है कि मार्या द्मीत्रियेव्ना का घर पहले से ज्यादा जवान हो गया है, उसकी नयी रगी-पुती हुई दीवारो मे खुशी की चमक है और खुली हुई खिडकियो के काच डूबते सूरज की किरनो मे झिलमिलाता हुआ लाल रग प्रतिबिबित करते रहते है, इन खिडकियो मे से स्वच्छ युवा स्वरो की हल्की-फुल्की और हर्ष-भरी ध्वनि और निरतर हसी की आवाज़ तैरकर बाहर सडक पर आती रहती है। ऐसा लगता है कि सारे घर मे ज़िदगी कूट-कूटकर भरी हुई है और खुशी और मस्ती उमडी पड रही है। घर की मालकिन बहुत पहले ही कब्र मे जा चुकी है, लीज़ा के सन्यास लेने के दो साल बाद मार्या द्मीत्रियेव्ना का देहात हो गया था और अपनी भतीजी के कुछ ही दिन बाद मार्फ़ा तिमोफ़ेयेव्ना भी चल बसी थी शहर के कब्रिस्तान मे उनकी कब्रे एक-दूसरे के बगल मे बनी हुई है। नस्तास्या कार्पोव्ना भी अब नही रह गयी, यह वफादार बुढिया कई साल तक हर हफ्ते अपनी सहेली की कब्र पर दुआ मागने जाती रही। उसका भी वक्त आ गया था और उसकी हड्डिया भी सीली धरती मे आराम करने के लिए दफन कर दी गयी। लेकिन मार्या द्मीत्रियेव्ना का घर अजनबियो के हाथो मे नही पडने पाया, वह घराने के बाहर नही गया, वह घोसला उजडा नही, लेनोच्का, जो बडी होकर सुडौल शरीरवाली एक सुदर लडकी निकली थी और उसका मगेतर जो हुसारो का एक सुनहरे बालोवाला अफसर था, मार्या द्मीत्रियेव्ना का बेटा जिसने अभी हाल ही मे सेंट पीटर्सबर्ग मे शादी कर ली थी और अपनी नौजवान बीवी के साथ वसत के दिन बिताने ओ आया हुआ था, उसकी

* उक्राइन का मोटा बैल। (फ़ासीसी)

साली, जो गुलाबी गालों और निर्मल आंखोंवाली सोलह साल की एक स्कूली लड़की थी, शूरोच्का, वह भी बड़ी हो गयी थी और बहुत सलोनी थी – यह था वह युवा परिवार जिसकी मस्त हंसी और बातचीत से कलीतिन-परिवार के घर की दीवारें गूंज रही थीं। घर की हर चीज बदल गयी थी, हर चीज उस घर के नये रहनेवालों के अनुरूप थी। बिना दाढ़ी-मूंछ के मुस्कराते हुए नौकर छोकरों ने, जो हरदम कोई न कोई हंसी-मजाक और शरारत करते रहते थे, पहलेवाले गंभीर बूढ़े नौकरों की जगह ले ली थी; जहां रोस्का अपना भारी-भरकम शरीर लिये इठलाती फिरती थी वहां अब दो शिकारी कुत्ते सोफों पर पागलों की तरह उछल-कूद मचा रहे थे; अस्तबलों में अब पहले से ज्यादा दुबले-पतले सवारी के घोड़े, ज्यादा फुर्तीले गाड़ी के घोड़े, ज्यादा कड़ियल साथ चलनेवाले घोड़े जिनके अयालों की चोटियां गुंथी रहती थीं और दोन के घुड़सवारी के घोड़े; नाश्ते, दोपहर के खाने और शाम के खाने के वक्त सब गड़बड़ हो गये थे और जैसा कि पड़ोसी कहते थे हर चीज एक "नये निराले ढर्रे" पर ही चलायी जाती थी।

जिस शाम की हम चर्चा कर रहे हैं, उस शाम कलीतिन-परिवार के घर में रहनेवाले लोग (जिनमें सबसे बड़ा, लेनोच्का का मंगेतर चौबीस साल का था) एक सीधे-सादे खेल में व्यस्त थे जो उनकी उल्लास-भरी हंसी को देखते हुए बेहद दिलचस्प मालूम होता था वे एक-दूसरे को पकड़ने की कोशिश करते हुए कमरों में भाग रहे थे, कुत्ते भी ऐसा ही कर रहे थे और जोश में आकर भूक रहे थे और खिड़कियों पर लटके हुए पिंजरों में बंद कनारी चिड़ियां भरी उन्मत्त चहचहाहट के कर्णभेदी कोलाहल से आम शोर को और बढ़ा रही थीं। इस मगन-भरी मस्तियों के बीच कीचड़ से सनी हुई एक घोड़ा-गाड़ी फाटक पर आकर रुकी और पैंतालीस साल का एक आदमी सफरी लबादा पहने हुए उस पर से उतरा और हक्का-बक्का देखता रहा। कुछ देर तक वह बिना हिले-डुले खड़ा रहा, उस घर पर एक पैनी दृष्टि डाली, फाटक से होकर अहाते में गया और धीरे-धीरे बरसाती की सीढ़ियां चढ़ने लगा। हॉल में उसे कोई भी नहीं मिला, अचानक बैठक के कमरे का दरवाजा जोर से खुला और तमतमाए हुए चेहरे के साथ शूरोच्का भागती हुई बाहर निकली, और सारी मंडली चीखती-चिल्लाती उसका पीछा करती हुई निकल आयी। एक अजनबी को

देखकर वह ठिठककर खड़ी हो गयी। लेकिन उन चमकदार आंखों से जैसा सर्वेक्षण कर रही थीं उनमें वैसी ही नमी भी थी और उनके गदबदे-से चेहरे अभी तक मुस्करा रहे थे। मार्फा तिमोफेयेव्ना का बेटा आगन्तुक के पास गया और उसने शिष्टतापूर्ण स्वर में उससे पूछा कि उन्हें क्या चाहिये।

"मैं सानेव्स्की हूं," आगन्तुक ने कहा।

इसके जवाब में चारों ओर से एक शोर उठा – इसलिए नहीं, कि वे नौजवान एक दूर के भूले-बिसरे रिश्तेदार के आने पर बहुत खुश थे, बल्कि सिर्फ़ इसलिए कि वे जरा-सा भी बहाना मिलने पर हुल्लड़ मचाने और खुशी मनाने पर तुले हुए थे। सानेव्स्की को फ़ौरन घेर लिया गया। पुरानी परिचित होने के नाते लेनोच्का ने सबसे पहले अपना परिचय दिया और कहा कि वह थोड़ी ही देर में उसे ज़रूर पहचान लेगी, और फिर उसने बाक़ी सबका का परिचय सबके प्यार के नाम लेकर कराया, यहां तक कि अपने मंगेतर का भी। वे सब क़तार बांधकर खाने के कमरे में से होकर बैठके में चले गये। दोनों कमरों में दीवारों पर चिपका हुआ काग़ज़ नया था लेकिन फ़र्नीचर वही पहलेवाला था। सानेव्स्की ने पियानो पहचाना। खिड़की के पास कशीदाकारी के अड्डे भी वही थे, वे अपनी पुरानी जगह पर ही रखे थे और ऐसा लगता था कि उन पर वही आठ साल पहलेवाली अधूरी कशीदाकारी चढ़ी हुई थी। उन लोगों ने उसे एक अच्छी-सी आराम-कुर्सी पर बिठाया, सब लोग उसके चारों ओर शिष्टता से घेरा बांधकर बैठ गये। जल्दी-जल्दी एक के बाद एक सवालों, उत्कंठित उद्‌गारों और विवरणों की झड़ी लग गयी।

"बहुत दिन से आपको देखा नहीं," लेनोच्का ने भोलेपन से कहा, "और वर्वारा पाब्लोव्ना को भी।"

"ज़ाहिर है!" उसके भाई ने जल्दी से कहा। "मैं तुम्हें लेकर सेंट पीटर्सबर्ग चला गया था और फ्योदोर इवानिच इस पूरे अरसे देहात में रहते रहे हैं।"

"हां, और तबसे मां भी मर गयीं।"

"और मार्फ़ा तिमोफ़ेयेव्ना भी," शूरोच्का ने बुदबुदाकर कहा।

"और नस्तास्या कार्पोव्ना," लेनोच्का ने कहा, "और लेम्म साहब।..."

"क्या ? लम्म साहब भी मर गये ?" लाव्रेत्स्की ने पूछा।

"जी हां," युवक कलीतिन ने जवाब दिया, "वह ओडेस्सा चले गये थे। लोग कहते है कि कोई लालच देकर उन्हें वहां ले गया था, और वहां वह मर गये।"

"तुम्हें कुछ मालूम है वह अपने पीछे कोई संगीत-रचनाएं छोड गये है?"

"मालूम नहीं, मुझे तो शक ही है।"

सब लोग चुप थे और आंखों-आंखों मे बातें कर रहे थे। नौजवान चेहरों पर उदासी की बदली छा गयी।

"मैदांग जिंदा है, आप जानते है," लेनोच्का अचानक बोली।

"और गेदेओनोव्स्की भी," उसके भाई ने जोड दिया।

गेदेओनोव्स्की के नाम पर एक ज़ोरदार कहक़हा पडा।

"जी हां, वह जिंदा है और अब भी वैसे ही झूठे है," मार्या द्मीत्रियेव्ना का बेटा कहता रहा, "और आप यक़ीन नही करेंगे, इस पगली ने" (यह कहते समय उसने उस स्कूली लडकी, अपनी साली की ओर संकेत किया) "उनकी नसवार की डिबिया में कल थोडी-सी काली मिर्च मिला दी थी।"

"आप सुनते उन्हें छींकते हुए!" लेनोच्का ने मज़ा लेते हुए चिल्लाकर कहा, और उसकी आवाज़ हंसी के ज़ोरदार ठहाकों के एक और दौर में डूब गयी।

"हाल ही मे लीज़ा के पास से भी ख़बर आयी थी," युवक कलीतिन ने सूचना दी, और सब पर फिर ख़ामोशी छा गयी, "वह बिल्कुल ठीक है, उसका स्वास्थ्य अब पहले से कुछ अच्छा है।"

"अभी तक उसी मठ मे है?" लाव्रेत्स्की ने काफ़ी प्रयास करके पूछा।

"जी हां।"

"कभी ख़त लिखती है?"

"नही, कभी नही, लेकिन दूसरे लोगों से ख़बर मिलती रहती है।"

अचानक एक गहरा सन्नाटा छा गया; "कोई नेक फ़रिश्ता गुज़र रहा है," सबने सोचा।

"बाग मे चलेंगे?" कलीतिन ने पूछा। "अब वह बहुत अच्छा है, हालांकि हम लोगों की लापरवाही की वजह से झाड-झंखाड कुछ

ज्यादा ही उग आया है।"

लाव्रेत्स्की बाग मे चला गया और जिस चीज पर सबसे पहले उसकी नजर पडी वह थी बाग मे पडी हुई वह बेंच, बाग की वही बेंच जिस पर उसने कभी लीजा के साथ फिर कभी न आनेवाले अविस्मरणीय उल्लास के कुछ क्षण बिताये थे, वह बेंच काली पड गयी थी और ऐंठ गयी थी, लेकिन उसने उसे पहचान लिया था, और उसके हृदय को एक ऐसी भावना ने जकड लिया था जो एक साथ ही बेहद मीठी भी थी और कडवी भी – उस जवानी के लिए जो मिट चुकी थी उस खुशी के लिए जो कभी उसे नसीब थी दर्द-भरी उदासी की भावना। वह युवा-मडली के साथ पेडो के बीच से होकर जानेवाले छायादार रास्ते पर टहलता रहा, लाइम के वृक्ष पहले से कुछ ज्यादा पुराने और ऊंचे लग रहे थे पर उनकी छाया अधिक घनी हो गयी थी, लेकिन सारी झाडिया बडी हो गयी थी रास्प-बेरी की झाडिया बढकर बहुत मजबूत हो गयी थी, हैजल की झाडिया तो अधाधुध हर तरफ बढ आयी थी और हर चीज मे जगल की ताजगी की महक घास और लाइलक के फूलो की खुशबू आ रही थी।

"यह 'बिल्ली बैठी कोने मे' खेलने के लिए बेहतरीन जगह है," लेनोच्का ने लाइम के पेडो के बीच एक छोटी-सी घिरी हुई घासदार खुली जगह पर निकलते हुए अचानक चिल्लाकर कहा "और हम है भी पूरे पाच जने।"

"और फ्योदोर इवानिच?" उसके भाई ने पूछा। "या तुम अपने आपको नही गिन रही हो?"

लेनोच्का का चेहरा थोडा-सा लाल हो गया।

"लेकिन क्या फ्योदोर इवानिच, अपनी इस उम्र मे" उसने कहना शुरू किया।

"तुम लोग खेलो," लाव्रेत्स्की ने जल्दी से उसकी बात काटते हुए कहा, "मेरी चिता न करो। मुझे यह जानकर ज्यादा खुशी होगी कि मै तुम लोगो के रास्ते मे बाधा नही बन रहा हू। और तुम लोगो को मेरा मन बहलाने की फिक्र करने की कोई जरूरत नही है हम बूढे लोगो का एक काम होता है जिसके बारे मे तुम लोगो को अभी कुछ नही मालूम है, और जिसकी जगह कोई मनोरंजन नही ले सकता – यादे।"

युवा-मडली लाव्रेत्स्की की बाते मनोरजन मिश्रित शिष्टता के साथ सुनती रही — मानो कोई अध्यापक उन्हे पाठ पढा रहा हो — और फिर वे अचानक तितर-बितर होकर उस हरी-भरी खुली जगह की ओर लपक पडे, उनमे से चार पेडो के नीचे खडे हो गये, एक बीच मे खडा हो गया, और तमाशा शुरू हो गया।

और लाव्रेत्स्की घर की ओर लौट पड़ा, खाने के कमरे मे जाकर वह पियानो के पास गया और उसका एक परदा उगली से छुआ, हवा मे एक मद्धिम-सा लेकिन स्पष्ट स्वर गूज उठा, और उसके हृदय के अदर भी इसके जवाब मे एक तार झकृत हो उठा ; यह उस अनुप्राणित धुन का पहला स्वर था जिससे लेम्म ने, बेचारे लेम्म ने उसे बहुत दिन पहले उस अविस्मरणीय और सुखमय रात को उल्लसित किया था। इसके बाद लाव्रेत्स्की बैठके मे गया और बडी देर तक वहा रहा. यहा, जहा वह अकसर लीजा से मिला करता था, उसकी आखो के सामने उसकी आकृति अधिक स्पष्ट रूप से उभरी ; वह अपने चारो ओर उसकी उपस्थिति अनुभव कर रहा था ; परतु उसके लिए उसकी वेदना पीडाजनक थी और उसे सहन करना आसान नही था, उसमे वह शाति नही थी जो मौत मे मिलती है। लीजा जिदा थी और कही बहुत दूर और उसकी पहुच के बाहर थी ; वह उसके बारे मे उस तरह सोच रहा था जैसे जिदा लोगो के बारे मे सोचा जाता है और उसे लोबान के लहराते हुए धुए के बीच चलती-फिरती साधुनी की पोशाक मे लिपटी उस धुधली-धुधली पीले चेहरेवाली आकृति मे उस लडकी के नाक-नक्श की कोई बात दिखायी नही दे रही थी जो किसी जमाने मे उसकी प्रेमिका थी। लाव्रेत्स्की जिन आखो से लीजा को अपनी कल्पना मे देखता था अगर अपने आपको वह उसी तरह देख पाता तो वह अपने को भी पहचान नही सकता था। इन आठ वर्षों के दौरान आखिरकार वह अपनी जिदगी के उस मोड पर मुड गया था जिसे बहुत-से लोग बिना मुडे ही पार कर जाते है, लेकिन जिसके बिना कोई भी आदमी पूरी तरह शरीफ आदमी नही बना रह सकता, उसने स्वय अपने सुख और स्वार्थ के बारे मे सोचना सचमुच छोड दिया था। उसका जोश ठडा पड गया था और — सच बात तो यह है — वह न केवल अपनी सूरत और अपने शरीर से बूढा हो गया था, उसका दिल भी बूढा हो गया था बुढापे मे दिल जवान रखना, जैसा कि कुछ

है मुश्किल भी होता है और कष्ट दायक भी वह आदमी
ट रह सकता है जिसने नर्को में अपना आश्रय ... के
और काम करने का संबन्ध न पाया हो। लाव्रेत्स्की को
का अधिकार था वह सचमुच बहुत अच्छा काश्तकार बन
उसने सचमुच जमीन जानना सीख लिया था और वह केवल
र्थ के लिए ही परिश्रम नहीं करता था उसने अपने किसानों
की पक्की और सुदृढ़ व्यवस्था करने में कोई कोशिश उठा
थी। लाव्रेत्स्की बाग में चला गया उस जानी-पहचानी बेंच पर बैठ
और घर के सामने अपने इस बेहद प्रिय स्थान में जहाँ उसने
बार आनंद और उल्लास की स्वर्णिम मदिरा में चमकने और
हुआ चिरवांछित सुरापात्र को पकड़ने का व्यर्थ प्रयास किया
ह एक बेघर यायावर अपने जीवन का सिंहावलोकन करने
और बाग के पार तैरकर आती हुई उस युवा पीढ़ी की उल्लास
ोर-गुल की आवाजें जिसने उसका स्थान ले लिया था उसके
म आती रहीं। वह दिल में उदासी महसूस कर रहा था लेकिन
कोई कटुता या व्यथा नहीं थी ऐसा तो बहुत कुछ था जिसका
खेद था लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं था जिस पर वह लज्जित
'स्फूर्तिमय यौवन खेलो आनंद मनाओ फूलो फलो उसने
और उसके इस सोचने में कोई कड़वाहट नहीं थी तुम्हारा
तुम्हारे सामने है और तुम्हारे लिए जीवन अधिक सुगम होगा
लोगों को हमारी तरह अपने लिए रास्ता खोजना नहीं पड़ेगा
नहीं करना पड़ेगा अंधेरे में बार-बार गिरकर उठना नहीं पड़ेगा
जीवित रहने की कोशिश में ही सदा जूझते रहना पड़ा—और
से कितने ही ऐसे थे जो जीवित भी नहीं रह पाये'—लेकिन
एक कर्त्तव्य निभाना है काम करना है—और हम बूढ़े लोगों
आशीर्वाद तुम लोगों के साथ है। मेरे लिए आज के बाद इन
भवों के बाद अब केवल तुम लोगों से अंतिम विदा लेना बाकी
गया है—और निकट आते हुए अंत और प्रतीक्षा करते हुए ईश्वर
ध्यान में रखते हुए उदास भाव से लेकिन किसी ईर्ष्या या दुर्भावना
बिना केवल यह कहना 'आओ मेरे एकाकी जीवन' धीरे धीरे
ल जाओ, व्यर्थ जीवन'''

लाव्रेत्स्की चुपचाप उठा और चुपचाप चला गया किसी ने उसकी

और अब? शायद जिज्ञासु पाठक पूछेगा! 'बाद में नादेस्की का क्या हुआ? और सोन्या का?' लेकिन उस यात्रा के बारे में कहने को रह ही क्या जाता है जो अभी तक लिखा नहीं है लेकिन उस समाज में और उसके मानदंडों में दिलचस्पी हो सकती है' कहा जाता है कि नादेस्की एक बार उस शहर में गया था जहां सोन्या ने शरण ले रखी थी और उससे मिला था। एक के बाद एक कई गायन-मंचों के सामने से सो-निया उतरते हुए वह उसके पास से होकर गुज़र गयी थी वह एक साधुनी की सीधी-सूधी, विनीत तेज़ चाल से निकल गयी थी और उसने उसकी ओर आंख उठाकर देखा तक नहीं था, बस उसकी पलकें थोड़ा-सा कांपी थीं और उसका सूखा चेहरा और नीचे झुक गया था और माला में लिपटे हुए उसके आपस में गुंथे हुए हाथों की उंगलियों ने एक-दूसरे को और भी कसकर दबा लिया था। वे दोनों क्या सोच रहे थे वे क्या महसूस कर रहे थे? कौन जान सकता है? कौन कह सकता है? जीवन में ऐसे क्षण आते हैं ऐसी भावनाएं हम बस इतना कर सकते है कि उनकी ओर संकेत कर दें—और आगे बढ़ जायें।

पाठकों से

रादुगा प्रकाशन इस पुस्तक की विषय-वस्तु, अनुवाद और डिज़ाइन के बारे में आपके विचार जानकर अनुगृहीत होगा। हमें आशा है कि आपकी भाषा में प्रकाशित रूसी और सोवियत साहित्य से आपको हमारे देश की संस्कृति और इसके लोगों की जीवन-पद्धति को अधिक अच्छी तरह जानने-समझने में मदद मिलेगी। हमारा पता है

रादुगा प्रकाशन,
१७ जूबोव्स्की बुलवार
मास्को, सोवियत संघ।